इस किताब में मु-तअ़द्दद अह़काम वोह हैं जिन का सीखना इस्लामी बहनों के लिये फ़र्ज़ है ।

Islami Bahnon Ki Namaz (Hindi)

इस्लामी बहनों की नमाज़

(ह़-नफ़ी)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

वुज़ू का त़रीक़ा	ग़ुस्ल का त़रीक़ा	तयम्मुम का त़रीक़ा
जवाबे अज़ान का त़रीक़ा	नमाज़ का त़रीक़ा	क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा
नवाफ़िल का बयान	इस्तिन्जा का त़रीक़ा	हैज़ व निफ़ास का बयान
ज़नानी बीमारियों के घरेलू इ़लाज	कपड़े पाक करने का त़रीक़ा	इस्लामी बहनों की 23 म-दनी बहारें

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عَساکِرج۵۱ص۱۳۸دارالفکربیروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह किताब **(इस्लामी बहनों की नमाज़)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये "**ह़ुरूफ़ की पहचान**" नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (–) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دَعْوت، اِسْتِعْمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक–त–बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की

मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद–1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

इस किताब में मु-तअ़द्दद अह़काम वोह हैं
जिन का सीखना इस्लामी बहनों के लिये फ़र्ज़ है।

(ह़-नफ़ी)

इस्लामी बहनों की नमाज़

मुअल्लिफ़
शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

नाशिर :
मक-त-बतुल मदीना,अह़मद आबाद

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नाम किताब : **इस्लामी बहनों की नमाज़ (ह़-नफ़ी)**

मुअल्लिफ़ : शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

सिने त़बाअ़त : रबीउ़ल आख़िर 1437 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना, अह़मदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें

बरेली शरीफ़ : दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदागरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यू.पी। फ़ोन : 09313895994

गुलबर्गा शरीफ़ : फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तीमा पूर चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक। फ़ोन : 09241277503

बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तक्या, मदन पूरा, बनारस, यूपी। फ़ोन : 09369023101

कानपूर : मस्जिद मख़्दूम सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिप्टी पड़ाव चौराहा, कानपूर, यूपी। फ़ोन : 09619214045

कलकत्ता : 35A/H/2, मोमिन पूर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल। फ़ोन : 033-32615212

अनन्त नाग : म-दनी तरबिय्यत गाह, टाउन हॉल के सामने, अनन्त नाग, कश्मीर। फ़ोन : 09797977438

सूरत : वलिया भाई मस्जिद, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सूरत, गुजरात। फ़ोन : 09601267861

इन्दौर : 13, बोम्बे बाज़ार, उदापूरा, इन्दौर, एमपी। फ़ोन : 09303230692

बंगलोर : 13, ह़ज़रत बिलाल कोम्पलेक्स, नवां मेन पल्लाना गार्डन, अ़रबिक कोलेज, बंगलोर, कर्नाटक। फ़ोन : 09343268414

फ़ेहरिस्त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

कुछ फ़र्ज़ उ़लूम के बारे में......

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा** ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इल्मे दीन सीखना इस क़दर कि मज़्हबे ह़क़ से आगाह, वुज़ू गुस्ल **नमाज़** रोज़े वग़ैरहा ज़रूरिय्यात के अह़काम से मुत्तलअ़ हो । ताजिर तिजारत, मुज़ारेअ़ (किसान) ज़राअ़त, अजीर (मज़दूर, मुलाज़िम) इजारे, ग़रज़ हर शख़्स जिस ह़ालत में है उस के मु-तअ़ल्लिक़ अह़कामे शरीअ़त से वाक़िफ़ हो, फ़र्ज़े ऐ़न है जब तक येह ह़ासिल न करे जुग़राफ़िया, तारीख़ वग़ैरा में वक़्त ज़ाएअ़ करना जाइज़ नहीं । जो फ़र्ज़ छोड़ कर नफ़्ल में मश्ग़ूल हो ह़दीसों में उस की सख़्त बुराई आई और उस का वोह नेक काम मरदूद क़रार पाया न कि फ़र्ज़ छोड़ कर फ़ुज़ूलियात में वक़्त गंवाना । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 23, स. 647, 648)

अफ़्सोस ! आज हमारी ग़ालिब अक्सरिय्यत सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यवी उ़लूम के ह़ुसूल में मश्ग़ूल है, अगर किसी को कुछ मज़्हबी ज़ौक़ मिला भी तो अक्सर उस का ध्यान मुस्तह़ब उ़लूम ही की त़रफ़ गया । अफ़्सोस ! सद करोड़ अफ़्सोस ! **फ़र्ज़** उ़लूम की जानिब मुसल्मानों की तवज्जोह न होने के बराबर है, और ह़ालत येह है कि नमाज़ियों की भी भारी ता'दाद **नमाज़** के ज़रूरी मसाइल से ना आशना है। ह़ालां कि इन मसाइल को सीखना फ़र्ज़ और न जानना सख़्त

गुनाह है । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : "नमाज़ के ज़रूरी मसाइल न जानना फ़िस्क़ है ।" (ऐज़न, जि. 6, स. 523) اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ किताबे मुस्तत़ाब "**इस्लामी बहनों की नमाज़** (ह़-नफ़ी)" उन बे शुमार अह़काम पर मुह़ीत़ है जिन का सीखना इस्लामी बहनों के लिये फ़र्ज़ है । लिहाज़ा इस्लामी बहनें इस को सिर्फ़ एक बार नहीं बार बार पढ़ें, लिखे हुए मसाइल को याद करें, अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ दूसरी इस्लामी बहनों को भी पढ़ कर सुनाएं अगर कोई मस्अला किसी सुनने वाली को समझ में न आए तो मह़ज़ अपनी अटकल से वज़ाह़त करने के बजाए उ़-लमाए अहले सुन्नत से मा'लूमात ह़ासिल करे । इस का त़रीक़ा बयान करते हुए सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 7 सफ़ह़ा 89 (मत़बूआ़ मक्तबए र-ज़विय्या) सत़र 12 पर फ़रमाते हैं : अ़ौरत को मस्अला पूछने की ज़रूरत हो तो अगर शोहर आ़लिम हो तो उस से पूछ ले और आ़लिम नहीं तो उस से कहे वोह पूछ आए और इन सूरतों में उसे ख़ुद आ़लिम के यहां जाने की इजाज़त नहीं और येह सूरतें न हों तो जा सकती है । (عالمگیری ج۱ص ۳٤۱)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की "**मजलिसे इफ़्ता**" और मजलिसे "अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या" के उ़-लमाए किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام को अज्रे अ़ज़ीम अ़त़ा फ़रमाए कि उन्हों ने किताबे हाज़ा के मुन-द-रजात की बड़ी अ़रक़ रेज़ी के साथ तफ़्तीश (छानबीन) फ़रमाई और बा'ज़

मक़ामात पर अहम रिवायात व जुज़्इय्यात का इज़ाफ़ा कर के इस की इफ़ादिय्यत दोबाला कर दी ! बिला ख़ौफ़े लौ–मते लाइम इस ह़क़ीक़त का ए'तिराफ़ करता हूं कि येह किताब इन्हीं की ख़ुसूसी रहनुमाई और फ़ैज़ाने नज़र का समर है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस किताब के मुअल्लिफ़, इस का मुत़ा–लआ़ करने वालियों और वालों (कि इस्लामी भाइयों के लिये भी इस में काफ़ी कारआमद म–दनी फूल हैं) का ह़ाफ़िज़ा ख़ूब क़वी करे कि इन को सह़ीह़ मसाइल याद रहें और अ़मल करने और दूसरों तक पहुंचाने की सआ़दत नसीब हो। अल्लाहु शकूर عَزَّوَجَلَّ सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ की इस नाचीज़ सअ़्य को मश्कूर फ़रमाए और इख़्लास की ला ज़वाल दौलत से माला माल करे।

मेरा हर अ़मल बस तेरे वासित़े हो　　कर इख़्लास ऐसा अ़त़ा या इलाही

दुआ़ए अ़त्त़ार : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो इस किताब को अपने अ़ज़ीज़ों के ईसाले सवाब के लिये नीज़ दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शादी ग़मी की तक़्रीबात व इज्तिमाआ़त वग़ैरा में तक़्सीम करवाए, मह़ल्ले में घर घर पहुंचाए उस का और उस के तुफ़ैल मेरा भी दोनों[2] जहां में बेड़ा पार कर दे।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
27 र–जबुल मुरज्जब 1429 सि.हि.
29-7-2008

ٱلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ؕ

''आओ नमाज़ सीखते हैं'' के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से येह किताब पढ़ने की 16 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ या'नी ''मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج٦، ص١٨٥)

दो म-दनी फूल : (1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता **(2)** जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

《1》 इख़्लास के साथ मसाइल सीख कर रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ की ह़क़दार बनूंगी **《2》** ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और **《3》** क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगी **《4》** इस के मुत़ा-लए़ के ज़रीए़ फ़र्ज़ उ़लूम सीखूंगी **《5》** अपना वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ वग़ैरा दुरुस्त करूंगी **《6》** जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۴۳﴾ **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ''तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं'' **(پ١٤، النحل: ٤٣)** पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगी **《7》** (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात अन्डर लाइन करूंगी **《8》** (ज़ाती नुस्ख़े के) याद दाश्त वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगी **《9》** जिस मस्अले में दुश्वारी होगी उस को बार बार पढ़ूंगी **《10》** ज़िन्दगी भर अ़मल करती रहूंगी **《11》** जो इस्लामी बहनें नहीं जानतीं उन्हें सिखाऊंगी **《12》** जो इ़ल्म में बराबर होगी उस से मसाइल में तक्रार करूंगी **《13》** दूसरी इस्लामी बहनों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगी **《14》** (कम अज़ कम 12 अ़दद या ह़स्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगी **《15》** इस किताब के मुत़ा-लए़ का सवाब सारी उम्मत को ईसाल करूंगी **《16》** किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लती मिली तो नाशिरीन को लिख कर मुत्त़लअ़ करूंगी (ज़बानी कहना या कहलवाना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

वुज़ू का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुश्कबार है : "जिस ने मुझ पर सो100 मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा।"

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج١٠ص٢٥٣ حدیث ١٧٢٩٨)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ करवाने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना हुमरान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वुज़ू के लिये पानी मंगवाया जब कि आप एक सर्द रात में नमाज़ के लिये बाहर जाना चाहते थे, मैं उन के लिये पानी ले कर ह़ाज़िर हुवा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपना चेहरा और दोनों हाथ धोए। (येह देख कर) मैं ने अ़र्ज़ की : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को किफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है।" तो

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि ''जो बन्दा कामिल वुज़ू करता है उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे ।''

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْھِیب لِلْمُنْذِرِیّ ج ۱ ص ۹۳ حدیث ۱۱)

गुनाह झड़ने की ह़िकायत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वुज़ू करने वाले के गुनाह झड़ते हैं, इस ज़िम्न में एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत नक़्ल करते हुए ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं, एक मर्तबा सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जामेअ़ मस्जिद कूफ़ा के वुज़ूख़ाने में तशरीफ़ ले गए तो एक नौ जवान को वुज़ू बनाते हुए देखा, उस से वुज़ू (में इस्ति'माल शुदा पानी) के क़त़रे टपक रहे थे । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! मां बाप की ना फ़रमानी से तौबा कर ले ।'' उस ने फ़ौरन अ़र्ज़ की, ''मैं ने तौबा की ।'' एक और शख़्स के वुज़ू (में इस्ति'माल होने वाले पानी) के क़त़रे टपक्ते देखे, आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تعالٰی عَلَیْہ ने उस शख़्स से इर्शाद फ़रमाया, ''ऐ मेरे भाई ! तू ज़िना से तौबा कर ले ।'' उस ने अ़र्ज़ की, ''मैं ने तौबा की ।'' एक और शख़्स के वुज़ू के क़त़रात टपक्ते देखे तो उसे फ़रमाया, ''शराब नोशी और गाने बाजे सुनने से तौबा कर ले ।'' उस ने अ़र्ज़ की : ''मैं ने तौबा की ।'' सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर कश्फ़ के बाइ़स चूंकि लोगों के उ़यूब ज़ाहिर हो जाते थे लिहाज़ा आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में इस कश्फ़ के ख़त्म हो जाने की दुआ़ मांगी, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने दुआ़ क़बूल फ़रमा ली जिस से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को वुज़ू करने वालों के गुनाह झड़ते नज़र आना बन्द हो गए।

(المیزان الکبریٰ ج۱ ص۱۳۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ब्र में आग भड़क उठी !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन शुरह़बील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स इन्तिक़ाल कर गया जिस को लोग मुत्तक़ी और परहेज़ गार समझते थे। जब उसे क़ब्र में दफ़्न किया गया तो फ़िरिश्तों ने फ़रमाया : "हम तुझ को **अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ाब के **100** कोड़े मारेंगे।" उस ने पूछा : "क्यूं मारोगे ? मैं तो तक़्वा व परहेज़ गारी को इख़्तियार किये हुए था।" तो फ़िरिश्तों ने फ़रमाया : "चलो पचास**50** कोड़े ही मार देंगे।" इस पर वोह शख़्स बराबर बह़्स करता रहा यहां तक कि वोह फ़िरिश्ते एक कोड़े पर आ गए और उन्हों ने **अ़ज़ाबे इलाही का एक कोड़ा मारा जिस से तमाम क़ब्र में आग भड़क उठी !** तो उस ने पूछा कि तुम ने मुझे कोड़ा क्यूं मारा ? फ़िरिश्तों ने जवाब दिया : "तूने एक दिन जान बूझ कर **बे वुज़ू नमाज़** पढ़ी थी। और एक मर्तबा एक मज़्लूम तेरे पास फ़रियाद ले कर आया मगर तूने उस की मदद न की।" (شرح الصّدور ص۱۶۵، حِلیۃُ الاولیاء ج۴ ص۱۵۷ رقم ۵۱۰۱)

इस्लामी बहनो ! बे वुज़ू **नमाज़** पढ़ना सख़्त **जुरअत** की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

बात है। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام यहां तक फ़रमाते हैं : बिला उ़ज़्र जान बूझ कर जाइज़ समझ कर या इस्तिह्ज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुए) **बिग़ैर वुज़ू** के **नमाज़** पढ़ना कुफ़्र है। (منح الروض الازھر للقاری ص٤٦٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"बा वुज़ू रहना सवाब है" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से 15 म-दनी फूल

﴾1﴿ **नमाज़** ﴾2﴿ सज्दए तिलावत और ﴾3﴿ क़ुरआने अ़ज़ीम छूने के लिये वुज़ू करना फ़र्ज़ है। (نورُ الایضاح ص١٨) ﴾4﴿ त़वाफ़े बैतुल्लाह शरीफ़ के लिये वुज़ू करना वाजिब है (ایضاً) ﴾5﴿ ग़ुस्ले जनाबत से पहले और ﴾6﴿ जनाबत से नापाक होने वाली को खाने, पीने और सोने के लिये और ﴾7﴿ ह़ुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए मुबा-रका की ज़ियारत और ﴾8﴿ वुक़ूफ़े अ़-रफ़ा और ﴾9﴿ सफ़ा व मर्वह के दरमियान सअ़्य के लिये वुज़ू करना **सुन्नत** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 24) ﴾10﴿ सोने के लिये और ﴾11﴿ नींद से बेदार होने पर ﴾12﴿ जिमाअ़ से पहले और ﴾13﴿ जब ग़ुस्सा आ जाए उस वक़्त और ﴾14﴿ ज़बानी क़ुरआने अ़ज़ीम पढ़ने के लिये और ﴾15﴿ दीनी कुतुब छूने के लिये वुज़ू करना मुस्तह़ब है। (ایضاً،نورُ الایضاح ص١٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

इस्लामी बहनों के वुज़ू का त़रीक़ा (ह़–नफ़ी)

का'बतुल्लाह शरीफ़ की त़रफ़ मुंह कर के ऊंची जगह बैठना मुस्तह़ब है । **वुज़ू** के लिये **निय्यत** करना सुन्नत है । निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी कह लेना अफ़्ज़ल है । लिहाज़ा ज़बान से इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ बजा लाने और पाकी ह़ासिल करने के लिये वुज़ू कर रही हूं । **बिस्मिल्लाह** कह लीजिये कि येह भी **सुन्नत** है । बल्कि **بسمِ اللّٰہِ وَالْحمدُ لِلّٰہ** कह लीजिये कि जब तक बा वुज़ू रहेंगी फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج١ص٥١٣ حديث ١١١٢) अब दोनों हाथ तीन तीन बार पहुंचों तक धोइये, (नल बन्द कर के) दोनों हाथों की उंग्लियों का ख़िलाल भी कीजिये । कम अज़ कम तीन बार दाएं बाएं ऊपर नीचे के दांतों में **मिस्वाक** कीजिये और हर बार **मिस्वाक** को धो लीजिये । **हुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, "मिस्वाक करते वक़्त **नमाज़** में क़ुरआने मजीद की क़िराअत और **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुंह पाक करने की निय्यत करनी चाहिये ।" (اِحْيَاءُ الْعُلُوْم ج ١ ص١٨٢) अब सीधे हाथ के तीन चुल्लू पानी से (हर बार नल बन्द कर के) इस त़रह़ **तीन कुल्लियां** कीजिये कि हर बार मुंह के हर पुर्ज़े पर पानी बह जाए अगर रोज़ा न हो तो **ग़र–ग़रा** भी कर लीजिये । फिर सीधे ही हाथ के तीन चुल्लू (अब हर बार आधा चुल्लू पानी काफ़ी है) से (हर बार नल बन्द कर के) **तीन बार नाक** में नर्म गोश्त तक पानी चढ़ाइये और अगर

रोज़ा न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाइये, अब (नल बन्द कर के) उल्टे हाथ से नाक साफ़ कर लीजिये और छोटी उंगली नाक के सूराख़ों में डालिये । **तीन बार सारा चेहरा** इस त़रह़ धोइये कि जहां से आ़दतन सर के बाल उगना शुरूअ़ होते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक हर जगह पानी बह जाए । फिर पहले **सीधा हाथ** उंग्लियों के सिरे से धोना शुरूअ़ कर के कोहनियों समेत तीन बार धोइये । इसी त़रह़ फिर **उल्टा हाथ** धो लीजिये । दोनों हाथ आधे बाज़ू तक धोना मुस्तह़ब है । अगर चूड़ी, कंगन या कोई से भी ज़ेवरात पहने हुए हों तो उन को हिला लीजिये ताकि पानी उन के नीचे की जिल्द पर बह जाए । अगर उन के हिलाए बिग़ैर पानी बह जाता है तो हिलाने की ह़ाजत नहीं और अगर बिग़ैर हिलाए या बिग़ैर उतारे पानी नहीं पहुंचेगा तो पहली सूरत में हिलाना और दूसरी सूरत में उतारना ज़रूरी है । **अक्सर इस्लामी बहनें चुल्लू में पानी ले कर पहुंचे से तीन[3] बार छोड़ देती हैं कि कोहनी तक बहता चला जाता है इस त़रह़ करने से कोहनी और कलाई की करवटों पर पानी न पहुंचने का अन्देशा है लिहाज़ा बयान कर्दा त़रीक़े पर हाथ धोइये । अब चुल्लू भर कर कोहनी तक पानी बहाने की ह़ाजत नहीं बल्कि** (बिग़ैर इजाज़ते सह़ीह़ा ऐसा करना) **येह पानी का इसराफ़ है** । अब (नल बन्द कर के) **सर का मस्ह़** इस त़रह़ कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंग्लियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंग्लियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और

पेशानी के बाल या खाल पर रख कर ज़रा सा दबा कर खींचते हुए गुद्दी तक इस त़रह़ ले जाइये कि इस दौरान उन उंग्लियों का कोई ह़िस्सा बालों से जुदा न रहे मगर हथेलियां सर से जुदा रहें, सिर्फ़ उन बालों पर मस्ह़ कीजिये जो सर के ऊपर हैं। फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंग्लियां और अंगूठे इस दौरान सर पर बिल्कुल मस नहीं होने चाहिएं, फिर कलिमे की उंग्लियों से कानों की अन्दरूनी सत़्ह़ का और अंगूठों से कानों की बाहरी सत़्ह़ का मस्ह़ कीजिये और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाख़िल कीजिये और उंग्लियों की पुश्त से गरदन के पिछले ह़िस्से का मस्ह़ कीजिये, **बा 'ज़ इस्लामी बहनें** गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाइयों का मस्ह़ करती हैं येह सुन्नत नहीं है। **सर का मस्ह़ करने से क़ब्ल टोंटी अच्छी त़रह़ बन्द करने की आ़दत बना लीजिये** बिला वज्ह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपक कर ज़ाएअ़ होता रहे इसराफ़ है। अब **पहले सीधा फिर उल्टा पाउं** हर बार उंग्लियों से शुरूअ़ कर के टख़्नों के ऊपर तक बल्कि मुस्तह़ब है कि आधी पिंडली तक तीन तीन बार धो लीजिये। दोनों पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना सुन्नत है। (ख़िलाल के दौरान नल बन्द रखिये) इस का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ की छुंग्लिया (छोटी उंगली) से सीधे पाउं की छुंग्लिया का ख़िलाल शुरूअ़ कर के अंगूठे पर ख़त्म कीजिये और उल्टे ही हाथ की छुंग्लिया से उल्टे पाउं के अंगूठे से शुरूअ़ कर के छुंग्लिया पर ख़त्म कर लीजिये। (عامۂ کتب)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

हु़ज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى फ़रमाते हैं, ''हर उ़ज़्व धोते वक़्त येह उम्मीद करता रहे कि मेरे इस उ़ज़्व के गुनाह निकल रहे हैं ।'' (اِحْيَاءُ الْعُلُوْم ج۱ ص ۱۸۳ مُلَخَّصاً)

वुज़ू के बा'द येह दुआ़ पढ़ लीजिये (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۔
(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۱ ص۱۲۱ حدیث۵۵)

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे कसरत से तौबा करने वालों में बना दे और मुझे पाकीज़ा रहने वालों में शामिल कर दे ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

जन्नत के आठों दरवाज़े खुल जाते हैं

कलिमए शहादत या'नी **''اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ''** भी पढ़ लीजिये कि **ह़दीसे** पाक में है : ''जिस ने अच्छी त़रह़ वुज़ू किया और कलिमए शहादत पढ़ा उस के लिये **जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं** जिस से चाहे अन्दर दाख़िल हो ।'' (صَحِيح مُسلِم، ص۱۴۴۔۱۴۵ حديث ۲۳۴)

जो वुज़ू करने के बा'द येह कलिमात पढ़े : **سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَ اَتُوْبُ اِلَيْكَ** ''ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं मैं गवाही देता (देती) हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता (चाहती) हूं और तेरी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है । (ابویعلی)

बारगाह में तौबा करता (करती) हूं ।'' तो उस पर मोहर लगा कर अ़र्श के नीचे रख दिया जाएगा और क़ियामत के दिन इस पढ़ने वाले को दे दिया जाएगा । (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۲۱ رقم ۲۷۵۴)

वुज़ू के बा'द सूरए क़द्र पढ़ने के फ़ज़ाइल

ह़दीसे मुबारक में है : ''जो वुज़ू के बा'द **एक** मर्तबा सूरए क़द्र पढ़े तो वोह **सिद्दीक़ीन** में से है और जो दो मर्तबा पढ़े तो शु-हदा में शुमार किया जाए और जो तीन मर्तबा पढ़ेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैदाने मह़शर में उसे अपने **अम्बिया** के साथ रखेगा ।''

(کنزالعُمّال ج۹ ص۱۳۲ رقم ۲۶۰۸۵، اَلحاوی لِلفتاوی للسُّیوطی ج۱ ص ۴۰۲ ۔۴۰۳)

नज़र कभी कमज़ोर न हो

जो वुज़ू के बा'द आस्मान की त़रफ़ देख कर (एक बार) **सूरए** **اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰـهُ** पढ़ लिया करे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ उस की नज़र कभी कमज़ोर न होगी । (मसाइलुल कुरआन, स. 291)

तसव्वुफ़ का अ़ज़ीम म-दनी नुस्ख़ा

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : ''वुज़ू से फ़राग़त के बा'द जब आप नमाज़ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हों उस वक़्त येह तसव्वुर कीजिये कि जिन ज़ाहिरी आ'ज़ा पर लोगों की नज़र पड़ती है वोह तो ब ज़ाहिर त़ाहिर (या'नी पाक) हो चुके मगर दिल को पाक किये बिग़ैर बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मुनाजात करना ह़या के ख़िलाफ़ है क्यूं कि **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ दिलों को भी देखने वाला है।'' मज़ीद फ़रमाते हैं, ज़ाहिरी वुज़ू कर लेने वाले को येह बात याद रखनी चाहिये कि दिल की त़हारत (या'नी सफ़ाई) तौबा करने और गुनाहों को छोड़ने और उ़म्दा अख़्लाक़ अपनाने से होती है। जो शख़्स दिल को गुनाहों की आलू-दगियों से पाक नहीं करता फ़क़त ज़ाहिरी त़हारत (या'नी सफ़ाई) और ज़ैबो ज़ीनत पर इक्तिफ़ा करता है उस की मिसाल उस शख़्स की सी है जो बादशाह को मद्ऊ़ करता है और अपने घरबार को बाहर से ख़ूब चमकाता है और रंगो रोग़न करता है मगर मकान के अन्दरूनी ह़िस्से की सफ़ाई पर कोई तवज्जोह नहीं देता। चुनान्चे जब बादशाह उस के मकान के अन्दर आ कर गन्दगियां देखेगा तो वोह नाराज़ होगा या राज़ी, येह हर ज़ी शुऊ़र ख़ुद समझ सकता है। (اِحیاءُ العُلُوم ج۱ص۱۸۵مُلَخَّصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''अल्लाह'' के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के चार फ़राइज़

《1》 **चेहरा धोना :** या'नी चेहरे का लम्बाई में पेशानी जहां से बाल उ़मूमन उगते हैं वहां से ले कर ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से ले कर दूसरे कान की लौ तक एक मर्तबा धोना।

《2》 **कोहनियों समेत दोनों हाथ धोना :** या'नी दोनों हाथों का कोहनियों समेत इस त़रह़ धोना कि उंग्लियों के नाख़ुनों से ले कर कोहनियों समेत एक बाल भी ख़ुश्क न रहे।

﴾3﴿ **चौथाई सर का मस्ह़ करना :** या'नी हाथ तर कर के सर के चौथाई बालों पर मस्ह़ करना ।

﴾4﴿ **टख़्नों समेत दोनों पाउं धोना :** या'नी दोनों पाउं को टख़्नों समेत इस त़रह़ धोना कि कोई जगह ख़ुश्क न रहे ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 10, عالمگیری، ج۱، ص۳، ٤،٥)

म–दनी फूल : इन चार फ़र्ज़ों में से अगर एक फ़र्ज़ भी रह गया तो वुज़ू न होगा और जब वुज़ू न होगा तो नमाज़ भी न होगी ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

धोने की ता'रीफ़

किसी उ़ज़्व को धोने के येह मा'ना हैं कि उस उ़ज़्व के हर ह़िस्से पर कम अज़ कम दो क़त़रे पानी बह जाए । सिर्फ़ भीग जाने या पानी को तेल की त़रह़ **चुपड़ लेने** या एक क़त़रा बह जाने को धोना नहीं कहेंगे न इस त़रह़ वुज़ू या ग़ुस्ल अदा होगा ।

(फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 1, स. 218, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 10)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"या रह़्मतल्लिल आ–लमीन" के तेरह़ ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू की 13 सुन्नतें

"**वुज़ू** का त़रीक़ा" (ह़–नफ़ी) में बा'ज़ सुन्नतों और मुस्तह़ब्बात का बयान हो चुका है इस की मज़ीद वज़ाह़त मुला–ह़ज़ा कीजिये ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे । (شعب الایمان)

﴾1﴿ निय्यत करना ﴾2﴿ बिस्मिल्लाह पढ़ना । अगर वुज़ू से क़ब्ल **بِسْمِ اللّٰہِ وَالْحَمْدُلِلّٰہ** कह लें तो जब तक बा वुज़ू रहेंगी फ़िरिश्ते नेकियां लिखते रहेंगे । (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج۱ ص۵۱۳ حدیث ۱۱۱۲ مُلَخَّصاً) ﴾3﴿ दोनों हाथ पहुंचों तक तीन बार धोना ﴾4﴿ तीन बार मिस्वाक करना ﴾5﴿ तीन चुल्लू से तीन बार कुल्ली करना ﴾6﴿ रोज़ा न हो तो ग़र-ग़रा करना ﴾7﴿ तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाना ﴾8﴿ हाथ और ﴾9﴿ पाउं की उंग्लियों का ख़िलाल करना ﴾10﴿ पूरे सर का एक ही बार मस्ह़ करना ﴾11﴿ कानों का मस्ह़ करना ﴾12﴿ फ़राइज़ में तरतीब क़ाइम रखना (या'नी फ़र्ज़ आ'ज़ा में पहले मुंह फिर हाथ कोहनियों समेत धोना फिर सर का मस्ह़ करना और फिर पाउं धोना) और ﴾13﴿ पै दर पै वुज़ू करना या'नी एक उ़ज़्व सूखने न पाए कि दूसरा उ़ज़्व धो लेना ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 14, 18, मुलख़्ख़सन)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"या रसूलल्लाह तेरे दर की फ़ज़ाओं को सलाम" के उन्तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के 29 मुस्तह़ब्बात

﴾1﴿ क़िब्ला रू ﴾2﴿ ऊंची जगह ﴾3﴿ बैठना ﴾4﴿ पानी बहाते वक़्त आ'ज़ा पर हाथ फैरना ﴾5﴿ इत़्मीनान से वुज़ू करना ﴾6﴿ आ'ज़ाए वुज़ू पर पहले पानी चुपड़ लेना ख़ुसूसन सर्दियों में ﴾7﴿ वुज़ू करने में बिग़ैर ज़रूरत किसी से मदद न लेना ﴾8﴿ सीधे हाथ से कुल्ली करना ﴾9﴿ सीधे हाथ से नाक में पानी चढ़ाना ﴾10﴿ उल्टे हाथ से नाक साफ़ करना ﴾11﴿ उल्टे हाथ की छुंग्लिया नाक में डालना ﴾12﴿ उंग्लियों

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे। (جمع الجوامع)

की पुश्त से गरदन की पुश्त का मस्ह़ करना **《13》** कानों का मस्ह़ करते वक़्त भीगी हुई छुंग्लियां (या'नी छोटी उंग्लियां) कानों के सूराख़ों में दाखि़ल करना **《14》** अंगूठी को ह़-र-कत देना जब कि ढीली हो और येह यक़ीन हो कि इस के नीचे पानी बह गया है अगर सख़्त हो तो ह़-र-कत दे कर अंगूठी के नीचे पानी बहाना **फ़र्ज़** है **《15》** मा'ज़ूरे शर-ई (इस के तफ़्सीली अह़काम इसी रिसाले के सफ़ह़ा 44 ता 48 पर मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये) न हो तो नमाज़ का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले ही वुज़ू कर लेना **《16》** **इस्लामी बहन** जो कामिल त़ौर पर वुज़ू करती है या'नी जिस की कोई जगह पानी बहने से न रह जाती हो उस का कूओं (या'नी नाक की त़रफ़ आंखों के कोने) टख़्नों, एड़ियों, तल्वों, कूंचों (या'नी एड़ियों के ऊपर मोटे पठ्ठे), घाइयों (उंग्लियों के दरमियान वाली जगहों) और कोहनियों का ख़ुसूसिय्यत के साथ ख़याल रखना और बे ख़याली करने वालियों के लिये तो फ़र्ज़ है कि इन जगहों का ख़ास ख़याल रखें कि अक्सर देखा गया है कि येह जगहें ख़ुश्क रह जाती हैं और येह बे ख़याली ही का नतीजा है ऐसी बे ख़याली ह़राम है और ख़याल रखना फ़र्ज़। **《17》** वुज़ू का लोटा उल्टी त़रफ़ रखिये अगर त़श्त या पतीली वग़ैरा से वुज़ू करें तो सीधी जानिब रखिये **《18》** चेहरा धोते वक़्त पेशानी पर इस त़रह़ फैला कर पानी डालना कि ऊपर का कुछ ह़िस्सा भी धुल जाए **《19》** चेहरे और **《20》** हाथ पाउं की रोशनी वसीअ़ करना या'नी जितनी जगह पानी बहाना फ़र्ज़ है उस के अत़राफ़ में कुछ बढ़ाना म-सलन हाथ कोहनी से ऊपर आधे बाज़ू तक

और पाउं टख़्नों से ऊपर आधी पिंडली तक धोना ❴21❵ दोनों हाथों से मुंह धोना ❴22❵ हाथ पाउं धोने में उंग्लियों से शुरूअ़ करना ❴23❵ हर उ़ज़्व धोने के बा'द उस पर हाथ फैर कर बूंदें टपका देना ताकि बदन या कपड़े पर न टपकें ❴24❵ हर उ़ज़्व के धोते वक़्त और मस्ह़ करते वक़्त निय्यते वुज़ू का ह़ाज़िर रहना ❴25❵ इब्तिदा में **बिस्मिल्लाह** के साथ साथ दुरूद शरीफ़ और कलिमए शहादत पढ़ लेना ❴26❵ आ'ज़ाए वुज़ू बिला ज़रूरत न पोंछें अगर पोंछना हो तब भी बिला ज़रूरत बिल्कुल **ख़ुश्क** न करें कुछ तरी बाक़ी रखें कि बरोज़े क़ियामत नेकियों के पलड़े में रखी जाएगी ❴27❵ वुज़ू के बा'द हाथ न झटकें कि शैत़ान का पंखा है ❴28❵ बा'दे वुज़ू मियानी (या'नी पाजामा का वोह ह़िस्सा जो पेशाब गाह के क़रीब होता है) पर पानी छिड़क्ना । (पानी छिड़क्ते वक़्त मियानी को कुर्ते के दामन में छुपाए रखना मुनासिब है नीज़ वुज़ू करते वक़्त भी बल्कि हर वक़्त पर्दे में पर्दा करते हुए मियानी को कुर्ते के दामन या चादर वग़ैरा के ज़रीए़ छुपाए रखना ह़या के क़रीब है) ❴29❵ अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना जिसे तह़िय्य्तुल वुज़ू कहते हैं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 18, 22)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"बा वुज़ू रहना सवाब है" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के 15 मक्रूहात

❴1❵ वुज़ू के लिये नापाक जगह पर बैठना ❴2❵ नापाक जगह वुज़ू का पानी गिराना ❴3❵ आ'ज़ाए वुज़ू से लोटे वग़ैरा में क़त़्रे

टपकाना (मुंह धोते वक़्त भरे हुए चुल्लू में उ़मूमन चेहरे से पानी के क़त़रे गिरते हैं इस का ख़याल रखिये) ﴾4﴿ क़िब्ले की त़रफ़ थूक या बल्ग़म डालना या कुल्ली करना ﴾5﴿ ज़ियादा पानी ख़र्च करना (सदरुश्शरीअ़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى "बहारे शरीअ़त" हिस्सए दुवुम सफ़ह़ा नम्बर 24 में फ़रमाते हैं : नाक में पानी डालते वक़्त आधा चुल्लू काफ़ी है तो अब पूरा चुल्लू लेना इसराफ़ है) ﴾6﴿ इतना कम पानी ख़र्च करना कि सुन्नत अदा न हो (टोंटी न इतनी ज़ियादा खोलें कि पानी ह़ाजत से ज़ियादा गिरे न इतनी कम खोलें कि सुन्नत भी अदा न हो बल्कि मु–तवस्सित़ हो) । ﴾7﴿ मुंह पर पानी मारना ﴾8﴿ मुंह पर पानी डालते वक़्त फूंकना ﴾9﴿ एक हाथ से मुंह धोना कि रवाफ़िज़ और हिन्दूओं का शिआ़र है ﴾10﴿ गले का मस्ह़ करना ﴾11﴿ उल्टे हाथ से कुल्ली करना या नाक में पानी चढ़ाना ﴾12﴿ सीधे हाथ से नाक साफ़ करना ﴾13﴿ तीन जदीद पानियों से तीन बार सर का मस्ह़ करना ﴾14﴿ धूप के गर्म पानी से वुज़ू करना ﴾15﴿ होंट या आंखें ज़ोर से बन्द करना और अगर कुछ सूखा रह गया तो वुज़ू ही न होगा । **वुज़ू की हर सुन्नत का तर्क मक्रूह है इसी त़रह़ हर मक्रूह का तर्क सुन्नत ।** (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 22, 23)

धूप के गर्म पानी की वज़ाह़त

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى मक–त–बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** हि़स्सा 2 सफ़ह़ा 23 के ह़ाशिये पर लिखते

हैं : "जो पानी धूप से गर्म हो गया उस से वुज़ू करना मुत़्लक़न मक्रूह नहीं बल्कि इस में चन्द क़ुयूद हैं, जिन का ज़िक्र पानी के बाब में आएगा और उस से वुज़ू की कराहत, तन्ज़ीही है तह़रीमी नहीं।" पानी के बाब में सफ़ह़ा 56 पर लिखते हैं : "जो पानी गर्म मुल्क में गर्म मौसिम में सोने चांदी के सिवा किसी और धात के बरतन में धूप में गर्म हो गया, तो जब तक गर्म है उस से वुज़ू और ग़ुस्ल न चाहिये, न उस को पीना चाहिये बल्कि बदन को किसी त़रह़ पहुंचना न चाहिये, यहां तक कि अगर उस से कपड़ा भीग जाए तो जब तक ठन्डा न हो ले उस के पहनने से बचें कि उस पानी के इस्ति'माल में अन्देशए बरस (या'नी कोढ़ का ख़त़रा) है, फिर भी अगर वुज़ू या ग़ुस्ल कर लिया तो हो जाएगा।" (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 23, 56)

"मुस्ता'मल पानी से वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होता" के सत्ताईस ह़ुरूफ़ की निस्बत से मुस्ता'मल पानी के मु-तअ़ल्लिक़ 27 म-दनी फूल

﴾1﴿ जो पानी वुज़ू या ग़ुस्ल करने में बदन से गिरा वोह पाक है मगर चूंकि अब मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो चुका है लिहाज़ा इस से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ नहीं ﴾2﴿ यूंही अगर बे वुज़ू शख़्स का हाथ या उंगली या पोरा या नाख़ुन या बदन का कोई टुकड़ा जो वुज़ू में धोया जाता हो ब क़स्द (या'नी जान बूझ कर) या बिला क़स्द (या'नी बे ख़याली में) दह दर दह (10x10) से कम पानी में बे धोए हुए पड़ जाए तो वोह पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के लाइक़ न रहा ﴾3﴿ इसी त़रह़ जिस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

शख़्स पर नहाना फ़र्ज़ है उस के जिस्म का कोई बे धुला हुवा ह़िस्सा दह दर दह से कम पानी से छू जाए तो वोह पानी वुज़ू और ग़ुस्ल के काम का न रहा ﴾**4**﴿ अगर धुला हुवा हाथ या बदन का कोई ह़िस्सा पड़ जाए तो ह़रज नहीं ﴾**5**﴿ ह़ाएज़ा (या'नी ह़ैज़ वाली) ह़ैज़ से या निफ़ास वाली निफ़ास से पाक तो हो चुकी हो मगर अभी ग़ुस्ल न किया हो तो उस के जिस्म का कोई उ़ज़्व या ह़िस्सा धोने से क़ब्ल अगर दह दर दह (10x10) से कम पानी में पड़ा तो वोह पानी मुस्ता'मल (या'नी इस्ति'माल शुदा) हो जाएगा ﴾**6**﴿ जो पानी कम अज़ कम दह दर दह हो वोह बहते पानी और जो दह दर दह से कम हो वोह ठहरे पानी के हुक्म में होता है ﴾**7**﴿ उ़मूमन ह़म्माम के टब, घरेलू इस्ति'माल के डोल, बाल्टी पतीले, लोटे वग़ैरा दह दर दह से कम होते हैं इन में भरा हुवा पानी ठहरे पानी के हुक्म में होता है ﴾**8**﴿ आ'ज़ाए वुज़ू में से अगर कोई उ़ज़्व धो लिया था और इस के बा'द वुज़ू टूटने वाला कोई अ़मल न हुवा था तो वोह धुला हुवा ह़िस्सा ठहरे पानी में डालने से पानी मुस्ता'मल न होगा ﴾**9**﴿ जिस शख़्स पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं उस ने अगर कोहनी समेत हाथ धो लिया हो तो पूरा हाथ ह़त्ता कि कोहनी के बा'द वाला ह़िस्सा भी ठहरे पानी में डालने से पानी मुस्ता'मल न होगा ﴾**10**﴿ बा वुज़ू ने या जिस का हाथ धुला हुवा है उस ने अगर फिर धोने की निय्यत से डाला और येह धोना सवाब का काम हो म–सलन खाना खाने या वुज़ू की निय्यत से ठहरे पानी में डाला तो मुस्ता'मल हो जाएगा ﴾**11**﴿ ह़ैज़ या निफ़ास वाली का जब तक ह़ैज़ या निफ़ास बाक़ी है ठहरे पानी में बे धुला हाथ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

या बदन का कोई ह़िस्सा डालेगी पानी मुस्ता'मल नहीं होगा हां अगर येह भी सवाब की निय्यत से डालेगी तो मुस्ता'मल हो जाएगा। म-सलन इस के लिये मुस्तह़ब है कि पांचों नमाज़ों के अवक़ात में और अगर इशराक़, चाश्त व तहज्जुद की आ़दत रखती हो तो इन वक़्तों में बा वुज़ू कुछ देर ज़िक्रो दुरूद कर लिया करे ताकि इबादत की आ़दत बाक़ी रहे तो अब इन के लिये ब निय्यते वुज़ू बे धुला हाथ ठहरे पानी में डालेगी तो पानी मुस्ता'मल हो जाएगा ﴾12﴿ पानी का गिलास, लोटा या बाल्टी वग़ैरा उठाते वक़्त एह़तियात़ ज़रूरी है ताकि बे धुली उंग्लियां पानी में न पड़ें ﴾13﴿ दौराने वुज़ू अगर ह़दस हुवा या'नी वुज़ू टूटने वाला कोई अ़मल हुवा तो जो आ'ज़ा पहले धो चुके थे वोह बे धुले हो गए यहां तक कि अगर चुल्लू में पानी था तो वोह भी मुस्ता'मल हो गया ﴾14﴿ अगर दौराने ग़ुस्ल वुज़ू टूटने वाला अ़मल हुवा तो सिर्फ़ आ'ज़ाए वुज़ू बे धुले हुए जो जो आ'ज़ाए ग़ुस्ल धुल चुके हैं वोह बे धुले न हुए ﴾15﴿ ना बालिग़ या ना बालिग़ा का पाक बदन अगर्चे ठहरे पानी म-सलन पानी की बाल्टी या टब वग़ैरा में मुकम्मल डूब जाए तब भी पानी मुस्ता'मल न हुवा ﴾16﴿ समझदार बच्ची या समझदार बच्चा अगर सवाब की निय्यत से म-सलन वुज़ू की निय्यत से ठहरे पानी में हाथ की उंगली या उस का नाख़ुन भी अगर डालेगा तो मुस्ता'मल हो जाएगा ﴾17﴿ ग़ुस्ले मय्यित का पानी मुस्ता'मल है जब कि उस में कोई नजासत न हो ﴾18﴿ अगर ब ज़रूरत ठहरे पानी में हाथ डाला तो पानी मुस्ता'मल न हुवा म-सलन देग या बड़े मटके या बड़े पीपे (DRUM)

में पानी है इसे झुका कर नहीं निकाल सकते न ही कोई छोटा बरतन है कि उस से निकाल लें तो ऐसी मजबूरी की सूरत में ब क़-दरे ज़रूरत बे धुला हाथ पानी में डाल कर उस से पानी निकाल सकते हैं **《19》** अच्छे पानी में अगर मुस्ता'मल पानी मिल जाए और अगर अच्छा पानी ज़ियादा है तो सब अच्छा हो गया म-सलन वुज़ू या ग़ुस्ल के दौरान लोटे या घड़े में क़त़रे टपके तो अगर अच्छा पानी ज़ियादा है तो येह वुज़ू और ग़ुस्ल के काम का है वरना सारा ही बेकार हो गया **《20》** पानी में बे धुला हाथ पड़ गया या किसी त़रह़ मुस्ता'मल हो गया और चाहें कि येह काम का हो जाए तो जितना मुस्ता'मल पानी है उस से ज़ियादा मिक़्दार में अच्छा पानी उस में मिला लीजिये, सब काम का हो जाएगा नीज़ **《21》** एक त़रीक़ा येह भी है कि उस में एक त़रफ़ से पानी डालें कि दूसरी त़रफ़ बह जाए सब काम का हो जाएगा **《22》** मुस्ता'मल पानी पाक होता है अगर इस से नापाक बदन या कपड़े वग़ैरा धोएंगे तो पाक हो जाएंगे **《23》** मुस्ता'मल पानी पाक है इस का पीना या इस से रोटी खाने के लिये आटा गूंधना मक्रूहे तन्ज़ीही है **《24》** होंटों का वोह ह़िस्सा जो आ़दतन बन्द करने के बा'द ज़ाहिर रहता है वुज़ू में इस का धोना फ़र्ज़ है लिहाज़ा कटोरे या गिलास से पानी पीते वक़्त एह़तियात़ की जाए कि होंटों का मज़्कूरा ह़िस्सा ज़रा सा भी पानी में पड़ेगा पानी मुस्ता'मल हो जाएगा **《25》** अगर बा वुज़ू है या कुल्ली कर चुका है या होंटों का वोह ह़िस्सा धो चुका है और इस के बा'द वुज़ू तोड़ने वाला कोई अ़मल वाक़ेअ़ नहीं हुवा तो अब पड़ने से पानी मुस्ता'मल न होगा

《26》 दूध, कॉफ़ी, चाय, फलों के रस वग़ैरा मशरूबात में बे धुला हाथ वग़ैरा पड़ने से येह मुस्ता'मल नहीं होते और इन से तो वैसे भी वुज़ू या गुस्ल नहीं होता 《27》 पानी पीते हुए मूंछों के बे धुले बाल गिलास के पानी में लगे तो पानी मुस्ता'मल हो गया इस का पीना मक्रूह है। अगर बा वुज़ू था या मूंछें धुली हुई थीं तो शरअ़न ह़रज नहीं।

(मुस्ता'मल पानी के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 2 सफ़ह़ा 37 ता 248, बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 2 सफ़ह़ा 55 ता 56 और फ़तावा अमजदिय्या जि. 1 सफ़ह़ा 14 ता 15 मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"सब्र कर" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से ज़ख़्म वग़ैरा से ख़ून निकलने के 5 अह़काम

《1》 ख़ून, पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और उस के बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाह़ियत थी जिस जगह का वुज़ू या गुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो वुज़ू जाता रहा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 26) 《2》 ख़ून अगर चमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाक़ू का कनारा लग जाता है और ख़ून उभर या चमक जाता है या ख़िलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांझे या दांत से कोई चीज़ म-सलन सेब वग़ैरा काटा उस पर ख़ून का असर ज़ाहिर हुवा या नाक में उंगली डाली इस पर ख़ून की सुर्ख़ी आ गई मगर वोह ख़ून बहने के क़ाबिल न था **वुज़ू नहीं टूटा**। (ऐज़न) 《3》 अगर बहा

मगर बह कर ऐसी जगह नहीं आया जिस का ग़ुस्ल या वुज़ू में धोना फ़र्ज़ हो म-सलन आंख में दाना था और टूट कर अन्दर ही फैल गया बाहर नहीं निकला या पीप या ख़ून कान के सूराख़ों के अन्दर ही रहा बाहर न निकला तो इन सूरतों में वुज़ू न टूटा। (ऐज़न, स. 27) ﴾4﴿ ज़ख़्म बेशक बड़ा है रत़ूबत चमक रही है मगर जब तक बहेगी नहीं **वुज़ू** नहीं टूटेगा। (ऐज़न) ﴾5﴿ ज़ख़्म का ख़ून बार बार पोंछती रहीं कि बहने की नौबत न आई तो ग़ौर कर लीजिये कि अगर इतना ख़ून पोंछ लिया है कि अगर न पोंछतीं तो बह जाता तो **वुज़ू टूट गया** नहीं तो नहीं। (ऐज़न)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

थूक में ख़ून से कब वुज़ू टूटेगा

मुंह से ख़ून निकला अगर थूक पर ग़ालिब है तो वुज़ू टूट जाएगा वरना नहीं। ग़-लबे की शनाख़्त येह है कि अगर थूक का रंग सुर्ख़ हो जाए तो ख़ून ग़ालिब समझा जाएगा और वुज़ू टूट जाएगा येह **सुर्ख़** थूक नापाक भी है। अगर **थूक** ज़र्द हो तो ख़ून पर थूक ग़ालिब माना जाएगा लिहाज़ा न वुज़ू टूटेगा न येह ज़र्द थूक नापाक।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 27)

ख़ून वाले मुंह की कुल्ली की एह़तियातें

मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक सुर्ख़ हो गया और लोटे या गिलास से मुंह लगा कर कुल्ली के लिये पानी लिया तो लोटा गिलास और कुल पानी नजिस हो गया लिहाज़ा ऐसे मौक़अ़ पर चुल्लू में पानी

ले कर एह़तियात़ से कुल्ली कीजिये और येह भी एह़तियात़ फ़रमाइये कि छींटे उड़ कर आप के कपड़ों वग़ैरा पर न पड़ें।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इन्जेक्शन लगाने से वुज़ू टूटेगा या नहीं ?

﴾1﴿ गोश्त में इन्जेक्शन लगाने में सिर्फ़ उसी सूरत में वुज़ू टूटेगा जब कि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकले ﴾2﴿ जब कि नस का इन्जेक्शन लगा कर पहले ख़ून ऊपर की त़रफ़ खींचते हैं जो कि बहने की मिक़्दार में होता है लिहाज़ा वुज़ू टूट जाता है। ﴾3﴿ इसी त़रह़ ग्लूकोज़ वग़ैरा की ड्रिप नस में लगवाने से वुज़ू टूट जाएगा क्यूं कि बहने की मिक़्दार में ख़ून निकल कर नल्की में आ जाता है। हां अगर बहने की मिक़्दार में ख़ून नल्की में न आए तो वुज़ू नहीं टूटेगा।

दुखती आंख के आंसू

﴾1﴿ **दुखती** आंख से जो आंसू बहा वोह नापाक है और वुज़ू भी तोड़ देगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 32) अफ़्सोस अक्सर **इस्लामी बहनें** इस मस्अले से ना वाक़िफ़ होती हैं और **दुखती आंख** से ब वज्हे मरज़ बहने वाले आंसू को और आंसूओं की मानिन्द समझ कर आस्तीन या कुर्ते के दामन वग़ैरा से पोंछ कर कपड़े नापाक कर डालती हैं। ﴾2﴿ नाबीना की आंख से जो रत़ूबत ब वज्हे मरज़ निकलती है वोह नापाक है और उस से वुज़ू भी टूट जाता है। येह याद रहे कि ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ या इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में या

वैसे ही **आंसू निकलें** तो वुज़ू नहीं टूटता ।

पाक और नापाक रत़ूबत

जो रत़ूबत इन्सानी बदन से निकले और वुज़ू न तोड़े वोह नापाक नहीं । म–सलन ख़ून या पीप बह कर न निकले या थोड़ी क़ै कि मुंह भर न हो पाक है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 31)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

छाला और फुड़िया

﴾1﴿ छाला नोच डाला अगर उस का पानी बह गया तो वुज़ू टूट गया वरना नहीं । (ऐज़न, स. 27) ﴾2﴿ फुड़िया बिल्कुल अच्छी हो गई उस की मुर्दा खाल बाक़ी है जिस में ऊपर मुंह और अन्दर ख़ला है अगर उस में पानी भर गया और दबा कर निकाला तो न वुज़ू जाए न वोह पानी नापाक । हां अगर उस के अन्दर कुछ तरी ख़ून वग़ैरा की बाक़ी है तो वुज़ू भी जाता रहेगा और वोह पानी भी नापाक है । (फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 355, 356) ﴾3﴿ ख़ारिश या फुड़ियों में अगर बहने वाली रत़ूबत न हो सिर्फ़ चिपक हो और कपड़ा उस से बार बार छू कर चाहे कितना ही सन जाए पाक है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 32) ﴾4﴿ नाक साफ़ की उस में से जमा हुवा ख़ून निकला वुज़ू न टूटा, अन्सब (या'नी ज़ियादा मुनासिब) येह है कि वुज़ू करे ।

(फ़तावा र–ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 281)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़ै से वुज़ू कब टूटता है ?

मुंह भर क़ै खाने, पानी या सफ़्रा (या'नी पीले रंग का कड़वा पानी) की वुज़ू तोड़ देती है। जो क़ै तकल्लुफ़ के बिग़ैर न रोकी जा सके उसे मुंह भर कहते हैं। मुंह भर क़ै पेशाब की त़रह़ नापाक होती है उस के छींटों से अपने कपड़े और बदन को बचाना ज़रूरी है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 28, 112 वग़ैरा)

दूध पीते बच्चे का पेशाब और क़ै

﴾1﴿ एक दिन के दूध पीते बच्चे का पेशाब भी इसी त़रह़ नापाक है जिस त़रह़ आ़म लोगों का। (ऐज़न, स. 112) ﴾2﴿ दूध पीते बच्चे ने दूध डाल दिया और वोह मुंह भर है तो (येह भी पेशाब ही की त़रह़) नापाक है हां अगर येह दूध मे'दे तक नहीं पहुंचा सिर्फ़ सीने तक पहुंच कर पलट आया तो पाक है। (ऐज़न, स. 32)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"मदीना" के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू में शक आने के 5 अह़काम

﴾1﴿ अगर दौराने वुज़ू किसी उ़ज़्व के धोने में शक वाक़ेअ़ हो और अगर येह ज़िन्दगी का पहला वाक़िआ़ है तो इस को धो लीजिये और अगर अक्सर शक पड़ा करता है तो उस की त़रफ़ तवज्जोह न दीजिये। इसी त़रह़ अगर बा'दे वुज़ू भी शक पड़े तो इस का कुछ ख़याल मत

कीजिये। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 32) ﴾2﴿ आप बा वुज़ू थीं अब शक आने लगा कि पता नहीं वुज़ू है या नहीं, ऐसी सूरत में आप बा वुज़ू हैं क्यूं कि सिर्फ़ शक से वुज़ू नहीं टूटता। (ऐज़न, स. 33) ﴾3﴿ वस्वसे की सूरत में एह़तियात़न वुज़ू करना एह़तियात़ नहीं इत्तिबाए़ शैत़ान है। (ऐज़न) ﴾4﴿ यक़ीनन आप उस वक़्त तक बा वुज़ू हैं जब तक वुज़ू टूटने का ऐसा यक़ीन न हो जाए कि क़सम खा सकें ﴾5﴿ येह याद है कि कोई उ़ज़्व धोने से रह गया है मगर येह याद नहीं कौन सा उ़ज़्व था तो बायां (या'नी उल्टा) पाउं धो लीजिये। (دُرِّمُختار، ج۱،ص۳۱۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पान खाने वालियां मु-तवज्जेह हों

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आलिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : पानों के कसरत से आ़दी ख़ुसूसन जब कि दांतों में फ़ज़ा (गेप) हो तजरिबे से जानते हैं कि छालिया के बारीक रेजे़ और पान के बहुत छोटे छोटे टुकड़े इस त़रह़ मुंह के अत़राफ़ व अक्नाफ़ में जा गीर होते हैं (या'नी मुंह के कोनों और दांतों के खांचों में घुस जाते हैं) कि तीन बल्कि कभी दस बारह कुल्लियां भी

उन के तस्फ़ियए ताम (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) को काफ़ी नहीं होतीं, न ख़िलाल उन्हें निकाल सकता है न मिस्वाक, सिवा कुल्लियों के कि पानी मनाफ़िज़ (या'नी सूराख़ों) में दाख़िल होता और जुम्बिशें देने (या'नी हिलाने) से उन जमे हुए बारीक ज़र्रों को ब तदरीज छुड़ा छुड़ा कर लाता है, इस की भी कोई तहूदीद (ह़द बन्दी) नहीं हो सकती और येह कामिल तस्फ़िया (या'नी मुकम्मल सफ़ाई) भी बहुत मुअक्कद (या'नी इस की सख़्त ताकीद) है मु-तअ़द्दद अह़ादीस में इर्शाद हुवा है कि जब बन्दा नमाज़ को खड़ा होता है फ़िरिश्ता उस के मुंह पर अपना मुंह रखता है येह जो कुछ पढ़ता है इस के मुंह से निकल कर फ़िरिश्ते के मुंह में जाता है उस वक़्त अगर खाने की कोई शै उस के दांतों में होती है मलाएका को उस से ऐसी सख़्त ईज़ा होती है कि और शै से नहीं होती।

हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया, जब तुम में से कोई रात को नमाज़ के लिये खड़ा हो तो चाहिये कि मिस्वाक कर ले क्यूं कि जब वोह अपनी नमाज़ में क़िराअत करता है तो फ़िरिश्ता अपना मुंह उस के मुंह पर रख लेता है और जो चीज़ उस के मुंह से निकलती है वोह फ़िरिश्ते के मुंह में दाख़िल हो जाती है। **(شُعَبُ الْاِیمان ج۲ ص ۳۸۱رقم ۲۱۱۷)** और त़-बरानी ने कबीर में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत की है कि दोनों फ़िरिश्तों पर इस से ज़ियादा कोई चीज़ गिरां नहीं कि वोह अपने साथी को नमाज़ पढ़ता देखें और उस के दांतों में

खाने के रेज़े फंसे हों। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 624, 625, (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيرج ٤ ص ١٧٧ حديث ٤٠٦١)

सोने से वुज़ू टूटने और न टूटने का बयान

नींद से वुज़ू टूटने की दो शर्तें हैं :- ﴾1﴿ दोनों सुरीन अच्छी त़रह़ जमे हुए न हों। ﴾2﴿ ऐसी ह़ालत पर सोई जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो। जब दोनों शर्तें जम्अ़ हों या'नी सुरीन भी अच्छी त़रह़ जमे हुए न हों नीज़ ऐसी ह़ालत में सोई हो जो ग़ाफ़िल हो कर सोने में रुकावट न हो तो ऐसी नींद वुज़ू को तोड़ देती है। अगर एक शर्त़ पाई जाए और दूसरी न पाई जाए तो वुज़ू नहीं टूटेगा।

सोने के वोह दस10 अन्दाज़ जिन से वुज़ू नहीं टूटता

﴾1﴿ इस त़रह़ बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और दोनों पाउं एक त़रफ़ फैलाए हों। (कुरसी, रेल और बस की सीट पर बैठने का भी येही हुक्म है) ﴾2﴿ इस त़रह़ बैठना कि दोनों सुरीन ज़मीन पर हों और पिंडलियों को दोनों हाथों के ह़ल्क़े में ले ले ख़्वाह हाथ ज़मीन वग़ैरा पर या सर घुटनों पर रख ले ﴾3﴿ चार ज़ानू या'नी पालती (चोकड़ी) मार कर बैठे ख़्वाह ज़मीन या तख़्त या चारपाई वग़ैरा पर हो ﴾4﴿ दो ज़ानू सीधी बैठी हो ﴾5﴿ घोड़े या ख़च्चर वग़ैरा पर ज़ीन रख कर सुवार हो ﴾6﴿ नंगी पीठ पर सुवार हो मगर जानवर चढ़ाई पर चढ़ रहा हो या रास्ता हमवार हो ﴾7﴿ तक्ये से टेक लगा कर इस त़रह़ बैठी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

हो कि सुरीन जमे हुए हों अगर्चे तक्या हटाने से येह गिर पड़े ﴾8﴿ खड़ी हो ﴾9﴿ रुकूअ़ की ह़ालत में हो ﴾10﴿ सुन्नत के मुत़ाबिक़ जिस त़रह़ मर्द सज्दा करता है इस त़रह़ सज्दा करे कि पेट रानों और बाज़ू पहलूओं से जुदा हों। मज़्कूरा सूरतें नमाज़ में वाक़ेअ़ हों या इ़लावा नमाज़, वुज़ू नहीं टूटेगा और नमाज़ भी फ़ासिद न होगी अगर्चे क़स्दन सोए, अलबत्ता जो रुक्न बिल्कुल सोते हुए अदा किया उस का इआ़दा (या'नी दोबारा अदा करना) ज़रूरी है और जागते हुए शुरूअ़ किया फिर नींद आ गई तो जो ह़िस्सा जागते अदा किया वोह अदा हो गया बक़िय्या अदा करना होगा।

सोने के वोह दस10 अन्दाज़ जिन से वुज़ू टूट जाता है

﴾1﴿ उक्डूं या'नी पाउं के तल्वों के बल इस त़रह़ बैठी हो कि दोनों घुटने खड़े रहें ﴾2﴿ चित या'नी पीठ के बल लैटी हो ﴾3﴿ पट या'नी पेट के बल लैटी हो ﴾4﴿ दाईं या बाईं करवट लैटी हो। ﴾5﴿ एक कोहनी पर टेक लगा कर सो जाए ﴾6﴿ बैठ कर इस त़रह़ सोई कि एक करवट झुकी हो जिस की वज्ह से एक या दोनों सुरीन उठे हुए हों ﴾7﴿ नंगी पीठ पर सुवार हो और जानवर पस्ती की जानिब उतर रहा हो ﴾8﴿ पेट रानों पर रख कर दो ज़ानू इस त़रह़ बैठे सोई कि दोनों सुरीन जमे न रहें ﴾9﴿ चार ज़ानू या'नी चोकड़ी मार कर इस त़रह़ बैठे कि सर रानों या पिंडलियों पर रखा हो ﴾10﴿ जिस त़रह़ औ़रत सज्दा करती है इस त़रह़ सज्दे के अन्दाज़ पर सोई कि पेट रानों और बाज़ू पहलूओं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

से मिले हुए हों या कलाइयां बिछी हुई हों । मज़्कूरा सूरतें नमाज़ में वाक़ेअ़ हों या नमाज़ के इ़लावा वुज़ू टूट जाएगा । फिर अगर इन सूरतों में क़स्दन सोई तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और बिला क़स्द सोई तो वुज़ू टूट जाएगा मगर नमाज़ बाक़ी है । बा'दे वुज़ू (मख़्सूस शराइत़ के साथ) बक़िय्या नमाज़ उसी जगह से पढ़ सकती है जहां नींद आई थी । शराइत़ न मा'लूम हों तो नए सिरे से पढ़ ले ।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 365 ता 367)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हंसने के अह़काम

﴾1﴿ रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ा ने क़ह्क़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसी कि आस पास वालों ने सुना तो वुज़ू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसी कि सिर्फ़ ख़ुद सुना तो नमाज़ गई वुज़ू बाक़ी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुज़ू । (مَـــرَاقِـــی الْفَلَاح مَع حــاشیۃ الطحطــاوی ص۹۱) मुस्कुराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं । ﴾2﴿ बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में क़ह्क़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुज़ू बाक़ी है । (ایضاً ص۹۲) ﴾3﴿ नमाज़ के इ़लावा क़ह्क़हा लगाने से वुज़ू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना मुस्तह़ब है । (مَرَاقِی الْفَلَاح ص۸٤) हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कभी भी क़ह्क़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि येह सुन्नत भी ज़िन्दा हो और हम

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह्क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

ज़ोर ज़ोर से न हंसें। **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : اَلقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطٰنِ وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللّٰهِ تعالى या'नी क़ह्क़हा शैत़ान की त़रफ़ से है और मुस्कुराना अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है। (اَلْمُعْجَمُ الصَّغِير لِلطَّبَرَانِيّ، ج ٢،ص ١٠٤)

सात मु-तफ़र्रिक़ात

﴾1﴿ पेशाब, पाख़ाना, मनी, कीड़ा या पथरी मर्द या औ़रत के आगे या पीछे से निकलीं तो वुज़ू जाता रहेगा। (عـالـمگيـرى،ج١ص٩) ﴾2﴿ मर्द या औ़रत के पीछे से मा'मूली सी हवा भी ख़ारिज हुई वुज़ू टूट गया। मर्द या औ़रत के आगे से हवा ख़ारिज हुई वुज़ू नहीं टूटेगा। (ایضاً, बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 26) ﴾3﴿ बेहोश हो जाने से वुज़ू टूट जाता है। (عـالمگيرى ج١ص١٢) ﴾4﴿ बा'ज़ लोग कहते हैं कि ख़िन्ज़ीर का नाम लेने से वुज़ू टूट जाता है येह ग़लत़ है। ﴾5﴿ दौराने वुज़ू अगर रीह़ ख़ारिज हो या किसी सबब से वुज़ू टूट जाए तो नए सिरे से वुज़ू कर लीजिये पहले धुले हुए आ'ज़ा बे धुले हो गए। (माख़ूज़ अज़ : फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 255) ﴾6﴿ बे वुज़ू को क़ुरआन शरीफ़ या किसी आयत का छूना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 48) **क़ुरआने** पाक का तरजमा फ़ारसी या उर्दू या किसी दूसरी ज़बान में हो उस को भी पढ़ने या छूने में क़ुरआने पाक ही का सा हुक्म है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 49) ﴾7﴿ आयत को बे छूए देख कर या ज़बानी बे वुज़ू पढ़ने में ह़रज नहीं।

ग़ुस्ल का वुज़ू काफ़ी है

ग़ुस्ल के लिये जो वुज़ू किया था वोही काफ़ी है ख़्वाह बरह्ना नहाए। अब ग़ुस्ल के बा'द दोबारा वुज़ू करना ज़रूरी नहीं बल्कि अगर वुज़ू न भी किया हो तो ग़ुस्ल कर लेने से आ'ज़ाए वुज़ू पर भी पानी बह जाता है लिहाज़ा वुज़ू भी हो गया, कपड़े तब्दील करने या अपना या किसी दूसरे का सित्र देखने से भी वुज़ू नहीं जाता।

जिन का वुज़ू न रहता हो उन के लिये 9 अह़काम

﴾1﴿ **क़त़रा** आने, पीछे से रीह़ ख़ारिज होने, ज़ख़्म बहने, **दुखती आंख से ब वज्हे मरज़ आंसू बहने,** कान, नाफ़, पिस्तान से पानी निकलने, फोड़े या नासूर से रत़ूबत बहने और दस्त आने से वुज़ू टूट जाता है। अगर किसी को इस त़रह़ का मरज़ मुसल्सल जारी रहे और शुरूअ़ से आख़िर तक पूरा एक वक़्त गुज़र गया कि वुज़ू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सकी वोह शरअ़न **मा'ज़ूर** है। एक वुज़ू से उस वक़्त में जितनी नमाज़ें चाहे पढ़े। उस का वुज़ू उस मरज़ से नहीं टूटेगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 107, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار، ج۱،ص۵۵۳) इस मस्अले को मज़ीद आसान लफ़्ज़ों में समझाने की कोशिश करता हूं। इस क़िस्म के मरीज़ और मरीज़ा अपने मा'ज़ूरे शर-ई होने न होने की जांच इस त़रह़ करें कि कोई सी भी दो फ़र्ज़ नमाज़ों के दरमियानी वक़्त में कोशिश करें कि वुज़ू कर के त़हारत के साथ कम अज़ कम दो रक्अ़तें अदा की जा सकें। पूरे वक़्त के दौरान बार बार कोशिश के बा वुजूद

अगर इतनी मोहलत नहीं मिल पाती, वोह इस त़रह़ कि कभी तो दौराने वुज़ू ही उ़ज़्र लाह़िक़ हो जाता है और कभी वुज़ू मुकम्मल कर लेने के बा'द नमाज़ अदा करते हुए, ह़त्ता कि आख़िरी वक़्त आ गया तो अब उन्हें इजाज़त है कि वुज़ू कर के नमाज़ अदा करें नमाज़ हो जाएगी। अब चाहे दौराने अदाएगिये नमाज़, बीमारी के बाइ़स नजासत बदन से ख़ारिज ही क्यूं न हो रही हो । फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि : किसी शख़्स की नक्सीर फूट गई या उस का ज़ख़्म बह निकला तो वोह आख़िरी वक़्त का इन्तिज़ार करे अगर ख़ून मुन्क़त़अ़ न हो (बल्कि मुसल्सल या वक़्फ़े वक़्फ़े से जारी रहे) तो वक़्त निकलने से पहले वुज़ू कर के नमाज़ अदा करे । (اَلْبَحْرُ الرَّائِق ج١ ص٣٧٣-٣٧٤)

《2》 **फ़र्ज़** नमाज़ का वक़्त जाने से मा'ज़ूर का वुज़ू टूट जाता है जैसे किसी ने अ़स्र के वक़्त वुज़ू किया था तो सूरज ग़ुरूब होते ही वुज़ू जाता रहा और अगर किसी ने आफ़्ताब निकलने के बा'द वुज़ू किया तो जब तक ज़ोह्र का वक़्त ख़त्म न हो वुज़ू न जाएगा कि अभी तक किसी फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त नहीं गया। **फ़र्ज़** नमाज़ का वक़्त जाते ही मा'ज़ूर का वुज़ू जाता रहता है और येह हुक्म उस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर का उ़ज़्र दौराने वुज़ू या बा'दे वुज़ू ज़ाहिर हो, अगर ऐसा न हो और दूसरा कोई ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने वाला मुआ़-मला) भी लाह़िक़ न हो तो फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त जाने से वुज़ू नहीं टूटेगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 108, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار، ج ١، ص ٥٥٥)

《3》 **जब** उ़ज़्र साबित हो गया तो जब तक नमाज़ के एक पूरे वक़्त में

एक बार भी वोह चीज़ पाई जाए मा'ज़ूर ही रहेगी। म-सलन किसी के ज़ख़्म से सारा वक़्त ख़ून बहता रहा और इतनी मोहलत ही न मिली कि वुज़ू कर के फ़र्ज़ अदा कर ले तो मा'ज़ूर हो गई। अब दूसरे अवक़ात में इतना मौक़अ़ मिल जाता है कि वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ ले मगर एकआध दफ़्आ़ ज़ख़्म से ख़ून बह जाता है तो अब भी मा'ज़ूर है। हां अगर पूरा एक वक़्त ऐसा गुज़र गया कि एक बार भी ख़ून न बहा तो मा'ज़ूर न रही फिर जब कभी पहली ह़ालत आई (या'नी सारा वक़्त मुसल्सल मरज़ हुवा) तो फिर मा'ज़ूर हो गई। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 107)

﴾4﴿ **मा'ज़ूर** का वुज़ू अगर्चे उस चीज़ से नहीं जाता जिस के सबब मा'ज़ूर है मगर दूसरी कोई चीज़ वुज़ू तोड़ने वाली पाई गई तो वुज़ू जाता रहा म-सलन जिस को रीह़ ख़ारिज होने का मरज़ है, ज़ख़्म बहने से उस का वुज़ू टूट जाएगा। और जिस को ज़ख़्म बहने का मरज़ है उस का रीह़ ख़ारिज होने से वुज़ू जाता रहेगा। (ऐज़न, स. 108)

﴾5﴿ **मा'ज़ूर** ने किसी ह़दस (या'नी वुज़ू तोड़ने वाले अ़मल) के बा'द वुज़ू किया और वुज़ू करते वक़्त वोह चीज़ नहीं है जिस के सबब मा'ज़ूर है फिर वुज़ू के बा'द वोह उ़ज़्र वाली चीज़ पाई गई तो वुज़ू टूट गया (येह हुक्म इस सूरत में होगा जब मा'ज़ूर ने अपने उ़ज़्र के बजाए किसी दूसरे सबब की वज्ह से वुज़ू किया हो अगर अपने उ़ज़्र की वज्ह से वुज़ू किया तो बा'दे वुज़ू उ़ज़्र पाए जाने की सूरत में वुज़ू न टूटेगा।) म-सलन जिस का ज़ख़्म बहता था उस की रीह़ ख़ारिज हुई और उस ने वुज़ू किया और वुज़ू करते वक़्त ज़ख़्म नहीं बहा और वुज़ू करने के बा'द बहा तो

वुज़ू टूट गया। हां अगर वुज़ू के दरमियान बहना जारी था तो न गया।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 109, دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار، ج۱،ص۵۵۷)

《6》 **मा'ज़ूर** के एक नथने से ख़ून आ रहा था वुज़ू के बा'द दूसरे नथने से आया वुज़ू जाता रहा, या एक ज़ख़्म बह रहा था अब दूसरा बहा यहां तक कि चेचक के एक दाने से पानी आ रहा था अब दूसरे दाने से आया वुज़ू टूट गया। (ऐज़न, ایضًا،ص ۵۵۸)

《7》 **मा'ज़ूर** को ऐसा उ़ज़्र हो कि जिस के सबब कपड़े नापाक हो जाते हैं तो अगर एक दिरहम से ज़ियादा नापाक हो गए और जानती है कि इतना मौक़अ़ है कि इसे धो कर पाक कपड़ों से नमाज़ पढ़ लूंगी तो पाक कर के नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है और अगर जानती है कि नमाज़ पढ़ते पढ़ते फिर उतना ही नापाक हो जाएगा तो अब धोना ज़रूरी नहीं। इसी से पढ़े अगर्चे मुसल्ला भी आलूदा हो जाए तब भी उस की नमाज़ हो जाएगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 109)

《8》 अगर कपड़ा वग़ैरा रख कर (या सूराख़ में रूई डाल कर) इतनी देर तक ख़ून रोक सकती है कि वुज़ू कर के फ़र्ज़ पढ़ ले तो उ़ज़्र साबित न होगा। (या'नी येह मा'ज़ूर नहीं क्यूं कि येह उ़ज़्र दूर करने पर क़ुदरत रखती है) (ऐज़न, स. 107)

《9》 अगर किसी तरकीब से उ़ज़्र जाता रहे या उस में कमी हो जाए तो उस तरकीब का करना फ़र्ज़ है, म-सलन खड़े हो कर पढ़ने से ख़ून बहता है और बैठ कर पढ़े तो न बहेगा तो बैठ कर पढ़ना फ़र्ज़ है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 109, دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار، ج۱،ص۵۵۸)

(मा'ज़ूर के वुज़ू के तफ़्सीली मसाइल फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 4 सफ़ह़ा 367 ता 375, बहारे शरीअ़त हि़स्सा 2 सफ़ह़ा 107 ता 109 से मा'लूम कर लीजिये)

इस्लामी बहनो ! जहां जहां मुम्किन हो वहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेनी चाहिएं, जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा और अच्छी निय्यत के सवाब की तो क्या बात है ! मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **اَلنِّیَّۃُ الْحَسَنَۃُ تُدْخِلُ صَاحِبَھَا الْجَنَّۃَ. "अच्छी निय्यत इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी।"** **(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوْطِیّ، ص۵۵۷ حدیث ۹۳۲۶)**

वुज़ू की निय्यत नहीं होगी तब भी फ़िक़्हे ह़-नफ़ी के मुत़ाबिक़ वुज़ू हो जाएगा मगर सवाब नहीं मिलेगा। उ़मूमन वुज़ू की तय्यारी करने वाली के ज़ेह्न में होता है कि मैं वुज़ू करने वाली हूं येही निय्यत काफ़ी है। ताहम मौक़अ़ की मुना-सबत से मज़ीद निय्यतें भी की जा सकती हैं :

"हर वक़्त बा वुज़ू रहना सवाब है" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से वुज़ू के बारे में 20 निय्यतें

﴾1﴿ बे वुज़ूई दूर करूंगी ﴾2﴿ जो बा वुज़ू हो वोह दोबारा वुज़ू करते वक़्त यूं निय्यत करे : सवाब के लिये वुज़ू पर वुज़ू करूंगी ﴾3﴿ بسمِ اللّٰہِ وَالْحمدُ لِلّٰہ कहूंगी ﴾4﴿ फ़राइज़ व ﴾5﴿ सुनन और ﴾6﴿ मुस्तह़ब्बात

का ख़याल रखूंगी ﴾7﴿ पानी का इस्राफ़ नहीं करूंगी ﴾8﴿ मकरूहात से बचूंगी ﴾9﴿ मिस्वाक करूंगी ﴾10﴿ हर उ़ज़्व धोते वक़्त दुरूद शरीफ़ और ﴾11﴿ **يَاقَادِرُ** पढ़ूंगी (वुज़ू में हर उ़ज़्व धोने के दौरान **يَاقَادِرُ** पढ़ने वाली को اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ दुश्मन इग़्वा नहीं कर सकेगा) ﴾12﴿ फ़रागत के बा'द आ'ज़ाए वुज़ू पर तरी बाक़ी रहने दूंगी ﴾13,14﴿ वुज़ू के बा'द दो दुआएं पढ़ूंगी (**الف**)اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِیْنَ
(**ب**)سُبْحٰنَکَ اللّٰھُمَّ وَ بِحَمْدِکَ اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْکَ
(15 ता 17) आस्मान की त़रफ़ देख कर **कलिमए शहादत** और **सू-रतुल क़द्र** पढ़ूंगी मज़ीद तीन बार **सू-रतुल क़द्र** पढ़ूंगी ﴾18﴿ (मकरूह वक़्त न हुवा तो) **तहिय्यतुल वुज़ू** अदा करूंगी ﴾19﴿ हर उ़ज़्व धोते वक़्त गुनाह झड़ने की उम्मीद करूंगी ﴾20﴿ बात़िनी वुज़ू भी करूंगी (या'नी जिस त़रह़ पानी से ज़ाहिरी आ'ज़ा का मैल कुचैल दूर किया है इसी त़रह़ तौबा के पानी से गुनाहों की गन्दगी धो कर आयिन्दा गुनाहों से बचने का अ़ह्द करूंगी)

या रब्बल मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस्राफ़ से बचते हुए शर-ई वुज़ू के साथ हर वक़्त बा वुज़ू रहना नसीब फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह तआ़ला** फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास **चांदी** के काग़ज़ और **सोने** के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ़ की दरमियानी शब) मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (کنز العمال ج۱ص ۲۵۰ حدیث ۲۱۷۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़र्ज़ ग़ुस्ल में एह़तियात़ की ताकीद

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स ग़ुस्ले जनाबत में एक बाल की जगह बे धोए छोड़ देगा उस के साथ आग से ऐसा ऐसा किया जाएगा।'' (या'नी अ़ज़ाब दिया जाएगा)। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ،ج۱ص۱۱۷ حدیث ۲۴۹)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

क़ब्र का बिल्ला

ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन अ़ब्दुल्लाह बज्ली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं **:** हमारा एक पड़ोसी मर गया तो हम कफ़न व दफ़्न में शरीक हुए। जब **क़ब्र** खोदी गई तो उस में **बिल्ले** की मिस्ल एक जानवर था, हम ने उस को मारा मगर वोह न हटा। चुनान्चे **दूसरी** क़ब्र खोदी गई तो उस में भी वोही **बिल्ला** मौजूद था ! उस के साथ भी वोही किया गया जो पहले के साथ किया गया था लेकिन वोह अपनी जगह से न हिला। इस के बा'द **तीसरी** क़ब्र खोदी गई तो उस में भी येही मुआ़–मला हुवा, आख़िर लोगों ने मश्वरा दिया कि अब इस को इसी क़ब्र में दफ़्न कर दो, जब उस को **दफ़्न** कर दिया गया तो क़ब्र में से **एक ख़ौफ़नाक** आवाज़ सुनी गई ! तो हम उस शख़्स की बेवा के पास गए और उस से मरने वाले के बारे में दरयाफ़्त किया कि उस का अ़मल क्या था ? बेवा ने बताया **:** "वोह **ग़ुस्ले जनाबत** (या'नी फ़र्ज़ ग़ुस्ल) नहीं करता था।" (شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور، ص۱۷۹)

ग़ुस्ले जनाबत में ताख़ीर कब ह़राम है

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! वोह बद नसीब ग़ुस्ले जनाबत करता ही नहीं था। ग़ुस्ले जनाबत में देर कर देना गुनाह नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर ह़राम है कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। चुनान्चे **बहारे शरीअ़त** में है **:** "जिस पर ग़ुस्ल वाजिब है वोह अगर इतनी देर कर चुकी कि नमाज़ का आख़िर वक़्त आ गया तो अब फ़ौरन नहाना फ़र्ज़ है, अब ताख़ीर करेगी गुनहगार होगी।" (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा **:** 2, स. 47, 48)

जनाबत की ह़ालत में सोने के अह़काम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं, उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से पूछा, क्या नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जनाबत की ह़ालत में सोते थे ? उन्हों ने बताया : "हां और वुज़ू फ़रमा लेते थे।" (صَحِیحُ الْبُخارِیّ ج ۱ ص۱۱۷ حدیث۲۸۶) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने बयान किया कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मुह़्तशम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से तज़्किरा किया : रात में कभी जनाबत हो जाती है (तो क्या किया जाए ?) रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वुज़ू कर के उ़ज़्वे ख़ास को धो कर सो जाया करो। (ایضاً ص۱۱۸ حدیث۲۹۰)

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : जुनुबी होने (या'नी ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने) के बा'द अगर सोना चाहे तो मुस्तह़ब है कि वुज़ू करे, फ़ौरन ग़ुस्ल करना वाजिब नहीं अलबत्ता इतनी ताख़ीर न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए। येही इस ह़दीस का मह़्मल[1] है। ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से अबू दावूद व नसाई वग़ैरा में मरवी है कि फ़रमाया : उस घर में फ़िरिश्ते नहीं

1. या'नी इस ह़दीस से मुराद येही है।

जाते जिस में तस्वीर या कुत्ता या जुनुबी (या'नी बे ग़ुस्ला) हो । (سُنَنُ اَبِی دَاوُد ،ج۱ ص۱۰۹ حدیث ۲۲۷) इस ह़दीस से मुराद येही है कि इतनी देर तक ग़ुस्ल न करे कि नमाज़ का वक़्त निकल जाए और वोह जुनुबी (या'नी बे ग़ुस्ला) रहने का आ़दी हो और येही मत़लब बुज़ुर्गों के इस इर्शाद का है कि ह़ालते जनाबत में खाने पीने से रिज़्क़ में तंगी होती है । (نُزھۃُ الْقاری ج۱ ص۷۷۰۔۷۷۱)

ग़ुस्ल का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

बिग़ैर ज़बान हिलाए दिल में इस त़रह़ निय्यत कीजिये कि मैं पाकी ह़ासिल करने के लिये ग़ुस्ल करती हूं । पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन तीन बार धोइये, फिर इस्तिन्जे की जगह धोइये ख़्वाह नजासत हो या न हो, फिर जिस्म पर अगर कहीं नजासत हो तो उस को दूर कीजिये फिर नमाज़ का सा वुज़ू कीजिये अगर पाउं रखने की जगह पर पानी जम्अ़ है तो पाउं न धोइये, और अगर सख़्त ज़मीन है जैसा कि आज कल उ़मूमन ग़ुस्ल ख़ानों की होती है या चौकी वग़ैरा पर ग़ुस्ल कर रही हैं तो पाउं भी धो लीजिये, फिर बदन पर तेल की त़रह़ पानी चुपड़ लीजिये, ख़ुसूसन सर्दियों में (इस दौरान साबुन भी लगा सकती हैं) फिर तीन बार सीधे कन्धे पर पानी बहाइये, फिर तीन बार उल्टे कन्धे पर, फिर सर पर और तमाम बदन पर तीन बार, फिर ग़ुस्ल की जगह से अलग हो जाइये, अगर वुज़ू करने में पाउं नहीं धोए थे तो अब धो लीजिये । बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 2 सफ़ह़ा 42 पर है **:** ''सित्र खुला हो

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है । (ابن عساکر)

तो क़िब्ले को मुंह करना न चाहिये, और तहबन्द बांधे हो तो ह़रज नहीं ।" तमाम बदन पर हाथ फैर कर मल कर नहाइये, ऐसी जगह नहाइये कि किसी की नज़र न पड़े, दौराने ग़ुस्ल किसी क़िस्म की गुफ़्त-गू मत कीजिये, कोई दुआ़ भी न पढ़िये, नहाने के बा'द तोलिया वग़ैरा से बदन पोंछने में ह़रज नहीं । नहाने के बा'द फ़ौरन कपड़े पहन लीजिये । अगर मक्रूह वक़्त न हो तो दो रक्अ़त नफ़्ल अदा करना मुस्तह़ब है । (आ़म्मए कुतुबे फ़िक़्हे ह़-नफ़ी)

ग़ुस्ल के तीन फ़राइज़

﴾1﴿ कुल्ली करना ﴾2﴿ नाक में पानी चढ़ाना ﴾3﴿ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना । (فتاوٰی عالمگیری ج ۱ ص ۱۳)

﴾1﴿ कुल्ली करना

मुंह में थोड़ा सा पानी ले कर पिच कर के डाल देने का नाम कुल्ली नहीं बल्कि मुंह के हर पुर्ज़े, गोशे, होंट से ह़ल्क़ की जड़ तक हर जगह पानी बह जाए । इसी त़रह़ दाढ़ों के पीछे गालों की तह में, दांतों की खिड़कियों और जड़ों और ज़बान की हर करवट पर बल्कि ह़ल्क़ के कनारे तक पानी बहे । रोज़ा न हो तो ग़र-ग़रा भी कर लीजिये कि **सुन्नत** है । दांतों में छालिया के दाने या बोटी के रेशे वग़ैरा हों तो उन को छुड़ाना ज़रूरी है । हां अगर छुड़ाने में ज़रर (या'नी नुक़्सान) का अन्देशा हो तो मुआ़फ़ है । ग़ुस्ल से क़ब्ल दांतों में रेशे वग़ैरा मह़सूस न हुए और रह गए नमाज़ भी पढ़ ली बा'द को मा'लूम होने पर छुड़ा कर

पानी बहाना फ़र्ज़ है, पहले जो नमाज़ पढ़ी थी वोह हो गई। जो हिलता दांत मसाले से जमाया गया या तार से बांधा गया और तार या मसाले के नीचे पानी न पहुंचता हो तो मुआ़फ़ है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 38, फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 439, 440)

﴾2﴿ नाक में पानी चढ़ाना

जल्दी जल्दी नाक की नोक पर पानी लगा लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि जहां तक नर्म जगह है या'नी सख़्त हड्डी के शुरूअ़ तक धुलना लाज़िमी है। और येह यूं हो सकेगा कि पानी को सूंघ कर ऊपर खींचिये। येह ख़याल रखिये कि बाल बराबर भी जगह धुलने से न रह जाए वरना ग़ुस्ल न होगा। नाक के अन्दर अगर रींठ सूख गई है तो उस का छुड़ाना फ़र्ज़ है। नीज़ नाक के बालों का धोना भी फ़र्ज़ है।

(ऐज़न, ऐज़न, स. 442, 443)

﴾3﴿ तमाम ज़ाहिरी बदन पर पानी बहाना

सर के बालों से ले कर पाउं के तल्वों तक जिस्म के हर पुर्ज़े और हर हर रोंगटे पर पानी बह जाना ज़रूरी है, जिस्म की बा'ज़ जगहें ऐसी हैं कि अगर एह़तियात़ न की तो वोह सूखी रह जाएंगी और ग़ुस्ल न होगा। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 39)

"صَلَوات اللّٰهِ عليكَ يا رسولَ اللّٰه" के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों के लिये ग़ुस्ल की 23 एह़तियातें

﴾1﴿ अगर इस्लामी बहन के सर के बाल गुंधे हुए हों तो सिर्फ़

जड़ तर कर लेना ज़रूरी है खोलना ज़रूरी नहीं। हां अगर चोटी इतनी सख़्त गुंधी हुई हो कि बे खोले जड़ें तर न होंगी तो खोलना ज़रूरी है। **﴾2﴿** अगर कानों में बाली या नाक में नथ का छेद (सूराख़) हो और वोह बन्द न हो तो उस में पानी बहाना फ़र्ज़ है। वुज़ू में सिर्फ़ नाक के नथ के छेद में और ग़ुस्ल में अगर कान और नाक दोनों में छेद हों तो दोनों में पानी बहाइये **﴾3﴿** भवों, और उन के नीचे की खाल का धोना ज़रूरी है **﴾4﴿** कान का हर पुर्ज़ा और उस के सूराख़ का मुंह धोइये **﴾5﴿** कानों के पीछे के बाल हटा कर पानी बहाइये **﴾6﴿** ठोड़ी और गले का जोड़ कि मुंह उठाए बिग़ैर न धुलेगा **﴾7﴿** हाथों को अच्छी त़रह़ उठा कर बग़लें धोइये **﴾8﴿** बाज़ू का हर पहलू धोइये **﴾9﴿** पीठ का हर ज़र्रा धोइये **﴾10﴿** पेट की बल्टें उठा कर धोइये **﴾11﴿** नाफ़ में भी पानी डालिये अगर पानी बहने में शक हो तो नाफ़ में उंगली डाल कर धोइये **﴾12﴿** जिस्म का हर रोंगटा जड़ से नोक तक धोइये **﴾13﴿** रान और पेडू (नाफ़ से नीचे के ह़िस्से) का जोड़ धोइये **﴾14﴿** जब बैठ कर नहाएं तो रान और पिंडली के जोड़ पर भी पानी बहाना याद रखिये **﴾15﴿** दोनों सुरीन के मिलने की जगह का ख़याल रखिये, ख़ुसूसन जब खड़े हो कर नहाएं **﴾16﴿** रानों की गोलाई और **﴾17﴿** पिंडलियों की करवटों पर पानी बहाइये **﴾18﴿** ढल्की हुई पिस्तान को उठा कर पानी बहाइये **﴾19﴿** पिस्तान और पेट के जोड़ की लकीर धोइये **﴾20﴿** फ़र्जे ख़ारिज (या'नी औ़रत की शर्मगाह के बाहर के ह़िस्से) का हर गोशा हर टुकड़ा ऊपर नीचे ख़ूब एह़तियात़ से धोइये **﴾21﴿** फ़र्जे दाख़िल (या'नी शर्मगाह के अन्दरूनी

हि़स्से) में उंगली डाल कर धोना फ़र्ज़ नहीं मुस्तह़ब है ﴾22﴿ अगर हैज़ या निफ़ास से फ़ारिग़ हो कर ग़ुस्ल करें तो किसी पुराने कपड़े से फ़र्जे दाखि़ल के अन्दर से ख़ून का असर साफ़ कर लेना मुस्तह़ब है (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 39,40) ﴾23﴿ अगर नेल पॉलिश नाख़ुनों पर लगी हुई है तो उस का भी छुड़ाना फ़र्ज़ है वरना वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होगा, हां मेंहदी के रंग में ह़रज नहीं।

ज़ख़्म की पट्टी

ज़ख़्म पर पट्टी वग़ैरा बंधी हो और उसे खोलने में नुक़्सान या ह़रज हो तो पट्टी पर ही मस्ह़ कर लेना काफ़ी है नीज़ किसी जगह मरज़ या दर्द की वज्ह से पानी बहाना नुक़्सान देह हो तो उस पूरे उ़ज़्व पर मस्ह़ कर लीजिये। पट्टी ज़रूरत से ज़ियादा जगह को घेरे हुए नहीं होनी चाहिये वरना मस्ह़ काफ़ी न होगा। अगर ज़रूरत से ज़ियादा जगह घेरे बिग़ैर पट्टी बांधना मुम्किन न हो म–सलन बाज़ू पर ज़ख़्म है मगर पट्टी बाज़ूओं की गोलाई में बांधी है जिस के सबब बाज़ू का अच्छा हि़स्सा भी पट्टी के अन्दर छुपा हुवा है, तो अगर खोलना मुम्किन हो तो खोल कर उस हि़स्से को धोना फ़र्ज़ है। अगर ना मुम्किन है या खोलना तो मुम्किन है मगर फिर वैसी न बांध सकेगी और यूं ज़ख़्म वग़ैरा को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा है तो सारी पट्टी पर मस्ह़ कर लेना काफ़ी है। बदन का वोह अच्छा हि़स्सा भी धोने से मुआ़फ़ हो जाएगा।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 40)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

ग़ुस्ल फ़र्ज़ होने के 5 अस्बाब

﴾1﴿ मनी का अपनी जगह से शह्वत के साथ जुदा हो कर मख़्रज से निकलना ﴾2﴿ एह़तिलाम या'नी सोते में मनी का निकल जाना ﴾3﴿ ह़श्फ़ा या'नी सरे ज़कर (सुपारी) का औ़रत के आगे या पीछे या मर्द के पीछे दाख़िल हो जाना ख़्वाह शह्वत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो, दोनों पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ करता है। बशर्ते़ कि दोनों मुकल्लफ़ हों और अगर एक बालिग़ है तो उस बालिग़ पर फ़र्ज़ है और ना बालिग़ पर अगर्चे ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं मगर ग़ुस्ल का हुक्म दिया जाएगा ﴾4﴿ ह़ैज़ से फ़ारिग़ होना ﴾5﴿ निफ़ास (या'नी बच्चा जनने पर जो ख़ून आता है उस) से फ़ारिग़ होना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 43,45,46, मुल–त–क़त़न)

वोह सूरतें जिन में ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं

﴾1﴿ मनी शह्वत के साथ अपनी जगह से जुदा न हुई बल्कि बोझ उठाने या बुलन्दी से गिरने या फ़ुज़्ला ख़ारिज करने के लिये ज़ोर लगाने की सूरत में ख़ारिज हुई तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं। वुज़ू बहर ह़ाल टूट जाएगा। ﴾2﴿ अगर मनी पतली पड़ गई और पेशाब के वक़्त या वैसे ही बिला शह्वत इस के क़त़रे निकल आए ग़ुस्ल फ़र्ज़ न हुवा वुज़ू टूट जाएगा। ﴾3﴿ अगर एह़तिलाम होना याद है मगर इस का कोई असर कपड़े वग़ैरा पर नहीं तो ग़ुस्ल फ़र्ज़ नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 43)

बहते पानी में ग़ुस्ल का त़रीक़ा

अगर बहते पानी म–सलन दरिया या नहर में नहाया तो थोड़ी

देर उस में रुकने से तीन बार धोने, तरतीब और वुज़ू येह सब सुन्नतें अदा हो गईं। इस की भी ज़रूरत नहीं कि आ'ज़ा को तीन बार ह़-र-कत दे। अगर तालाब वग़ैरा ठहरे पानी में नहाया तो आ'ज़ा को तीन बार ह़-र-कत देने या जगह बदलने से तस्लीस या'नी तीन बार धोने की सुन्नत अदा हो जाएगी। बरसात में (या नल या फ़व्वारे के नीचे) खड़ा होना बहते पानी में खड़े होने के हुक्म में है। बहते पानी में वुज़ू किया तो वोही थोड़ी देर उस में उ़ज़्व को रहने देना और ठहरे पानी में ह़-र-कत देना तीन बार धोने के क़ाइम मक़ाम है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 42, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار، ج١،ص٣٢٠۔٣٢١) वुज़ू और ग़ुस्ल की इन तमाम सूरतों में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना होगा। ग़ुस्ल में कुल्ली करना और नाक में पानी चढ़ाना फ़र्ज़ है जब कि वुज़ू में सुन्नते मुअक्कदा है।

फ़व्वारा जारी पानी के हुक्म में है

फ़तावा अहले सुन्नत (ग़ैर मत़बूआ़) में है, फ़व्वारे (या नल) के नीचे ग़ुस्ल करना जारी पानी में ग़ुस्ल करने के हुक्म में है लिहाज़ा इस के नीचे ग़ुस्ल करते हुए वुज़ू और ग़ुस्ल करते वक़्त की मुद्दत (या'नी थोड़ी देर) तक ठहरी तो तस्लीस (या'नी तीन बार धोने) की सुन्नत अदा हो जाएगी चुनान्चे **दुर्रे मुख़्तार** में है : "अगर जारी पानी, बड़े हौज़ या बारिश में वुज़ू और ग़ुस्ल करने के वक़्त की मुद्दत तक ठहरी तो उस

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ने पूरी सुन्नत अदा की।" (درمختار مع رد المحتار ج۱ص۳۲۰) याद रहे ग़ुस्ल या वुज़ू में कुल्ली करना और नाक में पानी भी चढ़ाना है।

फ़व्वारे की एह़तियातें

अगर आप के ह़म्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उस का रुख़ देख लीजिये कि उस की त़रफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ न हो। इस्तिन्जा ख़ाने में इस की ज़ियादा एह़तियात़ फ़रमाइये। क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45 द-रजे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो। लिहाज़ा ऐसी तरकीब बनाइये कि 45 डिग्री के ज़ाविये के बाहर हो जाए।

"मदीना" के पांच 5 ह़ुरूफ़ की निस्बत से ग़ुस्ल के 5 सुन्नत मवाक़ेअ़

﴾1﴿ **जुमुआ़** ﴾2﴿ ईदुल फ़ित्र ﴾3﴿ बक़र ईद ﴾4﴿ अ़-रफ़ा के दिन (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतुल ह़राम) और ﴾5﴿ एह़राम बांधते वक़्त नहाना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 46, دُرِّمُختار ج۱ ص۳۳۹-۳۴۱)

"मुस्तह़ब पर अ़मल करना बाइसे सवाब है" के चौबीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से ग़ुस्ल के 24 मुस्तह़ब मवाक़ेअ़

﴾1﴿ वुक़ूफ़े अ़-रफ़ात ﴾2﴿ वुक़ूफ़े मुज़्दलिफ़ा ﴾3﴿ ह़ाज़िरिये ह़रम ﴾4﴿ ह़ाज़िरिये सरकारे आ'ज़म صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ﴾5﴿ त़वाफ़

﴾**6**﴿ दुख़ूले मिना ﴾**7**﴿ जम्रों (शैत़ानों) पर कंकरियां मारने के लिये तीनों दिन ﴾**8**﴿ शबे बराअत ﴾**9**﴿ शबे क़द्र ﴾**10**﴿ अ़-रफ़ा की रात (या'नी 9 ज़ुल हि़ज्जतिल ह़राम के ग़ुरूबे आफ़्ताब ता 10 की सुब्ह़) ﴾**11**﴿ मजलिसे मीलाद शरीफ़ ﴾**12**﴿ दीगर मजालिसे ख़ैर के लिये ﴾**13**﴿ मुर्दा नहलाने के बा'द ﴾**14**﴿ मजनून (पागल) को जुनून जाने के बा'द ﴾**15**﴿ ग़शी से इफ़ाक़ा (या'नी बेहोशी ख़त्म होने) के बा'द ﴾**16**﴿ नशा जाते रहने के बा'द ﴾**17**﴿ गुनाह से तौबा करने ﴾**18**﴿ नए कपड़े पहनने के लिये ﴾**19**﴿ सफ़र से आने वाले के लिये ﴾**20**﴿ इस्तिह़ाज़ा[1] का ख़ून बन्द होने के बा'द ﴾**21**﴿ नमाज़े कुसूफ़ (सूरज गहन) व ख़ुसूफ़ (चांद गहन) ﴾**22**﴿ इस्तिस्क़ा (त-लबे बारिश) और ﴾**23**﴿ ख़ौफ़ व तारीकी और सख़्त आंधी के लिये ﴾**24**﴿ बदन पर नजासत लगी और येह मा'लूम न हुवा कि किस जगह लगी है।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा **:** 2, स. 46, 47, تَنوِیرُ الْاَبصار،دُرِّمُختار ج١، ص٣٤١ ـ ٣٤٢)

एक ग़ुस्ल में मुख़्तलिफ़ निय्यतें

जिस पर चन्द ग़ुस्ल हों म-सलन एह़तिलाम भी हुवा, ईद भी है और जुमुआ़ का दिन भी, तो तीनों की निय्यत कर के एक ग़ुस्ल कर लिया, सब अदा हो गए और सब का सवाब मिलेगा।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा **:** 2, स. 47)

मदीना

1 : या'नी औ़रत को मरज़ की वज्ह से आने वाला ख़ून।

ग़ुस्ल से नज़्ला बढ़ जाता हो तो ?

ज़ुकाम या आशोबे चश्म वग़ैरा हो और येह गुमाने सह़ीह़ हो कि सर से नहाने में मरज़ बढ़ जाएगा या दीगर अम्राज़ पैदा हो जाएंगे तो कुल्ली कीजिये, नाक में पानी चढ़ाइये और गरदन से नहाइये। और सर के हर ह़िस्से पर भीगा हुवा हाथ फैर लीजिये ग़ुस्ल हो जाएगा। बा'दे सिह़्ह़त सर धो डालिये पूरा ग़ुस्ल नए सिरे से करना ज़रूरी नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 40)

बाल्टी से नहाते वक़्त एह़तियात़

अगर बाल्टी के ज़रीए ग़ुस्ल करें तो एह़तियात़न उसे तिपाई (STOOL) वग़ैरा पर रख लीजिये ताकि बाल्टी में छींटें न आएं। नीज़ ग़ुस्ल में इस्ति'माल करने का मग भी फ़र्श पर न रखिये।

बाल की गिरह

बाल में गिरह पड़ जाए तो ग़ुस्ल में उसे खोल कर पानी बहाना ज़रूरी नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 40)

बे वुज़ू दीनी किताबें छूना

बे वुज़ू या वोह जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन को फ़िक़्ह, तफ़्सीर व ह़दीस की किताबों का छूना मक्रूह है। और अगर इन को किसी कपड़े से छुवा अगर्चे इस को पहने या ओढ़े हुए हो तो मुज़ा-यक़ा नहीं। मगर आयते क़ुरआनी या इस के तरजमे पर इन किताबों में भी हाथ रखना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 49)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلیٰ)

नापाकी की ह़ालत में दुरूद शरीफ़ पढ़ना

जिन पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उन को दुरूद शरीफ़ और दुआ़एं पढ़ने में ह़रज नहीं। मगर बेहतर येह है कि वुज़ू या कुल्ली कर के पढ़ें। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 49) अज़ान का जवाब देना उन को जाइज़ है।

(فتاوٰی عالمگیری ج ۱ ص۳۸)

उंगली में INK की तह जमी हुई हो तो ?

पकाने वाली के नाख़ुन में आटा, लिखने वाली के नाख़ुन वग़ैरा पर सियाही **(INK)** का जिर्म, आ़म इस्लामी बहनों के लिये मख्खी, मच्छर की बीट लगी हुई रह गई और तवज्जोह न रही तो ग़ुस्ल हो जाएगा। हां मा'लूम हो जाने के बा'द जुदा करना और उस जगह का धोना ज़रूरी है पहले जो नमाज़ पढ़ी वोह हो गई।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 41, मुलख़्ख़सन)

बच्ची कब बालिग़ा होती है ?

लड़की नव बरस और लड़का बारह साल से कम उ़म्र तक हरगिज़ **बालिग़ा** व **बालिग़** न होंगे और लड़का लड़की दोनों (हिजरी सिन के ए'तिबार से) 15 बरस की कामिल उ़म्र में ज़रूर शरअ़न बालिग़ व बालिग़ा हैं, अगर्चे आसारे बुलूग़ (या'नी बालिग़ होने की अ़लामतें) ज़ाहिर न हों। इन उ़म्रों के अन्दर अगर आसार पाए जाएं, या'नी ख़्वाह लड़के ख़्वाह लड़की को सोते ख़्वाह जागते में इन्ज़ाल हो

(या'नी मनी निकले).... या... लड़की को ह़ैज़ आए.... या... जिमाअ़ से लड़का (किसी लड़की को) **ह़ामिला** कर दे... या... (जिमाअ़ की वज्ह से) लड़की को **ह़म्ल** रह जाए तो यक़ीनन बालिग़ व बालिग़ा हैं । और अगर **आसार** न हों, मगर वोह ख़ुद कहें कि हम बालिग़ व बालिग़ा हैं और ज़ाहिर ह़ाल उन के क़ौल की तक्ज़ीब न करता (या'नी झुटलाता न) हो तो भी बालिग़ व बालिग़ा समझे जाएंगे और तमाम अह़काम, बुलूग़ के निफ़ाज़ पाएंगे और (लड़के के) दाढ़ी मूंछ निकलना या लड़की के पिस्तान (छाती) में उभार पैदा होना कुछ मो'तबर नहीं ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 630)

वस्वसों का एक सबब

ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब करने से वस्वसे पैदा होते हैं । ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم ने इर्शाद फ़रमाया : कोई शख़्स ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे, जिस में फिर वोह नहाए या वुज़ू करे क्यूं कि अक्सर वस्वसे इसी से होते हैं ।" (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ،ج۱، ص٤٤ حديث ٢٧) अगर ह़म्माम की ढलवान (SLOPE) बेहतर है और इत़्मीनान है कि पेशाब करने के बा'द पानी बहने से अच्छी त़रह़ फ़र्श पाक हो जाएगा तो ह़रज नहीं । फिर भी बेहतर येही है कि वहां पेशाब न करे ।

(मिरआत, जि. 1, स. 266 मुलख़्ख़सन)

इत्तिबाए सुन्नत की ब-र-कत से मग़्फ़िरत की बिशारत मिली

बरह्ना नहाना सुन्नत नहीं चुनान्चे इस ज़िम्न में एक **ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये **:** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अह़मद बिन ह़म्बल** رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मैं लोगों के साथ था। इस दौरान हमारे बा'ज़ रु-फ़क़ा ग़ुस्ल के लिये कपड़े उतार कर पानी में उतर गए लेकिन मुझे सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की वोह ह़दीसे पाक याद थी जिस में आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है कि ''जो अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान रखता हो उसे चाहिये कि बरह्ना ह़म्माम में दाख़िल न हो बल्कि तहबन्द बांधे।'' लिहाज़ा मैं ने इस ह़दीसे मुबा-रका पर अ़मल किया। रात को जब मैं सोया तो मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक **हातिफ़े ग़ैबी** मुझे निदा कर के कह रहा है **: ऐ अह़मद ! तुझे बिशारत हो कि अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त ने नबिय्ये रह़मत** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की सुन्नत पर अ़मल करने की वज्ह से तुम्हारी मग़्फ़िरत फ़रमा दी है और तुम्हें लोगों का इमाम व पेशवा भी बना दिया है।** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं कि मैं ने उस हातिफ़े ग़ैबी से

दरयाफ़्त किया कि आप कौन हैं ? तो आवाज़ आई : मैं जिब्रील (عَلَيْهِ السَّلَام) हूं । (الشِّفاء ،اَلجُزءُ الثّانی ص ١٦) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰی علیه واٰلهٖ وسلَّم

तहबन्द बांध कर नहाने की एह़तियातें

शारेह़े बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : तन्हाई में बरह्ना नहाना जाइज़ है मगर अफ़्ज़ल येह है कि बरह्ना न नहाए । **तहबन्द** बांध कर (या पाजामा या शलवार पहन कर) नहाने में ख़ुसूसिय्यत से दो बातों का ख़याल रखे, अव्वल जो तहबन्द (या पाजामा वग़ैरा) बांध कर नहाए वोह (तहबन्द वग़ैरा) पाक हो उस में नजासत न हो । **दूसरे** येह कि रान वग़ैरा जिस्म के किसी ह़िस्से पर नजासत लगी हो तो उसे पहले धो ले वरना जनाबत तो दूर हो जाएगी (या'नी फ़र्ज़ ग़ुस्ल तो अदा हो जाएगा) मगर बदन या तहबन्द की नजासत क्या दूर होगी फैल कर दूसरी जगहों पर भी लग जाएगी । इस से अ़वाम तो अ़वाम, ख़वास तक ग़ाफ़िल हैं । (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 1, स. 761) हां इतना पानी बहाया कि अगर्चे नजासत इब्तिदाअन फैली मगर बिल आख़िर अच्छी त़रह़ धुल गई और पाक करने का शर-ई तक़ाज़ा पूरा हो गया तो तहबन्द पाक हो जाएगा ।

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें बार बार ग़ुस्ल के मसाइल पढ़ने, समझने और दूसरों को समझाने और सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ी का सबब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दौरे अक़्दस में दो भाई थे, जिन में एक तो नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में (इ़ल्मे दीन सीखने के लिये) आता था, (एक रोज़) कारीगर भाई ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है, इस को मेरे कामकाज में हाथ बटाना चाहिये) तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : शायद ! "तुझे इस की ब-र-कत से रोज़ी मिल रही है।" (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٤ ص١٥٤ حديث ٢٣٥٢)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

तयम्मुम का त़रीक़ा

(ह़-नफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

इमामुस्साबिरीन, सय्यिदुश्शाकिरीन, **सुल्त़ानुल मु-तवक्किलीन** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जिब्रईल (عَلَیْہِ السَّلَام) ने मुझ से अ़र्ज़ की, कि रब तआ़ला फ़रमाता है : **ऐ मुह़म्मद** ! (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा उम्मती तुम पर **एक** बार दुरूद भेजे, मैं उस पर **दस**[10] रह़मतें नाज़िल करूं और आप की **उम्मत** में से जो कोई **एक** सलाम भेजे, मैं उस पर दस[10] सलाम भेजूं । (مِشْکَاۃُ الْمَصَابِیح ،ج۱ ص۱۸۹، حدیث ۹۲۸، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तयम्मुम के फ़राइज़

तयम्मुम में तीन फ़र्ज़ हैं ﴾1﴿ निय्यत ﴾2﴿ सारे मुंह पर हाथ फेरना ﴾3﴿ कोहनियों समेत दोनों हाथों का मस्ह़ करना ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 75, 77)

''तयम्मुम सीख लो'' के दस हुरूफ़ की निस्बत से तयम्मुम की 10 सुन्नतें

《**1**》 बिस्मिल्लाह शरीफ़ कहना 《**2**》 हाथों को ज़मीन पर मारना 《**3**》 ज़मीन पर हाथ मार कर लौट देना (या'नी आगे बढ़ाना और पीछे लाना) 《**4**》 उंग्लियां खुली हुई रखना 《**5**》 हाथों को झाड़ लेना या'नी एक हाथ के अंगूठे की जड़ को दूसरे हाथ के अंगूठे की जड़ पर मारना न इस त़रह़ कि ताली की सी आवाज़ निकले 《**6**》 पहले मुंह फिर हाथों का मस्ह़ करना 《**7**》 दोनों का मस्ह़ पै दर पै होना 《**8**》 पहले सीधे फिर उल्टे हाथ का मस्ह़ करना 《**9**》 (मर्द के लिये) दाढ़ी का ख़िलाल करना 《**10**》 उंग्लियों का ख़िलाल करना जब कि ग़ुबार पहुंच गया हो । अगर ग़ुबार न पहुंचा हो म-सलन पथ्थर वग़ैरा किसी ऐसी चीज़ पर हाथ मारा जिस पर ग़ुबार न हो तो ख़िलाल फ़र्ज़ है ख़िलाल के लिये दोबारा ज़मीन पर हाथ मारना ज़रूरी नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 78)

तयम्मुम का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

तयम्मुम की निय्यत कीजिये (निय्यत दिल के इरादे का नाम है, ज़बान से भी कह लें तो बेहतर है। म-सलन यूं कहिये बे वुज़ूई या बे ग़ुस्ली या दोनों से पाकी ह़ासिल करने और नमाज़ जाइज़ होने के लिये तयम्मुम करती हूं) बिस्मिल्लाह पढ़ कर दोनों हाथों की उंग्लियां कुशादा कर के

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

किसी ऐसी पाक चीज़ पर जो ज़मीन की क़िस्म (म–सलन पथ्थर, चूना, ईंट, दीवार, मिट्टी वग़ैरा) से हो मार कर लौट लीजिये (या'नी आगे बढ़ाइये और पीछे लाइये)। और अगर ज़ियादा गर्द लग जाए तो झाड़ लीजिये और उस से सारे मुंह का इस त़रह़ मस्ह़ कीजिये कि कोई ह़िस्सा रह न जाए अगर बाल बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मुम न होगा। फिर दूसरी बार इसी त़रह़ हाथ ज़मीन पर मार कर दोनों हाथों का नाख़ुनों से ले कर कोहनियों समेत मस्ह़ कीजिये, कंगन चूड़ियां जितने ज़ेवर हाथ में पहने हों सब को हटा कर या उतार कर जिल्द के हर ह़िस्से पर हाथ पहुंचाइये, अगर ज़र्रा बराबर भी कोई जगह रह गई तो तयम्मुम न होगा। तयम्मुम के मस्ह़ का बेहतर त़रीक़ा येह है कि उल्टे हाथ के अंगूठे के इ़लावा चार उंग्लियों का पेट सीधे हाथ की पुश्त पर रखिये और उंग्लियों के सिरों से कोहनियों तक ले जाइये और फिर वहां से उल्टे ही हाथ की हथेली से सीधे हाथ के पेट को मस करते हुए गिट्टे तक लाइये और उल्टे अंगूठे के पेट से सीधे अंगूठे की पुश्त का मस्ह़ कीजिये। इसी त़रह़ सीधे हाथ से उल्टे हाथ का मस्ह़ कीजिये। और अगर एक दम पूरी हथेली और उंग्लियों से मस्ह़ कर लिया तब भी तयम्मुम हो गया चाहे कोहनी से उंग्लियों की त़रफ़ लाए या उंग्लियों से कोहनी की त़रफ़ ले गए मगर सुन्नत के ख़िलाफ़ हुवा। तयम्मुम में सर और पाउं का मस्ह़ नहीं है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 76, 78 वग़ैरा)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

“सरकारे आ’ला ह़ज़रत की पच्चीसवीं शरीफ़” के छब्बीस हुरूफ़ की निस्बत से तयम्मुम के 26 म-दनी फूल

﴾1﴿ जो चीज़ आग से जल कर न राख होती है न पिघलती है न नर्म होती है वोह ज़मीन की जिन्स (या’नी क़िस्म) से है इस से तयम्मुम जाइज़ है । रैता, चूना, सुरमा, गन्धक, पथ्थर, ज़बर जद, फ़ीरोज़ा, अ़क़ीक़, वग़ैरा जवाहिर से तयम्मुम जाइज़ है चाहे इन पर गुबार हो या न हो । (बहारे शरीअ़त, हिस़्सा : 2, स. 79, اَلْبَحْرُ الرَّائِق، ج ۱، ص ۲۵۷)

﴾2﴿ **पक्की** ईंट, चीनी या मिट्टी के बरतन से तयम्मुम जाइज़ है । हां अगर इन पर किसी ऐसी चीज़ का जिर्म (या’नी जिस्म या तह) हो जो जिन्से ज़मीन से नहीं म-सलन कांच का जिर्म हो तो तयम्मुम जाइज़ नहीं । (बहारे शरीअ़त, हिस़्सा : 2, स. 80)

﴾3﴿ **जिस** मिट्टी, पथ्थर वग़ैरा से तयम्मुम किया जाए उस का पाक होना ज़रूरी है या’नी न उस पर किसी नजासत का असर हो न येह हो कि सिर्फ़ खुश्क होने से नजासत का असर जाता रहा हो । (ऐज़न, स. 79) ज़मीन, दीवार और वोह गर्द जो ज़मीन पर पड़ी रहती है अगर नापाक हो जाए फिर धूप या हवा से सूख जाए और नजासत का असर ख़त्म हो जाए तो पाक है और उस पर नमाज़ जाइज़ है मगर उस से तयम्मुम नहीं हो सकता ।

﴾4﴿ **येह** वह्म कि कभी नजिस हुई होगी फ़ुज़ूल है इस का ए’तिबार नहीं । (ऐज़न, स. 79)

﴾5﴿ **अगर** किसी लकड़ी, कपड़े, या दरी वग़ैरा पर इतनी गर्द है कि हाथ मारने से उंग्लियों का निशान बन जाए तो उस से तयम्मुम जाइज़ है।

﴾6﴿ **चूना**, मिट्टी या ईंटों की दीवार ख़्वाह घर की हो या मस्जिद की इस से तयम्मुम जाइज़ है। मगर उस पर ऑइल पेइन्ट, प्लास्टिक पेइन्ट और मेट फ़िनिश या वॉल पेपर वग़ैरा कोई ऐसी चीज़ नहीं होनी चाहिये जो जिन्से ज़मीन के इलावा हो, दीवार पर मार्बल हो तो कोई ह़रज नहीं।

﴾7﴿ **जिस** का वुज़ू न हो या नहाने की ह़ाजत हो और पानी पर क़ुदरत न हो वोह वुज़ू और ग़ुस्ल की जगह तयम्मुम करे।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 68)

﴾8﴿ **ऐसी** बीमारी कि वुज़ू या ग़ुस्ल से इस के बढ़ जाने या देर में अच्छी होने का सह़ीह़ अन्देशा हो या ख़ुद अपना तजरिबा हो कि जब भी वुज़ू या ग़ुस्ल किया बीमारी बढ़ गई या यूं कि कोई मुसल्मान अच्छा क़ाबिल त़बीब जो ज़ाहिरी त़ौर पर फ़ासिक़ न हो वोह कह दे कि पानी नुक़्सान करेगा। तो इन सूरतों में तयम्मुम कर सकती हैं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 68, دُرِّمُختار ، رَدُّالْمُحتار ج ۱ ص ٤٤١ ـ ٤٤٢)

﴾9﴿ **अगर** सर से नहाने में पानी नुक़्सान करता हो तो गले से नहाइये और पूरे सर का मस्ह़ कीजिये। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 69)

﴾10﴿ **जहां** चारों त़रफ़ एक एक मील तक पानी का पता न हो वहां भी तयम्मुम कर सकती हैं। (ऐज़न)

﴾11﴿ **अगर** इतना आबे ज़मज़म शरीफ़ पास है जो वुज़ू के लिये काफ़ी है तो तयम्मुम जाइज़ नहीं। (ऐज़न)

﴾12﴿ **इतनी** सर्दी हो कि नहाने से मर जाने या बीमार हो जाने का क़वी अन्देशा है और नहाने के बा'द सर्दी से बचने का कोई सामान भी न हो तो तयम्मुम जाइज़ है। (ऐज़न, स. 70)

﴾13﴿ **क़ैदी** को क़ैदख़ाने वाले वुज़ू न करने दें तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ ले बा'द में इआ़दा करे और अगर वोह दुश्मन या क़ैदख़ाने वाले नमाज़ भी न पढ़ने दें तो इशारे से पढ़े और बा'द में इआ़दा करे। (ऐज़न, स. 71)

﴾14﴿ **अगर** येह गुमान है कि पानी तलाश करने में (या पानी तक पहुंच कर वुज़ू करने तक) क़ाफ़िला नज़रों से ग़ाइब हो जाएगा "या ट्रेन छूट जाएगी।" तो तयम्मुम जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 72) फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा जिल्द 3 सफ़ह़ा 417 पर है : अगर रेल चले जाने का अन्देशा हो तब भी तयम्मुम करे और इआ़दा नहीं।

﴾15﴿ **वक़्त** इतना तंग हो गया कि वुज़ू या ग़ुस्ल करेगी तो नमाज़ क़ज़ा हो जाएगी तो तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़ ले फिर वुज़ू या ग़ुस्ल कर के नमाज़ का इआ़दा करे। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 3, स. 307)

﴾16﴿ **औ़रत** हैज़ व निफ़ास से पाक हो गई और पानी पर क़ादिर नहीं तो तयम्मुम करे। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 74)

﴾17﴿ **अगर** कोई ऐसी जगह है जहां न पानी मिलता है न ही तयम्मुम

के लिये पाक मिट्टी तो उसे चाहिये कि वक़्ते नमाज़ में नमाज़ की सी सूरत बनाए या'नी तमाम ह़-रकाते नमाज़ बिला निय्यते नमाज़ बजा लाए । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 75) मगर पाक पानी या मिट्टी पर क़ादिर होने पर वुज़ू या तयम्मुम कर के नमाज़ पढ़नी होगी ।

﴾18﴿ **वुज़ू** और ग़ुस्ल दोनों के तयम्मुम का एक ही त़रीक़ा है ।

(اَلْجَوْهَرَةُ النَّيِّرَة، الجزءُ الاوّل ص۲۸)

﴾19﴿ **जिस** पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ है उस के लिये येह ज़रूरी नहीं कि वुज़ू और ग़ुस्ल दोनों के लिये दो तयम्मुम करे बल्कि दोनों में एक ही निय्यत कर ले दोनों हो जाएंगे और अगर सिर्फ़ ग़ुस्ल या वुज़ू की निय्यत की जब भी काफ़ी है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 76)

﴾20﴿ **जिन** चीज़ों से वुज़ू टूट जाता है या ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो जाता है उन से तयम्मुम भी टूट जाता है और पानी पर क़ादिर होने से भी तयम्मुम टूट जाता है । (ऐज़न, स. 82)

﴾21﴿ **इस्लामी** बहन ने अगर नाक में फूल वग़ैरा पहने हों तो निकाल ले वरना फूल की जगह मस्ह़ नहीं हो सकेगा । (ऐज़न, स. 77)

﴾22﴿ **होंटों** का वोह ह़िस्सा जो आ़दतन मुंह बन्द होने की ह़ालत में दिखाई देता है इस पर मस्ह़ होना ज़रूरी है अगर मुंह पर हाथ फैरते वक़्त किसी ने होंटों को ज़ोर से दबा लिया कि कुछ ह़िस्सा मस्ह़ होने से रह गया तो तयम्मुम नहीं होगा । (ऐज़न)

﴾23﴿ **इसी** त़रह़ ज़ोर से आंखें बन्द कर लीं जब भी न होगा । (ऐज़न)

﴾24﴿ **अंगूठी**, घड़ी वग़ैरा पहने हों तो उतार कर या हटा कर उन के नीचे हाथ फेरना फ़र्ज़ है । चूड़ियां वग़ैरा हटा कर उन के नीचे मस्ह़ कीजिये । तयम्मुम की एह़तियातें वुज़ू से बढ़ कर हैं । (ऐज़न)

﴾25﴿ **बीमार** या बे दस्तो पा ख़ुद तयम्मुम नहीं कर सकती तो कोई दूसरी करवा दे इस में तयम्मुम करवाने वाली की निय्यत का ए'तिबार नहीं, जिस को तयम्मुम करवाया जा रहा है उस को निय्यत करनी होगी ।

(ऐज़न, स. 76, **عالمگیری ج ۱ص** ٢٦)

﴾26﴿ **अगर** औ़रत को वुज़ू करना है और वहां कोई ना मह़रम मर्द मौजूद है जिस से छुपा कर हाथों का धोना और सर का मस्ह़ नहीं कर सकती **तयम्मुम** करे । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 3, स. 416)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ **!** हमें बार बार तयम्मुम के मसाइल पढ़ने, समझने और दूसरों को समझाने और सुन्नतों के मुत़ाबिक़ तयम्मुम करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा । اٰمِين بِجاهِ النَّبِیِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गला बैठ गया हो तो......

प्याज़ का रस एक तोला (तक़रीबन 12 ग्राम), शह्द दो तोला (तक़रीबन 25 ग्राम) मिला कर गर्म कर के पीने से اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ बैठी हुई आवाज़ साफ़ हो जाएगी, मगर आतिशक (एक जिन्सी बीमारी) और जुज़ाम (या'नी कोढ़) के मरीज़ को इस से फ़ाएदा नहीं होगा । (अपने त़बीब के मश्वरे बिग़ैर येह इलाज न कीजिये)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

जवाबे अज़ान का त़रीक़ा

मोतियों का ताज

अल क़ौलुल बदीअ़ में है इन्तिक़ाल के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अ़ब्बास अह़मद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفُوْر को अहले शीराज़ में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह सर पर **मोतियों का ताज** सजाए जन्नती लिबास में मल्बूस "शीराज़" की जामेअ़ मस्जिद की मेह़राब में खड़े हैं। ख़्वाब देखने वाले ने अ़र्ज़ की : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? फ़रमाया : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा करता था येही अ़मल काम आ गया कि अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मग़्फ़िरत कर दी और मुझे ताज पहना कर दाख़िले जन्नत फ़रमाया।

(اَلْقَوْلُ الْبَدِيع، ص۲۵٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अज़ान के जवाब की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जब मुअज़्ज़िन

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा । (ابن عدی)

اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر कहे तो तुम में से कोई اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे तो वोह शख़्स اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे, फिर मुअज़्ज़िन اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे तो वोह शख़्स اَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰه कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة कहे तो वोह शख़्स لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे, फिर मुअज़्ज़िन حَيَّ عَلَى الْفَلَاح कहे तो वोह शख़्स لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه कहे, फिर जब मुअज़्ज़िन اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر कहे तो वोह शख़्स اَللّٰهُ اَكْبَر اَللّٰهُ اَكْبَر कहे और जब मुअज़्ज़िन لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे और येह शख़्स सिद्क़ दिल से لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहे तो जन्नत में दाख़िल होगा ।'' (صَحِیح مُسلِم، ص ۲۰۳ حدیث ۳۸۵)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''ज़ाहिर येह है कि مِنْ قَلْبِهٖ (या'नी सिद्क़ दिल से कहने) का तअ़ल्लुक़ सारे जवाब से है या'नी अज़ान का पूरा जवाब सच्चे दिल से दे क्यूं कि बिग़ैर इख़्लास कोई इबादत क़बूल नहीं ।'' (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 412)

अज़ान का जवाब देने वाला जन्नती हो गया

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि एक साहि़ब जिन का ब ज़ाहिर कोई बहुत बड़ा नेक अ़मल न था, वोह फ़ौत हो गए तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

की मौजू-दगी में फ़रमाया : क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह तआ़ला ने उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया है। इस पर लोग मु-तअ़ज्जिब हुए क्यूं कि ब ज़ाहिर उन का कोई बड़ा अ़मल न था। चुनान्चे एक सह़ाबी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ उन के घर गए और उन की बेवा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि उन का कोई ख़ास अ़मल हमें बताइये, तो उन्हों ने जवाब दिया : **और तो कोई ख़ास बड़ा अ़मल मुझे मा'लूम नहीं, सिर्फ़ इतना जानती हूं कि दिन हो या रात, जब भी वोह अज़ान सुनते तो जवाब ज़रूर देते थे।** (تاریخ دِمشق لابن عَساکِر ج٤٠ ص ٤١٢،٤١٣ ملخّصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गु-नहे गदा का ह़िसाब क्या वोह अगर्चे लाख से हैं सिवा

मगर ऐ अ़फ़ू तेरे अ़फ़्व का तो ह़िसाब है न शुमार है

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अज़ान का जवाब इस त़रह़ दीजिये

मुअज़्ज़िन साह़िब को चाहिये कि अज़ान के कलिमात ठहर ठहर कर कहें। اَللہُ اَکْبَر اَللہُ اَکْبَر दोनों मिल कर (बिग़ैर सक्ता किये एक साथ पढ़ने के ए'तिबार से) एक कलिमा हैं दोनों के बा'द सक्ता करे (या'नी चुप हो जाए) और सक्ते की मिक़्दार येह है कि जवाब देने

वाला जवाब दे ले, (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٢ص٦٦) जवाब देने वाली इस्लामी बहन को चाहिये कि जब मुअज़्ज़िन साहि़ब اَللّٰہُ اَکۡبَر اَللّٰہُ اَکۡبَر कह कर सक्ता करें या'नी ख़ामोश हों उस वक़्त اَللّٰہُ اَکۡبَر اَللّٰہُ اَکۡبَر कहे। इसी त़रह़ दीगर कलिमात का जवाब दे। जब मुअज़्ज़िन पहली बार اَشۡهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوۡلُ الله कहे तो येह कहे :-

صَلَّى اللهُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ الله **तरजमा :** आप पर दुरूद हो या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(رَدُّالْمُحتار ج٢ص٨٤)

जब दोबारा कहे तो येह कहे :-

(اَیضاً) قُرَّةُ عَيْنِيْ بِكَ يَا رَسُوْلَ الله या रसूलल्लाह ! आप से मेरी आंखों की ठन्डक है।

और हर बार अंगूठों के नाख़ुन आंखों से लगा ले आख़िर में कहे :- اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِيْ بِالسَّمْعِ وَالْبَصَر ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मेरी सुनने और देखने की क़ुव्वत से मुझे नफ़अ़ अ़त़ा फ़रमा। **(اَیضاً)**

जो ऐसा करे सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे अपने पीछे पीछे जन्नत में ले जाएंगे। **(اَیضاً)**

حَيَّ عَلَى الصَّلٰوة और حَيَّ عَلَى الْفَلَاح के जवाब में (चारों बार) لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِالله कहे और बेहतर येह है कि दोनों कहे (या'नी मुअज़्ज़िन ने जो कहा वोह भी कहे और लाहौ़ल भी) बल्कि मज़ीद येह भी मिला ले :-

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा । (ابن بشکوال)

مَاشَآءَ اللّٰہُ کَانَ وَمَالَمْ یَشَأْ لَمْ یَکُنْ तरजमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो चाहा हुवा, जो नहीं चाहा नहीं हुवा ।

(دُرِّمُختار ورَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۲، عالمگیری ج۱ ص۵۷)

اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌ مِّنَ النَّوْم के जवाब में कहे :-

صَدَقْتَ وَبَرِرْتَ وَبِالْحَقِّ نَطَقْتَ तरजमा : तू सच्चा और नेकूकार है और तूने ह़क़ कहा है ।

(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۲،ص ۸۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"अज़ाने बिलाल" के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से जवाबे अज़ान के 8 म–दनी फूल

﴾1﴿ **अज़ाने** नमाज़ के इ़लावा दीगर अज़ानों का जवाब भी दिया जाएगा म–सलन बच्चा पैदा होते वक़्त की अज़ान । (رَدُّالْمُحتار ج۲ ص۸۲)

﴾2﴿ **अज़ान** सुनने वाले के लिये अज़ान का जवाब देने का ह़ुक्म है । (عالمگیری ج۱ ص ۵۷)

﴾3﴿ **जुनुब** (या'नी जिसे जिमाअ़ या एह़तिलाम की वज्ह से ग़ुस्ल की ह़ाजत हो) भी अज़ान का जवाब दे । अलबत्ता ह़ैज़ व निफ़ास वाली औ़रत, जिमाअ़ में मश्ग़ूल या जो क़ज़ाए ह़ाजत में हों उन पर जवाब नहीं । (دُرِّمُختار ج۲ ص۸۱)

﴾4﴿ **जब** अज़ान हो तो उतनी देर के लिये सलाम व कलाम और

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

जवाबे सलाम और तमाम काम मौक़ूफ़ कर दीजिये यहां तक कि तिलावत भी, अज़ान को ग़ौर से सुनिये और जवाब दीजिये।

(دُرِّمُختار ج۲ص۸٦، عالمگیری ج۱ص۵۷ مُلَخَّصاً)

《5》 **अज़ान** के दौरान चलना, फिरना, बरतन, गिलास वग़ैरा कोई सी चीज़ उठाना, खाना वग़ैरा रखना, छोटे बच्चों से खेलना, इशारों में गुफ़्त–गू करना वग़ैरा सब कुछ मौक़ूफ़ कर देना ही मुनासिब है।

《6》 **जो** अज़ान के वक़्त बातों में मश्ग़ूल रहे उस पर مَعَاذَاللّٰہ عَزَّ وَجَلَّ ख़ातिमा बुरा होने का ख़ौफ़ है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 41 मक–त–बतुल मदीना)

《7》 **अगर** चन्द अज़ानें सुने तो इस पर पहली ही का जवाब है और बेहतर येह है कि सब का जवाब दे। (دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۲ص۸۲)

《8》 **अगर** ब वक़्ते अज़ान जवाब न दिया तो अगर ज़ियादा देर न गुज़री हो तो जवाब दे ले। (دُرِّمُختار،ج۲،ص ۸۳، ۸٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

क़िब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : चार चीज़ें आंखों की (बीनाई की) तक़्वियत का बाइ़स हैं : 《1》 क़िब्ला रुख़ बैठना 《2》 सोते वक़्त सुरमा लगाना 《3》 सब्ज़े की त़रफ़ नज़र करना और 《4》 लिबास को पाक व साफ़ रखना।

(اِحیاء العلوم،ج۲ ص۲۷ دار صادر بیروت)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

(ह़-नफ़ी)

नमाज़ का त़रीक़ा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, रह़मते आ़लम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की **परेशानी** को दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** को ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला। (البدور السافرة فی امور الاخرة للسیوطی ص ۱۳۱ حدیث ۳۶۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! क़ुरआनो ह़दीस में नमाज़ पढ़ने के बे शुमार फ़ज़ाइल और न पढ़ने की सख़्त सज़ाएं वारिद हैं, चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुल मुनाफ़िक़ून** की आयत नम्बर 9 में इर्शादे रब्बानी है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَ لَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِۚ وَ مَنْ یَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓىٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ۝۹
(پارہ : ۲۸ ، المنافقون : ۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें **अल्लाह** के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न करे और जो ऐसा करे तो वोही लोग नुक़्सान में हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی नक़्ल करते हैं, मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَھُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबा-रका में अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से **पांच नमाज़ें** मुराद हैं, पस जो शख़्स अपने माल या'नी ख़रीदो फ़रोख़्त, मईशत व रोज़गार, साज़ो सामान और औलाद में मसरूफ़ रहे और वक़्त पर **नमाज़** न पढ़े वोह नुक़्सान उठाने वालों में से है। (کتابُ الکبائِر ص ۲۰)

क़ियामत का सब से पहला सुवाल

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है, "क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में सब से पहले **नमाज़** का सुवाल होगा। अगर वोह दुरुस्त हुई तो उस ने काम्याबी पाई और अगर उस में कमी हुई तो वोह रुस्वा हुवा और उस ने नुक़्सान उठाया।" (کَنْزُ الْعُمّال، ج ۷ ص ۱۱۵ رقم ۱۸۸۸۳)

नमाज़ी के लिये नूर

सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले

मुहूतशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे मुअ़ज़्ज़म है, "जो शख़्स नमाज़ की ह़िफ़ाज़त करे, उस के लिये नमाज़ क़ियामत के दिन **नूर, दलील** और **नजात** होगी और जो इस की ह़िफ़ाज़त न करे, उस के लिये **बरोज़े क़ियामत न नूर होगा** और न **दलील** और न ही **नजात**। और वोह शख़्स क़ियामत के दिन **फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान** और **उबय बिन ख़लफ़** के साथ होगा।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ٢ ص ٢١ حديث ١٦١١)

कौन, किस के साथ उठेगा !

इस्लामी बहनो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى नक़्ल करते हैं, बा'ज़ उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि **बे नमाज़ी** को इन चार (फ़िरऔ़न, क़ारून, हामान, और उबय बिन ख़लफ़) के साथ इस लिये उठाया जाएगा कि लोग उ़मूमन दौलत, हुकूमत, वज़ारत और तिजारत की वज्ह से नमाज़ को तर्क करते हैं। जो **हुकूमत** की मश्ग़ूलिय्यत के सबब नमाज़ नहीं पढ़ेगा उस का ह़श्र (या'नी उठाया जाना) **फ़िरऔ़न** के साथ होगा, जो **दौलत** के बाइ़स नमाज़ तर्क करेगा तो उस का **क़ारून** के साथ ह़श्र होगा, अगर तर्के नमाज़ का सबब **वज़ारत** होगी तो फ़िरऔ़न के वज़ीर **हामान** के साथ ह़श्र होगा और अगर **तिजारत** की मस्रूफ़िय्यत की वज्ह से नमाज़ छोड़ेगा तो उस को मक्कए मुकर्रमा के बहुत बड़े काफ़िर ताजिर उबय बिन ख़लफ़ के साथ बरोज़े क़ियामत उठाया जाएगा।

(كتابُ الكبائر ص ٢١)

शदीद ज़ख़्मी ह़ालत में नमाज़

जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़ातिलाना ह़म्ला हुवा तो अ़र्ज़ की गई, ऐ अमीरुल मुअमिनीन ! **नमाज़** (का वक़्त है) फ़रमाया : "जी हां, सुनिये ! जो शख़्स नमाज़ को ज़ाएअ़ करता है उस का इस्लाम में कोई ह़िस्सा नहीं।" और ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने शदीद ज़ख़्मी होने के बा वुजूद नमाज़ अदा फ़रमाई। (ऐज़न, स. 22)

हज़ारों साल अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 158 ता 159 पर फ़रमाते हैं : ईमान व तस्ह़ीह़े अ़क़ाइद के बा'द जुम्ला **ह़ुक़ूक़ुल्लाह** में सब से अहम व आ'ज़म नमाज़ है। जुमुआ़ व ई़दैन या बिला पाबन्दी पन्जगाना पढ़ना हरगिज़ नजात का ज़िम्मादार नहीं। जिस ने क़स्दन एक वक़्त की छोड़ी हज़ारों बरस जहन्नम में रहने का मुस्तह़िक़ हुवा, जब तक तौबा न करे और उस की क़ज़ा न कर ले, मुसल्मान अगर उस की ज़िन्दगी में उसे यक लख़्त (या'नी बिल्कुल) छोड़ दें उस से बात न करें, उस के पास न बैठें, तो ज़रूर वोह इस का सज़ावार है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾
(پارہ : ۷ ، الانعام : ۶۸)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और जो कहीं तुझे शैत़ान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ।

नमाज़ पर नूर या तारीकी के अस्बाब

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन सामित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है, "जो शख़्स अच्छी त़रह़ वुज़ू करे, फिर नमाज़ के लिये खड़ा हो, इस के रुकूअ़, सुजूद और क़िराअत को मुकम्मल करे तो नमाज़ कहती है, **अल्लाह** तआ़ला तेरी ह़िफ़ाज़त करे जिस त़रह़ तूने मेरी ह़िफ़ाज़त की। फिर उस नमाज़ को आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है और उस के लिये चमक और नूर होता है। पस उस के लिये आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं ह़त्ता कि उसे अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश किया जाता है और वोह नमाज़ उस नमाज़ी की शफ़ाअ़त करती है, और अगर वोह इस का रुकूअ़, सुजूद और क़िराअत मुकम्मल न करे तो नमाज़ कहती है, **अल्लाह** तआ़ला तुझे ज़ाएअ़ कर दे जिस त़रह़ तूने मुझे ज़ाएअ़ किया। फिर उस नमाज़ को इस त़रह़ आस्मान की त़रफ़ ले जाया जाता है कि उस पर तारीकी (अंधेरा) छाई होती है और उस पर आस्मान के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं फिर उस को पुराने कपड़े की त़रह़ लपेट कर उस नमाज़ी के मुंह पर मारा जाता है." (كَنْزُ الْعُمَّال، ج۷ص۱۲۹، رقم ۱۹۰۴۹)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

बुरे ख़ातिमे का एक सबब

हज़रते सय्यिदुना **इमाम** बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं, ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने एक शख़्स को देखा जो नमाज़ पढ़ते हुए रुकूअ़ और सुजूद पूरे अदा नहीं करता था। तो उस से फ़रमाया : "तुम ने जो नमाज़ पढ़ी अगर इसी नमाज़ की ह़ालत में इन्तिक़ाल कर जाओ तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर तुम्हारी मौत वाक़ेअ़ नहीं होगी। (صَحِيحُ البُخارِىّ ج ۱ ص۲۸٤ حديث۸۰۸) सु-नने नसाई की रिवायत में येह भी है कि आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने पूछा : "तुम कब से इस त़रह़ नमाज़ पढ़ रहे हो ?" उस ने कहा : "**चालीस साल** से।" फ़रमाया : "तुम ने **चालीस साल** से बिल्कुल नमाज़ ही नहीं पढ़ी और अगर इसी ह़ालत में तुम्हें मौत आ गई तो दीने मुह़म्मदी عَلٰى صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नहीं मरोगे।" (سُنَنُ النَّسَائى ص ۲۲۵ حديث۱۳۰۹)

नमाज़ का चोर

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहि़बे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "लोगों में बद तरीन चोर वोह है जो अपनी **नमाज़** में चोरी करे।" अ़र्ज़ की गई, "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! नमाज़ में चोरी कैसे होती है ?"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है । (ابویعلیٰ)

फ़रमाया : '' (इस त़रह़ कि) रुकूअ़ और सज्दे पूरे न करे ।''

(مُسنَدِ امام احمد بن حَنبل، ج۸،ص۳۸۶،حدیث ۲۲۷۰۵)

चोर की दो क़िस्में

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीस के तह़त फ़रमाते हैं, ''मा'लूम हुवा माल के चोर से **नमाज़ का चोर** बदतर है क्यूंकि माल का चोर अगर सज़ा भी पाता है तो कुछ न कुछ नफ़्अ़ भी उठा लेता है मगर **नमाज़ का चोर** सज़ा पूरी पाएगा इस के लिये नफ़्अ़ की कोई सूरत नहीं । माल का चोर बन्दे का ह़क़ मारता है जब कि **नमाज़ का चोर अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ह़क़, येह ह़ालत उन की है जो **नमाज़** को नाक़िस पढ़ते हैं इस से वोह लोग दर्से इ़ब्रत ह़ासिल करें जो सिरे से नमाज़ पढ़ते ही नहीं ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 2, स. 78)

इस्लामी बहनो ! अव्वल तो लोग **नमाज़** पढ़ते ही नहीं हैं और जो पढ़ते हैं उन की अक्सरिय्यत सुन्नतें सीखने के जज़्बे की कमी के बाइ़स आज कल सह़ीह़ त़रीक़े से **नमाज़** पढ़ने से मह़रूम रहती है । यहां मुख़्तसरन **नमाज़** पढ़ने का त़रीक़ा पेश किया जाता है । बराए मेह़रबानी ! बहुत ज़ियादा ग़ौर से पढ़िये और अपनी नमाज़ों की इस्लाह़ फ़रमाइये :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढे़गा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (کنزالعمال)

इस्लामी बहनों की नमाज़ का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

बा वुज़ू क़िब्ला रू इस त़रह़ खड़ी हों कि दोनों पाउं के पन्जों में चार उंगल का फ़ासिला रहे और दोनों हाथ कन्धों तक उठाइये और चादर से बाहर न निकालिये। हाथों की उंग्लियां न मिली हुई हों न खू़ब खुली बल्कि अपनी ह़ालत पर (NORMAL) रखिये और हथेलियां क़िब्ले की त़रफ़ हों नज़र सज्दे की जगह हो। अब जो **नमाज़** पढ़नी है उस की निय्यत या'नी दिल में उस का पक्का इरादा कीजिये साथ ही ज़बान से भी कह लीजिये कि ज़ियादा अच्छा है (म-सलन निय्यत की मैं ने आज की ज़ोहर की चार रक्अ़त फ़र्ज़ **नमाज़** की) अब तक्बीरे तह़रीमा या'नी اَللّٰهُ اَكْبَرُ (या'नी **अल्लाह** सब से बड़ा है) कहते हुए हाथ नीचे लाइये और उल्टी हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर उस के ऊपर सीधी हथेली रखिये। अब इस त़रह़ **सना** पढ़िये :

سُبْحٰنَکَ اللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِکَ وَ تَبَارَکَ اسْمُکَ وَ تَعَالٰی جَدُّکَ وَ لَآ اِلٰهَ غَيْرُکَ ط

पाक है तू ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मैं तेरी ह़म्द करता (करती) हूं, तेरा नाम ब-र-कत वाला है और तेरी अ-ज़मत बुलन्द है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।

फिर **तअ़व्वुज़** पढ़िये :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم

मैं **अल्लाह** तआ़ला की पनाह में आता (आती) हूं शैत़ान मरदूद से।

फिर **तस्मिया** पढ़िये :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला ।

फिर मुकम्मल **सूरए फ़ातिह़ा** पढ़िये :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जो मालिक सारे जहान वालों का । बहुत मेह्रबान रह़मत वाला, रोज़े जज़ा का मालिक । हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें । हम को सीधा रास्ता चला, रास्ता उन का जिन पर तूने एह़सान किया, न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का ।

सूरए फ़ातिह़ा ख़त्म कर के आहिस्ता से **आमीन** कहिये । फिर तीन आयात या एक बड़ी आयत जो तीन छोटी आयतों के बराबर हो या कोई **सूरत** म-सलन **सूरए इख़्लास** पढ़िये ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेह्रबान रह़मत वाला । तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है । **अल्लाह** बे नियाज़ है । न उस की कोई औलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा । और न उस के जोड़ का कोई ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

अब اَللّٰهُ اَکْبَرُ कहते हुए **रुकूअ़** में जाइये। रुकूअ़ में थोड़ा झुकिये या'नी इतना कि घुटनों पर हाथ रख दें ज़ोर न दीजिये और घुटनों को न पकड़िये और उंग्लियां मिली हुई और पाउं झुके हुए रखिये मर्दों की त़रह़ ख़ूब सीधे मत कीजिये। (فتاوٰی عالمگیری ج۱ ص۷۴) कम अज़ कम तीन बार **रुकूअ़ की तस्बीह़** या'नी سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْمِ (या'नी पाक है मेरा अ़-ज़मत वाला परवर्द गार) कहिये। फिर **तस्मीअ़** या'नी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की ता'रीफ़ की) कहते हुए बिल्कुल सीधी खड़ी हो जाइये, इस खड़े होने को **क़ौमा** कहते हैं। इस के बा'द कहिये :- اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ (ऐ अल्लाह ! ऐ हमारे परवर्द गार ! सब ख़ूबियां तेरे ही लिये हैं) फिर اَللّٰهُ اَکْبَرُ कहते हुए इस त़रह़ **सज्दे** में जाइये कि पहले घुटने ज़मीन पर रखिये फिर हाथ फिर दोनों हाथों के बीच में इस त़रह़ सर रखिये कि पहले नाक फिर पेशानी **और येह ख़ास ख़याल रखिये कि नाक की सिर्फ़ नोक नहीं बल्कि हड्डी लगे और पेशानी ज़मीन पर जम जाए,** नज़र नाक पर रहे, सज्दा सिमट कर कीजिये या'नी बाज़ू करवटों से, पेट रान से, रान पिंडलियों से और पिंडलियां ज़मीन से मिला दीजिये, और दोनों पाउं सीधी त़रफ़ निकाल दीजिये। अब कम

अज़ कम तीन बार **सज्दे की तस्बीह़** या'नी سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی (पाक है मेरा परवर्द गार सब से बुलन्द) पढ़िये फिर सर इस त़रह़ उठाइये कि पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथ उठें। दोनों पाउं सीधी त़रफ़ निकाल दीजिये और उल्टी सुरीन पर बैठिये और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखिये। दोनों सज्दों के दरमियान बैठने को **जल्सा** कहते हैं। फिर कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक्दार ठहरिये (इस वक़्फ़े में اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِی या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा कह लेना मुस्तह़ब है) फिर اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहते हुए पहले सज्दे ही की त़रह़ **दूसरा सज्दा** कीजिये। अब उसी त़रह़ पहले सर उठाइये फिर हाथों को घुटनों पर रख कर पन्जों के बल खड़ी हो जाइये। उठते वक़्त बिग़ैर मजबूरी ज़मीन पर हाथ से टेक मत लगाइये। येह आप की एक रक्अ़त पूरी हुई। अब दूसरी रक्अ़त में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ कर अल ह़म्द और सूरह पढ़िये और पहले की त़रह़ **रुकूअ़** और **सज्दे** कीजिये **दूसरे सज्दे** से सर उठाने के बा'द दोनों पाउं सीधी त़रफ़ निकाल दीजिये और उल्टी सुरीन पर बैठिये और सीधा हाथ सीधी रान के बीच में और उल्टा हाथ उल्टी रान के बीच में रखिये। दो रक्अ़त के दूसरे सज्दे के बा'द बैठना **क़ा'दह** कहलाता है। अब क़ा'दह में **तशह्हुद** पढ़िये :

اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوٰتُ وَالطَّيِّبٰتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ ط اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْنَ ط اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ط

तमाम क़ौली, फ़े'ली और माली इबादतें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के लिये हैं। सलाम हो आप पर ऐ नबी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मतें और ब-र-कतें। सलाम हो हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता (देती) हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता (देती) हूं मुह़म्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं।

जब तशह्हुद में लफ़्ज़ **لَا** के क़रीब पहुंचें तो सीधे हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का ह़ल्क़ा बना लीजिये और छुंग्लिया (या'नी छोटी उंगली) और बिन्सर या'नी उस के बराबर वाली उंगली को हथेली से मिला दीजिये और (اَشْهَدُ اَنْ के फ़ौरन बा'द) लफ़्ज़े **لَا** कहते ही कलिमे की उंगली उठाइये मगर उस को इधर उधर मत हिलाइये और लफ़्ज़े **اِلَّا** पर गिरा दीजिये और फ़ौरन सब उंग्लियां सीधी कर लीजिये। अब अगर दो से ज़ियादा रक्अ़तें पढ़नी हैं तो اَللّٰهُ اَكْبَرُ कहती हुई खड़ी हो जाइये। अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ रही हैं तो तीसरी और चौथी रक्अ़त के क़ियाम में بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم और **अल ह़म्द** शरीफ़ पढ़िये, सूरत मिलाने की ज़रूरत नहीं। बाक़ी अफ़्आ़ल इसी त़रह़ बजा

लाइये और अगर **सुन्नत व नफ़्ल** हों तो सूरए फ़ातिह़ा के बा'द सूरत भी मिलाइये फिर चार रक्अ़तें पूरी कर के क़ा'दए अख़ीरह में तशह्हुद के बा'द **दुरूदे इब्राहीम** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पढ़िये :-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۞

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुरूद भेज (हमारे सरदार) **मुह़म्मद** पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तूने दुरूद भेजा (सय्यिदुना) इब्राहीम पर और उन की आल पर। बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۞

ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ ब-र-कत नाज़िल कर (हमारे सरदार) **मुह़म्मद** पर और उन की आल पर जिस त़रह़ तूने ब-र-कत नाज़िल की (सय्यिदुना) इब्राहीम और उन की आल पर बेशक तू सराहा हुवा बुज़ुर्ग है।

फिर कोई सी **दुआ़ए मासूरा** (क़ुरआनो ह़दीस की दुआ़ को दुआ़ए मासूरा कहते हैं) पढ़िये, म-सलन येह दुआ़ पढ़ लीजिये :

(اَللّٰهُمَّ) رَبَّنَاۤ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ

(پارہ : ۲ البقرۃ : ۲۰۱)

(ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

फिर नमाज़ ख़त्म करने के लिये पहले दाएं (सीधे) कन्धे की त़रफ़ मुंह कर के اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ कहिये और इसी त़रह़ बाएं (उल्टे) त़रफ़ । अब **नमाज़ ख़त्म हुई ।**

(माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 72,75 वग़ैरा)

मु-तवज्जेह हों !

इस्लामी बहनो ! दिये हुए इस त़रीक़ए नमाज़ में बा'ज़ बातें **फ़र्ज़** हैं कि इस के बिग़ैर नमाज़ होगी ही नहीं, बा'ज़ **वाजिब** कि इस का जानबूझ कर छोड़ना गुनाह और तौबा करना और नमाज़ का फिर से पढ़ना वाजिब और भूल कर छूटने से सज्दए सह्व वाजिब और बा'ज़ **सुन्नते मुअक्कदा** हैं कि जिस के छोड़ने की आ़दत बना लेना गुनाह है और बा'ज़ **मुस्तह़ब** हैं कि जिस का करना सवाब और न करना गुनाह नहीं । (ऐज़न, स. 75)

"या अल्लाह" के छ हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ की 6 शराइत़

﴾1﴿ **त़हारत :** नमाज़ी का बदन, लिबास और जिस जगह नमाज़ पढ़ रही है उस जगह का हर क़िस्म की नजासत से पाक होना ज़रूरी है ।

(شَرحُ الْوِقَايَة، ج١ص١٥٦)

﴾2﴿ **सित्रे औ़रत :** ❁ इस्लामी बहन के लिये इन **पांच[5] आ'ज़ा** : मुंह की टिक्ली, दोनों हथेलियां और दोनों पाउं के तल्वों के इ़लावा सारा जिस्म छुपाना लाज़िमी है (دُرِّمُختار، ج٢،ص٩٥) अलबत्ता अगर दोनों हाथ

(गिट्टों तक), पाउं (टख़्नों तक) मुकम्मल ज़ाहिर हों तो एक मुफ़्ता बिही क़ौल पर नमाज़ दुरुस्त है ❁ अगर ऐसा बारीक कपड़ा पहना जिस से बदन का वोह हि़स्सा जिस का नमाज़ में छुपाना फ़र्ज़ है नज़र आए या जिल्द (या'नी चमड़ी) का रंग ज़ाहिर हो नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 3, स. 48, فتاوٰی عالمگیری ج۱ص۵۸) ❁ आज कल बारीक कपड़ों का रवाज बढ़ता जा रहा है, ऐसा कपड़ा पहनना जिस से **सित्रे औ़रत** न हो सके इ़लावा नमाज़ के भी **ह़राम** है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 3, स. 48) ❁ दबीज़ (या'नी मोटा) कपड़ा जिस से बदन का रंग न चमक्ता हो मगर बदन से ऐसा चिपका हुवा हो कि देखने से उ़ज़्व की हैअत (या'नी शक्लो सूरत और गोलाई वग़ैरा) मा'लूम होती हो। ऐसे कपड़े से अगर्चे नमाज़ हो जाएगी मगर उस उ़ज़्व की त़रफ़ दूसरों को निगाह करना जाइज़ नहीं। (رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص۱۰۳) ऐसा लिबास लोगों के सामने पहनना मन्अ़ है और औ़रतों के लिये ब द-र-जए औला मुमा-न-अ़त। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 3, स. 48) ❁ बा'ज़ इस्लामी बहनें मलमल वग़ैरा की बारीक चादर नमाज़ में ओढ़ती हैं जिस से बालों की सियाही (कालक) चमक्ती है या ऐसा लिबास पहनती हैं जिस से आ'ज़ा का रंग नज़र आता है ऐसे लिबास में भी नमाज़ नहीं होती।

﴾3﴿ इस्तिक़्बाले क़िब्ला : या'नी नमाज़ में क़िब्ला (का'बा) की त़रफ़ मुंह करना। ❁ नमाज़ी ने बिला उ़ज़्रे शर-ई जानबूझ कर **क़िब्ले** से सीना फेर दिया अगर्चे फ़ौरन ही **क़िब्ले** की त़रफ़ हो गई नमाज़

फ़ासिद हो गई (या'नी टूट गई) और अगर बिला क़स्द (या'नी बिला इरादा) फिर गई और ब क़दर तीन बार "سُبْحٰنَ اللّٰه" कहने के वक़्फ़े से पहले वापस **क़िब्ला** रुख़ हो गई तो फ़ासिद न हुई। (या'नी न टूटी) (مُنية المصلى ص١٩٣ البحرالرائق ج١ ص٤٩٧) ❁ अगर सिर्फ़ मुंह क़िब्ले से फिरा तो वाजिब है कि फ़ौरन क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर ले और नमाज़ न जाएगी मगर बिला उ़ज़्र (या'नी बिग़ैर मजबूरी के) ऐसा करना मक्रूहे तह़रीमी है। (المرجع السّابِق) ❁ अगर ऐसी जगह पर हैं जहां **क़िब्ले** की शनाख़्त (या'नी पहचान) का कोई ज़रीआ़ नहीं है न कोई ऐसा मुसल्मान है जिस से पूछ कर मा'लूम किया जा सके तो **तह़र्री** कीजिये या'नी सोचिये और जिधर **क़िब्ला** होना दिल पर जमे उधर ही रुख़ कर लीजिये आप के ह़क़ में वोही **क़िब्ला** है। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص١٤٣ دارالمعرفة بيروت) ❁ **तह़र्री** कर के नमाज़ पढ़ी बा'द में मा'लूम हुवा कि **क़िब्ले** की त़रफ़ नमाज़ नहीं पढ़ी, नमाज़ हो गई लौटाने की ह़ाजत नहीं। (تَنوِيرُالْاَبْصَار ج ٢ ص ١٤٣) ❁ **एक इस्लामी बहन तह़र्री कर के** (सोच कर) **नमाज़ पढ़ रही हो दूसरी उस की देखा देखी उसी सम्त नमाज़ पढ़ेगी तो नहीं होगी दूसरी के लिये भी तह़र्री करने का हुक्म है।** (رَدُّالْمُحتار،ج٢،ص١٤٣)

﴾4﴿ **वक़्त :** या'नी जो नमाज़ पढ़नी है उस का वक़्त होना ज़रूरी है। म-सलन आज की नमाज़े अ़स्र अदा करनी है तो येह ज़रूरी है कि अ़स्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाए अगर वक़्ते अ़स्र शुरूअ़ होने से पहले ही पढ़ ली तो नमाज़ न होगी। ❁ **निज़ामुल अवक़ात** के

नक़्शे उ़मूमन मिल जाते हैं उन में जो मुस्तनद तौक़ीत दां (या'नी वक़्त का इ़ल्म रखने के माहिर) के मुरत्तब कर्दा और उ़–लमाए अहले सुन्नत के मुसद्दक़ा (तस्दीक़ शुदा) हों उन से नमाज़ों के अवक़ात मा'लूम करने में सहूलत रहती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की वेब साइट **(www.dawateislami.net)** पर तक़रीबन दुन्या भर के मुसल्मानों के लिये नमाज़ों और स–ह़री व इफ़्त़ार का निज़ामुल अवक़ात मौजूद है। ❁ **इस्लामी बहनों** के लिये अव्वल वक़्त में नमाज़े फ़ज्र अदा करना मुस्तह़ब है और बाक़ी नमाज़ों में बेहतर येह है कि इस्लामी भाइयों की जमाअ़त का इन्तिज़ार करें जब जमाअ़त हो चुके फिर पढ़ें। **(دُرِّمُختار، ج۲،ص۳۰)**

तीन³ अवक़ाते मक्रूहा : (1) तुलूए़ आफ़्ताब से ले कर कम अज़ कम बीस मिनट बा'द तक (2) ग़ुरूबे आफ़्ताब से कम अज़ कम बीस मिनट पहले ❁ निस्फ़ुन्नहार या'नी ज़ह़वए कुब्रा से ले कर ज़वाले आफ़्ताब तक। इन तीनों अवक़ात में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं न फ़र्ज़ न वाजिब न नफ़्ल न क़ज़ा। हां अगर इस दिन की **नमाज़े अ़स्र** नहीं पढ़ी थी और मक्रूह वक़्त शुरूअ़ हो गया तो पढ़ ले अलबत्ता इतनी ताख़ीर करना **ह़राम** है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 22, **(عالمگیری ج ۱ ص ۵۲، دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۳۷**

नमाज़े अ़स्र के दौरान मक्रूह वक़्त आ जाए तो ?

ग़ुरूबे आफ़्ताब से कम से कम 20 मिनट क़ब्ल नमाज़े अ़स्र

का सलाम फिर जाना चाहिये जैसा के मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "नमाज़े अ़स्र में जितनी ताख़ीर हो अफ़्ज़ल है जब कि वक़्ते कराहत से पहले पहले ख़त्म हो जाए।" (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 156) फिर अगर उस ने एह़तियात़ की और नमाज़ में तत़्वील की (या'नी तूल दिया) कि वक़्ते कराहत वस्त़े (या'नी दौराने) नमाज़ में आ गया जब भी इस पर ए'तिराज़ नहीं।" (ऐज़न, स. 139)

﴾5﴿ **निय्यत :** निय्यत दिल के पक्के इरादे का नाम है। (تَنوِيرُ الْاَبْصَار ج٢ ص١١١) ❁ ज़बान से **निय्यत** करना ज़रूरी नहीं अलबत्ता दिल में **निय्यत** ह़ाज़िर होते हुए ज़बान से कह लेना बेहतर है। (فتاوٰی عالمگیری ج١ ص٦٥) अ़-रबी में कहना भी ज़रूरी नहीं उर्दू वग़ैरा किसी भी ज़बान में कह सकते हैं। (ملخص از دُرِّ مُختار، ج ٢، ص ١١٣) ❁ **निय्यत** में ज़बान से कहने का ए'तिबार नहीं या'नी अगर दिल में म-सलन ज़ोह्‌र की **निय्यत** हो और ज़बान से लफ़्ज़े अ़स्र निकला तब भी ज़ोह्‌र की नमाज़ हो गई। (اَیضاً ص١١٢) ❁ निय्यत का अदना द-रजा येह है कि अगर उस वक़्त कोई पूछे कि कौन सी नमाज़ पढ़ती हो ? तो फ़ौरन बता दे। अगर ह़ालत ऐसी है कि सोच कर बताएगी तो नमाज़ न हुई। (اَیضاً ص١١٣) ❁ फ़र्ज़ नमाज़ में **निय्यते फ़र्ज़** भी ज़रूरी है म-सलन दिल में येह **निय्यत** हो कि आज की ज़ोह्‌र की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ती हूं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٢ ص١١٧) ❁ असह़्ह़ (या'नी दुरुस्त तरीन)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

येह है कि **नफ़्ल, सुन्नत और तरावीह़** में मुत़्लक़ नमाज़ की निय्यत काफ़ी है मगर एह़तियात़ येह है के तरावीह़ में तरावीह़ या सुन्नते वक़्त की निय्यत करे और बाक़ी सुन्नतों में सुन्नत या मुस्त़फ़ा जाने रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुता-ब-अ़त (या'नी पैरवी) की निय्यत करे, इस लिये कि बा'ज़ मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام इन में मुत़्लक़ नमाज़ की निय्यत को ना-काफ़ी क़रार देते हैं। (مُنْيَةُ الْمُصَلِّى ص ٢٢٥) ❁ नमाज़े नफ़्ल में मुत़्लक़ नमाज़ की **निय्यत** काफ़ी है अगर्चे नफ़्ल **निय्यत** में न हो। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ٢،ص١١٦) ❁ येह **निय्यत** कि मुंह मेरा क़िब्ला शरीफ़ की त़रफ़ है शर्त़ नहीं। (دُرِّمُختار، ج ٢، ص ١٢٩) ❁ वाजिब में वाजिब की निय्यत करना ज़रूरी है और उसे मुअ़य्यन भी कीजिये म-सलन नज़्र, नमाज़े बा'दे त़वाफ़ (वाजिबुत्त़वाफ़) या वोह नफ़्ल नमाज़ जिस के टूट जाने से या जिस को तोड़ डालने से उस की क़ज़ा वाजिब हो जाती है। ❁ **सज्दए शुक्र** अगर्चे नफ़्ल है मगर उस में भी निय्यत ज़रूरी है म-सलन दिल में येह निय्यत हो कि मैं सज्दए शुक्र करती हूं। (رَدُّالْمُحتار ج٢ص ١٢٠) ❁ **सज्दए सह्व** में भी "साह़िबे नहरुल फ़ाइक़" के नज़दीक निय्यत ज़रूरी है। (ایضًا) या'नी उस वक़्त दिल में येह निय्यत हो कि मैं सज्दए सह्व करती हूं।

《6》 तक्बीरे तह़रीमा : या'नी नमाज़ को "اَللهُ اَكْبَر" कह कर शुरूअ़ करना ज़रूरी है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 77)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

“बिस्मिल्लाह” के सात हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 7 फ़राइज़

﴾1﴿ तक्बीरे तह़रीमा ﴾2﴿ क़ियाम ﴾3﴿ क़िराअत ﴾4﴿ रुकूअ़ ﴾5﴿ सुजूद ﴾6﴿ क़ा'दए अख़ीरह ﴾7﴿ ख़ुरूजे बिसुन्इही।

(دُرِّ مُختار، ج ۲، ص ۱۵۸ـ۱۷۰, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 75)

﴾1﴿ **तक्बीरे तह़रीमा :** दर ह़क़ीक़त तक्बीरे तह़रीमा (या'नी तक्बीरे ऊला) शराइत़े नमाज़ में से है मगर **नमाज़** के अफ़्आ़ल से बिल्कुल मिली हुई है इस लिये इसे **नमाज़** के फ़राइज़ से भी शुमार किया गया है। (غُنیہ ص۲۵۶) ❁ जो इस्लामी बहन तक्बीर के तलफ़्फ़ुज़ पर क़ादिर न हो म-सलन गूंगी हो या किसी और वज्ह से ज़बान बन्द हो गई हो उस पर तलफ़्फ़ुज़ लाज़िम नहीं, दिल में इरादा काफ़ी है। (دُرِّ مُختار، ج ۲، ص ۲۲۰) ❁ लफ़्ज़े **अल्लाह** को “**आल्लाह**” या **अक्बर** को “**आक्बर**” या “**अक्बार**” कहा **नमाज़** न होगी बल्कि अगर इन के मा'नए फ़ासिदा समझ कर जानबूझ कर कहे तो काफ़िर है।

(دُرِّ مُختار، ج۲، ص۲۱۸)

﴾2﴿ **क़ियाम :** ❁ कमी की जानिब **क़ियाम** की ह़द येह है कि हाथ बढ़ाए तो घुटनों तक न पहुंचें और पूरा क़ियाम येह है कि सीधी खड़ी हो। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۲ص۱۶۳) ❁ **क़ियाम** इतनी देर तक है जितनी देर तक क़िराअत है। ब क़-दरे क़िराअते फ़र्ज़ **क़ियाम** भी फ़र्ज़, ब क़-दरे वाजिब वाजिब, और ब क़-दरे सुन्नत सुन्नत। (اَیضاً) ❁ फ़र्ज़,

वित्र और सुन्नते फ़ज्र में क़ियाम फ़र्ज़ है। अगर बिला उ़ज़्रे सह़ीह़ कोई येह नमाज़ें बैठ कर अदा करेगी तो न होंगी। (اَیضاً) ❁ खड़ी होने से मह़ूज़ कुछ तक्लीफ़ होना उ़ज़्र नहीं बल्कि क़ियाम उस वक़्त साक़ित़ होगा कि खड़ी न हो सके या सज्दा न कर सके या खड़ी होने या सज्दा करने में ज़ख़्म बहता है या सित्र खुलता है या क़िराअत से मजबूरे मह़ूज़ हो जाती है। यूंही खड़ी हो सकती है मगर उस से मरज़ में ज़ियादती होती है या देर में अच्छी होगी या ना क़ाबिले बरदाश्त तक्लीफ़ होगी तो बैठ कर पढ़े। (غُنیہ ص۲۶۱-۲۶۷) ❁ अगर अ़सा (या बैसाखी) ख़ादिमा या दीवार पर टेक लगा कर खड़ी होना मुम्किन है तो फ़र्ज़ है कि खड़ी हो कर पढ़े। (غُنیہ ص۲۶۱) ❁ अगर सिर्फ़ इतना खड़ा होना मुम्किन है कि खड़े खड़े तक्बीरे तह़रीमा कह लेगी तो फ़र्ज़ है कि खड़ी हो कर اَللّٰهُ اَکْبَر कह ले और अब खड़े रहना मुम्किन नहीं तो बैठ जाए। (اَیضاً ص ۲۶۲)

ख़बरदार ! बा'ज़ इस्लामी बहनें मा'मूली सी तक्लीफ़ (या ज़ख़्म) की वज्ह से फ़र्ज़ नमाज़ें बैठ कर पढ़ती हैं वोह इस हुक्मे शर-ई पर ग़ौर फ़रमाएं, जितनी नमाज़ें क़ुदरते क़ियाम के बा वुजूद बैठ कर अदा की हों उन को लौटाना फ़र्ज़ है। इसी त़रह़ वैसे ही खड़ी न रह सकती थीं मगर अ़सा या दीवार या ख़ादिमा के सहारे खड़ी होना मुम्किन था मगर बैठ कर पढ़ती रहीं तो उन की भी नमाज़ें न हुईं उन का लौटाना फ़र्ज़ है।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 79)

❁ खड़े हो कर पढ़ने की क़ुदरत हो जब भी बैठ कर नफ़्ल पढ़ सकते हैं मगर खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है कि **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बैठ कर पढ़ने वाले की नमाज़ खड़े हो कर पढ़ने वाले की निस्फ़ (या'नी आधा सवाब) है । (صَحِیح مُسلِم ،ص ۳۷۰ حدیث ۷۳۵) और उ़ज़्र (मजबूरी) की वज्ह से बैठ कर पढ़े तो सवाब में कमी न होगी । येह जो आज कल आ़म रवाज पड़ गया है कि नफ़्ल बैठ कर पढ़ा करते हैं ब ज़ाहिर येह मा'लूम होता है कि शायद बैठ कर पढ़ने को अफ़्ज़ल समझते हैं ऐसा है तो उन का ख़याल ग़लत़ है। वित्र के बा'द जो दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ते हैं उन का भी येही हुक्म है कि खड़े हो कर पढ़ना अफ़्ज़ल है ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 19)

﴾3﴿ **क़िराअत :** ❁ क़िराअत इस का नाम है कि तमाम ह़ुरूफ़ मख़ारिज से अदा किये जाएं कि हर ह़र्फ़ ग़ैर से सह़ीह़ त़ौर पर मुम्ताज़ (नुमायां) हो जाए । (عالمگیری ج۱ ص۶۹) ❁ आहिस्ता पढ़ने में भी येह ज़रूरी है कि ख़ुद सुन ले । (اَیضاً) ❁ अगर ह़ुरूफ़ तो सह़ीह़ अदा किये मगर इतने आहिस्ता कि ख़ुद न सुना और कोई रुकावट म-सलन शोरो ग़ुल या सिक़्ले समाअ़त (या'नी बहरा पन या ऊंचा सुनने का मरज़) भी नहीं तो नमाज़ न हुई । (اَیضاً) ❁ अगर्चे ख़ुद सुनना ज़रूरी है मगर येह भी एह़तियात़ रहे कि सिर्री (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ों में

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़मत भेजेगा। (ابن عدی)

क़िराअत की आवाज़ दूसरों तक न पहुंचे, इसी त़रह़ तस्बीह़ात वग़ैरा में भी ख़याल रखिये ❁ नमाज़ के इलावा भी जहां कुछ कहना या पढ़ना मुक़र्रर किया है इस से भी येही मुराद है कि कम अज़ कम इतनी आवाज़ हो कि ख़ुद सुन सके म-सलन जानवर ज़ब्ह़ करने के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लेने में इतनी आवाज़ ज़रूरी है कि ख़ुद सुन सके। **(اَیضاً)** दुरूद शरीफ़ वग़ैरा अवराद पढ़ते हुए भी कम अज़ कम इतनी आवाज़ होनी चाहिये कि ख़ुद सुन सके जभी पढ़ना कहलाएगा। ❁ मुत़लक़न एक आयत पढ़ना फ़र्ज़ की दो रक्अ़तों में और वित्र, सुनन और नवाफ़िल की हर रक्अ़त में इमाम व मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) पर **फ़र्ज़** है। **(مَرَاقِی الْفَلَاح ص ٢٢٦)** ❁ फ़र्ज़ की किसी रक्अ़त में क़िराअत न की या फ़क़त़ एक में की नमाज़ फ़ासिद हो गई। **(عالمگیری ج١ ص٦٩)** ❁ फ़र्ज़ों में ठहर ठहर कर क़िराअत करे और तरावीह़ में मु-तवस्सित़ (या'नी दरमियाना) अन्दाज़ पर और रात के नवाफ़िल में जल्द पढ़ने की इजाज़त है मगर ऐसा पढ़े कि समझ में आ सके या'नी कम से कम मद का जो द-रजा क़ारियों ने रखा है उस को अदा करे वरना ह़राम है, इस लिये कि तरतील से (या'नी ठहर ठहर कर) क़ुरआन पढ़ने का हुक्म है। **(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص ٣٢٠)**

ह़ुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी ज़रूरी है

अक्सर लोग "ح، ہ، ع، ء، ث، ص، س، ت، ط" और "ظ، ذ، ض" में कोई फ़र्क़ नहीं करते। याद रखिये ! ह़ुरूफ़ बदल जाने से अगर मा'ना फ़ासिद हो

गए तो नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 3, स. 125) म-सलन जिस ने "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِيْم" में عظیم को "عَزِيْم" (ظ के बजाए ز) पढ़ दिया नमाज़ जाती रही लिहाज़ा जिस से "عظیم" सह़ीह़ अदा न हो वोह "سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْكَرِيْم" पढ़े।

(क़ानूने शरीअ़त, हि़स्सए अव्वल, स. 105, رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص ٢٤٢)

ख़बरदार ! ख़बरदार ! ख़बरदार !

जिस से हुरूफ़ सह़ीह़ अदा नहीं होते उस के लिये थोड़ी देर मश्क़ कर लेना काफ़ी नहीं बल्कि लाज़िम है कि इन्हें सीखने के लिये रात दिन पूरी कोशिश करे और वोह आयतें पढ़े जिस के हुरूफ़ सह़ीह़ अदा कर सकती हो। और येह सूरत ना मुम्किन हो तो ज़मानए कोशिश में उस की नमाज़ हो जाएगी। आज कल काफ़ी लोग इस मरज़ में मुब्तला हैं कि न उन्हें क़ुरआन सह़ीह़ पढ़ना आता है न सीखने की कोशिश करते हैं। याद रखिये ! इस त़रह़ नमाज़ें बरबाद होती हैं। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 3, स. 138,139 मुलख़्ख़सन)

जिस ने रात दिन कोशिश की मगर सीखने में नाकाम रही जैसे बा'ज़ इस्लामी बहनों से सह़ीह़ हुरूफ़ अदा होते ही नहीं उस के लिये लाज़िमी है कि रात दिन सीखने की कोशिश करे और ज़मानए कोशिश में वोह **मा'ज़ूर** है इस की नमाज़ हो जाएगी !

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 6, स. 254)

मद्र-सतुल मदीना

इस्लामी बहनो ! आप ने क़िराअत की अहम्मिय्यत का बख़ूबी अन्दाज़ा लगा लिया होगा। वाक़ेई वोह मुसल्मान बड़े बद नसीब हैं जो दुरुस्त क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना नहीं सीखते। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** के बे शुमार मदारिस बनाम **''मद्र-सतुल मदीना''** क़ाइम हैं इन में म-दनी मुन्नों और म-दनी मुन्नियों को क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। नीज़ बालिग़ात को ह़ुरूफ़ की सह़ीह़ अदाएगी के साथ साथ सुन्नतों की तरबिय्यत भी दी जाती है। काश ! ता'लीमे क़ुरआन की घर घर धूम पड़ जाए। काश ! हर वोह इस्लामी बहन जो सह़ीह़ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना जानती है वोह दूसरी इस्लामी बहन को सिखाना शुरूअ़ कर दे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फिर तो हर त़रफ़ ता'लीमे क़ुरआन की बहार आ जाएगी और सीखने सिखाने वालों के लिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब का अम्बार लग जाएगा।

येही है आरज़ू ता'लीमे क़ुरआं आ़म हो जाए

तिवालत शौक़ से करना हमारा काम हो जाए

﴾4﴿ रुकूअ़ : रुकूअ़ में थोड़ा झुकिये या'नी इतना कि घुटनों पर हाथ रख दीजिये ज़ोर न दीजिये और घुटनों को न पकड़िये और उंग्लियां मिली हुई और पाउं झुके हुए रखिये इस्लामी भाइयों की त़रह़ ख़ूब सीधे न करें। **(عالمگیری ج۱ص۷٤وغیرہ)**

﴾5﴿ **सुजूद :** ❁ सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : मुझे हुक्म हुवा कि सात हड्डियों पर सज्दा करूं, मुंह और दोनों हाथ और दोनों घुटने और दोनों पन्जे और येह हुक्म हुवा कि कपड़े और बाल न समेटूं । (صَحِیح مُسلِم ص ۲۵۳ حدیث ۴۹۰) ❁ हर रक्अ़त में दो बार सज्दा फ़र्ज़ है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 81) ❁ सज्दे में पेशानी जमना ज़रूरी है । जमने के मा'ना येह हैं कि ज़मीन की सख़्ती मह़सूस हो अगर किसी ने इस त़रह़ सज्दा किया कि पेशानी न जमी तो सज्दा न होगा । (اَیضاً ص ۸۱، ۸۲) ❁ किसी नर्म चीज़ म-सलन घास (जैसा कि बाग़ की हरियाली) रूई या (फ़ोम के गदेले या) क़ालीन (CARPET) वग़ैरा पर सज्दा किया तो अगर पेशानी जम गई या'नी इतनी दबी कि अब दबाने से न दबे तो सज्दा हो जाएगा वरना नहीं । (عالمگیری ج ۱ ص ۷۰) ❁ कमानीदार (या'नी स्प्रींग वाले) गद्दे पर पेशानी ख़ूब नहीं जमती लिहाज़ा नमाज़ न होगी । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 82)

कारपेट के नुक़्सानात

कारपेट से एक तो सज्दे में दुश्वारी होती है, नीज़ सह़ीह़ मा'नों में इस की सफ़ाई नहीं हो पाती लिहाज़ा धूल वग़ैरा जम्अ़ होती और जरासीम परवरिश पाते हैं, सज्दे में सांस के ज़रीए़ जरासीम, गर्द वग़ैरा अन्दर दाख़िल हो जाते हैं, कारपेट का रुवां फेफड़ों में जा कर चिपक जाने की सूरत में مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **केन्सर** का ख़त़रा पैदा होता है । बसा

अवक़ात बच्चे कारपेट पर कै़ या पेशाब वगै़रा कर डालते, बिल्लियां गन्दगी करतीं, चूहे और छिप-कलियां मेंग्नियां करते हैं । कारपेट नापाक हो जाने की सूरत में उ़मूमन पाक करने की ज़ह़मत भी नहीं की जाती । काश ! कारपेट बिछाने का रवाज ही ख़त्म हो जाए ।

कारपेट पाक करने का त़रीक़ा

कारपेट (CARPET) का नापाक ह़िस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपक्ना मौक़ूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये ह़त्ता कि पानी टपक्ना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी त़रह़ धो कर लटका दीजिये जब पानी टपक्ना बन्द हो जाएगा तो पाक हो जाएगा । चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वगै़रा जिन चीज़ों में पतली नजासत जज़्ब हो जाती हो इसी त़रीक़े पर पाक कीजिये । ऐसा नाज़ुक कपड़ा कि निचोड़ने से फट जाने का अन्देशा हो वोह भी इसी त़रह़ पाक कीजिये । अगर नापाक कारपेट या कपड़ा वगै़रा बहते पानी में (म-सलन दरिया, नह्र में या पाइप या टोंटी के जारी पानी के नीचे) इतनी देर तक रख छोड़ें के ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तब भी पाक हो जाएगा । कारपेट पर बच्चा पेशाब कर दे तो उस जगह पर पानी के छींटे मार देने से वोह पाक नहीं होता । याद रहे ! एक दिन के बच्चे या बच्ची का पेशाब भी नापाक होता है । (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2 सफ़ह़ा 118 ता 127 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये ।)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

﴾6﴿ **क़ा'दए अख़ीरह :** या'नी नमाज़ की रक्अ़तें पूरी करने के बा'द इतनी देर तक बैठना कि पूरी तशह्हुद (या'नी पूरी अत्तहि़य्यात) रसूलुहू तक पढ़ ली जाए फ़र्ज़ है। (عالمگیری ج۱ص۷۰) चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ में चौथी रक्अ़त के बा'द **क़ा'दह** न किया तो जब तक पांचवीं का सज्दा न किया हो बैठ जाए और अगर पांचवीं का सज्दा कर लिया या फ़ज्र में दूसरी पर नहीं बैठी तीसरी का सजदा कर लिया या मग़रिब में तीसरी पर न बैठी और चौथी का सज्दा कर लिया इन सब सूरतों में फ़र्ज़ बात़िल हो गए। मग़रिब के इ़लावा और नमाज़ों में एक रक्अ़त मज़ीद मिला ले। (غُنیہ،ص۲۹۰)

﴾7﴿ **ख़ुरूजे बिसुन्इही :** या'नी क़ा'दए अख़ीरह के बा'द सलाम या बातचीत वग़ैरा कोई ऐसा फ़े'ल क़स्दन करना जो नमाज़ से बाहर कर दे। मगर सलाम के इ़लावा कोई फ़े'ल क़स्दन (या'नी इरादतन) पाया गया तो नमाज़ वाजिबुल इआ़दा होगी। और अगर बिला क़स्द (बिला इरादा) कोई इस त़रह़ का फ़े'ल पाया गया तो नमाज़ बात़िल।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 3, स. 84)

"सय्यि-दतुना सकीना बिन्ते शहन्शाहे करबला" के पच्चीस हु़रूफ़ की निस्बत से तक़रीबन 25 वाजिबात

﴾1﴿ तक्बीरे तह़रीमा में लफ़्ज़ "اَللّٰهُ اَكْبَرُ" कहना। ﴾2﴿ फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रक्अ़त के इ़लावा बाक़ी तमाम नमाज़ों की हर रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ पढ़ना, सूरत मिलाना या क़ुरआने पाक की

एक बड़ी आयत जो छोटी तीन आयतों के बराबर हो या तीन छोटी आयतें पढ़ना ﴾3﴿ अल ह़म्द शरीफ़ का सूरत से पहले पढ़ना ﴾4﴿ अल ह़म्द शरीफ़ और सूरत के दरमियान ''आमीन'' और ''بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم'' के इलावा कुछ और न पढ़ना ﴾5﴿ क़िराअत के फ़ौरन बा'द रुकूअ़ करना ﴾6﴿ एक सज्दे के बा'द बित्तरतीब दूसरा सज्दा करना। ﴾7﴿ ता'दीले अरकान या'नी रुकूअ़, सुजूद, क़ौमा और जल्सा में कम अज़ कम एक बार ''سُبۡحٰنَ الله'' कहने की मिक़्दार ठहरना ﴾8﴿ क़ौमा या'नी रुकूअ़ से सीधी खड़ी होना (बा'ज़ इस्लामी बहनें कमर सीधी नहीं करतीं इस त़रह़ उन का वाजिब छूट जाता है) ﴾9﴿ जल्सा या'नी दो सज्दों के दरमियान सीधी बैठना (बा'ज़ इस्लामी बहनें जल्द बाज़ी की वज्ह से बराबर सीधे बैठने से पहले ही दूसरे सज्दे में चली जाती हैं इस त़रह़ उन का वाजिब तर्क हो जाता है चाहे कितनी ही जल्दी हो सीधा बैठना लाज़िमी है वरना नमाज़ मक्रूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा होगी) ﴾10﴿ क़ा'दए ऊला **वाजिब** है अगर्चे नमाज़े नफ़्ल हो (नफ़्ल में चार या इस से ज़ियादा रक्अ़तें एक सलाम के साथ पढ़ना चाहें तब हर दो दो रक्अ़त के बा'द क़ा'दा करना फ़र्ज़ है और हर **क़ा'दा** ''क़ा'दए अख़ीरह'' है अगर क़ा'दा न किया और भूल कर खड़ी हो गई तो जब तक उस रक्अ़त का सज्दा न कर लें लौट आएं और सज्दए सह्व करें।) ﴾11﴿ अगर नफ़्ल की तीसरी रक्अ़त का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर के सज्दए सह्व करे। **सज्दए सह्व** इस लिये **वाजिब**

हुवा कि अगर्चे नफ़्ल में हर दो रक्अ़त के बा'द क़ा'दा फ़र्ज़ है मगर तीसरी या पांचवीं (علیٰ هذا القیاس या'नी इस पर क़ियास करते हुए) रक्अ़त का सज्दा करने के बा'द क़ा'दए ऊला फ़र्ज़ के बजाए वाजिब हो गया। (حــاشيةالطحطاوى على مراقى الفلاح،ص٤٦٦ملخصًا) ﴾12﴿ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा में तशह्हुद (या'नी अत्तहिय्यात) के बा'द कुछ न बढ़ाना ﴾13﴿ दोनों क़ा'दों में "तशह्हुद" मुकम्मल पढ़ना। अगर एक लफ़्ज़ भी छूटा तो **वाजिब** तर्क हो जाएगा और सज्दए सह्व वाजिब होगा। ﴾14﴿ फ़र्ज़, वित्र और सुन्नते मुअक्कदा के क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द अगर बे ख़याली में "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ" या "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا" कह लिया तो सज्दए सह्व वाजिब हो गया और अगर जानबूझ कर कहा तो नमाज़ लौटाना वाजिब है। (دُرِّ مُـختـار،ج٢، ص ٢٦٩) ﴾15﴿ दोनों त़रफ़ सलाम फेरते वक़्त लफ़्ज़ "اَلسَّلَامُ" कहना दोनों बार वाजिब है। लफ़्ज़ "عَلَيْكُم" वाजिब नहीं बल्कि सुन्नत है। ﴾16﴿ वित्र में तक्बीरे क़ुनूत कहना ﴾17﴿ वित्र में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना। ﴾18﴿ हर फ़र्ज़ व वाजिब का उस की जगह होना ﴾19﴿ रुकूअ़ हर रक्अ़त में एक ही बार करना ﴾20﴿ सज्दा हर रक्अ़त में दो ही बार करना ﴾21﴿ दूसरी रक्अ़त से पहले क़ा'दा न करना ﴾22﴿ चार रक्अ़त वाली नमाज़ में तीसरी रक्अ़त पर क़ा'दा न करना ﴾23﴿ आयते सज्दा पढ़ी हो तो सज्दए तिलावत करना ﴾24﴿ सज्दए सह्व वाजिब हुवा हो तो सज्दए सह्व करना ﴾25﴿ दो फ़र्ज़ या दो वाजिब

या फ़र्ज़ व वाजिब के दरमियान तीन तस्बीह़ की क़दर (या'नी तीन बार ''سُبْحٰنَ اللّٰه'' कहने की मिक़्दार) वक़्फ़ा न होना।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 85, 87, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٢،ص١٨٤۔٢٠٣)

''उम्मे हानी'' के छ हुरूफ़ की निस्बत से तक्बीरे तह़रीमा की 6 सुन्नतें

《1》 तक्बीरे तह़रीमा के लिये हाथ उठाना 《2》 हाथों की उंग्लियां अपने ह़ाल पर (Normal) छोड़ना, या'नी न बिल्कुल मिलाइये न इन में तनाव पैदा कीजिये 《3》 हथेलियों और उंग्लियों का पेट क़िब्ला रू होना 《4》 तक्बीर के वक़्त सर न झुकाना 《5》 तक्बीर शुरूअ़ करने से पहले ही दोनों हाथ कन्धों तक उठा लेना 《6》 तक्बीर के फ़ौरन बा'द हाथ बांध लेना सुन्नत है (तक्बीरे ऊला के बा'द फ़ौ'रन बांध लेने के बजाए हाथ लटका देना या कोहनियां पीछे की त़रफ़ झुलाना, सुन्नत से हट कर है) (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 88, 90)

''ख़दी-जतुल कुब्रा'' के ग्यारह हुरूफ़ की निस्बत से क़ियाम की 11 सुन्नतें

《1》 उल्टी हथेली सीने पर छाती के नीचे रख कर उस के ऊपर सीधी हथेली रखिये। (غُنیہ،ص٣٠٠) 《2》 पहले सना 《3》 फिर तअ़व्वुज़ या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم पढ़ना 《4》 फिर तस्मिया या'नी بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم पढ़ना 《5》 इन तीनों को एक दूसरे के फ़ौरन बा'द कहना 《6》 इन सब को आहिस्ता पढ़ना 《7》 आमीन कहना 《8》

इस को भी आहिस्ता कहना ﴾9﴿ तक्बीरे ऊला के फ़ौरन बा'द सना पढ़ना ﴾10﴿ तअ़व्वुज़ सिर्फ़ पहली रक्अ़त में है और ﴾11﴿ तस्मिया हर रक्अ़त के शुरूअ़ में सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 90, 91)

"मुह़म्मद" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से रुकूअ़ की 4 सुन्नतें

﴾1﴿ रुकूअ़ के लिये اَللّٰهُ اَكْبَر कहना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 93) ﴾2﴿ इस्लामी बहन के लिये **रुकूअ़** में घुटनों पर हाथ रखना और उंग्लियां कुशादा न करना सुन्नत है (ऐज़न) ﴾3﴿ रुकूअ़ में थोड़ा झुके या'नी सिर्फ़ इतना कि हाथ घुटनों तक पहुंच जाएं पीठ सीधी न करे और घुटनों पर ज़ोर न दे फ़क़त हाथ रख दे और हाथों की उंग्लियां मिली हुई रखे और पाउं झुके हुए रखे इस्लामी भाइयों की त़रह़ ख़ूब सीधे न कर दे (عالمگیری، ج۱ص۷٤) ﴾4﴿ बेहतर येह है कि जब रुकूअ़ के लिये झुकना शुरूअ़ करे اَللّٰهُ اَكْبَر कहती हुई रुकूअ़ को जाए और ख़त्मे रुकूअ़ पर तक्बीर ख़त्म करे (اَیضاً) इस मसाफ़त (या'नी क़ियाम से रुकूअ़ में पहुंचने के फ़ासिले) को पूरा करने के लिये **अल्लाह** की "ل" को बढ़ाए अक्बर की "ب" वग़ैरा किसी ह़र्फ़ को न बढ़ाए। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 93) अगर **आल्लाहु** या **आक्बर** या **अक्बार** कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। (دُرِّمختار، رَدُّالْمُحتار، ج۲ص ۲۱۸) रुकूअ़ में तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم कहना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 93)

"सुन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से क़ौमा की 3 सुन्नतें

﴾1﴿ **रुकूअ़** से जब उठें तो हाथ लटका दीजिये (عـالـمگيری، ج ١ ص ٧٣) ﴾2﴿ रुकूअ़ से उठने में سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ और सीधे खड़े हो जाने के बा'द رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ कहना (دُرِّمُختار، ج٢ص ٢٤٧) ﴾3﴿ मुन्फ़रिद (या'नी तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) के लिये दोनों कहना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 95) رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ कहने से भी सुन्नत अदा हो जाती है मगर رَبَّنَا के बा'द وَ होना बेहतर है اَللّٰهُمَّ होना इस से बेहतर, और दोनों होना और ज़ियादा बेहतर है। या'नी اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ कहिये। (دُرِّمُختار، ج٢ص ٢٤٦)

"या फ़ात़िमा बिन्ते रसूलुल्लाह" के अठ्ठारह हुरूफ़ की निस्बत से सज्दे की 18 सुन्नतें

﴾1﴿ सज्दे में जाने के लिये और ﴾2﴿ सज्दे से उठने के लिये اَللهُ اَكْبَر कहना। ﴾3﴿ सज्दे में कम अज़ कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّيَ الْاَعْلٰى कहना ﴾4﴿ सज्दे में हाथ ज़मीन पर रखना ﴾5﴿ हाथों की उंग्लियां मिली हुई क़िब्ला रुख़ रखना ﴾6﴿ सिमट कर सज्दा करना या'नी बाज़ू करवटों से ﴾7﴿ पेट रानों से ﴾8﴿ रानें पिंडलियों से और ﴾9﴿ पिंडलियां ज़मीन से मिला देना ﴾10﴿ सज्दे में जाएं तो ज़मीन पर पहले घुटने फिर ﴾11﴿ हाथ फिर ﴾12﴿ नाक, फिर ﴾13﴿ पेशानी रखना ﴾14﴿ जब सज्दे से उठें तो इस का उलट करना या'नी ﴾15﴿ पहले पेशानी, फिर

﴾16﴿ नाक, फिर ﴾17﴿ हाथ, फिर ﴾18﴿ घुटने उठाना।

(बहारे शरीअ़त, हिस़्सा : 3, स. 96, 98)

"ज़ैनब" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से जल्से की 4 सुन्नतें

﴾1﴿ दोनों सज्दों के बीच में बैठना। इसे **जल्सा** कहते हैं ﴾2﴿ दूसरी रक्अ़त के सज्दों से फ़ारिग़ हो कर दोनों पाउं सीधी जानिब निकाल देना और ﴾3﴿ उल्टी सुरीन पर बैठना ﴾4﴿ दोनों हाथ रानों पर रखना। (बहारे शरीअ़त, हिस़्सा : 3, स. 98)

"ह़क़" के दो ह़ुरूफ़ की निस्बत से दूसरी रक्अ़त के लिये उठने की 2 सुन्नतें

﴾1﴿ जब दोनों सज्दे कर लें तो दूसरी रक्अ़त के लिये पन्जों के बल, ﴾2﴿ घुटनों पर हाथ रख कर खड़ा होना सुन्नत है। हां कमज़ोरी या पाउं में तक्लीफ़ वग़ैरा मजबूरी की वज्ह से ज़मीन पर हाथ रख कर खड़े होने में ह़रज नहीं। (رَدُّالْمُحتار، ج۲ ص۲۶۲)

"बीबी आमिना" के आठ ह़ुरूफ़ की निस्बत से क़ा'दा की 8 सुन्नतें

﴾1﴿ सीधा हाथ सीधी रान पर और ﴾2﴿ उल्टा हाथ उल्टी रान पर रखना ﴾3﴿ उंग्लियां अपनी ह़ालत पर या'नी (NORMAL) छोड़ना कि न ज़ियादा खुली हुईं न बिल्कुल मिली हुईं। ﴾4﴿ अत्तह़िय्यात में शहादत पर इशारा करना। इस का त़रीक़ा येह है कि छुंग्लिया और पास

वाली को बन्द कर लीजिये, अंगूठे और बीच वाली का ह़ल्क़ा बांधिये और "لَا" पर कलिमे की उंगली उठाइये इस को इधर उधर मत हिलाइये और "اِلَّا" पर रख दीजिये और सब उंग्लियां सीधी कर लीजिये ﴾5﴿ दूसरे क़ा'दे में भी इसी त़रह़ बैठिये जिस त़रह़ पहले में बैठी थीं और तशह्हुद भी पढ़िये ﴾6﴿ तशह्हुद के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़िये (दुरूदे इब्राहीम पढ़ना अफ़्ज़ल है) (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 98, 99) ﴾7﴿ नवाफ़िल और सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा (अ़स्र व इ़शा की सुन्नते क़ब्लिया) के क़ा'दए ऊला में भी तशह्हुद के बा'द दुरूद शरीफ़ पढ़ना सुन्नत है। (رَدُّالْمُحتار، ج ۲ ص ۲۸۱) ﴾8﴿ दुरूद शरीफ़ के बा'द दुआ़ पढ़ना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 102)

"ह़फ़्सा" के चार ह़ुरूफ़ की निस्बत से सलाम फैरने की 4 सुन्नतें

﴾1, 2﴿ इन अल्फ़ाज़ के साथ दो[2] बार सलाम फैरना : اَلسَّلامُ عَلَيكُمْ وَرَحمةُالله ﴾3﴿ पहले सीधी त़रफ़, फिर ﴾4﴿ उल्टी त़रफ़ मुंह फैरना। (ऐज़न, 4, स. 103)

"सब्र" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से सुन्नते बा'दिया की 3 सुन्नतें

﴾1﴿ जिन फ़र्ज़ों के बा'द सुन्नतें हैं उन में बा'दे फ़र्ज़ कलाम न करना चाहिये अगर्चे सुन्नतें हो जाएंगी मगर सवाब कम हो जाएगा और सुन्नतों में ताख़ीर भी मक्रूह है इसी त़रह़ बड़े बड़े अवरादो

﴾2﴿ वज़ाइफ़ की भी इजाज़त नहीं । (غُنیہ،ص٣٤٣، رَدُّالْمُحتار، ج ٢ ص ٣٠٠) (फ़र्ज़ों के बा'द) क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ पर क़नाअ़त चाहिये वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 107) ﴾3﴿ सुन्नत व फ़र्ज़ के दरमियान कलाम करने से असह़्ह़ (या'नी दुरुस्त तरीन) येही है कि सुन्नत बात़िल नहीं होती अलबत्ता सवाब कम हो जाता है । येही हुक्म हर उस काम का है जो मुनाफ़िये तह़रीमा[1] है । (تَنوِیرُ الْاَبْصَار، ج٢ص٥٥٨)

"उम्महातुल मुअमिनीन" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के तक़रीबन 14 मुस्तह़ब्बात

﴾1﴿ निय्यत के अल्फ़ाज़ ज़बान से कह लेना । (دُرِّمُختار ج٢ ص١١٣) जब कि दिल में निय्यत ह़ाज़िर हो वरना तो नमाज़ होगी ही नहीं । ﴾2﴿ क़ियाम में दोनों पन्जों के दरमियान चार उंगल का फ़ासिला होना । (عالمگیری،ج١،ص٧٣) ﴾3﴿ क़ियाम की ह़ालत में सज्दे की जगह, ﴾4﴿ रुकूअ़ में दोनों क़दमों की पुश्त पर ﴾5﴿ सज्दे में नाक की त़रफ़ ﴾6﴿ क़ा'दा में गोद की त़रफ़ ﴾7﴿ पहले सलाम में सीधे कन्धे की त़रफ़ और ﴾8﴿ दूसरे सलाम में उल्टे कन्धे की त़रफ़ नज़र करना । (تَنوِیرُ الْاَبْصَار ج ٢ ص ٢١٤) ﴾9,10,11﴿ मुन्फ़रिद को रुकूअ़ और सज्दों में तीन बार से ज़ियादा (मगर त़ाक़ अ़दद म-सलन पांच, सात, नव बार) तस्बीह़ कहना । (فَتْحُ الْقَدِیر،ج١ص٢٥٩) ﴾12﴿ जिस को खांसी आए उस

मदीना

1 : जैसा कि खाना पीना या ख़रीदना या बेचना । (حاشیة الطحطاوی علی الدرالمختار ج ١ ص٢٨٦)

के लिये मुस्तह़ब है कि जब तक मुम्किन हो न खांसे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 106) **《13》** जमाही आए तो मुंह बन्द किये रहिये और न रुके तो होंट दांत के नीचे दबाइये। अगर इस त़रह़ भी न रुके तो क़ियाम में सीधे हाथ की पुश्त से और ग़ैरे क़ियाम में उल्टे हाथ की पुश्त से मुंह ढांप लीजिये। जमाही रोकने का **बेहतरीन त़रीक़ा** येह है कि दिल में ख़याल कीजिये कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाही कभी नहीं आती थी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 106, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج۲،ص۲۱۵) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन रुक जाएगी। **《14》** सज्दा ज़मीन पर बिला ह़ाइल होना।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 106)

सय्यिदुना ड़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का अ़मल

ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِى नक़्ल फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते सय्यिदुना ड़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हमेशा **ज़मीन ही पर सज्दा** करते या'नी सज्दे की जगह मुसल्ला वग़ैरा न बिछाते।" (إحياءُ العُلُوم، ج۱،ص۲۰۴)

गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन अस्क़अ़ رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ह़ुज़ूर सरापा नूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुर सुरूर है : "तुम में से कोई शख़्स जब तक नमाज़ से फ़ारिग़ न हो जाए अपनी पेशानी (की मिट्टी) को साफ़ न करे क्यूं कि जब तक उस की

पेशानी पर नमाज़ के **सज्दे का निशान** रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं ।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج٢ص٣١١حديث ٢٧٦١)

इस्लामी बहनो! दौराने नमाज़ पेशानी से **मिट्टी** छुड़ाना बेहतर नहीं और مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तकब्बुर के त़ौर पर छुड़ाना गुनाह है । और अगर न छुड़ाने से तक्लीफ़ होती हो या ख़याल बटता हो तो छुड़ाने में ह़रज नहीं । अगर किसी को **रियाकारी** का ख़ौफ़ हो तो उसे चाहिये कि नमाज़ के बा'द पेशानी से मिट्टी साफ़ कर ले ।

"सय्यिदुना इस्माई़ल की अम्मी का नाम हाजिरा था" के उन्तीस हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ तोड़ने वाली 29 बातें

﴾1﴿ बात करना (دُرِّمُختار،ج٢ص٤٤٥) ﴾2﴿ किसी को सलाम करना ﴾3﴿ सलाम का जवाब देना (عالمگیری،ج١ص٩٨) ﴾4﴿ छींक का जवाब देना (नमाज़ में ख़ुद को छींक आए तो ख़ामोश रहे) अगर ख़ुद को छींक आई और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कह लिया तब भी ह़रज नहीं और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो फ़ारिग़ हो कर कहे । **(ایضاً)** ﴾5﴿ ख़ुश ख़बरी सुन कर जवाबन اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना (ایضاًص ٩٩) ﴾6﴿ बुरी ख़बर (या किसी की मौत की ख़बर) सुन कर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ कहना **(ایضاً)** ﴾7﴿ अज़ान का जवाब देना (ایضاًص ١٠٠) ﴾8﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम सुन कर जवाबन جَلَّ جَلَالُهٗ कहना ﴾9﴿ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इस्मे गिरामी सुन कर जवाबन दुरूद शरीफ़ पढ़ना म-सलन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कहना (دُرِّمُختار، ج ٢ ص ٤٦٠) (अगर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم या جَلَّ جَلَالُهٗ जवाब की निय्यत से न कहा तो नमाज़ न टूटी)

नमाज़ में रोना

﴾10﴿ दर्द या मुसीबत की वज्ह से येह अल्फ़ाज़ "**आह**", "**ऊह**", "**उफ़**", "**तुफ़**" निकल गए या आवाज़ से रोने में ह़र्फ़ पैदा हो गए नमाज़ फ़ासिद हो गई। अगर रोने में सिर्फ़ आंसू निकले आवाज़ व ह़ुरूफ़ नहीं निकले तो ह़रज नहीं।

(عالمگیری ج١ص١٠١، رَدُّالْمُحتارج ٢ص٤٥٥)

नमाज़ में खांसना

﴾11﴿ मरीज़ा की ज़बान से बे इख़्तियार **आह ! ऊह !** निकला नमाज़ न टूटी यूं ही छींक,जमाही, खांसी, डकार वग़ैरा में जितने ह़ुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं मुआ़फ़ हैं। (دُرِّمُختار، ج١ص ٤٥٦) ﴾12﴿ फूंकने में अगर आवाज़ न पैदा हो तो वोह सांस की मिस्ल है और नमाज़ फ़ासिद नहीं होती मगर क़स्दन फूंकना मक्रूह है और अगर दो ह़र्फ़ पैदा हों जैसे **उफ़**, **तुफ़** तो नमाज़ फ़ासिद हो गई। (غُنیہ، ص ٤٥١) ﴾13﴿ खन्कारने में जब दो[2] ह़ुरूफ़ ज़ाहिर हों जैसे **अख़** तो मुफ़्सिद है। हां अगर उ़ज़्र या सह़ीह़ मक़्सद हो म–सलन त़बीअ़त का तक़ाज़ा हो या आवाज़ साफ़ करने के लिये हो या कोई आगे से गुज़र रहा हो उस को मु–तवज्जेह करना हो इन वुजूहात की बिना पर खांसने में कोई मुज़ा–यक़ा नहीं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 176, دُرِّمُختار، ج٢ص٤٥٥)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

दौराने नमाज़ देख कर पढ़ना

﴾14﴿ मुस्ह़फ़ शरीफ़ से, या किसी काग़ज़ वग़ैरा में लिखा हुवा देख कर कु़रआन शरीफ़ पढ़ना (हां अगर याद पर पढ़ रही हैं और मुस्ह़फ़ शरीफ़ वग़ैरा पर सिर्फ़ नज़र है तो ह़रज नहीं, अगर किसी काग़ज़ वग़ैरा पर आयात लिखी हैं उसे देखा और समझा मगर पढ़ा नहीं इस में भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं।) (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار، ج۲ص۴٦۳) ﴾15﴿ इस्लामी किताब या इस्लामी मज़्मून दौराने नमाज़ जानबूझ कर देखना और इरादतन समझना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 177) दुन्यवी मज़्मून हो तो ज़ियादा कराहिय्यत है, लिहाज़ा नमाज़ में अपने क़रीब किताबें या तह़रीर वाले पेकेट और शोपिंग बेग, मोबाइल फ़ोन या घड़ी वग़ैरा इस त़रह़ रखिये कि उन की लिखाई पर नज़र न पड़े या इन पर रुमाल वग़ैरा उढ़ा दीजिये, नीज़ दौराने नमाज़ दीवार वग़ैरा पर लगे हुए स्टीकर्ज़, इश्तिहार और फ़्रेमों वग़ैरा पर नज़र डालने से भी बचिये।

अ़-मले कसीर की ता'रीफ़

﴾16﴿ अ़-मले कसीर नमाज़ को फ़ासिद कर देता है जब कि न नमाज़ के आ'माल से हो न ही इस्लाहे़ नमाज़ के लिये किया गया हो। जिस काम के करने वाले को दूर से देखने से ऐसा लगे कि येह नमाज़ में नहीं है बल्कि अगर गुमान ग़ालिब हो कि नमाज़ में नहीं तब भी **अ़-मले कसीर** है। और अगर दूर से देखने वाले को शको शुबा है कि नमाज़ में है या नहीं तो **अ़-मले क़लील** है और नमाज़ फ़ासिद न होगी। (دُرِّمُختار، ج۲ص٤٦٤)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

दौराने नमाज़ लिबास पहनना

﴾17﴿ दौराने नमाज़ कुरता या पाजामा पहनना या तहबन्द बांधना (غُنیہ ، ص٤٥٢) ﴾18﴿ दौराने नमाज़ सित्र खुल जाना और इसी ह़ालत में कोई रुक्न अदा करना या तीन बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने की मिक़्दार वक़्फ़ा गुज़र जाना । (دُرِّمُختار،ج٢ص٤٦٧)

नमाज़ में कुछ निगलना

﴾19﴿ मा'मूली सा भी खाना या पीना म–सलन तिल बिग़ैर चबाए निगल लिया । या क़त़रा मुंह में गिरा और निगल लिया (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص٤٦٢) ﴾20﴿ नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ही कोई चीज़ दांतों में मौजूद थी उसे निगल लिया तो अगर वोह चने के बराबर या इस से ज़ियादा थी तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर चने से कम थी तो मकरूह । (دُرِّمُختار ج٢ص٤٦٢، عالمگیری ج١ص١٠٢) ﴾21﴿ नमाज़ से क़ब्ल कोई मीठी चीज़ खाई थी अब उस के अज्ज़ा मुंह में बाक़ी नहीं सिर्फ़ लुआ़बे दहन में कुछ असर रह गया है उस के निगलने से नमाज़ फ़ासिद न होगी (عالمگیری ج١ص١٠٢) ﴾22﴿ मुंह में शकर वग़ैरा हो कि घुल कर ह़ल्क़ में पहुंचती है नमाज़ फ़ासिद हो गई (ایضاً) ﴾23﴿ दांतों से **ख़ून** निकला अगर थूक ग़ालिब है तो निगलने से फ़ासिद न होगी वरना हो जाएगी (عالمگیری ج١ص١٠٢) (ग़–लबे की अ़लामत येह है कि अगर ह़ल्क़ में मज़ा मह़सूस हुवा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई, नमाज़ तोड़ने में ज़ाएक़े का ए'तिबार है और वुज़ू टूटने में रंग का लिहाज़ा वुज़ू उस वक़्त टूटता है जब थूक सुर्ख़ हो जाए और अगर थूक ज़र्द है तो वुज़ू बाक़ी है)

दौराने नमाज़ क़िब्ले से इन्ह़िराफ़

﴾**24**﴿ बिला उ़ज़्र सीने को सम्ते का'बा से 45 द-रजा या इस से ज़ियादा फैरना मुफ़्सिदे नमाज़ है, अगर उ़ज़्र से हो तो मुफ़्सिद नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 179, دُرِّمُختار ج ۲ ص ٤٦٨)

नमाज़ में सांप मारना

﴾**25**﴿ सांप बिच्छू को मारने से नमाज़ नहीं टूटती जब कि न तीन क़दम चलना पड़े न तीन ज़र्ब की ह़ाजत हो वरना फ़ासिद हो जाएगी। (عالمگیری ج۱ص۱۰۳) सांप बिच्छू को मारना उस वक़्त मुबाह़ है जब कि सामने से गुज़रें और ईज़ा देने का ख़ौफ़ हो, अगर तक्लीफ़ पहुंचाने का अन्देशा न हो तो मारना मक्रूह है। (ایضاً) ﴾**26**﴿ पै दर पै तीन बाल उखेड़े या तीन जूएं मारीं या एक ही जूं को तीन बार मारा नमाज़ जाती रही और अगर पै दर पै न हो तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर मक्रूह है। (عالمگیری،ج۱ص۱۰۳،غُنیہ، ص٤٤٨)

नमाज़ में खुजाना

﴾**27**﴿ एक रुक्न में **तीन**[3] **बार खुजाने** से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या'नी यूं कि खुजा कर हाथ हटा लिया फिर खुजाया फिर हटा लिया येह दो[2] बार हुवा अगर अब इसी त़रह़ तीसरी[3] बार किया तो नमाज़ जाती रहेगी। अगर एक बार हाथ रख कर चन्द बार ह़-र-कत दी तो येह एक ही मरतबा खुजाना कहा जाएगा। (اَیضاًص۱۰٤،اَیضاً) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحمٰن नमाज़ में खुजाने के मु-तअ़ल्लिक़

फ़रमाते हैं **:** (नमाज़ में अगर खुजली आए तो) ज़ब्त़ करे, और न हो सके या इस के सबब नमाज़ में दिल परेशान हो तो खुजा ले मगर एक रुक्न म-सलन क़ियाम या क़ुऊ़द या रुकूअ़ या सुजूद में तीन बार न खुजावे, दो बार तक इजाज़त है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 384)

اَللّٰہُ اَکۡبَر कहने में ग़-लत़ियां

﴾28﴿ तक्बीराते इन्तिक़ालात में اَللّٰہُ اَکۡبَر के अलिफ़ को दराज़ किया या'नी "**आल्लाह**" या "**आक्बर**" कहा या "**ب**" के बा'द अलिफ़ बढ़ाया या'नी "**अक्बार**" कहा तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर तक्बीरे तह़रीमा में ऐसा हुवा तो नमाज़ शुरूअ़ ही न हुई (دُرِّمُختار،ج۲،ص ۴۷۳) ﴾29﴿ क़िराअत या अज़्कारे नमाज़ में ऐसी ग़-लती जिस से मा'ना फ़ासिद हो जाएं नमाज़ फ़ासिद हो जाती है। (बहारे शरीअ़त 4 हिस्सा **:** 3, स. 182) म-सलन عَصٰۤی اٰدَمُ رَبَّهٗ के येह मा'ना थे **(तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और आदम से अपने रब की लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई) अब मीम को ज़बर और बे को पेश पढ़ दिया तो येह मा'ना हुए (**तरजमा :** और रब से आदम की लग़्ज़िश वाक़ेअ़ हुई) نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْهَا.

"उम्महातुल मुअमिनीन पर लाखों सलाम" के छब्बीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 26 मक्रूहाते तह़रीमा

﴾1﴿ बदन या लिबास के साथ खेलना (عالمگیری،ج۱،ص۱۰۵) ﴾2﴿ कपड़ा समेटना। **(ایضاً)** जैसा कि आजकल बा'ज़ लोग सज्दे में जाते वक़्त पाजामा वग़ैरा आगे या पीछे से उठा लेते हैं। अगर कपड़ा बदन से चिपक जाए तो एक हाथ से छुड़ाने में ह़रज नहीं।

कन्धों पर चादर लटकाना

﴾3﴿ सदल या'नी कपड़ा लटकाना। म–सलन सर या कन्धे पर इस त़रह़ से चादर या रुमाल वग़ैरा डालना कि दोनों कनारे लटक्ते हों हां अगर एक कनारा दूसरे कन्धे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो ह़रज नहीं। अगर एक ही कन्धे पर चादर डाली कि एक सिरा पीठ पर लटक रहा है और दूसरा पेट पर तो येह भी मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 192)

त़ब्ई ह़ाजत की शिद्दत

﴾4,6﴿ पेशाब या पाख़ाना या रीह़ की शिद्दत होना। अगर नमाज़ शुरूअ़ करने से पहले ही शिद्दत हो तो वक़्त में वुस्अ़त होने की सूरत में नमाज़ शुरूअ़ करना ही मम्नूअ़ व गुनाह है। हां अगर ऐसा है कि फ़राग़त और वुज़ू के बा'द नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो जाएगा तो नमाज़ पढ़ लीजिये। और अगर दौराने नमाज़ येह ह़ालत पैदा हुई तो अगर वक़्त में गुन्जाइश हो तो नमाज़ तोड़ देना वाजिब है अगर इसी त़रह़ पढ़ ली तो गुनहगार होंगी। (رَدُّالْمُحتار، ج۲ ص۴۹۲)

नमाज़ में कंकरियां हटाना

﴾7﴿ दौराने नमाज़ कंकरियां हटाना मक्रूहे तह़रीमी है। हां अगर सुन्नत के मुत़ाबिक़ सज्दा अदा न हो सकता हो तो एक बार हटाने की इजाज़त है और अगर बिग़ैर हटाए वाजिब अदा न होता हो तो हटाना वाजिब है चाहे एक बार से ज़ियादा की ह़ाजत पड़े।

(دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص۴۹۳)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

उंग्लियां चटख़ाना

﴾8﴿ नमाज़ में उंग्लियां चटख़ाना। (دُرِّمُختار ج٢ص٤٩٣)

ख़ा-तमुल मुह़क़्क़िक़ीन ह़ज़रते अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं, इब्ने माजह की रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "नमाज़ में अपनी उंग्लियां न चटख़ाया करो।" (سُنَن ابن ماجه ج١ص٥١٤حديث٩٦٥) "मुज्तबा" के ह़वाले से नक़्ल किया, सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने "इन्तिज़ारे नमाज़ के दौरान उंग्लियां चटख़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।" मज़ीद एक रिवायत में है : "नमाज़ के लिये जाते हुए उंग्लियां चटख़ाने से मन्अ़ फ़रमाया।" इन अह़ादीसे मुबा-रका से येह तीन अह़काम साबित हुए (الف) नमाज़ के दौरान **मक्रूहे तह़रीमी** हैं। और तवाबेए़ नमाज़ में म-सलन नमाज़ के लिये जाते हुए, नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए भी उंग्लियां चटख़ाना मक्रूह है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 193, मक-त-बतुल मदीना) (ب) ख़ारिजे नमाज़ में (या'नी तवाबेए़ नमाज़ में भी न हो) बिग़ैर ह़ाजत के उंग्लियां चटख़ाना **मक्रूहे तन्ज़ीही** है (ج) ख़ारिजे नमाज़ में किसी ह़ाजत के सबब म-सलन उंग्लियों को आराम देने के लिये उंग्लियां चटख़ाना **मुबाह़** (या'नी बिला कराहत जाइज़) है (رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص ٤٩٣-٤٩٤) ﴾9﴿ तश्बीक या'नी एक हाथ की उंग्लियां दूसरे हाथ की उंग्लियों में डालना।

(دُرِّمُختار ج ٢ ص٤٩٣)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिगै़र उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الايمان)

कमर पर हाथ रखना

《10》 कमर पर हाथ रखना। नमाज़ के इलावा भी (बिला उ़ज़्र) कमर (या'नी दोनों पहलूओं) पर हाथ नहीं रखना चाहिये। (دُرِّمُختار، ج٢ ص٤٩٤) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "कमर पर नमाज़ में हाथ रखना जहन्नमियों की राह़त है" (شَرحُ السُّنَّةِ لِلْبَغَوِیّ، ج٢ ص ٣١٣ حديث ٧٣١) या'नी येह यहूदियों का फे़'ल है कि वोह जहन्नमी हैं वरना जहन्नमियों के लिये जहन्नम में क्या राह़त है! (ह़ाशिया बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 186)

आस्मान की त़रफ़ देखना

《11》 निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाना (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 194) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "क्या ह़ाल है उन लोगों का जो नमाज़ में आस्मान की त़रफ़ आंखें उठाते हैं इस से बाज़ रहें या उन की आंखें उचक ली जाएंगी।" (صَحِيحُ البُخارِی، ج١ ص٢٦٥ حديث ٧٥٠) 《12》 इधर उधर मुंह फैर कर देखना, चाहे पूरा मुंह फिरा या थोड़ा। मुंह फैरे बिगै़र सिर्फ़ आंखें फिरा कर इधर उधर बे ज़रूरत देखना मकरूहे तन्ज़ीही है और नादिरन किसी ग़-रजे़ सह़ीह़ के तह़त हो तो ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 194) सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फै़ज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं, "जो बन्दा नमाज़ में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मते ख़ास़्सा उस की त़रफ़ मु-तवज्जेह रहती है जब तक इधर उधर

न देखे, जब उस ने अपना मुंह फैरा उस की रह़मत भी फिर जाती है ।'' (سُنَنْ اَبِی دَاوٗد، ج۱ص۳٤٤حدیث ۹۰۹)

नमाज़ी की त़रफ़ देखना

﴾13﴿ किसी के मुंह के सामने नमाज़ पढ़ना । दूसरे को भी नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करना ना जाइज़ व गुनाह है। कोई पहले से चेहरा किये हुए हो और अब कोई उस के चेहरे की त़रफ़ रुख़ कर के नमाज़ शुरूअ़ करे तो नमाज़ शुरूअ़ करने वाला गुनहगार हुवा और इस नमाज़ी पर कराहत आई वरना चेहरा करने वाले पर गुनाह व कराहत है । (دُرِّمُختار،ج۲، ص ٤۹٦-٤۹۷) ﴾14﴿ बिला ज़रूरत खन्कार (या'नी बल्ग़म वग़ैरा) निकालना (دُرِّمُختار، ج۲ ص ۵۱۱) ﴾15﴿ क़स्दन जमाही लेना । (مَراقِی الْفَلاح ص۳٥٤) (अगर ख़ुद ब ख़ुद आए तो ह़रज नहीं मगर रोकना मुस्तह़ब है) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जब नमाज़ में किसी को जमाही आए तो जहां तक हो सके रोके कि शैत़ान मुंह में दाख़िल हो जाता है ।'' (صَحِیح مُسلِم ص۱۵۹۷حدیث۲۹۹۵) ﴾16﴿ उल्टा कु़रआने मजी़द पढ़ना (म-सलन पहली रक्अ़त में ''تَبَّتْ'' पढ़ी और दूसरी में ''اِذَاجَآء'') ﴾17﴿ किसी वाजिब को तर्क करना । म-सलन ''क़ौमा'' और ''जल्सा'' में पीठ सीधी होने से पहले ही सज्दे में चला जाना । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 197) इस गुनाह में मुसल्मानों की अच्छी ख़ासी ता'दाद मुलव्वस नज़र आती है, याद रखिये ! जितनी भी नमाजे़ं इस त़रह़ पढ़ी होंगी सब का लौटाना वाजिब है। ''क़ौमा'' और ''जल्सा'' में कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ اللّٰه कहने

की मिक़्दार ठहरना वाजिब है ﴾18﴿ "क़ियाम" के इ़लावा किसी और मौक़अ़ पर क़ुरआने मजीद पढ़ना (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 197) ﴾19﴿ क़िराअत रुकूअ़ में पहुंच कर ख़त्म करना (ऐज़न) ﴾20﴿ ज़मीने मग़्सूबा (या'नी ऐसी ज़मीन जिस पर ना जाइज़ क़ब्ज़ा किया हो) या ﴾21﴿ पराया खेत जिस में ज़राअ़त मौजूद है (دُرِّمُختار ج ٢ص ٥٤) या ﴾22﴿ जुते हुए खेत में (ایضاً) या ﴾23﴿ क़ब्र के सामने जब कि क़ब्र और नमाज़ी के बीच में कोई चीज़ ह़ाइल न हो नमाज़ पढ़ना (عالمگیری، ج٥ص٣١٩) ﴾24﴿ कुफ़्फ़ार के इ़बादत ख़ानों में नमाज़ पढ़ना बल्कि इन में जाना भी मम्नूअ़ है । (رَدُّالْمُحتار ج٢ ص ٥٣)

नमाज़ और तसावीर

﴾25﴿ जानदार की तस्वीर वाला लिबास पहन कर नमाज़ पढ़ना मक्रूहे तह़रीमी है नमाज़ के इ़लावा भी ऐसा कपड़ा पहनना जाइज़ नहीं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 195) ﴾26﴿ नमाज़ी के सर पर या'नी छत पर या सज्दे की जगह पर या आगे या दाएं या बाएं जानदार की **तस्वीर** आवेज़ां होना **मक्रूहे तह़रीमी** है और पीछे होना भी मक्रूह है मगर गुज़श्ता सूरतों से कम । अगर तस्वीर फ़र्श पर है और उस पर सज्दा नहीं होता तो कराहत नहीं । अगर तस्वीर ग़ैर जानदार की है जैसे दरिया पहाड़ वग़ैरा तो इस में कोई मुज़ा–यक़ा नहीं । इतनी छोटी तस्वीर हो जिसे ज़मीन पर रख कर खड़े हो कर देखें तो आ'ज़ा की तफ़्सील न दिखाई दे (जैसा कि उ़मूमन त़वाफ़े का'बा के मन्ज़र की तस्वीरें बहुत

छोटी होती हैं येह तसावीर) नमाज़ के लिये बाइ़से कराहत नहीं हैं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 195, 196) हां त़वाफ़ की भीड़ में एक भी चेहरा वाज़ेह़ हो गया तो मुमा–न–अ़त बाक़ी रहेगी । चेहरे के इ़लावा म–सलन हाथ, पाउं, पीठ, चेहरे का पिछला ह़िस्सा या ऐसा चेहरा जिस की आंखें, नाक, होंट वग़ैरा सब आ'ज़ा मिटे हुए हों ऐसी तसावीर में कोई ह़रज नहीं ।

''ख़ुदा के नबी मूसा की मां का नाम यूह़ानिज़ है'' के तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ के 30 मक्रूहाते तन्ज़ीहा

﴾1﴿ दूसरे कपड़े मुयस्सर होने के बा वुजूद कामकाज के लिबास में नमाज़ पढ़ना । (شَرْحُ الْوِقَايَة، ج١ ص١٩٨) ﴾2﴿ मुंह में कोई चीज़ लिये हुए होना । अगर इस की वज्ह से क़िराअत ही न हो सके या ऐसे अल्फ़ाज़ निकलें कि जो क़ुरआने पाक के न हों तो नमाज़ ही फ़ासिद हो जाएगी । (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٢ ص٤٩١) ﴾3﴿ रुकूअ़ या सज्दे में बिला ज़रूरत तीन बार से कम तस्बीह़ कहना (अगर वक़्त तंग हो या ट्रेन चल पड़ने के ख़ौफ़ से हो तो ह़रज नहीं ।) (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 198) ﴾4﴿ नमाज़ में पेशानी से ख़ाक या घास छुड़ाना । हां अगर इन की वज्ह से नमाज़ में ध्यान बटता हो तो छुड़ाने में ह़रज नहीं । (عالمگیری ج١ ص١٠٥) ﴾5﴿ नमाज़ में हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना (دُرِّمُختار ج ٢ ص٤٩٧) ज़बान से जवाब देना मुफ़्सिदे नमाज़ है (عالمگیری،ج١ص٩٨) ﴾6﴿ नमाज़ में बिला उ़ज़्र चार ज़ानू या'नी चोकड़ी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ़) करते रहेंगे। (طبرانی)

मार कर बैठना (دُرِّمُختار ج۲ص٤٩٨) ﴾7﴿ अंगड़ाई लेना और ﴾8,9﴿ इरादतन खांसना, खन्कारना। अगर त़बीअ़त चाहती हो तो ह़रज नहीं (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 201, عالمگیری ج ۱ ص۱۰۷) ﴾10﴿ सज्दे में जाते हुए घुटने से पहले बिला उ़ज़्र हाथ ज़मीन पर रखना (مُنیۃُ الْمُصَلّی ص٣٤٠) ﴾11﴿ उठते वक़्त बिला उ़ज़्र हाथ से क़ब्ल घुटने ज़मीन से उठाना (ایضاً) ﴾12﴿ नमाज़ में सना, तअ़व्वुज़, तस्मिया और आमीन ज़ोर से कहना (غُنیہ ص۳۵۲،عالمگیری ج ۱ ص۱۰۷) ﴾13﴿ बिग़ैर उ़ज़्र दीवार वग़ैरा पर टेक लगाना (غُنیہ ص۳۵۳) ﴾14﴿ रुकूअ़ में घुटनों पर और ﴾15﴿ सज्दों में ज़मीन पर हाथ न रखना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۹) ﴾16﴿ दाएं बाएं झूमना। और तरावुह़ या'नी कभी दाएं पाउं पर और कभी बाएं पाउं पर ज़ोर देना येह सुन्नत है। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 389, बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 202) और सज्दे के लिये जाते हुए सीधी त़रफ़ ज़ोर देना और उठते वक़्त उल्टी त़रफ़ ज़ोर देना मुस्तह़ब है ﴾17﴿ नमाज़ में आंखें बन्द रखना। हां अगर ख़ुशूअ़ आता हो तो आंखें बन्द रखना अफ़्ज़ल है। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ٤٩٩) ﴾18﴿ जलती आग के सामने नमाज़ पढ़ना। शम्अ़ या चराग़ सामने हो तो ह़रज नहीं। (عالمگیری ج۱ص۱۰۸) ﴾19﴿ ऐसी चीज़ के सामने नमाज़ पढ़ना जिस से ध्यान बटे म-सलन ज़ीनत और लह्वो लइब वग़ैरा। ﴾20﴿ नमाज़ के लिये दौड़ना (رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص۵۱۳) ﴾21﴿ आ़म रास्ता ﴾22﴿ कूड़ा डालने की जगह ﴾23﴿ मज़्बह़ या'नी जहां जानवर ज़ब्ह़ किये जाते हों वहां ﴾24﴿

अस्त़बल या'नी घोड़े बांधने की जगह ﴾**25**﴿ गु़स्ल ख़ाना ﴾**26**﴿ मवेशी ख़ाना ख़ुसूसन जहां ऊंट बांधे जाते हों ﴾**27**﴿ इस्तिन्जा ख़ाने की छत और ﴾**28**﴿ सह़रा में बिला सुतरा के जब कि आगे से लोगों के गुज़रने का इम्कान हो। इन जगहों पर नमाज़ पढ़ना। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 204, 205, دُرِّمُختار ج ۲ ص۵۲۔۵٤) ﴾**29**﴿ बिग़ैर उ़ज़्र हाथ से मक्खी मच्छर उड़ाना (عالمگیری ج۱ ص۱۰۹) नमाज़ में जूं या मच्छर ईज़ा देते हों तो पकड़ कर मार डालने में कोई ह़रज नहीं जब कि अ़–मले कसीर न हो। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 203) ﴾**30**﴿ उल्टा कपड़ा पहनना या ओढ़ना।

(फ़तावा र–ज़विय्या जि. 7, स. 358 ता 360, फ़तावा अहले सुन्नत ग़ैर मत़्बूआ़)

म–दनी फूल : वोह अ़–मले क़लील जो नमाज़ी के लिये मुफ़ीद हो जाइज़ है और जो मुफ़ीद न हो वोह मक्रूह। (عالمگیری ج۱ ص۱۰۵)

ज़ोह्‌र के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने

ज़ोह्‌र के बा'द चार रक्अ़त पढ़ना मुस्तह़ब है कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने ज़ोह्‌र से पहले चार और बा'द में चार पर मुह़ा–फ़ज़त की अल्लाह तआ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा। (سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج۱ ص٤٣٦ حدیث٤٢٨) **अ़ल्लामा सय्यिद त़ह़त़ावी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (बन्दों की ह़क़ त–लफ़ियों के) जो मुत़ा–लबात हैं अल्लाह तआ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

या येह मत़लब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो (حاشية الطحطاوی علی الدرالمختار ج١ ص٢٨٤) और अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی फ़रमाते हैं : उस के लिये बिशारत येह है कि सआ़दत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा। (رَدُّالْمُحتار، ج ٢ ص٥٤٧)

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जहां ज़ोहर की दस[10] रक्अ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर बारहवीं[12] शरीफ़ की निस्बत से 12 रक्अ़त करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़ामत के साथ दो नफ़्ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये।

‘‘सय्यि-दतुना मैमूना’’ के बारह हुरूफ़ की निस्बत से नमाज़े वित्र के 12 म-दनी फूल

﴾1﴿ नमाज़े वित्र वाजिब है ﴾2﴿ अगर येह छूट जाए तो इस की क़ज़ा लाज़िम है (عالمگیری ج١ ص١١١) ﴾3﴿ वित्र का वक़्त इशा के फ़र्ज़ों के बा'द से सुब्हे सादिक़ तक है ﴾4﴿ जो सो कर उठने पर क़ादिर हो उस के लिये अफ़्ज़ल है कि पिछली रात में उठ कर पहले तहज्जुद अदा करे फिर वित्र ﴾5﴿ इस की तीन रक्अ़तें हैं (دُرِّمُختار ج ٢ ص ٥٣٢) ﴾6﴿ इस में क़ा'दए ऊला वाजिब है, सिर्फ़ तशह्हुद पढ़ कर खड़ी हो जाइये ﴾7﴿ तीसरी रक्अ़त में क़िराअत के बा'द तक्बीरे क़ुनूत (اَللّٰهُ اَكْبَر) कहना वाजिब है (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 86) ﴾8﴿ जिस त़रह़ तक्बीरे तह़रीमा कहते हैं इसी त़रह़ तीसरी रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ और सूरत पढ़ने के बा'द पहले हाथ कन्धों तक उठाइये फिर اَللّٰهُ اَكْبَر कहिये ﴾9﴿ फिर हाथ बांध कर दुआ़ए क़ुनूत पढ़िये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

दुआ़ए क़ुनूत

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْتَعِيْنُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ
وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْكَ وَنُثْنِيْ
عَلَيْكَ الْخَيْرَؕ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ
وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَّفْجُرُكَؕ
اَللّٰهُمَّ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَلَكَ نُصَلِّيْ
وَنَسْجُدُ وَاِلَيْكَ نَسْعٰى وَنَحْفِدُ
وَنَرْجُوْا رَحْمَتَكَ وَنَخْشٰى عَذَابَكَ
اِنَّ عَذَابَكَ بِالْكُفَّارِ مُلْحِقٌؕ

ऐ **अल्लाह** हम तुझ से मदद चाहते (चाहती) हैं और तुझ से बख़्शिश मांगते (मांगती) हैं और तुझ पर ईमान लाते (लाती) हैं और तुझ पर भरोसा रखते (रखती) हैं और तेरी बहुत अच्छी ता'रीफ़ करते (करती) हैं और तेरा शुक्र करते (करती) हैं और तेरी ना शुक्री नहीं करते (करती) और अलग करते (करती) हैं और छोड़ते (छोड़ती) हैं उस को जो तेरी ना फ़रमानी करे, ऐ **अल्लाह** हम तेरी ही इ़बादत करते (करती) हैं और तेरे ही लिये नमाज़ पढ़ते (पढ़ती) और सज्दा करते (करती) हैं और तेरी ही त़रफ़ दौड़ते (दौड़ती) और सअ़्य करते (करती) हैं और तेरी रह़मत की उम्मीद वार हैं और तेरे अ़ज़ाब से डरते (डरती) हैं बेशक तेरा अ़ज़ाब क़ाफ़िरों को मिलने वाला है।

10 दुआ़ए क़ुनूत के बा'द दुरुद शरीफ़ पढ़ना बेहतर है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 4, دُرِّمُختار ج ۲ ص ۵۳٤)

11 जो दुआ़ए क़ुनूत न पढ़ सकें वोह येह पढ़ें :

(اَللّٰھُمَّ) رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾

(ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !) **तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा ।

या येह पढ़िये :

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِیْ ऐ **अल्लाह** मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दे । (غُنیه ص۴۱۸)

﴿12﴾ अगर दुआ़ए क़ुनूत पढ़ना भूल गई और रुकूअ़ में चली गई तो वापस न लौटिये बल्कि सज्दए सह्व कर लीजिये ।

(عالمگیری، ج۱ص۱۱۱، ۱۲۸)

वित्र का सलाम फैरने के बा'द की एक सुन्नत

शहन्शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब वित्र में सलाम फैरते तीन बार سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ कहते और तीसरी बार बुलन्द आवाज़ से कहते । (سُنَنُ النَّسَائی ص ۲۹۹ حدیث ۱۷۲۹)

''ह़ज़रते ह़लीमा सा'दिया'' के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से सज्दए सह्व के 14 म-दनी फूल

﴿1﴾ वाजिबाते **नमाज़** में से अगर कोई वाजिब भूले से रह जाए तो सज्दए सह्व वाजिब है (دُرِّمُختار، ج۲ص۶۵۵) ﴿2﴾ अगर सज्दए सह्व वाजिब होने के बा वुजूद न किया तो नमाज़ लौटाना वाजिब है (ایضاً) ﴿3﴾ जानबूझ कर वाजिब तर्क किया तो सज्दए सह्व काफ़ी नहीं

बल्कि नमाज़ दोबारा लौटाना वाजिब है। **(ایضاً)** **﴾4﴿** कोई ऐसा वाजिब तर्क हुवा जो वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि इस का वुजूब अम्रे ख़ारिज से हो तो सज्दए सह्व वाजिब नहीं म-सलन ख़िलाफ़े तरतीब कुरआने पाक पढ़ना तर्के वाजिब है मगर इस का तअ़ल्लुक़ वाजिबाते नमाज़ से नहीं बल्कि वाजिबाते तिलावत से है लिहाज़ा सज्दए सह्व नहीं (अलबत्ता जानबूझ कर ऐसा किया हो तो इस से तौबा करे) **(رَدُّالْمُحتار ج ٢ ص ٦٥٥)** **﴾5﴿** फ़र्ज़ तर्क हो जाने से नमाज़ जाती रहती है सज्दए सह्व से इस की तलाफ़ी नहीं हो सकती लिहाज़ा दोबारा पढ़िये **(ایضاً،غُنیہ ص ٤٥٥)** **﴾6﴿** सुन्नतें या मुस्तह़ब्बात म-सलन ''सना'', ''तअ़व्वुज़'', ''तस्मिया', ''आमीन'', तक्बीराते इन्तिक़ालात (या'नी सुजूद वग़ैरा में जाते उठते वक़्त कही जाने वाली اَللّٰهُ اَكْبَر) और तस्बीह़ात के तर्क से सज्दए सह्व वाजिब नहीं होता, नमाज़ हो गई। **(ایضاً)** मगर दोबारा पढ़ लेना मुस्तह़ब है, भूल कर तर्क किया हो या जानबूझ कर (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 58) **﴾7﴿** नमाज़ में अगर्चे दस 10 वाजिब तर्क हुए, सह्व के दो 2 ही सज्दे सब के लिये काफ़ी हैं **(رَدُّالْمُحتار ج٢ ص٦٥٥,** बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 59) **﴾8﴿** ता'दीले अरकान (म-सलन रुकूअ़ के बा'द कम अज़ कम एक बार سُبْحٰنَ الله कहने की मिक़्दार सीधा खड़ा होना या दो सज्दों के दरमियान एक बार سُبْحٰنَ الله कहने की मिक़्दार सीधा बैठना) भूल गई सज्दए सह्व वाजिब है **(عالمگیری ج١ ص١٢٧)** **﴾9﴿** कुनूत या तक्बीरे कुनूत (या'नी वित्र की तीसरी रक्अ़त में क़िराअत के बा'द कुनूत के लिये जो तक्बीर कही जाती है वोह अगर) भूल गई सज्दए

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

सह्व वाजिब है (اَیضًاص١٢٨) ﴾10﴿ क़िराअत वग़ैरा किसी मौक़अ़ पर सोचने में तीन मरतबा "سُبْحٰنَ اللّٰہ" कहने का वक़्फ़ा गुज़र गया सज्दए सह्व वाजिब हो गया। (رَدُّالْمُحتار ج٢ص٦٧٧) ﴾11﴿ सज्दए सह्व के बा'द भी अत्तहि़य्यात पढ़ना वाजिब है। (عالمگیری، ج ١ ،ص١٢٥) अत्तहि़य्यात पढ़ कर सलाम फैरिये और बेहतर येह है कि दोनों बार अत्तहि़य्यात पढ़ कर दुरूद शरीफ़ भी पढ़िये ﴾12﴿ क़ा'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द इतना पढ़ा "اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ" तो सज्दए सह्व वाजिब है इस वज्ह से नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस वज्ह से कि तीसरी रक्अ़त के क़ियाम में ताख़ीर हुई। तो अगर इतनी देर तक सुकूत किया (चुप रही) जब भी सज्दए सह्व है जैसे क़ा'दा व रुकूअ़ व सुजूद में कु़रआन पढ़ने से सज्दए सह्व वाजिब है, ह़ालां कि वोह कलामे इलाही عَزَّوَجَلَّ है।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 4, स. 62, دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار، ج٢ص٦٥٧)

ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को ख़्वाब में सरकारे नामदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार हुवा सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर तुम ने सज्दा क्यूं वाजिब बताया ?" अ़र्ज़ की : "इस लिये कि इस ने भूल कर (या'नी ग़फ़्लत से) पढ़ा।" सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येह जवाब पसन्द फ़रमाया। (اَیضًا)

﴾**13**﴿ किसी क़ा'दे में तशह्हुद से कुछ रह गया तो सज्दए सह्व वाजिब है नमाज़ नफ़्ल हो या फ़र्ज़ । (عالمگیری،ج۱،ص۱۲۷)

सज्दए सह्व का त़रीक़ा

﴾**14**﴿ अत्तहिय्यात पढ़ कर बल्कि अफ़्ज़ल येह है कि दुरूद शरीफ़ भी पढ़ लीजिये, सीधी त़रफ़ सलाम फैर कर दो[2] सज्दे कीजिये, फिर तशह्हुद, दुरूद शरीफ़ और दुआ़ पढ़ कर सलाम फैर दीजिये ।

सज्दए तिलावत और शैत़ान की शामत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गु़यूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है, शैत़ान हट जाता है और रो कर कहता है : हाए मेरी बरबादी ! इब्ने आदम को सज्दे का हुक्म हुवा उस ने सज्दा किया उस के लिये जन्नत है और मुझे हुक्म हुवा मैं ने इन्कार किया मेरे लिये दोज़ख़ है । (صَحِیح مُسلِم،ص٥٦ حدیث ٨١)

اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुराद पूरी हो

क़ुरआने मजीद में सज्दे की 14 आयात हैं । जिस मक़्सद के लिये एक मजलिस में सज्दे की सब (या'नी 14) आयतें पढ़ कर (14) सज्दे करे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस का मक़्सद पूरा फ़रमा देगा । ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर उस का सज्दा करती जाए या सब पढ़ कर आख़िर में 14 सज्दे कर ले । (دُرِّمُختار،ج۲ص۷۱۹،غُنیہ ص۵۰۷ وغیرھما) मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त हि़स्सा 4 सफ़ह़ा 75 ता 77 पर 14 आयाते सज्दा मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये ।

"या बीबी फ़ातिमा" के ग्यारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से सज्दए तिलावत के 11 म-दनी फूल

﴾1﴿ आयते सज्दा पढ़ने या सुनने से सज्दा वाजिब हो जाता है पढ़ने में येह शर्त़ है कि इतनी आवाज़ में हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो खुद सुन सके, सुनने वाले के लिये येह ज़रूरी नहीं कि बिल क़स्द सुनी हो बिला क़स्द सुनने से भी सज्दा वाजिब हो जाता है । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 77, عالمگیری، ج ۱،ص ۱۳۲) ﴾2﴿ किसी भी ज़बान में आयत का तरजमा पढ़ने और सुनने वाली पर सज्दा वाजिब हो गया, सुनने वाली ने येह समझा हो या न समझा हो कि आयते सज्दा का तरजमा है। अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे न मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सज्दा का तरजमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाली को आयते सज्दा होना बताया गया हो । (عالمگیری،ج۱،ص۱۳۳)

﴾3﴿ **सज्दा** वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी है लेकिन बा'ज़ उ़-लमाए मु-तअख़्ख़िरीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن के नज़्दीक वोह लफ़्ज़ जिस में सज्दे का माद्दा पाया जाता है उस के साथ क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़्ज़ मिला कर पढ़ा तो सज्दए तिलावत वाजिब हो जाता है लिहाज़ा एह़तियात़ येही है कि दोनों[2] सूरतों में सज्दए तिलावत किया जाए । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 229, 233, मुलख़्ख़सन)

﴾4﴿ **आयते** सज्दा बैरूने नमाज़ (या'नी ख़ारिजे नमाज़) पढ़ी तो फ़ौरन सज्दा कर लेना वाजिब नहीं है अलबत्ता वुज़ू हो तो ताख़ीर मक्रूहे

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (کنزالعمال)

तन्ज़ीही है । (دُرِّمُختار،ج۲ص۷۰۳) 《5》 सज्दए तिलावत नमाज़ में फ़ौरन करना वाजिब है अगर ताख़ीर की तो गुनहगार होगी और जब तक नमाज़ में है या सलाम फैरने के बा'द कोई नमाज़ के मुनाफ़ी फे़'ल नहीं किया तो **सज्दए तिलावत** कर के **सज्दए सह्व** बजा लाए । (دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار،ج۲،ص ۷۰٤) ताख़ीर से मुराद तीन आयत से ज़ियादा पढ़ लेना है कम में ताख़ीर नहीं मगर आख़िरे सूरत में अगर सज्दा वाक़ेअ़ है, म-सलन **इन्शक़्क़त** तो सूरत पूरी कर के सज्दा करेगी जब भी हरज नहीं । (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 4, स. 82 मुलख़्ख़सन) 《6》 काफ़िर या ना बालिग़ से आयते सज्दा सुनी तब भी सज्दए तिलावत वाजिब हो गया । (عالمگیری،ج ۱،ص ۱۳۲) 《7》 सज्दए तिलावत के लिये तह़रीमा के सिवा तमाम वोह शराइत़ हैं जो नमाज़ के लिये हैं म-सलन त़हारत, इस्तिक़्बाले क़िब्ला, निय्यत, वक़्त इस मा'ना पर कि आगे आता है[1] सित्रे औ़रत, लिहाज़ा अगर पानी पर क़ादिर है तयम्मुम कर के सज्दा करना जाइज़ नहीं । (دُرِّمُختار ج ۲ ص ۶۹۹, बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 4, स. 80) 《8》 इस की निय्यत में येह शर्त़ नहीं कि फ़ुलां आयत का सज्दा है बल्कि मुत़्लक़न सज्दए तिलावत की निय्यत काफ़ी है । (دُرِّمُختار، رَدُّالمُحتار،ج۲ص ۶۹۹) 《9》 जो चीजे़ं नमाज़ को फ़ासिद करती हैं उन से सज्दा भी फ़ासिद हो जाएगा म-सलन ह़-दसे अ़मद[2] व कलाम व क़ह्क़हा । (دُرِّمُختار،ج۲ص۶۹۹, बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 4, स. 80)

1 : इस की तफ़्सील बहारे शरीअ़त हि़स्सा 4 में मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये 2 : या'नी क़स्दन वुज़ू तोड़ने का अ़मल

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

सज्दए तिलावत का त़रीक़ा

﴾10﴿ **खड़ी** हो कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहती हुई सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहती हुई खड़ी हो जाए । शुरूअ़ और बा'द में, दोनों बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना **सुन्नत** है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 80)

﴾11﴿ **सज्दए** तिलावत के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहते वक़्त न हाथ उठाना है न इस में तशह्हुद है न सलाम । (تَنوِیرُ الْاَبْصَار،ج ۲، ص ۷۰۰)

ताकीद : बालिग़ा होने के बा'द जितनी बार भी **आयाते सज्दा** सुन कर अभी तक सज्दा न किया हो उन का ग़-ल-बए ज़न के ए'तिबार से ह़िसाब लगा कर उतनी बार बा वुज़ू **सज्दए तिलावत** कर लीजिये ।

सज्दए शुक्र का बयान

औलाद पैदा हुई, या माल पाया या गुमी हुई चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया अल ग़रज़ किसी ने'मत के ह़ुसूल पर **सज्दए शुक्र** करना मुस्तह़ब है इस का त़रीक़ा वोही है जो सज्दए तिलावत का है । (عالمگیری ،ج ۱ ،ص ۱۳۶، رَدُّالْمُحتار ج ۲ ص ۷۲۰) इसी त़रह़ जब भी कोई ख़ुश ख़बरी या ने'मत मिले तो सज्दए शुक्र करना कारे सवाब है म-सलन मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّتَعْظِیْمًا का वीज़ा लग गया, किसी पर **इन्फ़िरादी कोशिश** कामयाब हुई और वोह **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो गई, मुबारक ख़्वाब नज़र आया, आफ़त टली या कोई दुश्मने इस्लाम मरा वग़ैरा वग़ैरा ।

नमाज़ी के आगे से गुज़रना सख़्त गुनाह है

﴾1﴿ सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो सो100 बरस खड़ा रहना उस एक क़दम चलने से बेहतर समझता।" (سُنَن ابن ماجه ج١ ص ٥٠٦ حديث ٩٤٦) ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का इर्शाद है : "नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता।" (موطا امام مالك ،ج١ص١٥٤حديث٣٧١) नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला बेशक गुनाहगार है मगर नमाज़ पढ़ने वाले की नमाज़ में इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 7, स. 254, मुलख़्ख़सन)

"सय्यिदह ख़दी-जतुल कुब्रा" के पन्दरह ह़ुरूफ़ की निस्बत से नमाज़ी के आगे से गुज़रने के बारे में 15 अह़काम

﴾1﴿ मैदान और बड़ी मस्जिद में नमाज़ी के क़दम से मौज़ए सुजूद तक गुज़रना ना जाइज़ है। **मौज़ए सुजूद** से मुराद येह है कि क़ियाम की ह़ालत में सज्दे की जगह नज़र जमाए तो जितनी दूर तक निगाह फैले वोह मौज़ए सुजूद है। उस के दरमियान से गुज़रना जाइज़

नहीं । (عــالـمگیری،ج ۱،ص ۱۰٤،دُرِّمُختارج ۲ص۴۷۹) मौज़ए सुजूद का फ़ासिला अन्दाज़न क़दम से ले कर तीन गज़ तक है । लिहाज़ा मैदान में नमाज़ी के क़दम के तीन गज़ के बा'द से गुज़रने में ह़रज नहीं (क़ानूने शरीअ़त, हिस्सा : अव्वल, स. 114) ﴾2﴿ मकान और छोटी मस्जिद में नमाज़ी के आगे अगर सुतरा (या'नी आड़) न हो तो क़दम से दीवारे क़िब्ला तक कहीं से गुज़रना जाइज़ नहीं । (عــالـمگیری، ج۱،ص۱۰٤) ﴾3﴿ नमाज़ी के आगे सुतरा या'नी कोई आड़ हो तो उस सुतरे के बा'द से गुज़रने में कोई ह़रज नहीं । (ایضًا) ﴾4﴿ सुतरा कम अज़ कम एक हाथ (या'नी तक़रीबन आधा गज़) ऊंचा और उंगली बराबर मोटा होना चाहिये । (دُرِّمُختار ج ۲ص٤٨٤) ﴾5﴿ दरख़्त, आदमी और जानवर वग़ैरा का भी सुतरा हो सकता है (غُنیہ ص٣٦٧) ﴾6﴿ इन्सान को इस ह़ालत में सुतरा किया जाए जब कि उस की पीठ नमाज़ी की त़रफ़ हो कि नमाज़ी की त़रफ़ मुंह करना मन्अ़ है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 184) (अगर नमाज़ पढ़ने वाली के चेहरे की त़रफ़ किसी ने मुंह किया तो अब कराहत नमाज़ी पर नहीं उस मुंह करने वाली पर है) ﴾7﴿ एक इस्लामी बहन नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहती है अगर दूसरी इस्लामी बहन उसी को आड़ बना कर उस के चलने की रफ़्तार के ऐन मुत़ाबिक़ उस के साथ ही साथ गुज़र जाए तो जो नमाज़ी से क़रीब है वोह गुनहगार हुई और दूसरी के लिये येही पहली इस्लामी बहन सुतरा (या'नी आड़) भी बन गई । (عــالـمگیری، ج۱،ص۱۰٤) ﴾8﴿ अगर कोई इस क़दर ऊंची जगह पर नमाज़ पढ़ रही है कि गुज़रने वाली के

आ'ज़ा नमाज़ी के सामने नहीं हुए तो गुज़रने में ह़रज नहीं। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 3, स. 183, मक-त-बतुल मदीना) «9» दो औरतें नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहती हैं इस का त़रीक़ा येह है कि उन में से एक नमाज़ी के सामने पीठ कर के खड़ी हो जाए। अब उस को आड़ बना कर दूसरी गुज़र जाए। फिर दूसरी पहली की पीठ के पीछे नमाज़ी की त़रफ़ पीठ कर के खड़ी हो जाए। अब पहली गुज़र जाए फिर वोह दूसरी जिधर से आई थी उसी त़रफ़ हट जाए। (عالمگیری ج ۱ ص ۱۰٤ ، رَدُّالْمُحتَار ج ۲ ص ٤٨٣) «10» कोई नमाज़ी के आगे से गुज़रना चाहती है तो नमाज़ी को इजाज़त है कि वोह उसे गुज़रने से रोके ख़्वाह "سُبْحٰنَ الله" कहे या जह्‌र (या'नी बुलन्द आवाज़ से) क़िराअत करे या हाथ या सर या आंख के इशारे से मन्अ़ करे। इस से ज़ियादा की इजाज़त नहीं। म-सलन कपड़ा पकड़ कर झटकना या मारना बल्कि अगर अ़-मले कसीर हो गया तो नमाज़ ही जाती रही। (دُرِّمُختَار، رَدُّالْمُحتَار، ج۲ ص ٤٨٥) «11» तस्बीह़ व इशारा दोनों को बिला ज़रूरत जम्अ़ करना मक्रूह है (دُرِّمُختَار، ج۲، ص٤٨٦) «12» औ़रत के सामने से गुज़रे तो औ़रत तस्फ़ीक़ से मन्अ़ करे या'नी सीधे हाथ की उंगलियां उल्टे हाथ की पुश्त पर मारे। (ایضاً) «13» अगर मर्द ने तस्फ़ीक़ की और औ़रत ने तस्बीह़ कही तो नमाज़ फ़ासिद न हुई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुवा (ایضاً ص ٤٨٧) «14» त़वाफ़ करने वाली को दौराने त़वाफ़ नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ है। (رَدُّالْمُحتَار، ج۲، ص ٤٨٢) «15» सअ़्य के दौरान नमाज़ी के आगे से गुज़रना जाइज़ नहीं।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

"तरावीह़ सुन्नते मुअक्कदा है" के सत्तरह हुरूफ़ की निस्बत से तरावीह़ के 17 म-दनी फूल

《1》 **तरावीह़** हर आ़क़िल व बालिग़ इस्लामी बहन के लिये सुन्नते मुअक्कदा है। इस का तर्क जाइज़ नहीं। (دُرِّ مُخْتار، ج ۲، ص۵۹٦ وغیره)

《2》 **तरावीह़** की बीस[20] रक्अ़तें हैं। सय्यिदुना फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ के अ़ह्द में बीस[20] रक्अ़तें ही पढ़ी जाती थीं। (مَعْرِفَةُ السُّنَنِ وَالْآثَارِ لِلْبَيْهَقِيّ، ج۲ ص۳۰۵ رقم ۱۳٦۵)

《3》 **तरावीह़** का वक़्त इ़शा के फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द से सुब्हे़ सादिक़ तक है। इ़शा के फ़र्ज़ अदा करने से पहले अगर पढ़ ली तो न होगी। (عالمگیری ج۱ص ۱۱۵ وغیره)

《4》 इ़शा के फ़र्ज़ व वित्र के बा'द भी **तरावीह़** पढ़ी जा सकती है। जैसा कि बा'ज़ अवक़ात 29 को रूयते हिलाल की शहादत मिलने में ताख़ीर के सबब ऐसा हो जाता है।

《5》 मुस्तह़ब येह है कि **तरावीह़** में तिहाई रात तक ताख़ीर करें अगर आधी रात के बा'द पढ़ें तब भी कराहत नहीं। (دُرِّ مُخْتار ج۲ ص۵۹۸)

《6》 **तरावीह़** अगर फ़ौत हुई तो इस की क़ज़ा नहीं। (ایضاً)

《7》 बेहतर येह है कि **तरावीह़** की बीस[20] रक्अ़तें दो[2] दो[2] कर के दस[10] सलाम के साथ अदा करे। (دُرِّ مُخْتار ج۲ ص۵۹۹)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

﴾8﴿ **तरावीह़** की बीस[20] रक्अ़तें एक सलाम के साथ भी अदा की जा सकती हैं, मगर ऐसा करना मक्रूह है। **(ایضاً)** हर दो[2] रक्अ़त पर **क़ा'दा** करना फ़र्ज़ है। हर **क़ा'दा में** अत्तहि़य्यात के बा'द दुरूद शरीफ़ भी पढ़े और त़ाक़ रक्अ़त (या'नी पहली, तीसरी, पांचवीं वग़ैरा) में सना, तअ़व्वुज़ व तस्मिया भी पढ़े।

﴾9﴿ एह़तियात़ येह है कि जब दो[2] दो[2] रक्अ़त कर के पढ़ रही है तो हर दो[2] रक्अ़त पर अलग अलग निय्यत करे और अगर बीस[20] रक्अ़तों की एक साथ निय्यत कर ली तब भी जाइज़ है। **(رَدُّالْمُحتَار ج۲ ص۵۹۷)**

﴾10﴿ बिला उ़ज़्र तरावीह़ बैठ कर पढ़ना मक्रूह है बल्कि बा'ज़ फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلام के नज़्दीक तो होती ही नहीं। **(دُرِّ مُختَار ج۲ ص۶۰۳)**

﴾11﴿ अगर (ह़ाफ़िज़ा इस्लामी बहन अपनी तरावीह़ अदा कर रही हैं और) किसी वज्ह से (तरावीह़) की नमाज़ फ़ासिद हो जाए तो जितना क़ुरआने पाक उन रक्अ़तों में पढ़ा था उन का इआ़दा करें ताकि ख़त्म में नुक़्सान न रहे। **(عالمگیری ج۱ ص۱۱۸)**

﴾12﴿ दो[2] रक्अ़त पर बैठना भूल गई तो जब तक तीसरी[3] का सज्दा न किया हो बैठ जाए आख़िर में सज्दए सह्व कर ले और अगर तीसरी[3] का सज्दा कर लिया तो चार पूरी कर ले मगर येह दो[2] शुमार होंगी। हां अगर दो[2] पर क़ा'दा किया था तो चार[4] हुईं। **(ایضاً)**

﴾13﴿ तीन[3] रक्अ़तें पढ़ कर सलाम फैरा अगर दूसरी पर बैठी नहीं थी तो न हुईं इन के बदले की दो[2] रक्अ़तें दोबारा पढ़े।

(عالمگیری ج۱ص۱۱۸)

﴾14﴿ अगर सत्ताईसवीं को (या इस से क़ब्ल) क़ुरआने पाक ख़त्म हो गया तब भी आख़िर र-मज़ान तक **तरावीह़** पढ़ती रहें कि सुन्नते मुअक्कदा है। (ایضاً)

﴾15﴿ हर चार रक्अ़तों के बा'द उतनी देर आराम लेने के लिये बैठना मुस्तह़ब है जितनी देर में चार रक्आ़त पढ़ी हैं। इस वक़्फ़े को तरवीह़ा कहते हैं। (عالمگیری ج۱ص۱۱۵)

﴾16﴿ तरवीह़ा के दौरान इख़्तियार है कि चुप बैठें या ज़िक्रो दुरूद और तिलावत करें या तन्हा नफ़्ल पढ़ें या येह तस्बीह़ भी पढ़ सकती हैं :-

سُبْحٰنَ ذِی الْمُلْکِ وَالْمَلَکُوْت ۝ سُبْحٰنَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَیْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْکِبْرِیَاءِ وَالْجَبَرُوْتِ ۝ سُبْحٰنَ الْمَلِكِ الْحَیِّ الَّذِیْ لَایَنَامُ وَلَا یَمُوْتُ ۝ سُبُّوحٌ قُدُّوْسٌ رَّبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِکَةِ وَالرُّوْحِ ۝ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ ۝ یَا مُجِیْرُ یَا مُجِیْرُ یَا مُجِیْرُ ۝ بِرَحْمَتِكَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ ۝ (غُنیہ ص ٤٠٤ وغیرہ)

﴾17﴿ बीस रक्अ़तें हो चुकने के बा'द पांचवां तरवीह़ा भी मुस्तह़ब है। اِلخ (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 39)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोजे़ जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

नमाजे़ पन्जगाना की तफ़्सील

पांचों नमाज़ों में कुल 48 रक्अ़ात हैं । जिन में 17 रक्अ़ात फ़र्ज़, 3 रक्अ़ात वाजिब, 12 सुन्नते मुअक्कदा, 8 रक्अ़ात सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं और 8 रक्अ़ात नफ़्ल हैं ।

नम्बर शुमार	नाम अवक़ात	सुन्नते मुअक्कदा क़ब्लिया	सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा	फ़र्ज़	सुन्नते मुअक्कदा बा'दिया	नफ़्ल	वाजिब	नफ़्ल	कुल ता'दाद
1	फ़ज्र	2	-	2	-	-	-	-	4
2	ज़ोह्‌र	4	-	4	2	2	-	-	12
3	अ़स्र	-	4	4	-	-	-	-	8
4	मग़रिब	-	-	3	2	2	-	-	7
5	इशा	-	4	4	2	2	3	2	17

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

नमाज़ के बा'द पढ़े जाने वाले अवराद

नमाज़ के बा'द जो अज़्कारे त़वीला (त़वील अवराद) अह़ादीसे मुबा–रका में वारिद हैं, वोह ज़ोह्र व मग़रिब व इशा में सुन्नतों के बा'द पढ़े जाएं, क़ब्ले सुन्नत मुख़्तसर दुआ़ पर क़नाअ़त चाहिये, वरना सुन्नतों का सवाब कम हो जाएगा ।

(رَدُّالْمُحتار، ج۲، ص۳۰۰, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 107)

अह़ादीसे मुबा–रका में किसी दुआ़ की निस्बत जो ता'दाद वारिद है उस से कम ज़ियादा न करे कि जो फ़ज़ाइल उन अज़्कार के लिये हैं वोह उसी अ़दद के साथ मख़्सूस हैं इन में कम ज़ियादा करने की मिसाल येह है कि कोई क़ुफ़्ल (ताला) किसी ख़ास क़िस्म की कुन्जी से खुलता है अब अगर कुन्जी में दन्दाने कम या ज़ाइद कर दें तो उस से न खुलेगा, अलबत्ता अगर शुमार में शक वाक़ेअ़ हो तो ज़ियादा कर सकता है और येह ज़ियादत (बढ़ाना) नहीं बल्कि इत्माम (मुकम्मल करना) है । (اَیضاً ص ۳۰۲, ऐज़न)

पन्ज वक़्ता नमाज़ों के सुनन व नवाफ़िल से फ़राग़त के बा'द ज़ैल के अवराद पढ़ लीजिये सहूलत के लिये नम्बर ज़रूर दिये हैं मगर इन में तरतीब शर्त़ नहीं है । हर विर्द के अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ना सोने पे सुहागा है ।

﴾1﴿ "आ–यतुल कुरसी" एक एक बार पढ़ने वाला मरते ही दाख़िले जन्नत हो । (مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح ج۱ ص۱۹۷ حدیث۹۷٤)

﴾2﴿ اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ[1]

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۲ ص۱۲۳ حدیث۱۵۲۲)

1. ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू अपने ज़िक्र, अपने शुक्र और अपनी अच्छी इ़बादत करने पर मेरी मदद फ़रमा ।

﴾3﴿ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ[1] (तीन तीन बार) उस के गुनाह मुआ़फ़ हों अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से भागा हुवा हो। (سُنَنُ التِّرمِذِی،ج۵ص۳۳۶حدیث ۳۵۸۸)

﴾4﴿ तस्बीहे़ फ़ाति़मा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا **:** سُبْحٰنَ اللّٰه तेंतीस33 बार, اَلْحَمْدُ لِلّٰه तेंतीस33 बार, اَللّٰهُ اَكْبَرُ तेंतीस33 बार येह 99 हुए, आख़िर में لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ط لَهُ الْمُلْكُ وَ لَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ط[2] एक बार पढ़ कर (100 का अ़दद पूरा कर ले) इस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।

﴾5﴿ हर नमाज़ के बा'द पेशानी के अगले ह़िस्से पर हाथ रख कर पढ़े **:** بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْم ط اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّی الْهَمَّ وَالْحُزْنَ.[3] (पढ़ने के बा'द हाथ खींच कर पेशानी तक लाए) तो हर ग़म व परेशानी से बचे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن ने मज़्कूरा दुआ़ के आख़िर में मज़ीद इन अल्फ़ाज़ का इज़ाफ़ा फ़रमाया है, وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّة या'नी और अहले सुन्नत से।

﴾6﴿ अ़स्र व फ़ज्र के बा'द बिग़ैर पाउं बदले, बिग़ैर कलाम किये

---

1 : तरजमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता (मांगती) हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है क़ाइम रखने वाला है और उस की बारगाह में तौबा करता (करती) हूं।) **2 :** या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह यक्ता व यगाना है उस का कोई शरीक नहीं। उसी का मुल्क है। उसी की ह़म्द है। वोह हर शै पर क़ादिर है। **3 : अल्लाह** के नाम से शुरूअ़ जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रह़मान व रह़ीम है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से ग़म व मलाल दूर फ़रमा।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِىْ وَ يُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ[(1)] दस[10] दस[10] बार पढ़िये ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा **:** 3, स. 107)

﴾7﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, शहन्शाहे नुबुव्वत, ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** जिस ने नमाज़ के बा'द येह कहा, ''سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَ بِحَمْدِهٖ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه[(2)]'' तो वोह मग़्फ़िरत याफ़्ता हो कर उठेगा । **(مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج١٠ ص١٢٩ حديث ١٦٩٢٨)**

﴾8﴿ ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** ''जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दस[10] मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये अपनी रिज़ा और मग़्फ़िरत लाज़िम फ़रमा देगा ।'' **(تَفْسِير دُرِّمَنْثُور ج٨ ص٦٧٨)**

﴾9﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन अरक़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** जो शख़्स हर नमाज़ के बा'द

---

1 : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, उस के लिये मुल्क व ह़म्द है, उसी के हाथ में ख़ैर है, वोह ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर शै पर क़ादिर है । **2 :** पाक है अ़-ज़मत वाला रब और उसी की ता'रीफ़ है और उसी की अ़ता से नेकी की तौफ़ीक़ और गुनाह से बचने की क़ुव्वत मिलती है ।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾ (1) (پ۲۳الصّٰفّٰت۱۸۰تا۱۸۲) तीन बार पढ़ेगा गोया उस ने अज्र का बहुत बड़ा पैमाना भर लिया। (تَفسِیر دُرِّمَنثُور للسیوطی ج۷ص۱۴۱)

मिनटों में चार ख़त्मे क़ुरआने पाक का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है मदीने के ताजदार, सुल्त़ाने दो जहां, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त निशान है : जो बा'दे फ़ज्र बारह मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) पढ़ेगा गोया वोह चार बार (पूरा) क़ुरआन पढ़ेगा और उस दिन उस का येह अ़मल अहले ज़मीन से अफ़्ज़ल है जब कि वोह तक़्वा का पाबन्द रहे। (شُعَبُ الْاِیْمَان لِلْبَیْهَقِی ج۲ ص۵۰۱ حدیث۲۵۲۸)

शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहने का अ़मल

सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने नमाज़े फ़ज्र अदा की और बात किये बिग़ैर قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ (पूरी सूरत) को दस10 मर्तबा पढ़ा तो उस दिन में उसे कोई गुनाह न पहुंचेगा और वोह शैत़ान से बचाया जाएगा। (تَفسِیر دُرِّمَنثُور ج۸ص۶۷۸)

(नमाज़ के बा'द पढ़ने के मज़ीद अवराद मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त ह़िस्सा 3 सफ़ह़ा 107 ता 110 पर, अल वज़ी-फ़तुल करीमा और श-ज-रए क़ादिरिय्या में मुला-ह़ज़ा फ़रमा लीजिये)।

مدینہ

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : पाकी है तुम्हारे रब को इ़ज़्ज़त वाले रब को उन की बातों से और सलाम है पैग़म्बरों पर और सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो सारे जहान का रब है।

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الۡمُرۡسَلِیۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ ؕ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ؕ

क़ज़ा नमाज़ों का त़रीक़ा

(ह़-नफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है, मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना पुल सिरात़ पर नूर है, जो रोज़े जुमुआ़ मुझ पर **अस्सी** बार दुरूदे पाक पढ़े उस के **अस्सी साल** के गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे।

(اَلْجَامِعُ الصَّغِیر لِلسُّیُوطِی ص ۳۲۰ حدیث ۵۱۹۱)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

पारह 30 **सू-रतुल माऊ़न** की आयत नम्बर 4 और 5 में इर्शाद होता है :

فَوَیۡلٌ لِّلۡمُصَلِّیۡنَ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلَاتِهِمۡ سَاهُوۡنَ ۙ﴿۵﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो उन नमाज़ियों की ख़राबी है जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان **सू-रतुल माऊ़न** की आयत नम्बर 5 के तह़्त फ़रमाते हैं : नमाज़ से भूलने की चन्द सूरतें हैं : कभी न पढ़ना, पाबन्दी से न पढ़ना, सह़ीह़ वक़्त पर न पढ़ना, नमाज़ सह़ीह़ त़रीक़े से अदा न

करना, शौक़ से न पढ़ना, समझ बूझ कर अदा न करना, कसल व सुस्ती, बे परवाई से पढ़ना। (नूरुल इरफ़ान, स. 958)

जहन्नम की ख़ौफ़नाक वादी

सदरुश्शरीअ़ह बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते मौलाना मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : जहन्नम में वैल नामी एक ख़ौफ़नाक वादी है जिस की सख़्ती से ख़ुद जहन्नम भी पनाह मांगता है। जान बूझ कर नमाज़ क़ज़ा करने वाले उस के मुस्तह़िक़ हैं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 2, मुलख़्ख़सन)

पहाड़ गरमी से पिघल जाएं

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى फ़रमाते हैं : कहा गया है कि जहन्नम में एक वादी है जिस का नाम वैल है, अगर उस में दुन्या के पहाड़ डाले जाएं तो वोह भी उस की गरमी से पिघल जाएं और येह उन लोगों का ठिकाना है जो नमाज़ में सुस्ती करते और वक़्त के बा'द **क़ज़ा** कर के पढ़ते हैं मगर येह कि वोह अपनी कोताही पर नादिम हों और बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में तौबा करें। (كتابُ الكبائِر ص ١٩)

एक नमाज़ क़ज़ा करने वाला भी फ़ासिक़ है

आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 5 सफ़्ह़ा 110 पर फ़रमाते हैं : जो एक वक़्त की नमाज़ भी क़स्दन बिला उ़ज़्रे शर-ई दीदा व दानिस्ता क़ज़ा करे फ़ासिक़

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

व मुर-तकिबे कबीरा व मुस्तह़िक़े जहन्नम है ।

सर कुचलने की सज़ा

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : आज रात दो[2] शख़्स (या'नी जिब्रईल عَلَیْهِ السَّلَام और मिकाईल عَلَیْهِ السَّلَام) मेरे पास आए और मुझे अर्ज़े मुक़द्दसा में ले आए । मैंने देखा कि **एक शख़्स** लैटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स **पथ्थर** उठाए खड़ा है और पै दर पै **पथ्थर** से उस का सर कुचल रहा है, हर बार कुचलने के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है । मैं ने फ़िरिश्तों से कहा سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह कौन है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की, कि : पहला शख़्स जो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा **येह वोह था जिस ने क़ुरआन पढ़ा फिर उस को छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाता था इस के साथ येह बरताव क़ियामत तक होगा ।** (مُلَخَّص از صحیح بخاری حدیث۷۰۴۷،ج۴،ص۴۲۵)

क़ब्र में आग के शो'ले

एक शख़्स की बहन फ़ौत हो गई । जब उसे दफ़्न कर के लौटा तो याद आया कि रक़म की थैली **क़ब्र** में गिर गई है चुनान्चे क़ब्रिस्तान आ कर थैली निकालने के लिये उस ने अपनी बहन की **क़ब्र** खोद डाली ! **एक दिल हिला देने वाला मन्ज़र उस के सामने था, उस ने देखा कि बहन की क़ब्र में आग के शो'ले भड़क रहे हैं !** चुनान्चे

उस ने जूं तूं **क़ब्र** पर मिट्टी डाली और सदमे से चूर चूर रोता हुवा मां के पास आया और पूछा **:** प्यारी अम्मीजान ! मेरी बहन के **आ'माल** कैसे थे ? वोह बोली **:** बेटा क्यूं पूछते हो ? अ़र्ज़ की **:** "मैं ने अपनी बहन की **क़ब्र** में आग के शो'ले भड़क्ते देखे हैं ?" येह सुन कर मां भी रोने लगी और कहा, "अफ़्सोस ! तेरी बहन **नमाज़** में सुस्ती किया करती थी और **नमाज़** क़ज़ा कर के पढ़ा करती थी।"

(کتابُ الکبائر ص٢٦)

इस्लामी बहनो! जब क़ज़ा करने वालियों की ऐसी ऐसी सख़्त सज़ाएं हैं तो जो **बद नसीब** सिरे से **नमाज़** ही नहीं पढ़ती उस का क्या अन्जाम होगा !

अगर नमाज़ पढ़ना भूल जाए तो.....?

ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया **:** "जो **नमाज़** से सो जाए या **भूल** जाए तो जब याद आए पढ़ ले कि वोही उस का **वक़्त** है।" **(صَحِیح مُسلِم ص٣٤٦ حدیث٦٨٤)**

फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं, "**सोते** में या भूले से नमाज़ क़ज़ा हो गई तो उस की क़ज़ा पढ़नी **फ़र्ज़** है अलबत्ता क़ज़ा का गुनाह इस पर नहीं मगर बेदार होने और याद आने पर अगर वक़्ते मक्रूह न हो तो उसी वक़्त पढ़ ले **ताख़ीर** मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा **:** 4, स. 50)

मजबूरी में अदा का सवाब मिलेगा या नहीं ?

आंख न खुलने की सूरत में नमाज़े फ़ज्र "क़ज़ा" हो जाने की सूरत में "अदा" का सवाब मिलेगा या नहीं। इस ज़िम्न में **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-र-कत, इमामे इश्क़ो मह़ब्बत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 8 सफ़ह़ा 161 पर फ़रमाते हैं : रहा **अदा** का सवाब मिलना येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इख़्तियार में है। अगर इस (शख़्स) ने अपनी जानिब से कोई तक़्सीर (कोताही) न की, सुब्ह़ तक जागने के क़स्द (या'नी इरादे) से बैठा था और बे इख़्तियार आंख लग गई तो ज़रूर उस पर गुनाह नहीं। **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : नींद की सूरत में कोताही नहीं, कोताही उस शख़्स की है जो (जागते में) नमाज़ न पढ़े ह़त्ता कि दूसरी नमाज़ का वक़्त आ जाए। **(صَحِيح مُسلِم ص ٣٤٤ حديث ٦٨١)**

रात के आख़िरी ह़िस्से में सोना कैसा ?

नमाज़ का वक़्त दाख़िल हो जाने के बा'द सो गया फिर वक़्त निकल गया और **नमाज़ क़ज़ा** हो गई तो क़त्अ़न गुनहगार हुवा जब कि जागने पर सह़ीह़ **ए'तिमाद** या जगाने वाला मौजूद न हो बल्कि फ़ज्र में दुख़ूले वक़्त से पहले भी **सोने** की इजाज़त नहीं हो सकती जब कि

अक्सर ह़िस्सा रात का जागने में गुज़रा और ज़न्ने ग़ालिब है कि अब सो गया तो वक़्त में आंख न खुलेगी ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 50, मक-त-बतुल मदीना)

रात देर तक जागना

बा'ज़ इस्लामी बहनें रात गए तक घरों में जागती रहती हैं अव्वल तो वोह इशा की नमाज़ पढ़ कर जल्दी सो जाने का ज़ेह्न बनाएं कि इ़शा के बा'द बिला वज्ह जागने में कोई भलाई नहीं । अगर इत्तिफ़ाक़िया कभी देर हो जाए तब भी और अगर खु़द आंख न खुलती हो जब भी घर के किसी क़ाबिले ए'तिमाद मह़रम या जो जगा सके ऐसी इस्लामी बहन को दर-ख़्वास्त कर दे वोह नमाजे़ फ़ज्र के लिये जगा दे । या इलार्म वाली घड़ी हो जिस से आंख खुल जाती हो मगर एक अ़दद घड़ी पर भरोसा न किया जाए कि नींद में हाथ लग जाने या सेल (CELL) ख़त्म हो जाने से या यूंही ख़राब हो कर बन्द हो जाने का इम्कान रहता है, दो[2] या ह़स्बे ज़रूरत ज़ाइद घड़ियां हो तो बेहतर है । सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ सोते वक़्त ह़त्तल इम्कान तीन घड़ियां सिरहाने रखता है । तीन[3] अ़दद रखने में اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उस ह़दीसे पाक पर अ़मल की निय्यत है जिस में फ़रमाया गया है : اِنَّ اللّٰهَ وِتْرٌ يُّحِبُّ الْوِتْرَ या'नी बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ वित्र (तन्हा, त़ाक़) है और वित्र को पसन्द करता है । (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج۲ ص٤ حدیث ٤٥٣) फु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **"जब येह अन्देशा हो कि सुब्ह़ की नमाज़ जाती रहेगी तो बिला ज़रूरते शरइय्या उसे रात देर तक जागना मम्नूअ़ है ।"**

(رَدُّالْمُحتَار، ج۲،ص۳۳)

अदा, क़ज़ा और वाजिबुल इआ़दा की ता'रीफ़ात

जिस चीज़ का बन्दों को हुक्म है उसे वक़्त में बजा लाने को **अदा** कहते हैं। और वक़्त ख़त्म होने के बा'द अ़मल में लाना **क़ज़ा** है और अगर उस हुक्म के बजा लाने में कोई ख़राबी पैदा हो जाए तो उस ख़राबी को दूर करने के लिये वोह अ़मल दोबारा बजा लाना **इआ़दा** कहलाता है। वक़्त के अन्दर अन्दर अगर तह़रीमा बांध ली तो नमाज़ क़ज़ा न हुई बल्कि अदा है। (دُرِّمُختار ج ۲ ص ۱۲۷-۱۳۲) मगर नमाज़े फ़ज्र, **जुमुआ़** और ईदैन में वक़्त के अन्दर सलाम फिरना लाज़िमी है वरना नमाज़ न होगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 50) बिला उ़ज़्रे शर-ई **नमाज़** क़ज़ा कर देना सख़्त गुनाह है, इस पर फ़र्ज़ है कि उस की **क़ज़ा** पढ़े और सच्चे दिल से तौबा भी करे, तौबा या ह़ज्जे मक़्बूल से اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ताख़ीर का गुनाह मुआफ़ हो जाएगा। (دُرِّمُختار ج۲ص۱۲۶)

तौबा उसी वक़्त सह़ीह़ है जब कि क़ज़ा पढ़ ले उस को अदा किये बिग़ैर तौबा किये जाना तौबा नहीं कि जो नमाज़ उस के ज़िम्मे थी उस को न पढ़ना तो अब भी बाक़ी है और जब गुनाह से बाज़ न आई तो तौबा कहां हुई ? (رَدُّالْمُحتار ج۲ص۱۲۷) **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : गुनाह पर क़ाइम रह कर तौबा करने वाला अपने रब से **ठठ्ठा** (या'नी मज़ाक़) करता है।

(شُعَبُ الایمان ج۵ص۴۳۶ حدیث ۷۱۷۸)

तौबा के तीन3 रुक्न हैं

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा **सय्यिद मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "तौबा के तीन3 रुक्न हैं ﴾1﴿ ए'तिराफ़े जुर्म ﴾2﴿ नदामत ﴾3﴿ अ़ज़्मे तर्क (या'नी इस गुनाह को छोड़ने का पुख़्ता अ़ह्द)। अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी है तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम। म-सलन तारिके सलात (या'नी नमाज़ तर्क कर देने वाले) की तौबा के लिये नमाज़ों की क़ज़ा भी लाज़िम है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 12, रज़ा एकेडमी, बम्बई)

सोते को नमाज़ के लिये जगाना कब वाजिब है

कोई सो रहा है या नमाज़ पढ़ना भूल गया है तो जिसे मा'लूम है उस पर वाजिब है कि सोते को जगा दे और भूले हुए को याद दिला दे। (वरना गुनहगार होगा) (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 50) याद रहे ! जगाना या याद दिलाना उस वक़्त वाजिब होगा जब कि ज़न्ने ग़ालिब हो कि येह नमाज़ पढ़ेगा वरना वाजिब नहीं। मह़ारिम को बेशक ख़ुद ही जगा दे मगर ना मह़रमों म-सलन देवर व जेठ वग़ैरा को मह़ारिम के ज़रीए़ जगवाए।

जल्द से जल्द क़ज़ा कर लीजिये

जिस के ज़िम्मे **क़ज़ा नमाज़ें** हों उन का जल्द से जल्द पढ़ना वाजिब है मगर बाल बच्चों की परवरिश और अपनी ज़रूरिय्यात की फ़राहमी के सबब ताख़ीर जाइज़ है। लिहाज़ा फ़ुरसत का जो वक़्त मिले उस में क़ज़ा पढ़ती रहे यहां तक कि पूरी हो जाएं। (دُرِّمُختَار، ج٢، ص٦٤٦)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

छुप कर क़ज़ा कीजिये

क़ज़ा नमाज़ें छुप कर पढ़िये लोगों पर (या घर वालों बल्कि क़रीबी सहेलियों पर भी) इस का इज़्हार न कीजिये (म-सलन येह मत कहा कीजिये कि मेरी आज की फ़ज्र क़ज़ा हो गई या मैं क़ज़ाए उ़म्री कर रही हूं वग़ैरा) **कि गुनाह का इज़्हार भी मक्रूहे तह़रीमी व गुनाह है।** (رَدُّالْمُحتَار،ج٢،ص٦٥٠) लिहाज़ा अगर लोगों की मौजू-दगी में वित्र क़ज़ा करें तो तक्बीरे कुनूत के लिये हाथ न उठाएं।

जुमुअ़तुल वदाअ़ में क़ज़ाए उ़म्री !

र-मज़ानुल मुबारक के आख़िरी **जुमुआ** में बा'ज़ लोग बा जमाअ़त क़ज़ाए उ़म्री पढ़ते हैं और येह समझते हैं कि उ़म्र भर की क़ज़ाएं इसी एक नमाज़ से अदा हो गईं येह बात़िल मह़ज़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 57) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं **: जुमुअ़तुल वदाअ़** के ज़ोह्र व अ़स्र के दरमियान बारह12 रक्अ़त नफ़्ल दो2 दो2 रक्अ़त की निय्यत से पढ़े। और हर रकअ़त में **सू-रतुल फ़ातिह़ा** के बा'द एक बार आ-यतुल कुर्सी और तीन3 बार "قل هو اللّٰهُ احد" और एक बार **सू-रतुल फ़लक़** और **सू-रतुन्नास** पढ़े। इस का फ़ाएदा येह है कि जिस क़दर नमाज़ें इस ने **क़ज़ा** कर के पढ़ी होंगी उन के **क़ज़ा** करने का गुनाह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मुआ़फ़ हो जाएगा येह नहीं कि **क़ज़ा** नमाज़ें इस से मुआ़फ़ हो जाएंगी वोह तो पढ़ने से ही **अदा** होंगी। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 135)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلیٰ)

उ़म्र भर की क़ज़ा का ह़िसाब

जिस ने कभी नमाज़ें ही न पढ़ी हों और अब तौफ़ीक़ हुई और **क़ज़ाए उ़म्री** पढ़ना चाहता है वोह जब से बालिग़ हुवा या बालिग़ा हुई है उस वक़्त से नमाज़ों का ह़िसाब लगाए। अगर येह भी याद नहीं कि कब बालिग़ या बालिग़ा हुए हैं तो एह़तियात़ इसी में है कि हिजरी सिन के ह़िसाब से लड़की 9 बरस और लड़का 12 बरस की उ़म्र से ह़िसाब लगाए।

क़ज़ा करने में तरतीब

क़ज़ाए उ़म्री में यूं भी कर सकते हैं कि पहले तमाम फ़ज्रें अदा कर लें फिर तमाम जो़ह्र की नमाज़ें इसी त़रह़ अ़स्र, मग़रिब और इ़शा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क़ज़ाए उ़म्री का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

क़ज़ा हर रोज़ की **बीस[20] रक्अ़तें** होती हैं। "दो[2] फ़र्ज़ फ़ज्र के, चार[4] ज़ोह्र, चार[4] अ़स्र, तीन[3] मग़रिब, चार[4] इ़शा के और तीन[3] वित्र। निय्यत इस त़रह़ कीजिये, म-सलन "**सब से पहली फ़ज्र जो मुझ से क़ज़ा हुई उस को अदा करती हूं।**" हर नमाज़ में इसी त़रह़ निय्यत कीजिये। जिस पर ब कसरत क़ज़ा नमाज़ें हैं वोह आसानी के लिये अगर यूं भी अदा करे तो जाइज़ है कि हर रुकूअ़ और हर सज्दे में तीन[3] तीन[3] बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم, سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی की जगह सिर्फ़ एक एक बार कहे। मगर येह हमेशा और हर त़रह़ की नमाज़ में याद रखना

चाहिये कि जब रुकूअ़ में पूरी पहुंच जाए उस वक़्त "سُبْحٰنَ" का "सीन" शुरूअ़ करे और जब عظیم का "मीम" ख़त्म कर चुके उस वक़्त रुकूअ़ से सर उठाए। इसी त़रह़ सज्दे में भी करे। एक तख़्फ़ीफ़ तो येह हुई और दूसरी येह कि फ़र्ज़ों की तीसरी और चौथी रक्अ़त में **अल ह़म्द शरीफ़** की जगह फ़क़त़ "سُبْحٰنَ الله" तीन3 बार कह कर रुकूअ़ कर ले। मगर वित्र की तीनों रक्अ़तों में **अल ह़म्द शरीफ़** और सूरत दोनों ज़रूर पढ़ी जाएं। तीसरी तख़्फ़ीफ़ येह कि क़ा'दए अख़ीरा में **तशह्हुद** या'नी **अत्तह़िय्यात** के बा'द दोनों दुरूदों और दुआ़ की जगह सिर्फ़, "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ" कह कर सलाम फैर दे। चौथी तख़्फ़ीफ़ येह कि वित्र की तीसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत की जगह اَللهُ اَكْبَر कह कर फ़क़त़ एक बार या तीन3 बार "رَبِّ اغْفِرْلِىْ" कहे।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 157)

नमाज़े क़स्र की क़ज़ा

अगर ह़ालते सफ़र की **क़ज़ा** नमाज़ ह़ालते **इक़ामत** में पढ़ेंगी तो क़स्र ही पढ़ेंगी और ह़ालते इक़ामत की क़ज़ा नमाज़ सफ़र में क़ज़ा करेंगी तो पूरी पढ़ेंगी या'नी क़स्र नहीं करेंगी। (عالمگیری ج۱ص ۱۲۱)

ज़मानए इरतिदाद की नमाज़ें

जो औरत مَعَاذَالله عَزَّوَجَلَّ मुरतद्दा हो गई फिर इस्लाम लाई तो **ज़मानए इरतिदाद** की नमाज़ों की **क़ज़ा** नहीं और मुरतद्दा होने से पहले ज़मानए इस्लाम में जो नमाज़ें जाती रही थीं उन की **क़ज़ा** वाजिब

है। (رَدُّالْمُحتَار،ج۲،ص۶۴۷)

बच्चे की पैदाइश के वक़्त नमाज़

दाई (MIDWIFE) नमाज़ पढ़ेगी तो बच्चे के मर जाने का अन्देशा है, नमाज़ क़ज़ा करने के लिये येह उ़ज़्र है। (رَدُّالْمُحتَار،ج۲،ص۶۲۷)

मरीज़ा को नमाज़ कब मुआ़फ़ है ?

ऐसी मरीज़ा कि इशारे से भी नमाज़ नहीं पढ़ सकती अगर येह ह़ालत पूरे छ6 वक़्त तक रही तो इस ह़ालत में जो नमाज़ें फ़ौत हुई उन की क़ज़ा **वाजिब** नहीं। (عالمگیری ج۱،ص۱۲۱)

उ़म्र भर की नमाज़ें दोबारा पढ़ना

जिस की नमाज़ों में नुक़्सान व कराहत हो वोह तमाम उ़म्र की नमाज़ें फैरे तो अच्छी बात है और कोई ख़राबी न हो तो न चाहिये और करे तो फ़ज्र व अ़स्र के बा'द न पढ़े और तमाम रक्अ़तें भरी पढ़े और वित्र में कुनूत पढ़ कर तीसरी के बा'द क़ा'दा कर के, फिर एक और मिलाए कि चार 4 हो जाएं। (عالمگیری ج۱،ص۱۲۴)

क़ज़ा का लफ़्ज़ कहना भूल गई तो कोई ह़रज नहीं

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : हमारे उ़-लमा तशरीह़ फ़रमाते हैं : **क़ज़ा ब निय्यते अदा और अदा ब निय्यते क़ज़ा दोनों सह़ीह़ हैं।** (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 161)

नवाफ़िल की जगह क़ज़ाए उ़म्री पढ़िये

क़ज़ा नमाज़ें नवाफ़िल से अहम हैं या'नी जिस वक़्त नफ़्ल पढ़ती है उन्हें छोड़ कर उन के बदले क़ज़ाएं पढ़ें कि **बरिय्युज़्ज़िम्मा** हो जाए अलबत्ता तरावीह़ और बारह[12] रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा की न छोड़े । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 55, رَدُّالْمُحتار،ج۱،ص۶٤٦)

फ़ज्र व अ़स्र के बा'द नवाफ़िल नहीं पढ़ सकते

नमाज़े फ़ज्र (के पूरे वक़्त में या'नी सुब्ह़े सादिक़ से ले कर तुलूए आफ़्ताब तक जब कि) अ़स्र के बा'द वोह तमाम नवाफ़िल अदा करने मकरूहे (तह़रीमी) हैं जो क़स्दन हों अगर्चे **तहि़य्यतुल मस्जिद** हों, और हर वोह नमाज़ जो ग़ैर की वज्ह से लाज़िम हो । म-सलन नज़्र और त़वाफ़ के नवाफ़िल और हर वोह नमाज़ जिस को शुरूअ़ किया फिर उसे तोड़ डाला, अगर्चे वोह फ़ज्र और अ़स्र की सुन्नतें ही क्यूं न हों । (دُرِّمُختار،ج۲،ص٤٤_٤٥)

क़ज़ा के लिये कोई वक़्त **मुअ़य्यन** नहीं उ़म्र में जब पढ़ेगी **बरिय्युज़्ज़िमा** हो जाएगी । मगर तुलूअ़ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त नमाज़ नहीं पढ़ सकती कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 51, عالمگیری،ج۱،ص۵۲)

ज़ोहर की चार सुन्नतें रह जाएं तो क्या करे ?

अगर ज़ोहर के फ़र्ज़ पहले पढ़ लिये तो दो[2] रक्अ़त सुन्नतें बा'दिया अदा करने के बा'द चार रक्अ़त सुन्नते क़ब्लिया अदा कीजिये

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

चुनान्चे सरकारे आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं : **ज़ोह्र** की पहली चार[4] सुन्नतें जो फ़र्ज़ से पहले न पढ़ी हों तो बा'दे फ़र्ज़ बल्कि मज़्हबे अरजह़ (या'नी पसन्दीदा तरीन मज़्हब) पर बा'द (दो[2] रक्अ़त) सुन्नते बा'दिया के पढ़ें बशर्ते़ कि हुनूज़ (या'नी अभी) वक़्ते ज़ोह्र बाक़ी हो । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 8, स. 148 मुलख़्ख़सन) **अ़स्र** व **इशा** से पहले जो चार चार रक्अ़तें हैं वोह सुन्नते ग़ैर मुअक्कदा हैं उन की कज़ा नहीं ।

क्या मग़रिब का वक़्त थोड़ा सा होता है ?

मग़रिब की नमाज़ का वक़्त ग़ुरूबे आफ़्ताब ता इब्तिदाए वक़्ते इशा होता है । येह वक़्त मक़ामात और तारीख़ के ए'तिबार से घटता बढ़ता रहता है म-सलन बाबुल मदीना कराची में निज़ामुल अवक़ात के नक़्शे के मुताबिक़ मग़रिब का वक़्त कम अज़ कम एक घन्टा 18 मिनट होता है । **फ़ु-क़हाए किराम** رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं, रोज़े अब्र (या'नी जिस दिन बादल छाए हों उस) के सिवा मग़रिब में हमेशा ता'जील (या'नी जल्दी) मुस्तह़ब है और दो[2] रक्अ़त से ज़ाइद की ताख़ीर मक्रूहे तन्ज़ीही और बिग़ैर उ़ज़्र सफ़र व मरज़ वग़ैरा इतनी ताख़ीर की, कि सितारे गुथ गए तो मक्रूहे तह़रीमी । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 3, स. 21) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस (या'नी मग़रिब) का वक़्ते मुस्तह़ब जब तक है कि सितारे ख़ूब ज़ाहिर न हो जाएं, इतनी देर करनी कि (बड़े बड़े सितारों के इलावा) छोटे छोटे

सितारे भी चमक आएं मक्रूह है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 153)

तरावीह़ की क़ज़ा का क्या हुक्म है ?

जब तरावीह़ फ़ौत हो जाए तो उस की क़ज़ा नहीं, और अगर कोई क़ज़ा कर भी लेती है तो येह जुदागाना नफ़्ल हो जाएंगे, तरावीह़ से उन का तअ़ल्लुक़ न होगा। (تَنوِیرُ الْاَبْصَار،دُرِّمُختَار، ج ۲، ص۵۹۸)

नमाज़ का फ़िदया

जिन के रिश्तेदार फ़ौत हुए हों वोह

इस मज़्मून का ज़रूर मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं

मय्यित की उ़म्र मा'लूम कर के इस में से नव9 साल औ़रत के लिये और बारह12 साल मर्द के लिये ना बालिग़ी के निकाल दीजिये। बाक़ी जितने साल बचे इन में ह़िसाब लगाइये कि कितनी मुद्दत तक वोह (या'नी मर्हूमा या मर्हूम) बे नमाज़ी रहा या बे रोज़ा रहा, या कितनी नमाज़ें या रोज़े उस के ज़िम्मे **क़ज़ा** के बाक़ी हैं। ज़ियादा से ज़ियादा अन्दाज़ा लगा लीजिये। बल्कि चाहें तो ना बालिग़ी की उ़म्र के बा'द बक़िय्या तमाम उ़म्र का ह़िसाब लगा लीजिये। अब फ़ी नमाज़ एक एक स-द-क़ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिये। एक स-द-क़ए फ़ित्र की मिक़्दार दो2 किलो से 80 ग्राम कम गेहूं या उस का आटा या उस की रक़म है और एक दिन की छ6 नमाज़ें हैं पांच फ़र्ज़ और एक वित्र वाजिब। म-सलन दो2 किलो से 80 ग्राम कम गेहूं की रक़म 12 रुपै हो तो एक दिन की नमाज़ों के 72 रुपै हुए और 30 दिन के 2160 रुपै

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है । (ابن عساکر)

और बारह[12] माह के तक़्रीबन 25920 रुपै हुए । अब किसी मय्यित पर 50 साल की नमाज़ें बाक़ी हैं तो फ़िदया अदा करने के लिये 1296000 रुपै ख़ैरात करने होंगे । ज़ाहिर है हर कोई इतनी रक़म ख़ैरात करने की इस्तित़ाअ़त (त़ाक़त) नहीं रखती, इस के लिये उ़–लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने **शर–ई ह़िला** इर्शाद फ़रमाया है । म–सलन वोह 30 दिन की तमाम नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से 2160 रुपै किसी फ़क़ीर या फ़क़ीरनी की मिल्क कर दे, येह 30 दिन की नमाज़ों का **फ़िदया** अदा हो गया । अब वोह फ़क़ीर या फ़क़ीरनी येह रक़म उस देने वाली ही को हिबा कर दे (या'नी तोह़फ़े में दे दे) येह क़ब्ज़ा करने के बा'द फिर फ़क़ीर या फ़क़ीरनी को 30 दिन की नमाज़ों के फ़िदये की निय्यत से क़ब्ज़े में दे कर उस का मालिक बना दे । इस त़रह़ लौट फैर करते रहें यूं सारी नमाज़ों का **फ़िदया** अदा हो जाएगा । 30 दिन की रक़म के ज़रीए़ ही ह़ीला करना शर्त़ नहीं वोह तो समझाने के लिये मिसाल दी है । बिलफ़र्ज़ 50 साल के फ़िदयों की रक़म मौजूद हो तो एक ही बार लौट फैर करने में काम हो जाएगा । नीज़ फ़ित्रे की रक़म का ह़िसाब भी गेहूं के मौजूदा भाव से लगाना होगा । इसी त़रह़ रोज़ों का फ़िदया भी **फ़ी रोज़ा एक स–द–क़ए फ़ित्र है** नमाज़ों का **फ़िदया** अदा करने के बा'द रोज़ों का भी इसी त़रीक़े से फ़िदया अदा कर सकते हैं । ग़रीब व अमीर सभी **फ़िदये का ह़ीला** कर सकते हैं । अगर वु–रसा अपने मर्ह़ूमीन के लिये येह अ़मल करें तो येह मय्यित की ज़बर

दस्त इमदाद होगी, इस त़रह़ मरने वाला भी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद होगा और वु–रसा भी अज्रो सवाब के मुस्तह़िक़ होंगे। बा'ज़ इस्लामी बहनें मस्जिद वग़ैरा में एक कुरआने पाक का नुस्ख़ा दे कर अपने मन को मना लेती हैं कि हम ने मर्ह़ूम की तमाम नमाज़ों का फ़िदया अदा कर दिया येह उन की ग़लत फ़हमी है।

(तफ़्सील के लिये देखिये : फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 8, स. 167)

मर्ह़ूमा के फ़िदये का एक मस्अला

औ़रत की आ़दते ह़ैज़ अगर मा'लूम हो तो इस क़दर दिन और न मा'लूम हो तो हर महीने से तीन3 दिन, नव9 बरस की उ़म्र से मुस्तस्ना करें (या'नी नव बरस की उ़म्र के बा'द से ले कर वफ़ात तक हर महीने से तीन दिन ह़ैज़ के समझ कर निकाल दें बक़िय्या जितने दिन बनें उन के ह़िसाब से फ़िदया अदा कर दें।) मगर जितनी बार **ह़म्ल** रहा हो मुद्दते **ह़म्ल** के महीनों से अय्यामे ह़ैज़ का इस्तिस्ना न करें। (चूंकि इस मुद्दत में ह़ैज़ नहीं आता इस लिये ह़ैज़ के दिन कम न करें) औ़रत की आ़दत दर बारए निफ़ास अगर मा'लूम हो तो हर **ह़म्ल** के बा'द उतने दिन मुस्तस्ना करें (या'नी कम कर दें) और न मा'लूम हो तो कुछ नहीं कि निफ़ास के लिये जानिबे अक़ल (कम से कम) में शरअ़न कुछ तक़्दीर (मिक़्दार मुक़र्रर) नहीं। मुम्किन है कि एक ही मिनट आ कर फ़ौरन पाक हो जाए। (या'नी अगर निफ़ास की मुद्दत याद नहीं तो दिन कम न करे) (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 8, स. 154)

100 कोड़ों का ह़ीला

इस्लामी बहनो ! नमाज़ के फ़िदये का ह़ीला मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं लिखा। ह़ीलए शर-ई का जवाज़ क़ुरआनो ह़दीस और फ़िक़्हे ह़-नफ़ी की मो'तबर कुतुब में मौजूद है। चुनान्चे मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَنَّان "नूरुल इरफ़ान" सफ़ह़ा 728 पर फ़रमाते हैं : ह़ज़रते **सय्यिदुना अय्यूब** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की बीमारी के ज़माने में आप عَلَیْہِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ज़ौजए मोह़-त-रमा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا एक बार ख़िदमते सरापा अ-ज़मत में ताख़ीर से ह़ाज़िर हुईं तो आप عَلَیْہِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने क़सम खाई कि "मैं तन्दुरुस्त हो कर सो100 कोड़े मारूंगा "**सिह़ह़त याब** होने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें **100 तीलियों की झाड़ू** मारने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया। चुनान्चे क़ुरआने पाक में है :

وَخُذْ بِیَدِکَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ (پارہ ۲۳، ص: ٤٤)

तर-ज-म-ए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर इस से मार दे और क़सम न तोड़।

"आ़लमगीरी" में ह़ीलों का एक मुस्तक़िल बाब है जिस का नाम "किताबुल ह़ियल" है चुनान्चे "आ़लमगीरी किताबुल ह़ियल" में है : जो ह़ीला किसी का ह़क़ मारने या उस में शुबा पैदा करने या बात़िल से फ़रेब देने के लिये किया जाए वोह मक्रूह है और जो ह़ीला इस लिये किया जाए कि आदमी ह़राम से बच जाए या ह़लाल को ह़ासिल कर ले वोह अच्छा है। इस क़िस्म के ह़ीलों के जाइज़ होने की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान है :

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی)

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ (پارہ ۲۳،ص : ٤٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर इस से मार दे और क़सम न तोड़ ।

(فتاویٰ عالمگیری ،ج٦،ص ٣٩٠)

कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?

ह़ीले के जवाज़ पर एक और दलील मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُمَا से रिवायत है, एक बार ह़ज़रते सय्यि-दतुना सारह और ह़ज़रते सय्यि-दतुना हाजिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا में कुछ चप-क़लश हो गई । ह़ज़रते सय्यि-दतुना **सारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने क़सम खाई कि मुझे अगर क़ाबू मिला तो मैं **हाजिरा** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا का कोई उ़ज़्व काटूंगी । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की ख़िदमत में भेजा कि इन में सुल्ह़ करवा दें । ह़ज़रते सय्यि-दतुना **सारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا ने अ़र्ज़ की **:** ''مَاحِیلَةُ یَمِیْنِی'' या'नी मेरी क़सम का क्या ह़ीला होगा तो ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर वह़्य नाज़िल हुई कि (ह़ज़रते) **सारह** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) को हुक्म दो कि वोह (ह़ज़रते) **हाजिरा** (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا) के कान छेद दें । **उसी वक़्त से औ़रतों के कान छेदने का रवाज पड़ा ।** (غمزعُیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر،ج٣،ص٢٩٥)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है। (ترمذی)

गाय के गोश्त का तोह़फ़ा

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि दो जहां के सुल्त़ान, सरवरे ज़ीशान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में गाय का गोश्त ह़ाज़िर किया गया, किसी ने अ़र्ज़ की : येह गोश्त ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर स-दक़ा हुवा था। फ़रमाया هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ وَّلَنَا هَدِيَّةٌ. या'नी येह बरीरा के लिये स-दक़ा था हमारे लिये हदिय्या है।

(صَحِیح مُسلِم ص ۵۴۱حدیث۱۰۷۵)

ज़कात का शर-ई ह़ीला

इस ह़दीसे पाक से साफ़ ज़ाहिर है कि ह़ज़रते सय्यि-दतुना बरीरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जो कि स-दक़े की ह़क़दार थीं उन को बत़ौरे स-दक़ा मिला हुवा गाय का गोश्त अगर्चे उन के ह़क़ में स-दक़ा ही था मगर उन के क़ब्ज़ा कर लेने के बा'द जब बारगाहे रिसालत में पेश किया गया था तो उस का हुक्म बदल गया था और अब वोह स-दक़ा न रहा था। यूं ही कोई मुस्तह़िक़ शख़्स ज़कात अपने क़ब्ज़े में ले लेने के बा'द किसी भी आदमी को तोह़फ़तन दे सकता या मस्जिद वग़ैरा के लिये पेश कर सकता है कि मज़्कूरा मुस्तह़िक़ शख़्स का पेश करना अब ज़कात न रहा, हदिय्या या अ़त़िय्या हो गया। फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام **ज़कात का शर-ई ह़ीला** करने का त़रीक़ा यूं इर्शाद फ़रमाते हैं **: ज़कात** की रक़म मुर्दे की तज्हीज़ व तक्फ़ीन या मस्जिद की ता'मीर में सर्फ़ नहीं कर सकते कि तम्लीके फ़क़ीर (या'नी **फ़क़ीर को मालिक** करना) न पाई गई, अगर इन उमूर में ख़र्च करना चाहें तो

इस का त़रीक़ा येह है कि फ़क़ीर को (ज़कात की रक़म का) मालिक कर दें और वोह (ता'मीरे मस्जिद वग़ैरा में) सर्फ़ करे, इस त़रह़ सवाब दोनों को होगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 5, स. 25)

100 अफ़राद को बराबर बराबर सवाब मिले

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! कफ़न दफ़्न बल्कि ता'मीरे मस्जिद में भी ह़ीलए शर-ई के ज़रीए ज़कात इस्ति'माल की जा सकती है। क्यूं कि ज़कात तो फ़क़ीर के ह़क़ में थी, जब फ़क़ीर ने क़ब्ज़ा कर लिया तो अब वोह मालिक हो चुका, जो चाहे करे। **ह़ीलए शर-ई** की ब-र-कत से देने वाले की ज़कात भी अदा हो गई और फ़क़ीर भी मस्जिद में दे कर सवाब का ह़क़दार हो गया। ह़ीला करते वक़्त मुम्किन हो तो ज़ियादा अफ़राद के हाथ में रक़म फिरानी चाहिये ताकि सब को सवाब मिले म-सलन ह़ीले के लिये फ़क़ीरे शर-ई को 12 लाख रुपै ज़कात दी, क़ब्ज़े के बा'द वोह किसी भी इस्लामी भाई को तोह़फ़तन दे दे येह भी क़ब्ज़े में ले कर किसी और को मालिक बना दे, यूं सभी ब निय्यते सवाब एक दूसरे को मालिक बनाते रहें, आख़िर वाला मस्जिद या जिस काम के लिये ह़ीला किया था उस के लिये दे दे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सभी को बारह बारह लाख रुपै स-दक़ा करने का सवाब मिलेगा। चुनान्चे **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, पैकरे जूदो सख़ावत, सरापा रह़मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर सो100 हाथों में स-दक़ा गुज़रा तो सब को वैसा ही सवाब मिलेगा जैसा देने वाले के लिये है और उस के अज्र में कुछ कमी न होगी। (تاریخ بغداد ج۷ ص۱۳۵ رقم۳۵۶۸)

फ़क़ीर की ता'रीफ़

फ़क़ीर वोह है कि (الف) जिस के पास कुछ न कुछ हो मगर इतना न हो कि निसाब को पहुंच जाए (ب) या निसाब की क़दर तो हो मगर उस की ह़ाजते अस्लिय्या (या'नी ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी) में मुस्तग़रक़ (घिरा हुवा) हो । म-सलन रहने का मकान, ख़ानादारी का सामान, सुवारी के जानवर (या साइकिल, स्कूटर या कार) कारीगरों के औज़ार, पहनने के कपड़े, ख़िदमत के लिये लौंडी, ग़ुलाम, इल्मी शुग़्ल रखने वाले के लिये इस्लामी किताबें जो उस की ज़रूरत से ज़ाइद न हों (ج) इसी त़रह़ अगर मद्यून (मक़रूज़) है और दैन (क़र्ज़) निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे तो फ़क़ीर है अगर्चे उस के पास एक तो क्या कई निसाबें हों । (رَدُّالْمُحتَار ج۳ص۳۳۳وغیرہ)

मिस्कीन की ता'रीफ़

मिस्कीन वोह है जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोह़ताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल ह़लाल है । फ़क़ीर को (या'नी जिस के पास कम अज़ कम एक दिन का खाने के लिये और पहनने के लिये मौजूद है) **बिग़ैर ज़रूरत व मजबूरी सुवाल ह़राम है ।** (عالمگیری ج۱ص۱۸۷۔۱۸۸)

इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा जो भिकारी कमाने पर क़ादिर होने के बा वुजूद बिला ज़रूरत व मजबूरी बत़ौरे पेशा भीक मांगते हैं गुनहगार हैं और ऐसों के ह़ाल से बा ख़बर होने के बा वुजूद उन को देना जाइज़ नहीं ।

त़रह़ त़रह़ के फ़िदये और कफ़्फ़ारे

इस्लामी बहनो ! याद रहे ! नमाज़ व रोज़े के इ़लावा मय्यित की त़रफ़ से बहुत सारे फ़िदये और कफ़्फ़ारे हो सकते हैं म-सलन ﴾1﴿ ज़कात ﴾2﴿ फ़ित्रे (मर्द पर छोटे बच्चों वग़ैरा के फ़ित्रे भी जब कि अदा न किये हों) ﴾3﴿ क़ुरबानियां ﴾4﴿ क़समों के कफ़्फ़ारे ﴾5﴿ सज्दए तिलावत जितने वाजिब होने के बा वुजूद ज़िन्दगी में अदा नहीं किये ﴾6﴿ जितने नवाफ़िल फ़ासिद हुए और उन की क़ज़ा न की ﴾7﴿ जो जो मन्नतें मानीं और अदा न कीं ﴾8﴿ ज़मीन का उ़श्र या ख़िराज जो अदा करने से रह गया ﴾9﴿ फ़र्ज़ होने के बा वुजूद ह़ज अदा न किया ﴾10﴿ ह़ज व उ़म्रे के एह़राम के कफ़्फ़ारे म-सलन दम, या स-दक़े अगर वाजिब हुए थे और अदा न किये हों। इन के इ़लावा भी बे शुमार फ़िदये और कफ़्फ़ारे हो सकते हैं।

इन फ़िदयों की अदाएगी की सूरतें

रोज़ा, सज्दए तिलावत, फ़ासिद शुदा नवाफ़िल की क़ज़ा वग़ैरा के फ़िदये में हर एक के बदले एक एक स-द-क़ए फ़ित्र की रक़म अदा करे। और ज़कात, फ़ित्रा, क़ुरबानियां, उ़श्र व ख़िराज वग़ैरा में जितनी रक़म मर्हूम या मर्हूमा के ज़िम्मे निकलती है वोह भी अदा करे।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 540, 541)

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये फ़तावा र-ज़विय्या "मुख़र्रजा" जिल्द 10 में सफ़्ह़ा 523 ता 549 पर मब्नी रिसाला, "**तफ़ासीरुल अह़काम लि फ़िद-यतिस्सलाति वस्सियाम**" नीज़ मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان की तस्नीफ़ "**जाअल ह़क़**" से "**इस्क़ात़ का बयान**" पढ़ लीजिये)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नवाफ़िल का बयान

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन, शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन, सिराजुस्सालिकीन, मह़बूबे रब्बुल आ़-लमीन, जनाबे सादिक़ो अमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : जब जुमा'रात का दिन आता है **अल्लाह** तआ़ला फ़िरिश्तों को भेजता है जिन के पास चांदी के काग़ज़ और सोने के क़लम होते हैं वोह लिखते हैं, कौन यौमे जुमा'रात और शबे जुमुआ़ मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ता है। (کَنْزُ الْعُمَّال، ج۱،ص۲۵۰،حدیث۲۱۷٤)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह का प्यारा बनने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : "जो मेरे किसी **वली** से दुश्मनी करे, उसे मैं ने लड़ाई का ए'लान दे दिया और मेरा बन्दा जिन चीज़ों के ज़रीए़ मेरा कुर्ब चाहता है उन में मुझे सब से ज़ियादा फ़राइज़ मह़बूब हैं और **नवाफ़िल** के ज़रीए़ कुर्ब ह़ासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना मह़बूब बना लेता हूं अगर वोह मुझ से सुवाल करे तो उसे ज़रूर दूंगा और पनाह

मांगे तो उसे ज़रूर पनाह दूंगा।'' (صَحِیحُ البُخارِی ج٤،ص٢٤٨ حدیث٦٥٠٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलातुल्लैल

रात में बा'द नमाज़े इशा जो नवाफ़िल पढ़े जाएं उन को **सलातुल्लैल** कहते हैं और रात के नवाफ़िल दिन के नवाफ़िल से अफ़्ज़ल हैं कि सहीह़ मुस्लिम शरीफ़ में है : सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''फ़र्ज़ों के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।''

(صَحِیح مُسلِم،ص ٥٩١ حدیث١١٦٣)

तहज्जुद और रात में नमाज़ पढ़ने का सवाब

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 21 **सू-रतुस्सज्दह** आयत नम्बर 16 और 17 में इर्शाद फ़रमाता है :

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۷﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते और हमारे दिये हुए से कुछ ख़ैरात करते हैं तो किसी जी को नहीं मा'लूम जो आंख की ठन्डक इन के लिये छुपा रखी है सिला इन के कामों का।

सलातुल्लैल की एक क़िस्म **तहज्जुद** है कि इशा के बा'द रात में सो कर उठें और नवाफ़िल पढ़ें, सोने से क़ब्ल जो कुछ पढ़ें वोह **तहज्जुद** नहीं । कम से कम **तहज्जुद** की दो रक्अ़तें हैं और **हुज़ूरे अक़्दस** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से आठ तक साबित । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 26, 27) इस में क़िराअत का इख़्तियार है कि जो चाहें पढ़ें, बेहतर येह है कि जितना कुरआन याद है वोह तमाम पढ़ लीजिये वरना येह भी हो सकता है कि हर रक्अ़त में **सूरए फ़ातिह़ा** के बा'द तीन[3] तीन[3] बार **सू-रतुल इख़्लास** पढ़ लीजिये कि इस त़रह़ हर रक्अ़त में कुरआने करीम ख़त्म करने का सवाब मिलेगा, ऐसा करना बेहतर है, बहर ह़ाल **सूरए फ़ातिह़ा** के बा'द कोई सी भी सूरत पढ़ सकते हैं ।

(मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 7, स. 447)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तहज्जुद गुज़ार के लिये जन्नत के आलीशान बालाख़ाने

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم से रिवायत है कि सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं जिन का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से देखा जाता है । एक आ'राबी ने उठ कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये हैं ? आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : येह उस के लिये हैं जो नर्म गुफ़्त-गू करे, खाना

खिलाए, मु–तवातिर रोज़े रखे, और रात को उठ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये नमाज़ पढ़े जब लोग सोए हुए हों।

(سُنَنُ التِّرْمِذِی ج٤ ص٢٣٧ حديث٢٥٣٥، شُعَبُ الْاِيمان ج٣ ص٤٠٤، حديث٣٨٩٢)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआतुल मनाजीह़ जिल्द 2 सफ़ह़ा 260 पर इस हि़स्सए ह़दीस ''وَتَابَعَ الصِّيَامَ'' या'नी ''मु–तवातिर रोज़े रखे'' की शर्ह़ करते हुए फ़रमाते हैं : या'नी हमेशा रोज़े रखें सिवा उन पांच[5] दिनों के जिन में रोज़ा ह़राम है या'नी शव्वाल की यकुम और ज़िल ह़िज्जा की दसवीं[10] ता तेरहवीं[13], येह ह़दीस उन लोगों की दलील है जो हमेशा रोज़े रखते हैं बा'ज़ ने फ़रमाया कि इस के मा'ना हैं हर महीने में मुसल्सल तीन[3] रोज़े रखे।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''तहज्जुद गुज़ार'' के आठ हुरूफ़ की निस्बत से नेक बन्दों और बन्दियों की 8 हि़कायात

(1) सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रवाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर आते और उस पर हाथ फैर कर कहते : ''तू नर्म है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम! जन्नत में तुझ से ज़ियादा नर्म बिस्तर मिलेगा फिर सारी रात नमाज़ पढ़ते रहते।''

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (حاکم)

(اِحْیَاءُ الْعُلُوْم، ج۱ص۴۶۷) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

बिल-यक़ीं ऐसे मुसल्मान हैं बेह़द नादान
जो कि रंगीनिये दुन्या पे मरा करते हैं

(2) शहद की मख्खी की भिनभिनाहट की सी आवाज़ !

मश्हूर सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ जब लोगों के सो जाने के बा'द उठ कर क़ियाम (या'नी इ़बादत) फ़रमाया करते तो उन से सुब्ह़ तक शहद की मख्खी की सी भिनभिनाहट सुनाई देती। (اِحْیَاءُ الْعُلُوْم، ج۱ص۴۶۷) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मह़ब्बत में अपनी गुमा या इलाही
न पाऊं मैं अपना पता या इलाही

(3) मैं जन्नत कैसे मांगूं !

ह़ज़रते सय्यिदुना सिलह बिन अश्यम عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْاَکْرَم सारी रात नमाज़ पढ़ते । जब स-ह़री का वक़्त होता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करते : "इलाही ! عَزَّوَجَلَّ मेरे जैसा आदमी जन्नत नहीं मांग सकता लेकिन तू अपनी रह़मत से मुझे जहन्नम से पनाह अ़त़ा फ़रमा ।" (اِحْیَاءُ الْعُلُوْم، ج۱ص۴۶۷) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर**

रहमत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा

मै थर थर रहूं कांपता या इलाही

(4) तुम्हारा बाप ना-गहानी अ़ज़ाब से डरता है !

ह़ज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन ख़ुसैम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बेटी ने आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से अ़र्ज़ की **:** ''अब्बाजान ! क्या वज्ह है कि लोग सो जाते हैं और आप नहीं सोते ?'' तो इर्शाद फ़रमाया **: ''बेटी ! तुम्हारा बाप ना-गहानी अ़ज़ाब से डरता है जो अचानक रात को आ जाए ।''** **(شُعَبُ الْاِیمان ج۱ ص ۵۴۳،رقم ۹۸۴)** **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदके़ हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

गर तू नाराज़ हुवा मेरी हलाकत होगी

हाए ! मैं नारे जहन्नम में जलूंगा या रब !

(5) इ़बादत के लिये जागने का अ़जीब अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की पिंडलियां नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वज्ह से सूज गई थीं । आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ इस क़दर कसरत से इ़बादत किया करते थे कि बिलफ़र्ज़ आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है तो भी अपनी इ़बादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (या'नी उन के पास

इबादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी) । जब **सर्दी का मौसिम** आता तो आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मकान की छत पर **सोया** करते ताकि सर्दी आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को जगाए रखे और जब **गर्मियों का मौसिम** आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सकें (क्यूं कि A.C. कुजा उन दिनों बिजली का पंखा भी न होता था !) । सज्दे की ह़ालत में ही आप का इन्तिक़ाल हुवा । आप दुआ़ किया करते थे : "**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा ।" (اتحاف السادۃ المتقین بشرح احیاء علوم الدین ج ۱۳ ص ۲۴۷، ۲۴۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**
اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

अ़फ़्व कर और सदा के लिये राज़ी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूंगा या रब !

(6) रोते रोते नाबीना हो जाने वाली ख़ातून

ह़ज़रते सय्यिदुना ख़व्वास رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि हम रिह़ला आ़बिदा के पास गए। येह ब कसरत रोज़े रखती थीं और **इतना रोतीं कि इन की बीनाई जाती रही** और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़तीं कि खड़ी न हो सकती थीं, लिहाज़ा बैठ कर ही नमाज़ पढ़ती थीं। हम ने उन्हें सलाम किया फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़फ़्वो करम का तज़्किरा किया ता कि उन पर मुआ़–मला आसान हो जाए। उन्हों ने येह

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

बात सुन कर एक चीख़ मारी और फ़रमाया : ''मेरे नफ़्स का ह़ाल मुझे मा'लूम है और इस ने मेरे दिल को ज़ख़्मी कर दिया है और जिगर टुकड़े टुकड़े हो गया है, ख़ुदा की क़सम ! मैं चाहती हूं कि **काश ! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने मुझे पैदा ही न किया होता** और मैं कोई क़ाबिले ज़िक्र शै न होती ।'' येह फ़रमा कर दोबारा नमाज़ में मश्ग़ूल हो गई । (احیاء العلوم، ج۵ ص۱۵۲ ملخصاً) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आह सल्बे ईमां का ख़ौफ़ खाए जाता है

काश ! मेरी मां ने ही मुझ को न जना होता

(7) मौत की याद में भूकी रहने वाली ख़ातून

ह़ज़रते सय्यि-दतुना मुआ़ज़ह अ़दविय्या رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہَا रोज़ाना सुब्ह़ के वक़्त फ़रमातीं : ''(शायद) येह वोह दिन है जिस में मुझे मरना है ।'' फिर शाम तक कुछ न खातीं फिर जब रात होती तो कहतीं : ''(शायद) येह वोह रात है जिस में मुझे मरना है ।'' फिर सुब्ह़ तक नमाज़ पढ़ती रहतीं । (ایضاً ص۱۵۱) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मेरा दिल कांप उठता है कलेजा मुंह को आता है

करम या रब अंधेरा क़ब्र का जब याद आता है

(8) गिर्या व ज़ारी करने वाला ख़ानदान

ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन राशिद शैबानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی कहते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़म्आ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه **मुह़स्सब** में ठहरे हुए थे, आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ौजा और बेटियां भी हमराह थीं । आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रात को उठे और देर तक नमाज़ पढ़ते रहे । जब स-ह़री का वक़्त हुवा तो बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगे : "ऐ रात में पड़ाव करने वाले क़ाफ़िले के मुसाफ़िरो ! क्या सारी रात सोते रहोगे ? क्या उठ कर सफ़र नहीं करोगे ?" तो वोह लोग जल्दी से उठ गए और कहीं से रोने की आवाज़ आने लगी और कहीं से दुआ़ मांगने की, एक जानिब से कुरआने पाक पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी तो दूसरी जानिब कोई वुज़ू कर रहा होता । फिर जब सुब्ह़ हुई तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बुलन्द आवाज़ से पुकारा : "लोग सुब्ह़ के वक़्त चलने को अच्छा समझते हैं ।" (كتابُ التهجُّد وقيام اللّيل مَع موسُوعَه امام ابن اَبِی الدُّنیا ، ج ۱، ص ۲٦۱ رقم ۷۲)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला
इन्हें ख़ुल्द में बसाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े इश्राक़

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** ﴿1﴾ जो नमाज़े फ़ज्र बा जमाअ़त अदा कर के ज़िक्रुल्लाह करता रहे यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो गया फिर दो[2] रक्अ़तें पढ़ीं तो उसे पूरे ह़ज व उ़म्रा का सवाब मिलेगा। (سُنَنُ التِّرمِذِیّ،ج۲،ص۱۰۰ حدیث۵۸۶) ﴿2﴾ जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र से फ़ारिग़ होने के बा'द अपने मुसल्ले में (या'नी जहां नमाज़ पढ़ी वहीं) बैठा रहा ह़त्ता कि इश्राक़ के नफ़्ल पढ़ ले सिर्फ़ ख़ैर ही बोले तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाएंगे अगर्चे समुन्दर के झाग से भी ज़ियादा हों।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۲ص۴۱حدیث ۱۲۸۷)

ह़दीसे पाक के इस हिस्से "**अपने मुसल्ले में बैठा रहे**" की वज़ाह़त करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं **:** या'नी मस्जिद या घर में इस ह़ाल में रहे कि ज़िक्र या ग़ौरो फ़िक्र करने या इ़ल्मे दीन सीखने सिखाने या "बैतुल्लाह के त़वाफ़ में मश्ग़ूल रहे" नीज़ "**सिर्फ़ ख़ैर ही बोले**" के बारे में फ़रमाते हैं **:** या'नी फ़ज्र और इश्राक़ के दरमियान ख़ैर या'नी भलाई के सिवा कोई गुफ़्त-गू न करे क्यूं कि येह वोह बात है जिस पर सवाब मुरत्तब होता है। (مرقاۃج۳ ص۳۹۶ تحت الحدیث۱۳۱۷)

नमाज़े इश्राक़ का वक़्त : सूरज तुलूअ़ होने के कम अज़ कम बीस या पच्चीस मिनट बा'द से ले कर ज़ह़्वए कुब्रा तक नमाज़े इश्राक़ का वक़्त रहता है।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े चाश्त की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो **चाश्त** की दो[2] रक्अ़तें पाबन्दी से अदा करता रहे उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं अगर्चे समुन्दर की झाग के बराबर हों ।"

(سُنَن ابن ماجه، ج۲ ص۱۵۳،۱۵٤ حديث۱۳۸۲)

नमाज़े चाश्त का वक़्त : इस का वक़्त आफ़्ताब बुलन्द होने से ज़वाल या'नी निस्फ़ुन्नहारे शर-ई तक है और बेहतर येह है कि चौथाई दिन चढ़े पढ़े । (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 4, स. 25) नमाज़े इश्राक़ के फ़ौरन बा'द भी चाहें तो नमाज़े चाश्त पढ़ सकते हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलातुत्तस्बीह़

इस नमाज़ का बे इन्तिहा सवाब है, शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने चचाजान हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से फ़रमाया कि ऐ मेरे चचा ! अगर हो सके तो **सलातुत्तस्बीह़** हर रोज़ एक बार पढ़िये और अगर रोज़ाना न हो सके तो हर जुमुआ़ को एक बार पढ़ लीजिये और येह भी न हो सके तो हर महीने में एक बार और येह भी न हो सके तो साल में एक बार और येह भी न हो सके तो उ़म्र में एक बार ।

(سُنَنُ اَبِی دَاوٗد ج۲ ص٤٤،٤٥ حديث ۱۲۹۷)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

सलातुत्तस्बीह़ पढ़ने का त़रीक़ा

इस नमाज़ की तरकीब येह है कि तक्बीरे तह़रीमा के बा'द **सना** पढ़े फिर **पन्दरह**[15] **मर्तबा** येह तस्बीह़ पढ़े : ''سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر'' फिर اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم और بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ सूरए फ़ातिह़ा और कोई सूरत पढ़ कर **रुकूअ़** से **पहले दस**[10] बार येही तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ करे और रुकूअ़ में سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْعَظِیْم तीन[3] मर्तबा पढ़ कर फिर **दस**[10] **मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर रुकूअ़ से सर उठाए और سَمِعَ اللّٰہُ لِمَنْ حَمِدَہٗ और اَللّٰھُمَّ رَبَّنَا وَلَکَ الْحَمْدُ पढ़ कर फिर खड़े खड़े **दस**[10] **मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर **सज्दे** में जाए और तीन[3] मर्तबा سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی पढ़ कर फिर **दस**[10] **मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर **सज्दे** से सर उठाए और **दोनों सज्दों के दरमियान बैठ कर दस**[10] **मर्तबा** येही तस्बीह़ पढ़े फिर दूसरे सज्दे में जाए और سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی तीन[3] मर्तबा पढ़े फिर इस के बा'द **येही तस्बीह़ दस**[10] **मर्तबा** पढ़े इसी त़रह़ **चार**[4] **रक्अ़त** पढ़े और ख़याल रहे कि खड़े होने की ह़ालत में सूरए फ़ातिह़ा से पहले पन्दरह[15] मर्तबा और बाक़ी सब जगह येह तस्बीह़ दस[10] दस[10] बार पढ़े यूं हर रक्अ़त में 75 मर्तबा तस्बीह़ पढ़ी जाएगी और चार[4] रक्अ़तों में तस्बीह़ की गिनती **तीन सो**[300] **मर्तबा** होगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 32) तस्बीह़ उंग्लियों पर न गिने बल्कि हो सके तो दिल में शुमार करे वरना उंग्लियां दबा कर। (ऐज़न, स. 33)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

इस्तिख़ारा

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम को तमाम उमूर में इस्तिख़ारा ता'लीम फ़रमाते जैसे कुरआन की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे, फ़रमाते हैं : "जब कोई किसी अम्र का क़स्द करे तो दो[2] रक्अ़त नफ़्ल पढ़े फिर कहे :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡ اَسۡتَخِیۡرُکَ بِعِلۡمِکَ وَاَسۡتَقۡدِرُکَ بِقُدۡرَتِکَ
وَاَسۡأَلُکَ مِنۡ فَضۡلِکَ الۡعَظِیۡمِ فَاِنَّکَ تَقۡدِرُوَلَا اَقۡدِرُ
وَتَعۡلَمُ وَلَا اَعۡلَمُ وَاَنۡتَ عَلَّامُ الۡغُیُوۡبِ اَللّٰھُمَّ اِنۡ کُنۡتَ
تَعۡلَمُ اَنَّ ھٰذَا الۡاَمۡرَخَیۡرٌ لِّیۡ فِیۡ دِیۡنِیۡ وَمَعَاشِیۡ وَعَاقِبَۃِ
اَمۡرِیۡ اَوۡقَالَ عَاجِلِ اَمۡرِیۡ وَاٰجِلِہٖ فَاقۡدِرۡہُ لِیۡ وَیَسِّرۡہُ
لِیۡ ثُمَّ بَارِکۡ لِیۡ فِیۡہِ وَ اِنۡ کُنۡتَ تَعۡلَمُ اَنَّ ھٰذَا الۡاَمۡرَ شَرٌّ
لِّیۡ فِیۡ دِیۡنِیۡ وَمَعَاشِیۡ وَعَاقِبَۃِ اَمۡرِیۡ اَوۡ قَالَ عَاجِلِ
اَمۡرِیۡ وَاٰجِلِہٖ فَاصۡرِفۡہُ عَنِّیۡ وَاصۡرِفۡنِیۡ عَنۡہُ وَاقۡدِرۡ
لِیَ الۡخَیۡرَ حَیۡثُ کَانَ ثُمَّ رَضِّنِیۡ بِہٖ.

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे इ़ल्म के साथ तुझ से ख़ैर त़लब करता (करती) हूं और तेरी क़ुदरत के ज़रीए़ से त़-लबे क़ुदरत करता (करती) हूं और तुझ से तेरा फ़ज़्ले अ़ज़ीम मांगता (मांगती) हूं क्यूं कि तू क़ुदरत रखता है और मैं क़ुदरत नहीं रखता (रखती) तू सब कुछ जानता है और मैं नहीं जानता (जानती) और तू तमाम पोशीदा बातों को ख़ूब जानता है ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इ़ल्म में येह अम्र (जिस का मैं क़स्द व इरादा रखता (रखती) हूं) मेरे दीन व ईमान और मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार में दुन्या व आख़िरत में मेरे लिये बेहतर है तो इस को मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और मेरे लिये आसान कर दे फिर इस में मेरे वासित़े ब-र-कत कर दे। ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) अगर तेरे इ़ल्म में येह काम मेरे लिये बुरा है मेरे दीन व ईमान मेरी ज़िन्दगी और मेरे अन्जामे कार दुन्या व आख़िरत में तो इस को मुझ से और मुझ को इस से फैर दे और जहां कहीं बेहतरी हो मेरे लिये मुक़द्दर कर फिर उस से मुझे राज़ी कर दे।

(صَحِيحُ البُخارِىّ، ج١ ص٣٩٣ حديث١١٦٢، رَدُّالمُحتار، ج٢ ص٥٦٩)

اَوْ قَالَ عَاجِلِ اَمْرِىْ में "اَوْ" शके रावी है, फ़ु-क़हा फ़रमाते हैं कि जम्अ़ करे या'नी यूं कहे : وَعَاقِبَةِ اَمْرِىْ وَعَاجِلِ اَمْرِى وَاٰجِلِهٖ۔ (غُنيه، ص٤٣١)

मस्अला : ह़ज और जिहाद और दीगर नेक कामों में नफ़्से फे़'ल के लिये इस्तिख़ारा नहीं हो सकता, हां ता'यीने वक़्त (या'नी वक़्त मुक़र्रर करने) के लिये कर सकते हैं। **(ایضاً)**

नमाज़े इस्तिख़ारा में कौन सी सूरतें पढ़ें

मुस्तह़ब येह है कि इस दुआ़ के अव्वल आख़िर اَلْحَمْدُ لِلّٰه और दुरूद शरीफ़ पढ़े और पहली रक्अ़त में قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ और

दूसरी में قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़े और बा'ज़ मशाइख़ फ़रमाते हैं कि पहली में وَ رَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَ يَخْتَارُ ؕ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ وَ تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۸﴾ وَ رَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَ مَا يُعْلِنُوْنَ ﴿۶۹﴾ (پ۲۰، القصص:۶۸،۶۹) और दूसरी में وَ مَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّ لَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗۤ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَ مَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿۳۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۳۶) पढ़े । (رَدُّالْمُحتار، ج۲ ص ۵۷۰)

बेहतर येह है कि सात बार **इस्तिख़ारा** करे कि एक ह़दीस में है : "ऐ अनस ! जब तू किसी काम का क़स्द करे तो अपने रब عَزَّوَجَلَّ से उस में सात बार **इस्तिख़ारा** कर फिर नज़र कर तेरे दिल में क्या गुज़रा कि बेशक उसी में ख़ैर है ।" **(ایضاً)**

और बा'ज़ मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से मन्क़ूल है कि दुआए मज़्कूर पढ़ कर बा त़हारत क़िब्ला रू सो रहे अगर ख़्वाब में सफ़ेदी या सब्ज़ी देखे तो वोह काम बेहतर है और सियाही या सुर्ख़ी देखे तो बुरा है उस से बचे । **(ایضاً)**

इस्तिख़ारे का वक़्त उस वक़्त तक है कि एक त़रफ़ राय पूरी जम न चुकी हो । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 32)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलातुल अव्वाबीन की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे

अ़-ज़-मतो शराफ़त, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, मोह़सिने इन्सानियत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो मग़रिब के बा'द छ[6] रक्अ़तें इस त़रह़ अदा करे कि इन के दरमियान कोई बुरी बात न कहे तो येह छ[6] रक्अ़तें बारह[12] साल की इ़बादत के बराबर होंगी।" (سنن ابن ماجه، ج ٢ ص ٤٥ حديث١١٦٧)

नमाज़े अव्वाबीन का त़रीक़ा

मग़रिब की तीन[3] रक्अ़त फ़र्ज़ पढ़ने के बा'द छ[6] रक्अ़त एक ही निय्यत से पढ़िये, हर दो[2] रक्अ़त पर क़ा'दा कीजिये और इस में अत्तहि़य्यात, दुरूदे इब्राहीम और दुआ़ पढ़िये, पहली, तीसरी[3] और पांचवीं[5] रक्अ़त की इब्तिदा में सना, तअ़व्वुज़ व तस्मिया (या'नी اَعُوْذُ और بِسْمِ الله) भी पढ़िये। छटी[6] रक्अ़त के क़ा'दे के बा'द सलाम फैर दीजिये। पहली दो[2] रक्अ़तें सुन्नते मुअक्कदा हुईं और बाक़ी चार[4] नवाफ़िल। येह है अव्वाबीन (या'नी तौबा करने वालों) की नमाज़। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 24, मुलख़्ख़सन) चाहें तो दो[2] दो[2] रक्अ़त कर के भी पढ़ सकते हैं। बहारे शरीअ़त हि़स्सा 4 सफ़ह़ा 15 और 16 पर है : बा'दे मग़रिब **छ[6] रक्अ़तें** मुस्तह़ब हैं इन को सलातुल अव्वाबीन कहते हैं, ख़्वाह एक सलाम से सब पढ़े या दो[2] से या तीन[3] से और तीन[3] सलाम से या'नी हर दो[2] रक्अ़त पर सलाम फैरना अफ़्ज़ल है। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج٢، ص٥٤٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तहि़य्यतुल वुज़ू

वुज़ू के बा'द आ'ज़ा खु़श्क होने से पहले दो[2] रक्अ़त नमाज़ पढ़ना

मुस्तह़ब है। (دُرِّمُختار، ج۲، ص۵۶۳) ह़ज़रते सय्यिदुना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है, फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स वुज़ू करे और अच्छा वुज़ू करे और ज़ाहिरो बातिन के साथ मु-तवज्जेह हो कर दो[2] रक्अ़त पढ़े, उस के लिये **जन्नत वाजिब हो जाती है।"** (صَحِیح مُسلِم،ص۱۴۴ حدیث ۲۳۴) गुस्ल के बा'द भी दो[2] रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है। वुज़ू के बा'द फ़र्ज़ वग़ैरा पढ़े तो क़ाइम मक़ाम **तहिय्यतुल वुज़ू** के हो जाएंगे। (رَدُّالمُحتار، ج۲ص۵۶۳) मकरूह वक़्त में तहिय्यतुल वुज़ू और गुस्ल के बा'द वाली दो[2] रक्अ़तें नहीं पढ़ सकते।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलातुल असरार

दुआ़ओं की मक़्बूलिय्यत और ह़ाजतों के पूरा होने के लिये एक मुजर्रब (या'नी आज़मूदा) नमाज़ **सलातुल असरार** भी है जिस को इमाम अबुल ह़सन नूरुद्दीन अ़ली बिन जरीर लख़्मी शत़नौफ़ी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बहजतुल असरार में और ह़ज़रते मुल्ला अ़ली क़ारी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی और शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِی ने हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत करते हुए तह़रीर फ़रमाया है। इस की तरकीब येह है कि बा'द नमाज़े मग़रिब सुन्नतें पढ़ कर दो[2] रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े और बेहतर येह है कि **अल ह़म्द** के बा'द हर रक्अ़त में ग्यारह ग्यारह मर्तबा قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़े सलाम के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करे (म-सलन ह़म्दो सना की निय्यत से सू-रतुल

फ़ातिह़ा पढ़ ले) फिर नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर ग्यारह बार दुरूदो सलाम अ़र्ज़ करे और ग्यारह बार येह कहे : **يَا رَسُوْلَ اللهِ يَانَبِيَّ اللهِ اَغِثْنِىْ وَامْدُدْنِىْ فِىْ قَضَاءِ حَاجَتِىْ يَا قَاضِىَ الْحَاجَات** **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये, मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ तमाम ह़ाजतों के पूरा करने वाले। फिर इ़राक़ की जानिब ग्यारह क़दम चले और हर क़दम पर येह कहे : **يَاغَوْثَ الثَّقَلَيْنِ يَا كَرِيْمَ الطَّرَفَيْنِ اَغِثْنِىْ وَامْدُدْنِىْ فِىْ قَضَاءِ حَاجَتِىْ يَا قَاضِىَ الْحَاجَاتِ.** (**तरजमा :** ऐ जिन्नो इन्स के फ़रियाद-रस और ऐ दोनों त़रफ़ (या'नी मां बाप दोनों ही की जानिब) से बुज़ुर्ग ! मेरी फ़रियाद को पहुंचिये और मेरी मदद कीजिये मेरी ह़ाजत पूरी होने में, ऐ ह़ाजतों के पूरा करने वाले।) फिर हु़ज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला बना कर **अल्लाह** तआ़ला से अपनी ह़ाजत के लिये दुआ़ मांगे। (अ़-रबी दुआ़ओं के साथ तरजमा पढ़ना ज़रूरी नहीं) (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 35, بهجة الاسرار، ص١٩٧)

हु़स्ने निय्यत हो, ख़त़ा तो कभी करता ही नहीं
आज़माया है यगाना है दोगाना तेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सलातुल ह़ाजात

ह़ज़रते सय्यिदुना हु़ज़ैफ़ा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि "जब हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को कोई अम्रे अहम पेश आता तो नमाज़

पढ़ते।'' (سُنَنِ اَبُو دَاوٗد، حدیث۱۳۱۹ ج۲ص۵۲)

इस के लिये दो2 या चार4 रक्अ़त पढ़े। ह़दीसे पाक में है : ''पहली रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा और तीन3 बार आ–यतुल कुरसी पढ़े और बाक़ी तीन3 रक्अ़तों में **सूरए फ़ातिह़ा** और قُلْ هُوَ اللّٰهُ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ एक एक बार पढ़े, तो येह ऐसी हैं जैसे शबे क़द्र में चार4 रक्अ़तें पढ़ीं।'' (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 34) मशाइख़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि : हम ने येह नमाज़ पढ़ी और हमारी ह़ाजतें पूरी हुईं। (ऐज़न) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन औफ़ी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : जिस की कोई ह़ाजत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ हो या किसी बनी आदम (या'नी इन्सान) की त़रफ़ तो अच्छी त़रह़ वुज़ू करे फिर दो2 रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सना करे और नबी صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजे फिर येह पढ़े :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِیْمُ الْكَرِیْمُ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ اَسْاَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ
وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِیْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ
اِثْمٍ لَّا تَدَعْ لِیْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً
هِیَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَیْتَهَا یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

(سُنَنُ التِّرْمِذِیّ،حدیث۴۷۸ ج۲ص۲۱)

तरजमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो ह़लीम व करीम है, पाक है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मालिक है अ़र्शे अ़ज़ीम का, ह़म्द है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जो रब है तमाम जहां का, मैं तुझ से तेरी रह़मत के अस्बाब मांगता (मांगती) हूं और त़लब करता (करती) हूं तेरी बख़्शिश के ज़राएअ़ और हर नेकी से ग़नीमत और हर गुनाह से सलामती को, मेरे लिये कोई गुनाह बिग़ैर मग़्फ़िरत न छोड़ और हर ग़म को दूर कर दे और जो ह़ाजत तेरी रिज़ा के मुवाफ़िक़ है उसे पूरा कर दे ऐ सब मेह्रबानों से ज़ियादा मेह्रबान ।

नाबीना को आंखें मिल गईं

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन ह़ुनैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक नाबीना सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ कीजिये कि मुझे आ़फ़िय्यत दे । इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तू चाहे तो दुआ़ करूं और चाहे तो सब्र कर और येह तेरे लिये बेहतर है ।'' उन्हों ने अ़र्ज़ की : ह़ुज़ूर ! दुआ़ फ़रमा दीजिये । उन्हें ह़ुक्म फ़रमाया कि : वुज़ू करो और अच्छा वुज़ू करो और दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ कर येह दुआ़ पढ़ो :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ وَاَ تَوَسَّلُ وَاَ تَوَجَّہُ اِلَیْکَ بِنَبِیِّکَ
مُحَمَّدٍ نَّبِیِّ الرَّحْمَۃِ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ[1] اِنِّیْ تَوَجَّھْتُ بِکَ
اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ ھٰذِہٖ لِتُقْضٰی لِیْ اَللّٰھُمَّ فَشَفِّعْہُ فِیَّ

1. ह़दीसे पाक में इस जगह '' या मुह़म्मद'' (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) है । मगर मुजद्दिदे आ'ज़म, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने ''या मुह़म्मद'' (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कहने के बजाए, या रसूलल्लाह (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) कहने की ता'लीम दी है ।)

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं और तवस्सुल करता हूं और तेरी त़रफ़ मु–तवज्जेह होता हूं तेरे नबी **मुह़म्मद** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ से जो नबिय्ये रह़मत हैं। **या रसूलल्लाह !** (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) मैं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़रीए़ से अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ इस ह़ाजत के बारे में मु–तवज्जेह होता हूं, ताकि मेरी ह़ाजत पूरी हो। "इलाही ! इन की शफ़ाअ़त मेरे ह़क़ में क़बूल फ़रमा।"

सय्यिदुना उ़स्मान बिन हु़नैफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं **:** "ख़ुदा की क़सम ! हम उठने भी न पाए थे, बातें ही कर रहे थे कि वोह हमारे पास आए, गोया कभी अन्धे थे ही नहीं।" (سنن ابن ماجه، ج٢ ص١٥٦ حديث ١٣٨٥، سنن الترمذي، ج٥ حديث ٣٥٨٩ ص٣٣٦، المعجم الكبير، ج٩ ص٣٠ حديث ٨٣١١, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 4, स. 34)

इस्लामी बहनो ! शैत़ान जो येह वस्वसा डालता है कि सिर्फ़ "**या अल्लाह**" कहना चाहिये "**या रसूलल्लाह**" नहीं कहना चाहिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस ह़दीसे मुबारक ने शैत़ान के इस इन्तिहाई ख़त़रनाक वस्वसे को भी जड़ से उखाड़ दिया कि अगर "या रसूलल्लाह" कहना जाइज़ न होता तो ख़ुद हमारे प्यारे आक़ा मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इस की क्यूं ता'लीम देते ? बस झूम झूम कर **"या रसूलल्लाह" के ना'रे लगाते जाइये।**

या रसूलल्लाह के ना'रे से हम को प्यार है

जिस ने येह ना'रा लगाया उस का बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

गहन की नमाज़

हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अ़हदे करीम (या'नी मुबारक ज़माने) में एक मरतबा आफ़्ताब में गहन लगा, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ लाए और बहुत त़वील क़ियाम व रुकूअ़ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़ी कि मैं ने कभी ऐसा करते न देखा और येह फ़रमाया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी की मौत व ह़यात के सबब अपनी येह निशानियां ज़ाहिर नहीं फ़रमाता, बल्कि इन से अपने बन्दों को डराता है, लिहाज़ा जब इन में से कुछ देखो तो ज़िक्र व दुआ़ व इस्तिग़फ़ार की त़रफ़ घबरा कर उठो। (صَحِیحُ البُخارِیّ، ج۱ ص۳٦۳ حدیث ۱۰۵۹) **सूरज** गहन की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा और चांद गहन की नमाज़ मुस्तह़ब है। (دُرِّمُختار، ج۳ ص۸۰)

गहन की नमाज़ पढ़ने का त़रीक़ा

येह नमाज़ और नवाफ़िल की त़रह़ दो रक्अ़त पढ़ें या'नी हर रक्अ़त में एक रुकूअ़ और दो सज्दे करें न इस में अज़ान है, न इक़ामत, न बुलन्द आवाज़ से क़िराअत, और नमाज़ के बा'द दुआ़ करें यहां तक कि आफ़्ताब खुल जाए और दो रक्अ़त से ज़ियादा भी पढ़ सकते हैं

ख़्वाह दो, दो रक्अ़त पर सलाम फैरें या चार पर ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 4, स. 136)

ऐसे वक़्त गहन लगा कि उस वक़्त नमाज़ पढ़ना मम्नूअ़ है तो नमाज़ न पढ़ें, बल्कि दुआ़ में मश्ग़ूल रहें और इसी ह़ालत में डूब जाए तो दुआ़ ख़त्म कर दें और मग़रिब की नमाज़ पढ़ें ।

(الجوهرة النيرة،ص١٢٤، رَدُّالْمُحتَار، ج٣ ص٧٨)

तेज़ आंधी आए या दिन में सख़्त तारीकी छा जाए या रात में ख़ौफ़नाक रोशनी हो या लगातार कसरत से मींह बरसे या ब कसरत ओले पड़ें या आस्मान सुर्ख़ हो जाए या बिज्लियां गिरें या ब कसरत तारे टूटें या ताऊ़न वग़ैरा वबा फैले या ज़ल्ज़ले आएं या दुश्मन का ख़ौफ़ हो या और कोई दहशत नाक अम्र पाया जाए इन सब के लिये दो रक्अ़त नमाज़ मुस्तह़ब है । (عالمگیری،ج١ ص١٥٣، دُرِّمُختار،ج٣ص٨٠،وغیرهما)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नमाज़े तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक, सय्याहे़ अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''जब कोई बन्दा गुनाह करे फिर वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े फिर इस्तिग़फ़ार करे, अल्लाह तआ़ला उस के गुनाह बख़्श देगा ।'' फिर येह आयत पढ़ी :

وَالَّذِیْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪۟ وَلَمْ یُصِرُّوْا عَلٰی مَا فَعَلُوْا وَهُمْ یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

(پ ٤، اٰلِ عمران: ١٣٥)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) को याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) के ? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़ न जाएं।

(سُنَنُ التِّرمِذِی، ج١ص ٤١٥ حدیث ٤٠٦)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इशा के बा'द दो2 नफ़्ल का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, उन्हों ने फ़रमाया : जो इशा के बा'द दो2 रक्अ़त पढ़ेगा और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बा'द पन्दरह15 बार قُلْ هُوَ اللّٰهُ पढ़ेगा **अल्लाह** तआ़ला उस के लिये जन्नत में दो2 ऐसे मह़ल ता'मीर करेगा जिसे अहले जन्नत देखेंगे। (تفسیر درمنثور ج٨ص٢٨١)

सुन्नते अ़स्र के बारे में दो2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "जो अ़स्र से पहले चार4 रक्अ़तें पढ़े, **अल्लाह** तआ़ला उस के बदन को आग पर ह़राम फ़रमा देगा।" (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطَّبَرانی، ج٢٣ ص ٢٨١ حدیث ٦١١)

﴾2﴿ "जो अ़स्र से पहले चार4 रक्अ़तें पढ़े, उसे आग न छूएगी।"

(اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط لِلطَّبَرانی، ج ٢ ص ٧٧ حدیث ٢٥٨٠)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने

ज़ोहर के बा'द चार[4] रक्अ़त पढ़ना मुस्तह़ब है कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार पर मुह़ा–फ़ज़त की **अल्लाह** तआ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा। (سُنَنُ النَّسائی ص ۳۱۰ حدیث ۱۸۱۳) अ़ल्लामा सय्यिद त़ह़त़ावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی फ़रमाते हैं : सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (हुक़ूक़ुल इ़बाद या'नी बन्दों की ह़क़ त–लफ़ियों के) जो मुत़ा–लबात हैं **अल्लाह** तआ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मत़लब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो। (حاشیة الطحطاوی علی الدر ج ۱ ص ۲۸۴) और **अ़ल्लामा शामी** قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی फ़रमाते हैं : उस के लिये बिशारत येह है कि सआ़दत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा। (رَدُّالْمُحتَار ج ۲ ص ۵۴۷)

इस्लामी बहनो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जहां ज़ोहर की दस रक्अ़त नमाज़ पढ़ लेते हैं वहां आख़िर में मज़ीद दो रक्अ़त नफ़्ल पढ़ कर बारहवीं शरीफ़ की निस्बत से 12 रक्अ़त करने में देर ही कितनी लगती है ! इस्तिक़ामत के साथ दो नफ़्ल पढ़ने की निय्यत फ़रमा लीजिये।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

(ह़-नफ़ी)

इस्तिन्जा का त़रीक़ा

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, ह़बीबे परवर्द गार, शफ़ीए रोजे़ शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे नूरबार है : "तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना बरोजे़ क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।" (اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطِىّ ص ۲۸۰ حديث ۴۵۸۰)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़ हो गई

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दो क़ब्रों के पास से गुज़रे (तो ग़ैब की ख़बर देते हुए) फ़रमाया : येह दोनों क़ब्र वाले अ़ज़ाब दिये जा रहे हैं और किसी बड़ी चीज़ में (जिस से बचना दुश्वार हो) अ़ज़ाब नहीं दिये जा रहे बल्कि एक तो **पेशाब के छींटों** से नहीं बचता था और दूसरा **चुग़ल ख़ोरी** किया करता था। फिर आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने खजूर की ताज़ा टहनी मंगवाई और उसे आधों आध चीरा और हर एक की क़ब्र पर एक एक ह़िस्सा

गाड़ दिया और फ़रमाया **:** जब तक येह ख़ुश्क न हों तब तक इन दोनों के **अ़ज़ाब में तख़्फ़ीफ़** होगी।

(سُنَنُ النَّسائی ص١٣ حدیث ٣١صَحِیحُ البُخارِیّ ج١ص٩٥حدیث٢١٦)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

इस्तिन्जा का त़रीक़ा

﴾1﴿ **इस्तिन्जा** ख़ाने में जिन्नात और शयात़ीन रहते हैं अगर जाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ ली जाए तो इस की ब-र-कत से वोह सित्र देख नहीं सकते। ह़दीसे पाक में है **:** जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब पाख़ाने को जाए तो **बिस्मिल्लाह** कह ले।[1] या'नी जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात उस को देख न सकेंगे। (मिरआत, जि. 1, स. 268)

﴾2﴿ **इस्तिन्जा** ख़ाने में दाख़िल होने से पहले **बिस्मिल्लाह** पढ़ लीजिये बल्कि बेहतर है कि येह दुआ़ पढ़ लीजिये। (अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़)

بِسْمِ اللّٰہِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ ۔

या'नी **अल्लाह** के नाम से शुरूअ़, **या अल्लाह !** मैं नापाक जिन्नों (नर व मादा) से तेरी पनाह मांगता (मांगती) हूं।[2]

(1)(سُنَنُ التِّرمِذِیّ ج٢ ص١١٣ حدیث ٦٠٦) (2) (کِتابُ الدُّعاءِ لِلطَّبَرانِیّ، حدیث٣٥٧،ص١٣٢)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ा **अल्लाह** उस पर दस रह़मतें भेजता और उस के नामए आ'माल में दस नेकियां लिखता है । (ترمذی)

﴾3﴿ फिर पहले **उल्टा क़दम** इस्तिन्जा ख़ाने में रख कर दाख़िल हों ﴾4﴿ सर पर दुपट्टा वग़ैरा अच्छी त़रह़ लपेट लीजिये ताकि उस का कनारा वग़ैरा नजासत में गिर कर नापाक न हो जाए ﴾5﴿ **नंगे सर** इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होना मम्नूअ़ है ﴾6﴿ जब पेशाब करने या क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठें तो मुंह और पीठ दोनों में से कोई भी क़िब्ले की त़रफ़ न हो अगर भूल कर क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गई तो याद आते ही फ़ौरन क़िब्ले की त़रफ़ से इस त़रह़ रुख़ बदल दे कि कम अज़ कम 45 डिग्री से बाहर हो जाए इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिये मग़्फ़िरत व बख़्शिश फ़रमा दी जाए ﴾7﴿ अक्सर इस्लामी बहनें बच्चे को पेशाब या पाख़ाने के लिये जब बिठाती हैं तो क़िब्ले की सम्त का ख़याल नहीं रखतीं, लिहाज़ा उन को चाहिये कि बच्चे को इस त़रह़ बिठाए कि उस का मुंह या पीठ क़िब्ले को न हो । अगर किसी ने ऐसा किया तो वोह गुनहगार होगी ﴾8﴿ जब तक क़ज़ाए ह़ाजत के लिये बैठने के क़रीब न हो कपड़ा बदन से न हटाए और न ही ह़ाजत से ज़ियादा बदन खोले ﴾9﴿ फिर दोनों पाउं ज़रा कुशादा कर के बाएं (या'नी उल्टे) पाउं पर ज़ोर दे कर बैठे कि इस त़रह़ बड़ी आंत का मुंह खुलता है और इजाबत आसानी से होती है ﴾10﴿ किसी दीनी मस्अले पर ग़ौर न करे कि मह़रूमी का बाइ़स है ﴾11﴿ उस वक़्त छींक ﴾12﴿ सलाम या ﴾13﴿ अज़ान का जवाब ज़बान से न दे ﴾14﴿ अगर ख़ुद छींके तो ज़बान से اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहे, दिल में कह ले ﴾15﴿ बातचीत न करे ﴾16﴿ अपनी शर्मगाह की त़रफ़ न देखे ﴾17﴿ उस नजासत को न देखे जो बदन से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

निकली है ﴾18﴿ ख़्वाह म ख़्वाह देर तक इस्तिन्जा ख़ाने में न बैठे कि बवासीर होने का अन्देशा है ﴾19 ता 25﴿ पेशाब में न थूके, न नाक साफ़ करे, न बिला ज़रूरत खन्कारे, न बार बार इधर उधर देखे, न बेकार बदन छूए, न आस्मान की त़रफ़ निगाह करे, बल्कि शर्म के साथ सर झुकाए रहे। ﴾26﴿ क़ज़ाए ह़ाजत से फ़ारिग़ होने के बा'द पहले पेशाब का मक़ाम धोए फिर पाख़ाने का मक़ाम ﴾27﴿ औ़रत के लिये पानी से इस्तिन्जा करने का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि ज़रा कुशादा हो कर बैठे और सीधे हाथ से आहिस्ता आहिस्ता पानी डाले और उल्टे हाथ की हथेली से नजासत के मक़ाम को धोए, लोटा ऊंचा रखे कि छींटें न पड़ें सीधे हाथ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है और धोने में मुबा-लग़ा करे या'नी सांस का दबाव नीचे की जानिब डाले यहां तक कि अच्छी त़रह़ नजासत का मक़ाम धुल जाए या'नी इस त़रह़ कि चिक्नाई का असर बाक़ी न रहे अगर औ़रत रोज़ादार हो तो फिर मुबा-लग़ा न करे ﴾28﴿ त़हारत ह़ासिल होने के बा'द हाथ भी पाक हो गए लेकिन बा'द में साबुन वग़ैरा से भी धो ले। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 131,132, ردالمحتار ج ۱ ص۶۱۵ وغیرہا) ﴾29﴿ जब इस्तिन्जा ख़ाने से निकले तो पहले सीधा क़दम बाहर निकाले और बाहर निकलने के बा'द (अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ) येह दुआ़ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ

(سُنَن ابن ماجه ج۱ ص۱۹۳ حدیث۳۰۱)

या'नी अल्लाह तआ़ला का शुक्र है जिस ने मुझ से तक्लीफ़ देह चीज़ को दूर किया और मुझे आ़फ़िय्यत (राह़त) बख़्शी।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

बेहतर येह है कि साथ में येह दुआ़ भी मिला ले इस त़रह़ दो ह़दीसों पर अ़मल हो जाएगा : **غُفْرَانَكَ** **तरजमा :** मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़्फ़िरत का सुवाल करता (करती) हूं। (سُنَنُ التِّرْمِذِیّ، ج۱ص۸۷حدیث۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

आबे ज़मज़म से इस्तिन्जा करना कैसा ?

﴾1﴿ ज़मज़म शरीफ़ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है और ढेला न लिया हो तो ना जाइज़। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 135) ﴾2﴿ वुज़ू के बक़िय्या पानी से त़हारत करना ख़िलाफ़े औला है। (ऐज़न) ﴾3﴿ त़हारत के बचे हुए पानी से वुज़ू कर सकते हैं, बा'ज़ लोग जो उस को फेंक देते हैं येह न चाहिये इसराफ़ में दाख़िल है। (ऐज़न)

इस्तिन्जा ख़ाना का रुख़ दुरुस्त रखिये

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता आप के घर के इस्तिन्जा ख़ाने का रुख़ ग़लत़ है या'नी बैठते वक़्त क़िब्ले की त़रफ़ मुंह या पीठ होती है तो इस को दुरुस्त करने की फ़ौरन तरकीब कीजिये। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि मा'मूली सा तिरछा करना काफ़ी नहीं। W.C. इस त़रह़ हो कि बैठते वक़्त मुंह या पीठ क़िब्ले से 45 डिग्री के बाहर रहे। आसानी इसी में है कि क़िब्ले से 90 डिग्री पर रुख़ रखिये। या'नी नमाज़ के बा'द दोनों बार सलाम फ़ैरने में जिस त़रफ़ मुंह करते हैं उन दोनों सम्तों में से किसी एक जानिब W.C. का रुख़ रखिये।

इस्तिन्जा के बा'द क़दम धो लीजिये

पानी से इस्तिन्जा करते वक़्त उ़मूमन पाउं के टख़्नों की त़रफ़ छींटें आ जाते हैं लिहाज़ा एह़तियात़ इसी में है कि बा'दे फ़रागत़ क़दमों के वोह ह़िस्से धो कर पाक कर लिये जाएं मगर येह ख़याल रहे कि धोने के दौरान अपने कपड़ों या दीगर चीज़ों पर छींटे न पड़ें।

बिल में पेशाब करना

रह़मत वाले आक़ा, दो जहां के दाता, शाफ़ेए रोज़े जज़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा, मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़्क़त निशान है : तुम में से कोई शख़्स सूराख़ में पेशाब न करे।

(سُنَنُ النَّسائی ص۱٤ حدیث ۳٤)

जिन्न ने शहीद कर दिया

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **जुह़्र** से मुराद या ज़मीन का सूराख़ है या दीवार की फटन (या'नी दराड़), चूंकि अक्सर सूराख़ों में ज़हरीले जानवर (या) च्यूंटियां वग़ैरा कमज़ोर जानवर या जिन्नात रहते हैं, च्यूंटियां पेशाब या पानी से तक्लीफ़ पाएंगी या सांप व जिन्न निकल कर हमें तक्लीफ़ देंगे, इस लिये वहां पेशाब करना मन्अ़ फ़रमाया गया। चुनान्चे (ह़ज़रते सय्यिदुना) सा'द इब्ने उ़बादा अन्सारी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की वफ़ात इसी से हुई कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

सूराख़ में पेशाब किया, जिन्न ने निकल कर आप को शहीद कर दिया। लोगों ने उस सूराख़ से येह आवाज़ सुनी :

نَحْنُ قَتَلْنَا سَيِّدَ الْخَزْرَجِ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ وَ رَمَيْنَاهُ بِسَهْمٍ فَلَمْ نُخْطِ فُؤَادَه۔ तरजमा : या'नी हम ने क़बीलए ख़ज़रज के सरदार सा'द बिन उ़बादा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को शहीद कर दिया और हम ने (ऐसा) तीर मारा जो उन के दिल से आर पार हो गया। (मिरआत, जि. अव्वल, स. 267, مِرقاۃ ج۲ص۷۲ و اشعۃ اللمعات ج۱ص۲۲۰)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़म्माम में पेशाब करना

सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "कोई ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब न करे, फिर उस में नहाए या वुज़ू करे कि अक्सर वस्वसे इस से होते हैं।" (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد، ج۱ص٤٤ حدیث ۲۷) **मुफ़स्सिरे** शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : अगर ग़ुस्ल ख़ाने की ज़मीन पुख़्ता हो, और उस में पानी ख़ारिज होने की नाली भी हो तो वहां पेशाब करने में ह़रज नहीं अगर्चे बेहतर है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची हो, और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन नजिस हो जाएगी, और ग़ुस्ल या वुज़ू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा। यहां दूसरी सूरत ही मुराद है इस लिये ताकीदी मुमा–न–अ़त फ़रमाई गई, या'नी

इस से वस्वसों और वह्म की बीमारी पैदा होती है जैसा कि तजरिबा है या गन्दी छींटें पड़ने का वस्वसा रहेगा। (मिरआत, जि. 1, स. 266)

इस्तिन्जा के ढेलों के अह़काम

﴾1﴿ आगे पीछे से जब नजासत निकले तो ढेलों से इस्तिन्जा करना सुन्नत है, और अगर सिर्फ़ पानी ही से त़हारत कर ली तो भी जाइज़ है, मगर मुस्तह़ब येह है कि ढेले लेने के बा'द पानी से त़हारत करे। **फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा** जिल्द 4 सफ़्ह़ा 598 पर है : सुवाल : औ़रत बा'दे पेशाब कुलूख़ (या'नी ढेला) ले या सिर्फ़ पानी से इस्तिन्जा करे ? जवाब : दोनों का जम्अ़ करना अफ़्ज़ल है और इस के ह़क़ में कुलूख़ (या'नी ढेले) से कपड़ा बेहतर है ﴾2﴿ आगे और पीछे से पेशाब, पाख़ाना के सिवा कोई और नजासत, म-सलन ख़ून, पीप, वग़ैरा निकले, या उस जग्हे ख़ारिज से नजासत लग जाए तो भी ढेले से साफ़ कर लेने से त़हारत हो जाएगी, जब कि उस मौज़अ़ (या'नी जगह) से बाहर न हो मगर धो डालना मुस्तह़ब है ﴾3﴿ ढेलों की कोई ता'दाद मुअ़य्यन (या'नी मुक़र्ररा ता'दाद) सुन्नत नहीं, बल्कि जितने से सफ़ाई हो जाए, तो अगर एक से सफ़ाई हो गई सुन्नत अदा हो गई और अगर तीन ढेले लिये और सफ़ाई न हुई सुन्नत अदा न हुई, **अलबत्ता मुस्तह़ब येह है कि त़ाक़** (म-सलन एक, तीन, पांच) हों और कम से कम तीन हों तो अगर एक या दो से सफ़ाई हो गई तो तीन की गिनती पूरी करे, और अगर चार से सफ़ाई हो तो एक और ले, कि त़ाक़ हो

जाएं। ﴾4﴿ ढेलों से त़हारत उस वक़्त होगी कि नजासत से मख़्रज (या'नी ख़ारिज होने की जगह) के आस पास की जगह एक दिरहम[1] से ज़ियादा आलूदा न हो और अगर दिरहम से ज़ियादा सन जाए तो धोना फ़र्ज़ है, मगर ढेले लेना अब भी सुन्नत रहेगा ﴾5﴿ कंकर, पथ्थर, फटा हुवा कपड़ा, (फटा हुवा कपड़ा या दरज़ी की बे क़ीमत कतरन बेहतर येह है कि सूती (COTTON) हो ताकि जल्द जज़्ब कर ले) येह सब ढेले के हुक्म में हैं, इन से भी साफ़ कर लेना बिला कराहत जाइज़ है ﴾6﴿ हड्डी और खाने और गोबर और पक्की ईंट और ठेकरी और शीशा और कोएले और जानवर के चारे से और ऐसी चीज़ से जिस की कुछ क़ीमत हो, अगर्चे एकआध पैसा ही सही, इन चीज़ों से इस्तिन्जा करना मक्रूह है। ﴾7﴿ कागज़ से इस्तिन्जा मन्अ़ है, अगर्चे उस पर कुछ लिखा न हो, या अबू जह्ल ऐसे काफ़िर का नाम लिखा हो ﴾8﴿ दाह्ने (या'नी सीधे) हाथ से इस्तिन्जा करना मक्रूह है, अगर किसी का बायां हाथ बेकार हो गया, तो उसे दहने (सीधे) हाथ से जाइज़ है ﴾9﴿ जिस ढेले से एक बार इस्तिन्जा कर लिया उसे दोबारा काम में लाना मक्रूह है, मगर दूसरी करवट उस की साफ़ हो तो उस से कर सकते हैं। ﴾10﴿ औ़रत के लिये त़रीक़ा येह है कि पहला ढेला आगे से पीछे को ले जाए, और दूसरा पीछे से आगे की त़रफ़, और तीसरा आगे से पीछे को ﴾11﴿ पाक ढेले दाह्नी (सीधी) जानिब रखना और बा'द काम में लाने के, बाईं

---

1. एक दिरहम की मिक्दार "कपड़े पाक करने का त़रीक़ा" में मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاکم)

(उल्टे हाथ की) त़रफ़ डाल देना, इस त़रह़ पर कि जिस रुख़ में नजासत लगी हो नीचे हो, मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2 स. 132,134, عالمگیری ج۱ص ۴۸۔۵۰) ﴾12﴿ टॉयलेट पेपर के इस्ति'माल की उ़–लमा ने इजाज़त दी है क्यूं कि येह इसी मक़्सद के लिये बनाया गया है और लिखने में काम नहीं आता। अलबत्ता बेहतर मिट्टी का ढेला है।

मिट्टी का ढेला और साइन्सी तह़क़ीक़

एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ **मिट्टी** में नौशादर (AMMONIUM CHLORIDE) नीज़ बदबू दूर करने वाले बेहतरीन अज्ज़ा मौजूद हैं। पेशाब और फ़ुज़्ला जरासीम से लबरेज़ होता है, इस का जिस्मे इन्सानी पर लगना नुक़्सान देह है। इस के अज्ज़ा बदन पर चिपके रह जाने की सूरत में त़रह़ त़रह़ की बीमारियां पैदा होने का अन्देशा है। "डॉक्टर हलोक" लिखता है : इस्तिन्जा के **मिट्टी के ढेले** ने साइन्सी दुन्या को वर्त़ए ह़ैरत में डाल रखा है। मिट्टी के तमाम अज्ज़ा जरासीम के क़ातिल होते हैं लिहाज़ा **मिट्टी के ढेले** के इस्ति'माल से पर्दे की जगह पर मौजूद जरासीम का ख़ातिमा हो जाता है बल्कि इस का इस्ति'माल "पर्दे की जगह के केन्सर" (CANCER OF PENIS) से बचाता है।

बुढ्ढे काफ़िर डॉक्टर का इन्किशाफ़

इस्लामी बहनो ! सुन्नत के मुत़ाबिक़ क़ज़ाए ह़ाजत करने में आख़िरत की सआ़दत और दुन्या में बीमारियों से ह़िफ़ाज़त है। कुफ़्फ़ार

भी इस्लामी अत़वार का ख़्वाही न ख़्वाही इक़्रार कर ही लेते हैं। इस की झलक इस ह़िकायत में मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये : चुनान्चे फ़िज़ियोलोजी के एक सीनियर प्रोफ़ेसर का बयान है : मैं उन दिनों मराकिश में था, मुझे बुख़ार आ गया, दवा के लिये एक ग़ैर मुस्लिम बुढ्ढे घाघ डॉक्टर के पास पहुंचा, उस ने पूछा : क्या मुसल्मान हो ? मैं ने कहा : हां मुसल्मान हूं और पाकिस्तानी हूं। येह सुन कर कहने लगा : अगर तुम्हारे पाकिस्तान में एक त़रीक़ा जो ख़ुद तुम्हारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बताया हुवा है ज़िन्दा हो जाए तो पाकिस्तानी बहुत सारे अमराज़ से बच जाएं! मैं ने ह़ैरत से पूछा : वोह कौन सा त़रीक़ा है ? बोला : **अगर क़ज़ाए ह़ाजत के लिये इस्लामी त़रीक़े पर बैठा जाए तो एपेन्डे साइटिस (APPENDICITIS)**, **दाइमी क़ब्ज़, बवासीर और गुर्दों के अमराज़ नहीं होंगे !**

रफ़्ए़ ह़ाजत के लिये बैठने का त़रीक़ा

इस्लामी बहनो ! यक़ीनन आप भी जानना चाहेंगी कि वोह करिश्माती त़रीक़ा कौन सा है तो सुनिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना सुराक़ा बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : हमें ताजदारे रिसालत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, सरापा अ़-ज़-मतो व शराफ़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि हम रफ़्ए़ ह़ाजत के वक़्त बाएं (उल्टे) पाउं पर वज़्न दें और दायां पाउं खड़ा रखें। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١ ص٤٨٨ حديث١٠٢٠)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (ترمذی)

बाएं पाउं पर वज़्न डालने की ह़िक्मत

रफ़्ए़ ह़ाजत के वक़्त उक्डूं बैठ कर दायां (सीधा) पाउं खड़ा या'नी अपनी अस्ली ह़ालत पर (NORMAL) रख कर बाएं या'नी उल्टे पाउं पर वज़्न देने से बड़ी आंत जो कि उल्टी त़रफ़ होती है और उसी में फ़ुज़्ला होता है उस का मुंह अच्छी त़रह़ खुल जाता और ब आसानी फ़राग़त हो जाती और पेट अच्छी त़रह़ साफ़ हो जाता है और जब पेट साफ़ हो जाएगा तो बहुत सारी बीमारियों से तह़फ़्फ़ुज ह़ासिल रहेगा ।

कुर्सी नुमा कमोड

अफ़्सोस ! आज कल इस्तिन्जा के लिये कमोड (COMMODE) अ़ाम होता जा रहा है इस पर कुर्सी की त़रह़ बैठने के सबब टांगें पूरी त़रह़ नहीं खुलतीं, उक्डूं बैठने की तरकीब न होने के सबब उल्टे पाउं पर वज़्न भी नहीं दिया जा सकता और यूं आंतों और मे'दे पर ज़ोर नहीं पड़ता इस लिये बराबर फ़राग़त नहीं हो पाती कुछ न कुछ फ़ुज़्ला आंत में बाक़ी रह जाता है जिस से आंतों और मे'दे के **मु-तअ़द्दद अमराज़** पैदा होने का अन्देशा रहता है । **कमोड** के इस्ति'माल से आ'साबी तनाव पैदा होता है, ह़ाजत के बा'द पेशाब के क़त़रात गिरने के भी ख़त़रात रहते हैं ।

पर्दे की जगह का केन्सर

कुर्सी नुमा कमोड में पानी से इस्तिन्जा करना और अपने बदन और कपड़ों को पाक रखना एक अम्रे दुश्वार है । ज़ियादा तर इस

के लिये **टॉयलेट पेपर्ज़** का इस्ति'माल होता है। कुछ अ़र्सा क़ब्ल यूरोप में पर्दे के ह़िस्सों के मोहलिक अमराज़ बिल ख़ुसूस **पर्दे की जगह का केन्सर** तेज़ी से फैलने की ख़बरें अख़्बारात में शाएअ़ हुई, तह़क़ीक़ी बोर्ड बैठा और उस ने नतीजा येह बयान किया कि इन अमराज़ के दो[2] ही अस्बाब सामने आए हैं (1) टॉयलेट पेपर का इस्ति'माल करना और (2) पानी का इस्ति'माल न करना।

टॉयलेट पेपर से पैदा होने वाले अमराज़

टॉयलेट पेपर बनाने में बा'ज़ ऐसे केमीकल इस्ति'माल होते हैं जो जिल्द (चमड़ी) के लिये इन्तिहाई नुक़्सान देह हैं। इस के इस्ति'माल से जिल्दी अमराज़ पैदा होते हैं जैसा की एग्ज़ीमा और चमड़ी का रंग तब्दील होना। ''डॉक्टर केनन डयूस'' का कहना है : टॉयलेट पेपर्ज़ का इस्ति'माल करने वाले इन अमराज़ के इस्तिक़्बाल की तय्यारी करें (1) पर्दे की जगह का केन्सर (2) भगन्दर (एक फोड़ा जो मक़्अ़द के आस पास होता या'नी बैठने की जगह पर और बहुत तक्लीफ़ पहुंचाता है) (3) जिल्द इन्फ़ेक्शन (SKIN INFECTION) (4) फफूंदी के अमराज़ (VIRAL DISEASES)

टॉयलेट पेपर और गुर्दों के अमराज़

अत़िब्बा का कहना है कि टॉयलेट पेपर से सफ़ाई बराबर नहीं होती लिहाज़ा जरासीम फैलते और ब-दने इन्सानी के अन्दर जा कर त़रह़ त़रह़ की बीमारियों का सबब बनते हैं। ख़ुसूसन औ़रतों की पेशाब

गाह के ज़रीए **गुर्दों** में दाख़िल हो जाते हैं जिस के सबब बसा अवक़ात **गुर्दों से पीप** आना शुरूअ़ हो जाता है। हां टॉयलेट पेपर के इस्ति'माल के बा'द अगर पानी से इस्तिन्जा कर लिया जाए तो इस का नुक़्सान न होने के बराबर रह जाता है।

सख़्त ज़मीन पर क़ज़ाए ह़ाजत के नुक़्सानात

कुर्सी नुमा कमोड और W.C. का इस्ति'माल शरअ़न जाइज़ है। सहूलत के लिह़ाज़ से कमोड के मुक़ाबले में W.C. बेहतर है जब कि कुशादा हो ताकि इस पर सुन्नत के मुत़ाबिक़ बैठा जा सके। लेकिन आज कल छोटे W.C. लगाए जाते हैं और उन में कुशादा हो कर नहीं बैठा जा सकता। हां अगर क़दम्चे या'नी पाउं रखने की जगह फ़र्श के साथ हमवार रखी जाए तो ह़स्बे ज़रूरत कुशादा बैठा जा सकता है। एक सुन्नत नर्म ज़मीन पर रफ़्ए़ ह़ाजत करना भी है। जैसा कि ह़दीसे रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में है : जब तुम में से कोई पेशाब करना चाहे तो पेशाब के लिये नर्म जगह ढूंडे। (اَلْجَامِعُ الصَّغِير لِلسُّيُوطِی ص٣٧ حديث٥٠٧) इस के फ़वाइद को तस्लीम करते हुए **ल्यूवल पावल** (louval poul) कहता है : "इन्सान की बक़ा मिट्टी और फ़ना भी मिट्टी है जब से लोगों ने नर्म मिट्टी की ज़मीन पर क़ज़ाए ह़ाजत करने के बजाए **सख़्त ज़मीन** (या'नी W.C., कमोड वग़ैरा) का इस्ति'माल शुरूअ़ किया है उस वक़्त से मर्दों में जिन्सी (मर्दाना) **कमज़ोरी** और पथरी के अमराज़ में इज़ाफ़ा हो गया है ! सख़्त ज़मीन पर ह़ाजत करने के अ-सरात मसाने के **ग़ुदूद** (PROSTATE GLANDS) पर भी पड़ते हैं, पेशाब या फ़ुज़्ला

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

जब नर्म ज़मीन पर गिरता है तो उस के जरासीम और तेज़ाबिय्यत फ़ौरन जज़्ब हो जाते हैं जब कि सख़्त ज़मीन चूंकि जज़्ब नहीं कर पाती इस लिये तेज़ाबी और जरासीमी अ–सरात बराहे रास्त जिस्म पर ह़म्ला आवर होते और त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का बाइ़स बनते हैं।"

आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم दूर तशरीफ़ ले जाते

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़–लमिय्यान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शाने अ़–ज़मत निशान पर कुरबान कि जब क़ज़ाए ह़ाजत को तशरीफ़ ले जाते तो इतनी दूर जाते कि कोई न देखे। (سُنَنُ اَبِی دَاوٗد، ج۱ ص ۳۵ حدیث۲) या'नी या तो दरख़्त या दीवार के पीछे बैठते और अगर चट्यल मैदान होता तो इतनी दूर तशरीफ़ ले जाते जहां किसी की निगाह न पड़ सकती। (मिरआत, जि. 1, स. 262) यक़ीनन सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हर फ़े'ल में दीनो दुन्या की बे शुमार भलाइयां पिन्हां होती हैं। पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बदबू और जरासीम की अफ़्ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा पेशाब करने के बा'द भी जहां एकआध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लेश टेंक से पानी न बहाया जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है।

क़ज़ाए ह़ाजत से क़ब्ल चलने के फ़वाइद

आज कल बिल खुसूस शहरों में बन्द कमरे के अन्दर ही बैतुल ख़ला होते हैं, जो कि जरासीम की नश्वो नमा और इन के ज़रीए फैलने वाले अमराज़ के ज़राएअ़ हैं। एक बायो केमिस्ट्री के माहिर का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

कहना है **:** जब से शहरों में वुस्अ़त, आबादियों की कसरत और खेतों की क़िल्लत होने लगी है तब से अमराज़ की ख़ूब ज़ियादत होने लगी है। क़ज़ाए ह़ाजत के लिये जब से दूर चल कर जाना तर्क किया है **क़ब्ज़, गेस, तब्ख़ीर और जिगर की बीमारियां** बढ़ गई हैं। चलने से आंतों की ह़-र-कतों में तेज़ी आती है। जिस के सबब ह़ाजत तसल्ली बख़्श हो जाती है, आजकल बिग़ैर चले (घर ही घर में) बैतुल ख़ला में दाख़िल हो जाने की वज्ह से बसा अवक़ात फ़राग़त भी ताख़ीर से होती है !

बैतुल ख़ला जाने की 47 निय्यतें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: ''मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''** (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرَانِيّ ج٦ص١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

《1》 सर ढांप कर **《2》** जाने में उल्टे पाउं से और **《3》** बाहर निकलने में सीधे पाउं से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगी **《4,5》** दोनों बार या'नी दाख़िले से क़ब्ल और निकलने के बा'द मस्नून दुआ़एं पढ़ूंगी **《6》** सिर्फ़ अंधेरे की सूरत में येह निय्यत कीजिये **:** त़हारत पर मदद ह़ासिल करने के लिये बत्ती जलाऊंगी **《7》** फ़राग़त के फ़ौरन बा'द इसराफ़ से बचने की निय्यत से बुझा दूंगी **《8》** ह़दीसे पाक ''اَلطُّهُوْرُ شَطْرُ الْاِيْمَان'' (صَحِيح مُسلِم ص ١٤٠ حديث٢٢٣) **तरजमा :** ''पाकी निस्फ़ ईमान है'', पर अ़मल करते हुए पाउं को गन्दगी से बचाने के लिये चप्पल पहनूंगी **《9》** पहनते हुए सीधे क़दम से और **《10》** उतारते हुए उल्टे से पहल कर के इत्तिबाए़ सुन्नत करूंगी **《11, 12》** सित्र खुला

होने की सूरत में इस्तिक़्बाले क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की त़रफ़ मुंह करने) और इस्तिदबारे क़िब्ला (या'नी क़िब्ले की त़रफ़ पीठ करने) से बचूंगी ﴾**13, 14**﴿ ज़मीन से क़रीब हो कर फ़क़त ह़स्बे ज़रूरत सित्र खोलूंगी। इसी त़रह़ फ़रागत के बा'द ﴾**15**﴿ उठने से क़ब्ल ही सित्र छुपा लूंगी ﴾**16**﴿ जो कुछ ख़ारिज होगा उस की त़रफ़ नहीं देखूंगी ﴾**17**﴿ पेशाब के छींटों से बचूंगी ﴾**18**﴿ ह़या से सर झुकाए रहूंगी ﴾**19**﴿ ज़रूरतन आंखें बन्द कर लूंगी और ﴾**20, 21**﴿ बिला ज़रूरत शर्मगाह को देखने और छूने से बचूंगी ﴾**22 ता 26**﴿ उल्टे हाथ से ढेला पकड़ कर उल्टे ही हाथ से ख़ुश्क कर के उल्टे हाथ की त़रफ़ उल्टा (या'नी नजासत वाला ह़िस्सा ज़मीन की त़रफ़) रखूंगी, पाक सीधी त़रफ़ रखूंगी, मुस्तह़ब ता'दाद में म-सलन तीन, पांच, सात ढेले इस्ति'माल करूंगी ﴾**27**﴿ पानी से त़हारत करते वक़्त भी सिर्फ़ उल्टा हाथ शर्मगाह को लगाऊंगी ﴾**28**﴿ शर-ई मसाइल पर ग़ौर नहीं करूंगी (कि बाइसे मह़रूमी है) ﴾**29**﴿ सित्र खुला होने की सूरत में बातचीत नहीं करूंगी और ﴾**30, 31**﴿ पेशाब वग़ैरा में न थूकूंगी न ही इस में नाक सिनकूंगी ﴾**32, 33**﴿ अगर फ़ौरन ह़म्माम ही में वुज़ू करना न हुवा तो त़हारत वाली ह़दीस पर अ़मल करते हुए दोनों हाथ धोऊंगी नीज़ ﴾**34**﴿ जो कुछ निकला उस को बहा दूंगी (पेशाब करने के बा'द अगर हर फ़र्द एक लोटा पानी बहा दिया करे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बदबू और जरासीम की अफ़्ज़ाइश में कमी होगी, बड़ा इस्तिन्जा करने के बा'द भी जहां एकआध लोटा पानी काफ़ी हो वहां फ़्लेश टेंक से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

पानी न बहाया जाए क्यूं कि वोह कई लोटे पर मुश्तमिल होता है।) ﴾35﴿ पानी से इस्तिन्जा करने के बा'द पाउं के टख़्ने वाले ह़िस्से एह़तियात़ के साथ धो लूंगी (क्यूं कि इस मौक़अ़ पर उ़मूमन टख़्नों की त़रफ़ गन्दे पानी के छींटे आ जाते हैं) ﴾36﴿ फ़ारिग़ हो कर जल्दी निकलूंगी ﴾37﴿ बे पर्दगी से बचने के लिये बैतुल ख़ला का दरवाज़ा बन्द करूंगी ﴾38﴿ मुसल्मानों को घिन से बचाने के लिये बा'दे फ़राग़त दरवाज़ा बन्द करूंगी।

अ़वामी इस्तिन्जा ख़ाने में जाते हुए येह निय्यतें भी कीजिये

﴾39-41﴿ अगर लाइन लम्बी हुई तो सब्र के साथ अपनी बारी का इन्तिज़ार करूंगी, किसी की ह़क़ त–लफ़ी नहीं करूंगी, बार बार दरवाज़ा बजा कर उस को ईज़ा नहीं दूंगी ﴾42﴿ अगर मेरे अन्दर होते हुए किसी ने बार बार दरवाज़ा बजाया तो सब्र करूंगी ﴾43﴿ अगर किसी को मुझ से ज़ियादा ह़ाजत हुई और कोई सख़्त मजबूरी या नमाज़ फ़ौत होने का अन्देशा न हुवा तो ईसार करूंगी ﴾44﴿ ह़त्तल इम्कान भीड़ के वक़्त इस्तिन्जा ख़ाने जा कर भीड़ में मज़ीद इज़ाफ़ा कर के मुसल्मानों पर बोझ नहीं बनूंगी ﴾45﴿ दरो दीवार पर कुछ नहीं लिखूंगी ﴾46﴿ वहां बनी हुई फ़ोह़्श तस्वीरें देख कर और ﴾47﴿ ह़या सोज़ तह़रीरें पढ़ कर अपनी आंखों को बरोज़े क़ियामत अपने ख़िलाफ़ गवाह नहीं बनाऊंगी।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

हैज़ व निफ़ास का बयान (ह़-नफ़ी)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बार किसी भिकारी ने कुफ़्फ़ार से सुवाल किया, उन्हों ने मज़ाक़न ह़ज़रते मौला अ़ली كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم के पास भेज दिया जो कि सामने तशरीफ़ फ़रमा थे। उस ने ह़ाज़िर हो कर दस्ते सुवाल दराज़ किया। आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने **दस[10] बार दुरूद शरीफ़** पढ़ कर उस की हथेली पर दम कर दिया और फ़रमाया : मुठ्ठी बन्द कर लो और जिन लोगों ने भेजा है उन के सामने जा कर खोल दो। (कुफ़्फ़ार हंस रहे थे कि ख़ाली फूंक मारने से क्या होता है !) **मगर जब साइल ने उन के सामने जा कर मुठ्ठी खोली तो वोह सोने के दीनारों से भरी हुई थी !** येह करामत देख कर कई काफ़िर मुसल्मान हो गए। (راحتُ القُلُوب ص ٧٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अल्लाह तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है :

وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ (پ٢ البقرة، ٢٢٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम से पूछते हैं ह़ैज़ का हुक्म तुम फ़रमाओ : वोह नापाकी है, तो औ़रतों से अलग रहो ह़ैज़ के दिनों, और उन से नज़्दीकी न करो, जब तक पाक न हो लें, फिर जब पाक हो जाएं तो उन के पास जाओ जहां से तुम्हें **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ने हुक्म दिया।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त **तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में लिखते हैं **:** अ़रब के लोग यहूद व मजूस की त़रह़ **ह़ाएज़ा** औ़रतों से कमाले नफ़्रत करते थे। साथ खाना पीना एक मकान में रहना गवारा न था बल्कि शिद्दत यहां तक पहुंच गई थी कि उन की त़रफ़ देखना और उन से कलाम करना भी ह़राम समझते थे और नसारा (या'नी क्रिस्चेन) इस के बर अ़क्स **हैज़ के अय्याम** में औ़रतों के साथ बड़ी मह़ब्बत से मश्ग़ूल होते थे और इख़्तिलात़ (मेलजोल) में बहुत मुबा-लग़ा करते थे। मुसल्मानों ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से हैज़ का **हुक्म** दरयाफ़्त किया, इस पर येह आयत नाज़िल हुई और इफ़रात़ो तफ़रीत़ (या'नी बढ़ाने घटाने) की राहें छोड़ कर ए'तिदाल (मियाना रवी) की ता'लीम फ़रमाई गई और बता दिया गया कि **ह़ालते हैज़** में औ़रतों से मुजा-म-अ़त (या'नी सोह़बत) मम्नूअ़ है।

(तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 56)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हैज़ किसे कहते हैं ?

बालिग़ा औ़रत के आगे के मक़ाम से जो ख़ून आ़दत के त़ौर पर निकलता है और बीमारी या बच्चा पैदा होने के सबब से न हो तो उसे हैज़ कहते हैं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा **:** 2, स. 93) हैज़ के लिये माहवारी, अय्याम, अय्याम से होना, महीना, महीना आना, महीने से होना, बारी के दिन और MONTHLY COURSE (मंथली कोर्स) वग़ैरा अल्फ़ाज़ भी बोले जाते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है । (مسلم)

इस्तिह़ाज़ा किसे कहते हैं ?

जो ख़ून बीमारी की वज्ह से आए, उस को **इस्तिह़ाज़ा** कहते हैं । (ऐज़न) उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़हदे मुबारक में एक औ़रत के अगले मक़ाम से ख़ून बहता रहता था । उस के लिये उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे स-लमह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने हु़ज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़तवा पूछा । इर्शाद फ़रमाया : इस बीमारी से पहले महीने में जितने दिन व रातें हैज़ आता था, उन की गिनती शुमार कर के महीने में उन ही की मिक्दार **नमाज़** छोड़ दे और जब वोह दिन जाते रहें तो गुस्ल करे और शर्मगाह पर कपड़ा बांध कर **नमाज़** पढ़े ।

(مؤطا امام مالک، ج١ ص٧٧۔٧٨ حديث ١٤٠)

हैज़ के रंग

हैज़ के छ[6] रंग हैं : ﴾1﴿ सियाह ﴾2﴿ सुर्ख़ ﴾3﴿ सब्ज़ ﴾4﴿ ज़र्द ﴾5﴿ गदला ﴾6﴿ मटियाला । सफ़ेद रंग की रतूबत **हैज़** नहीं । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 95) याद रहे कि औ़रत के अगले मक़ाम से जो ख़ालिस रतूबत बे आमेज़िशे ख़ून निकलती है उस से वुज़ू नहीं टूटता अगर कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है । (ऐज़न, स. 26)

नोट : ह़म्ल वाली औ़रत को जो ख़ून आया वोह **इस्तिह़ाज़ा** है ।

(دُرِّمُختار ج١ص٥٢٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

हैज़ की ह़िक्मत

बालिग़ा औ़रत के बदन में फ़ित़्–रतन ज़रूरत से कुछ ज़ियादा ख़ून पैदा होता है कि ह़म्ल की ह़ालत में वोह ख़ून बच्चे की ग़िज़ा में काम आए और बच्चे के दूध पीने के ज़माने में वोही ख़ून दूध हो जाए अगर ऐसा न हो तो **ह़म्ल** और दूध पिलाने के ज़माने में इस की जान पर बन जाए येही वज्ह है कि ह़म्ल और इब्तिदाए शीर ख़्वारगी (या'नी दूध पिलाने) में ख़ून नहीं आता और जिस ज़माने में न **ह़म्ल** हो और न दूध पिलाना तब वोह ख़ून अगर बदन से न निकले तो क़िस्म क़िस्म की बीमारियां हो जाएं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 93)

हैज़ की मुद्दत

हैज़ की कम से कम मुद्दत तीन दिन और तीन[3] रातें या'नी पूरे **72** घन्टे हैं। अगर एक मिनट भी कम हुवा तो वोह हैज़ नहीं बल्कि **इस्तिह़ाज़ा** या'नी बीमारी का ख़ून है और ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत दस[10] दिन और दस[10] रातें या'नी 240 घन्टे हैं।

कैसे मा'लूम हो कि इस्तिह़ाज़ा है

अगर दस[10] दिन और दस[10] रात से ज़ियादा ख़ून आया तो अगर येह हैज़ पहली मर्तबा आया है तो दस[10] दिन तक **हैज़** माना जाएगा। और इस के बा'द जो ख़ून आया वोह **इस्तिह़ाज़ा** है, और अगर पहले औ़रत को हैज़ आ चुके हैं और इस की आ़दत दस[10] दिन से **कम** थी तो आ़दत से जितने दिन ज़ियादा ख़ून आया वोह इस्तिह़ाज़ा

है, मिसाल के तौर पर किसी औरत को हर महीने में पांच दिन हैज़ आने की आदत थी अब की मर्तबा **दस[10] दिन** आया तो येह **दसों[10] दिन** हैज़ के माने जाएंगे अलबत्ता अगर **बारह[12] दिन** ख़ून आया तो आदत वाले पांच दिन हैज़ के माने जाएंगे और **सात दिन** इस्तिहाज़े के और अगर एक आदत मुक़र्रर न थी बल्कि किसी महीने **चार[4]** दिन तो किसी महीने **सात[7] दिन** हैज़ आता था तो पिछली मर्तबा जितने दिन हैज़ के थे वोही अब भी हैज़ के दिन माने जाएंगे, और बाक़ी **इस्तिहाज़े** का ख़ून होगा ।

हैज़ की कम अज़ कम और इन्तिहाई उ़म्र

कम से कम 9 बरस की उ़म्र से हैज़ शुरूअ़ होगा । और हैज़ आने की इन्तिहाई उ़म्र पचपन[55] साल है । इस उ़म्र वाली को **आएसा** (या'नी हैज़ व औलाद से ना उम्मीद होने वाली) कहते हैं । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 94) नव बरस की उ़म्र से पहले जो ख़ून आएगा वोह हैज़ नहीं बल्कि **इस्तिहाज़ा** है यूं ही 55 बरस की उ़म्र के बा'द जो आएगा वोह भी **इस्तिहाज़ा** है । लेकिन अगर किसी को 55 बरस की उ़म्र के बा'द भी ख़ालिस ख़ून बिल्कुल ऐसे ही रंग का आया जैसा कि हैज़ के ज़माने में आया करता था तो उस को हैज़ मान लिया जाएगा ।

दो[2] हैज़ के दरमियान कम अज़ कम फ़ासिला

दो[2] हैज़ों के दरमियान कम से कम पूरे **15** दिन का फ़ासिला ज़रूरी है । (دُرِّمُختار ج۱ ص۵۲۴) इस्लामी बहन को चाहिये कि वोह हैज़ आने की मुद्दत अच्छी त़रह़ याद रखे या लिख ले ताकि शरीअ़ते

मुत़ह्हरा पर अह़्सन त़रीक़े से अ़मल कर सके, **मुद्दते हैज़** याद न रखने की सूरत में बहुत सी पेचीदगियां हो जाती हैं।

अहम मस्अला

येह ज़रूरी नहीं कि मुद्दत में हर वक़्त ख़ून जारी रहे जब ही **हैज़** हो बल्कि अगर बा'ज़ बा'ज़ वक़्त भी आए, जब भी **हैज़** है।

(دُرِّمُختار ج۱ ص۵۲۳)

निफ़ास का बयान

बच्चा होने के बा'द औ़रत के आगे के मक़ाम से जो ख़ून आता है वोह निफ़ास कहलाता है। (عالمگیری ج۱ ص۳۷)

निफ़ास की ज़रूरी वज़ाह़त

अक्सर इस्लामी बहनों में येह मश्हूर है कि बच्चा जनने के बा'द इस्लामी बहन 40 दिन तक लाज़िमी त़ौर पर नापाक रहती है येह बात बिल्कुल ग़लत़ है। बराए करम ! **निफ़ास की ज़रूरी वज़ाह़त** पढ़ लीजिये :

निफ़ास की ज़ियादा से ज़ियादा मुद्दत 40 दिन है या'नी अगर 40 दिन के बा'द भी बन्द न हो तो मरज़ है। लिहाज़ा 40 दिन पूरे होते ही ग़ुस्ल कर ले और **40 दिन से पहले बन्द हो जाए ख़्वाह बच्चे की विलादत के बा'द एक मिनट ही में बन्द हो जाए तो जिस वक़्त भी बन्द हो ग़ुस्ल कर ले और नमाज़ व रोज़ा शुरूअ़ हो गए।** अगर 40 दिन के अन्दर अन्दर दोबारा ख़ून आ गया तो शुरूए़

विलादत से ख़त्मे ख़ून तक सब दिन निफ़ास ही के शुमार होंगे । म–सलन विलादत के बा'द दो[2] मिनट तक ख़ून आ कर बन्द हो गया और ग़ुस्ल कर के नमाज़ रोज़ा वग़ैरा करती रही, 40 दिन पूरे होने में फ़क़त दो[2] मिनट बाक़ी थे कि फिर ख़ून आ गया तो सारा चिल्ला या'नी मुकम्मल 40 **दिन निफ़ास** के ठहरेंगे । जो भी नमाज़ें पढ़ीं या रोज़े रखे सब बेकार गए, यहां तक कि अगर इस दौरान फ़र्ज़ व वाजिब नमाज़ें या रोज़े क़ज़ा किये थे तो वोह भी फिर से अदा करे ।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र–ज़विय्या, जि. 4, स. 354 ता 356)

निफ़ास के मु–तअ़ल्लिक़ कुछ ज़रूरी मसाइल

किसी औ़रत को 40 दिन व रात से ज़ियादा **निफ़ास** का ख़ून आया, अगर पहला बच्चा पैदा हुवा है तो 40 दिन रात **निफ़ास** है, बाक़ी जितने अय्याम 40 दिन रात से ज़ियादा हुए हैं वोह इस्तिह़ाज़े के हैं । और अगर इस से पहले भी बच्चा तो पैदा हुवा था मगर येह याद नहीं रहा कि कितने दिन ख़ून आया था तो इस सूरत में भी येही मस्अला होगा या'नी **40 दिन रात** निफ़ास के और बाक़ी **इस्तिह़ाज़े** के और अगर पहले बच्चे के पैदा होने पर ख़ून आने के दिन याद हैं म–सलन पहले जो बच्चा पैदा हुवा था तो 30 दिन रात ख़ून आया था तो इस सूरत में 30 दिन रात **निफ़ास** के हैं बाक़ी **इस्तिह़ाज़े** के म–सलन पहले बच्चे के पैदा होने पर 30 दिन रात ख़ून आया था और दूसरे

बच्चे की पैदाइश पर 50 दिन रात ख़ून आया तो 30 दिन **निफ़ास** के होंगे बाक़ी 20 दिन रात इस्तिहाज़े के। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 99)

ह़म्ल साक़ित़ हो जाए तो......?

ह़म्ल साक़ित़ हो गया और उस का कोई उ़ज़्व बन चुका है जैसे हाथ, पाउं या उंग्लियां, तो येह ख़ून **निफ़ास** है (عالمگیری ج۱ ص۳۷) वरना अगर तीन3 दिन रात तक रहा और इस से पहले पन्दरह15 दिन पाक रहने का ज़माना गुज़र चुका है तो **हैज़** है और जो तीन3 दिन से पहले ही बन्द हो गया, या अभी पूरे पन्दरह15 दिन त़हारत के नहीं गुज़रे हैं तो इस्तिह़ाज़ा है। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 99)

चन्द ग़लत़ फ़हमियों का इज़ाला

बच्चा जनने के बा'द से ले कर निफ़ास से पाक होने तक औ़रत ज़च्चा कहलाती है ऐसी औ़रत या'नी ज़च्चा को ज़च्चा ख़ाने से निकलना जाइज़ है। उस को साथ खिलाने या उस का झूटा खाने में कोई ह़रज नहीं, बा'ज़ इस्लामी बहनें ज़च्चा के बरतन तक अलग कर देती हैं बल्कि उन बरतनों को مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक त़रह़ से नापाक समझती हैं ऐसी बेहूदा रस्मों से एह़तियात़ लाज़िम है। इसी त़रह़ येह मस्अला भी मन घड़त है कि ज़च्चा (निफ़ास वाली) जब ग़ुस्ल करे तो वोह चालीस लोटों के पानी से ग़ुस्ल करे वरना ग़ुस्ल नहीं उतरेगा। सह़ीह़ मस्अला येह है कि अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ पानी इस्ति'माल करे।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा। (جمع الجوامع)

इस्तिहा़ज़ा के अह़काम

﴾1﴿ **इस्तिहा़ज़े** में न नमाज़ मुआ़फ़ है न रोज़ा, न ऐसी औ़रत से सोह़बत ह़राम। (عالمگیری ج۱ ص۳۹)

﴾2﴿ **मुस्तहा़ज़ा** (या'नी इस्तिहा़ज़े वाली) का का'बा शरीफ़ में दाख़िल होना, त़वाफ़े का'बा, वुज़ू कर के क़ुरआन शरीफ़ को हाथ लगाना और इस की तिलावत करना येह तमाम उमूर भी जाइज़ हैं। (رَدُّالْمُحتَار، ج۱، ص٥٤٤)

﴾3﴿ **इस्तिहा़ज़ा** अगर इस ह़द तक पहुंच गया कि (बार बार ख़ून आने के सबब) इस को इतनी मोहलत नहीं मिलती कि वुज़ू कर के फ़र्ज़ नमाज़ अदा कर सके तो नमाज़ का पूरा एक वक़्त शुरूअ़ से आख़िर तक इसी ह़ालत में गुज़र जाने पर उस को मा'ज़ूर कहा जाएगा, एक वुज़ू से उस वक़्त में जितनी नमाज़ें चाहे पढ़े, ख़ून आने से उस का वुज़ू न जाएगा। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 107)

﴾4﴿ अगर कपड़ा वग़ैरा रख कर इतनी देर तक ख़ून रोक सकती है कि वुज़ू कर के फ़र्ज़ पढ़ ले, तो उ़ज़्र साबित न होगा। (या'नी ऐसी सूरत में ''मा'ज़ूर'' नहीं कहलाएगी) (ऐज़न)

हैज़ व निफ़ास के 21 अह़काम

﴾1﴿ हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में नमाज़ पढ़ना और रोज़ा रखना ह़राम है। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 102, عالمگیری ج۱ ص۳۸)

﴾2﴿ इन दिनों में नमाज़ें मुआ़फ़ हैं इन की **क़ज़ा** भी नहीं। अलबत्ता

रोज़ों की क़ज़ा दूसरे दिनों में रखना **फ़र्ज़** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 102, دُرِّمُختار ج ۱ ص ۵۳۲) इस मुआ़-मले में इस्लामी बहनें इम्तिह़ान में पड़ जाती हैं। एक ता'दाद है जो रोज़े क़ज़ा नहीं करती। मेह्रबानी कर के लाज़िमी रोज़े क़ज़ा करें वरना जहन्नम का अ़ज़ाब सहा न जाएगा।

《3》 हैज़ व निफ़ास वाली को क़ुरआने मजीद पढ़ना **ह़राम** है ख़्वाह देख कर पढ़े या ज़बानी पढ़े। यूं ही क़ुरआने मजीद का छूना भी **ह़राम** है। हां अगर जुज़्दान में क़ुरआने मजीद हो तो उस जुज़्दान को छूने में कोई **ह़रज** नहीं। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 101)

《4》 क़ुरआने मजीद पढ़ने के इ़लावा दूसरे तमाम अवरादो वज़ाइफ़ कलिमा शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ वग़ैरा हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में इस्लामी बहन बिला कराहत **पढ़ सकती** है बल्कि मुस्तह़ब है कि नमाज़ों के अवक़ात में वुज़ू कर के उतनी देर तक दुरूद शरीफ़ और दूसरे वज़ाइफ़ पढ़ लिया करे जितनी देर में नमाज़ पढ़ सकती थी ताकि आ़दत बाक़ी रहे। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 101, 102)

《5》 हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में हम-बिस्तरी **ह़राम** है। इस ह़ालत में नाफ़ से घुटने तक औ़रत के बदन को मर्द अपने किसी उ़ज़्व से न छूए कि येह भी **ना जाइज़** है जब कि कपड़ा वग़ैरा ह़ाइल न हो शह्वत से हो या बे शह्वत और अगर ऐसा ह़ाइल हो कि बदन की गरमी मह़सूस न होगी तो ह़रज नहीं। हां नाफ़ से ऊपर और घुटने के नीचे के बदन को छूना और बोसा वग़ैरा देना जाइज़ है। (ऐज़न, स. 104) इस ह़ालत में औ़रत मर्द के हर ह़िस्सए बदन को हाथ लगा सकती है। (ऐज़न, स. 105)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

《6》 हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में इस्लामी बहन को मस्जिद में जाना **ह़राम** है। हां अगर चोर या दरिन्दे से डर कर या किसी भी शदीद मजबूरी से मजबूर हो कर मस्जिद में चली जाए तो जाइज़ है मगर उस को चाहिये कि **तयम्मुम** कर के मस्जिद में जाए। (ऐज़न, स. 101, 102)

《7》 हैज़ व निफ़ास वाली इस्लामी बहन अगर ईदगाह में दाख़िल हो जाए तो कोई **ह़रज** नहीं। (ऐज़न, स. 102) इसी त़रह़ फ़िनाए मस्जिद में भी जा सकती है। म–सलन दा'वते इस्लामी के आ़लमी म–दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची का वसीओ़ अ़रीज़ तहख़ाना जहां इस्लामी बहनों का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ होता है येह फ़िनाए मस्जिद है यहां हैज़ व निफ़ास वाली आ सकती है, इज्तिमाअ़ में शरीक हो सकती है। सुन्नतों भरा बयान भी कर सकती है ना'त शरीफ़ भी पढ़ सकती है, दुआ़ भी करवा सकती है।

《8》 हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में अगर मस्जिद के बाहर रह कर और हाथ बढ़ा कर मस्जिद से कोई चीज़ उठा ले या मस्जिद में कोई चीज़ रख दे तो **जाइज़** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 102)

《9》 हैज़ व निफ़ास वाली को ख़ानए का'बा के अन्दर जाना और उस का त़वाफ़ करना अगर्चे मस्जिदुल ह़राम के बाहर से हो ह़राम है। (ऐज़न)

《10》 हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में बीवी को अपने बिस्तर पर सुलाने में ग़–लबए शह्वत या अपने को क़ाबू में न रखने का अन्देशा हो तो शोहर के लिये लाज़िम है कि बीवी को अपने बिस्तर पर न सुलाए

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

बल्कि अगर गुमान ग़ालिब हो कि शह्वत पर क़ाबू न रख सकेगा तो शोहर को ऐसी ह़ालत में बीवी को अपने साथ सुलाना **गुनाह** है।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 105)

《11》 हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में **बीवी** के साथ हम-बिस्तरी को ह़लाल समझना कुफ़्र है और ह़राम समझते हुए कर लिया तो सख़्त गुनहगार हुवा उस पर तौबा करना फ़र्ज़ है। और अगर शुरूए़ हैज़ व निफ़ास में ऐसा कर लिया तो एक दीनार[1] और अगर क़रीबे ख़त्म के किया तो निस्फ़ (या'नी आधा) दीनार ख़ैरात करना **मुस्तह़ब** है (ऐज़न, स. 104) अ़जब नहीं कि यहां सोना देना ही अन्सब (या'नी मुनासिब तर) हो। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 4, स. 364) ताकि ख़ुदा के ग़ज़ब से अमान पाए। इस का मत़लब हरगिज़ येह नहीं कि ख़ैरात कर देने का ज़ेह्न बना कर مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जानबूझ कर जिमाअ़ में मुब्तला हो, अगर ऐसा किया तो सख़्त गुनहगार और जहन्नम का ह़क़दार है। दुर्रे मुख़्तार में है : इस का मसरफ़ वोही है जो ज़कात का है। क्या औ़रत पर भी स-दक़ा करना मुस्तह़ब है ? ज़ाहिर बात येह है कि औ़रत पर येह हुक्म नहीं है। (دُرِّمُختار، ج١ ص ٥٤٣)

《12》 रोज़े की **ह़ालत** में अगर हैज़ व निफ़ास शुरूअ़ हो गया तो वोह रोज़ा जाता रहा उस की क़ज़ा रखे, **फ़र्ज़** था तो **क़ज़ा फ़र्ज़** है और

---

1 : फ़तावा र-ज़विय्या जि. 4 स. 356 पर एक दीनार दस दिरहम के बराबर लिखा है इस से माख़ूज़ कर के दीनार से मुराद दो तोला साढ़े सात माशा (30.618 ग्राम) चांदी या उस की रक़म बनती है।

नफ़्ल था तो क़ज़ा वाजिब है । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 104)

《13》 हैज़ अगर पूरे दस[10] दिन पर ख़त्म हुवा तो पाक होते ही उस से जिमाअ़ करना जाइज़ है अगर्चे अब तक ग़ुस्ल न किया हो लेकिन **मुस्तहब** येह है कि नहाने के बा'द सोहबत करे । (ऐज़न, स. 105)

《14》 अगर दस[10] दिन से कम में हैज़ बन्द हो गया तो ता वक़्ते कि ग़ुस्ल न करे या वोह वक़्ते नमाज़ जिस में पाक हुई न गुज़र जाए सोहबत करना **जाइज़** नहीं । (ऐज़न)

《15》 **हैज़** व **निफ़ास** की हालत में सज्दए तिलावत भी **हराम** है और **सज्दे** की आयत सुनने से इस पर **सज्दा वाजिब** नहीं । (ऐज़न, स. 104)

《16》 रात को सोते वक़्त औ़रत पाक थी और सुब्ह को सो कर उठी तो हैज़ का असर देखा तो उसी वक़्त से हैज़ का **हुक्म** दिया जाएगा रात से हाएज़ा नहीं मानी जाएगी । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 104)

《17》 हैज़ वाली सुब्ह को सो कर उठी और गद्दी पर कोई निशान हैज़ का नहीं तो रात ही से पाक मानी जाएगी । (ऐज़न)

《18》 जब तक औ़रत को ख़ून आए नमाज़ छोड़े रखे अलबत्ता अगर ख़ून का बहना दस[10] दिन रात कामिल से आगे बढ़ जाए तो ग़ुस्ल कर के **नमाज़** पढ़ना शुरूअ़ कर दे येह इस सूरत में है कि पिछला हैज़ भी दस[10] दिन रात आया हो और अगर पिछला हैज़ दस[10] दिन से कम था म–सलन 6 दिन का था तो अब ग़ुस्ल कर के **चार[4] दिन की क़ज़ा नमाज़ें** पढ़े और अगर पिछला हैज़ चार दिन का था तो अब छ दिन

की क़ज़ा नमाज़ें पढ़ेगी। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 350)

﴾**19**﴿ जो हैज़ अपनी पूरी मुद्दत या'नी दस10 दिन कामिल से कम में ख़त्म हो जाए उस में दो2 सूरते हैं **:** (1) या तो औरत की आदत से भी कम मुद्दत में ख़त्म हुवा या'नी इस से पहले महीने में जितने दिन **हैज़** आया था उतने दिन भी अभी नहीं गुज़रे थे कि ख़ून बन्द हो गया। लिहाज़ा इस सूरत में सोहबत अभी जाइज़ नहीं अगर्चे गुस्ल भी कर ले।

(2) और अगर आदत से कम मुद्दत **हैज़** नहीं आया। म-सलन पहले महीने सात दिन हैज़ आया था अब भी सात दिन या आठ दिन हैज़ आ कर ख़त्म हो गया या येह पहला ही हैज़ है जो इस औरत को आया और दस दिन से कम में ख़त्म हुवा तो इन सूरतों में सोहबत जाइज़ होने के लिये दो बातों में से एक बात ज़रूरी है **:** (الف) या तो औरत गुस्ल कर ले और अगर ब वज्हे मरज़ या पानी न होने के तयम्मुम करना हो तो तयम्मुम कर के नमाज़ भी पढ़ ले सिर्फ़ तयम्मुम काफ़ी नहीं। (ب) या औरत गुस्ल न करे तो इतना हो कि उस औरत पर कोई नमाज़े फ़र्ज़, फ़र्ज़ हो जाए या'नी नमाज़े पन्जगाना से किसी नमाज़ का वक़्त गुज़र जाए जिस में कम से कम उस ने इतना वक़्त पाया हो जिस में वोह नहा कर सर से पाउं तक एक चादर ओढ़ कर तक्बीरे तहरीमा कह सकती है तो इस सूरत में बिग़ैर तहारत या'नी गुस्ल के बिग़ैर भी उस से सोहबत जाइज़ हो जाएगी।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 352)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (جمع الجوامع)

《20》**निफ़ास** में ख़ून जारी होता है अगर पानी जारी हो तो वोह कोई चीज़ नहीं लिहाज़ा चालीस[40] दिन के अन्दर जब भी ख़ून लौटेगा शुरूए विलादत से ख़त्मे ख़ून तक सब दिन **निफ़ास** ही के गिने जाएंगे। जो दिन बीच में ख़ून न आने की वज्ह से ख़ाली रह गए वोह भी निफ़ास ही में शुमार होंगे म-सलन बच्चे की विलादत के बा'द दो[2] मिनट तक ख़ून आ कर बन्द हो गया। औरत ने तहारत का गुमान कर के गुस्ल किया और नमाज़, रोज़ा वग़ैरा अदा करती रही मगर चालीस[40] दिन पूरे होने में अभी दो[2] मिनट बाक़ी थे कि फिर ख़ून आ गया तो येह सारे दिन निफ़ास ही के ठहरेंगे, नमाज़ें बेकार गईं, फ़र्ज़ या वाजिब रोज़े या अगली क़ज़ा नमाज़ें जितनी पढ़ी हों उन्हें फिर फैरे।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 354)

《21》हैज़ वाली औरत के हाथ का पका हुवा खाना भी जाइज़ और उसे अपने साथ खाना खिलाना भी जाइज़, इन बातों से एहतिराज़ व इज्तिनाब यहूद व मजूस[1] का मस्अला है कि वोह ऐसा करते हैं। (ऐज़न, स. 355)

हैज़ और निफ़ास के मु-तअ़ल्लिक़ आठ म-दनी फूल

《1》हैज़ व निफ़ास की ह़ालत में इस्लामी बहनें दर्स भी दे सकती हैं और बयान भी कर सकती हैं इस्लामी किताब को छूने में भी ह़रज नहीं। क़ुरआने पाक को हाथ या उंगली की नोक या बदन का कोई ह़िस्सा लगाना ह़राम है। नीज़ किसी परचे पर अगर सिर्फ़ आयते क़ुरआनी

1. मजूसी या'नी आतश परस्त, मजूसी की जम्अ़ मजूस है।

लिखी हो दीगर कोई इ़बारत न लिखी हो तो उस काग़ज़ के आगे पीछे किसी भी ह़िस्से कोने कनारे को छूने की इजाज़त नहीं ।

﴾2﴿ कु़रआने पाक या कु़रआनी आयत या इस का तरजमा पढ़ना और छूना दोनों ह़राम है ।

﴾3﴿ अगर कु़रआने अ़ज़ीम जुज़्दान में हो तो जुज़्दान पर हाथ लगाने में ह़रज नहीं, यूंही रुमाल वग़ैरा किसी ऐसे कपड़े से पकड़ना जो न अपना ताबेअ़ हो न कु़रआने मजीद का तो जाइज़ है, कुरते की आस्तीन, दुपट्टे के आंचल से यहां तक कि चादर का एक कोना इस के मूंढे (कन्धे) पर है दूसरे कोने से छूना ह़राम है कि येह सब इस के ताबेअ़ हैं जैसे चोली कु़रआने मजीद की ताबेअ़ थी । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 48)

﴾4﴿ अगर कु़रआन की आयत दुआ़ की निय्यत से या तबर्रुक के लिये जैसे بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ या अदाए शुक्र को या छींक के बा'द اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ या ख़बरे परेशान पर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ कहा या ब निय्यते सना पूरी सू-रतुल फ़ातिह़ा या आ-यतुल कुर्सी या सूरए ह़श्र की पिछली तीन[3] आयतें هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ से आख़िर सूरह तक पढ़ीं और इन सब सूरतों में कु़रआन की निय्यत न हो तो कुछ ह़रज नहीं । यूंही तीनों कु़ल बिला लफ़्ज़े कु़ल ब निय्यते सना पढ़ सकती है और लफ़्ज़े कु़ल के साथ नहीं पढ़ सकती अगर्चे ब निय्यते सना ही हो कि इस सूरत में इन का कु़रआन होना मु-तअ़य्यन है, निय्यत को कुछ दख़्ल नहीं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 48)

﴾5﴿ ज़िक्रो अज़्कार, दुरूदो सलाम, ना'त शरीफ़ पढ़ने, अज़ान का

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

जवाब देने वग़ैरा में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं। ह़ल्क़ए ज़िक्र में शिर्कत कर सकती हैं। बल्कि ज़िक्र करवा भी सकती हैं।

《6》 ख़ुसूसन येह बात याद रखिये कि (इन दिनों में) नमाज़ और रोज़ा **ह़राम** है। (ऐज़न, स. 102)

《7》 मुरव्वत में भी ऐसे मौक़अ़ पर हरगिज़ हरगिज़ नमाज़ न पढ़िये कि फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام यहां तक फ़रमाते हैं **:** बिला उ़ज़्र जानबूझ कर बिग़ैर वुज़ू के नमाज़ पढ़ना कुफ़्र है। जब कि इसे जाइज़ समझे या इस्तिह्ज़ाअन (या'नी मज़ाक़ उड़ाते हुए) येह फ़े'ल करे।

(مِنَحُ الرَّوْض للقاری ص ٤٦٨ دار البشائر الاسلامیۃ بیروت)

《8》 इन दिनों की नमाज़ों की क़ज़ा नहीं अलबत्ता **र-मज़ानुल मुबारक** के रोज़ों की क़ज़ा **फ़र्ज़** है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 102) जब तक क़ज़ा रोज़े ज़िम्मे बाक़ी रहते हैं उस वक़्त तक नफ़्ली रोज़े के मक़्बूल होने की उम्मीद नहीं। इन अह़काम की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2 सफ़ह़ा 91 ता 109 का मुत़ा-लआ़ करने की हर इस्लामी बहन को न सिर्फ़ दर-ख़्वास्त बल्कि सख़्त ताकीद है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

تُوبُوا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

ज़नानी बीमारियों के घरेलू इ़लाज

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ात़िर आपस में मह़ब्बत रखने वाले जब बाहम मिलें और **मुसा-फ़ह़ा** करें और नबी (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर **दुरूदे पाक** भेजें तो उन के जुदा होने से पहले दोनों के अगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जाते हैं।" (مسند ابی یعلی، ج۳، ص۹۵، حدیث ۲۹۵۱ دارالکتب العلمیہ بیروت)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! हर एक का त़ब्ई़ मिज़ाज अलग अलग होता है एक ही दवा किसी के लिये आबे ह़यात का काम दिखाती है तो किसी के लिये मौत का पैग़ाम लाती है लिहाज़ा किताबों में लिखे हुए (और इस किताब के भी) या अ़वामुन्नास के बताए हुए इ़लाज शुरूअ़ करने से क़ब्ल अपनी त़बीबा से मश्वरा कर लेना ज़रूरी है। एक म-दनी फूल येह भी क़बूल कर लीजिये कि बदल बदल कर नहीं बल्कि एक ही त़बीबा से इ़लाज करवाना मुनासिब रहता है कि वोह त़ब्ई़ मिज़ाज से वाक़िफ़ हो जाती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

बीमारियों से ह़िफ़ाज़त के लिये......

पुरानी ज़नानी बीमारियों से नजात और आयिन्दा इन से तह़फ़्फ़ुज़ात के लिये इस्लामी बहनें येह चीज़ें ब कसरत इस्ति'माल करें ﴾1﴿ चुक़न्दर ﴾2﴿ पत्ते वाली सब्ज़ियां ﴾3﴿ साग ﴾4﴿ सोयाबीन ﴾5﴿ चोलाई का साग ﴾6﴿ सरसों का साग ﴾7﴿ कढ़ी पत्ता मरीज़ ग़ैरे मरीज़ सभी इस को खा लें, इसे सालन से निकाल कर फेंक न दिया करें ﴾8﴿ हरा धनिया ﴾9﴿ पोदीना ﴾10﴿ काले और सफ़ेद चने ﴾11﴿ दालें ﴾12﴿ बिग़ैर छने आटे की रोटी। (ब्राऊन ख़ुब्ज़ (रोटी) और ब्राऊन ब्रेड (डबल रोटी) के नाम से बिग़ैर छने आटे की रोटियां बेकरी से मिल सकती हैं)

ह़ैज़ की ख़राबी के नुक़्सानात

ह़ैज़ खुल कर न आने, या तक्लीफ़ से आने या बन्द हो जाने से कई क़िस्म के अमराज़ जनम लेते हैं। म-सलन चक्कर आना, सर का दर्द और ख़ून की ख़राबी के अमराज़ जैसे ख़ारिश, फोड़े फुन्सियां वग़ैरा।

ह़ैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब

ह़ैज़ की ख़राबियों की वज्ह से मरीज़ा को दूसरी परेशानियों के इलावा **डरावने ख़्वाब** भी तंग करते हैं, यहां तक कि बा'ज़ अवक़ात आ़मिल "अ-सरात" कह कर मज़ीद ख़ौफ़ज़दा कर देते हैं! ह़ालां कि वोह आसेब ज़दा नहीं होती। इस्लामी बहन या इस्लामी भाई को जिस वज्ह से भी **डरावने ख़्वाब** आते हों। रोज़ाना सोते वक़्त

يَا مُتَكَبِّرُ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ लिया करे। इस अ़मल की पाबन्दी करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ख़्वाब में नहीं डरेंगे।

कस्रते हैज़ के दो[2] इलाज

﴾1﴿ बहुत ज़ियादा ख़ून गिरता हो और चक्कर आते हों तो थोड़े से **तुलसी** के रस में एक चम्मच शह्द मिला कर पीना मुफ़ीद है ﴾2﴿ छ ग्राम **धनिया** (बीज) आधा किलो पानी में ख़ूब पकाइये यहां तक कि पानी आधा रह जाए अब उतार कर एक **चम्मच शह्द** मिला कर नीम गर्म पी लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जल्द फ़ाएदा हो जाएगा। (मुद्दत 20 दिन)

माहवारी की ख़राबियों के तीन[3] इलाज

﴾1﴿ हींग खाने से रेह़म (बच्चादान) सुकड़ता और हैज़ साफ़ आता है ﴾2﴿ 12 ग्राम **काले तिल, पाव किलो पानी** में ख़ूब जोश दीजिये जब तीन ह़िस्से पानी जल जाए तो उस में कुछ गुड़ डाल कर दोबारा जोश दीजिये (पीने के क़ाबिल हो जाने के बा'द) येह पानी पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ माहवारी की तक्लीफ़ कम और अय्याम दुरुस्त हो जाएंगे ﴾3﴿ **कच्ची पियाज़** खाने से माहवारी साफ़ आती है और दर्द नहीं होता।

हैज़ बन्द होने के 6 इलाज

﴾1﴿ अगर गरमी या ख़ुश्की के बाइ़स हैज़ बन्द हो जाए तो एक कप **सोंफ़ के अ़रक़** में एक छोटा चम्मच तरबूज़ के बीज का मग़्ज़ और एक चम्मच शह्द मिला कर सुब्ह़ व शाम पियें اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा हो जाएगा। पानी ख़ूब कसरत से पियें, हो सके तो रोज़ाना 12 गिलास पी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

लें ﴾2﴿ 25 ग्राम **गुड़** और 25 ग्राम **सोंफ़** एक किलो पानी में जोश दीजिये, अन्दाज़न जब एक पियाली रह जाए तो छान कर गर्म गर्म पी लीजिये। ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह व शाम येह इलाज कीजिये ﴾3﴿ हर खाने के साथ लह्सन का एक जवा (या'नी लह्सन की पोथी की काश, कली) बारीक काट कर निगल लीजिये और बेहतर है कि उबाल कर पी लीजिये। (नमाज़ और ज़िक्रो दुरूद के लिये मुंह ख़ूब साफ़ कीजिये ह़त्ता कि बदबू ख़त्म हो जाए) ﴾4﴿ तीन अ़दद छुहारे, मग़्ज़े बादाम 10 ग्राम, नारियल 10 ग्राम और किशमिश या'नी ख़ुश्क छोटे अंगूर 20 ग्राम हैज़ के दिनों में रोज़ाना गर्म दूध के साथ इस्ति'माल कीजिये ﴾5﴿ अय्यामे हैज़ से एक हफ़्ता क़ब्ल रोज़ाना दूध के साथ 25 ग्राम सोंफ़ इस्ति'माल कीजिये ﴾6﴿ आलू, मसूर और ख़ुश्क ग़िज़ाएं माहवारी में रुकावट बनती हैं लिहाज़ा इन अय्याम में इन से परहेज़ कीजिये।

हैज़ के दर्द का इलाज

25 ग्राम गुड़ और गाजर के बीज 15 ग्राम दो² गिलास पानी में उबालिये जब आधा गिलास रह जाए तो छान कर पी लीजिये। अगर हैज़ दर्द से आता हो तो उस के अय्याम में बिग़ैर दर्द के आने लगेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

"या ख़ुदा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से बांझपन के 5 इलाज

﴾1﴿ हर नमाज़ के बा'द दोनों मियां बीवी (अव्वल आख़िर एक बार

दुरूद शरीफ़ के साथ) कुरआने करीम में वारिद येह दुआ़ए इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन3 बार पढ़ते रहें :

رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ﳓ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿۴۰﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿۴۱﴾ (1) (پ۱۳ ابراھیم ۴۰۔۴۱)

《2》 दोनों हर नमाज़ के बा'द (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) दुआ़ए ज़-करिय्या भी तीन3 मर्तबा पढ़ लिया करें :

رَبِّ هَبْ لِیْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّیَّةً طَیِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِیْعُ الدُّعَآءِ ﴿۳۸﴾ (2) (پ۳ اٰلِ عمران ۳۸)

《3》 एक अ़दद जाइफ़ल बारीक पीस कर सात7 ह़िस्से कर लीजिये । तीन3 माह तक औ़रत एक एक ह़िस्सा रोज़ाना सुब्ह़ पानी से इस्ति'माल करे । मगर ह़ैज़ के दौरान न ले 《4》 12 ग्राम सोंफ़ और 50 ग्राम गुलक़न्द रोज़ाना रात को गर्म दूध से खाइये 《5》 आधा किलो शकर, आधा किलो सोंफ़, 250 ग्राम मग़ज़े बादाम, आधा किलो देसी घी । सोंफ़ को बारीक पीस कर गर्म घी में मिला दीजिये नीज़ शकर डाल दीजिये फिर चूल्हे से उतार कर कूटे हुए बादाम ऊपर डाल दीजिये । **तरकीबे इस्ति'माल :** जिस दिन माहवारी शुरूअ़ हो उस दिन से मियां बीवी दोनों तीस तीस ग्राम सुब्ह़ व शाम दूध के साथ इस्ति'माल

---

1. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और हमारी दुआ़ सुन ले ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन ह़िसाब क़ाइम होगा । **2. तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद, बेशक तू ही दुआ़ सुनने वाला ।

करना शुरूअ़ कर दें। (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 92 दिन)

ह़ामिला की तकालीफ़ के 6 इलाज

﴾1﴿ देसी घी में भुनी हुई हींग देसी घी के साथ खाने से **दर्दे ज़ेह** और चक्कर में फ़ाएदा होता है ﴾2﴿ अगर **ह़ामिला** को भूक न लगती हो तो दो[2] चम्मच **अदरक** के रस में सुपारी जितना **गुड़** और पाव चम्मच अजमा का चूरन मिला कर सुब्ह़ व शाम इस्ति'माल करने से भूक ख़ूब लगती है ﴾3﴿ दौराने ह़म्ल **बुख़ार** और विलादत के बा'द **दर्दे कमर** हो तो आधा चम्मच **पिसी हुई सूंठ**, आधा चम्मच **अजमा** और आधा चम्मच **देसी घी** मिला कर सुब्ह़ व शाम खिलाइये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आराम आ जाएगा ﴾4﴿ ह़ामिला रोज़ाना माल्टा और सिर्फ़ एक अ़दद **छोटा सेब** खाए, अगर मजबूरी हो तो तब भी आयरन की गोलियां कम से कम इस्ति'माल करे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर क़िस्म की बीमारी से ह़िफ़ाज़त होगी और **बच्चा ख़ूब सूरत** होगा। सेब और आयरन की गोलियां ज़ियादा खाने से **बच्चा काला** पैदा हो सकता है ﴾5﴿ क़ै, मतली, बद हज़्मी, गेस से पेट फूलना, बल्ग़म, पेट का दर्द और ह़ामिला की दीगर तकालीफ़ में **अजमा का चूरन** आधा चम्मच नीम गर्म पानी के साथ सुब्ह़ व शाम इस्ति'माल करना बहुत मुफ़ीद है ﴾6﴿ तीन[3] ग्राम पिसा हुवा **धनिया और 12 ग्राम शकर** को चावल के धोवन (या'नी चावल का धोया हुवा पानी) के साथ ह़ामिला इस्ति'माल करे तो क़ै में इफ़ाक़ा (कमी, फ़ाएदा) होता है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ह़सीन व अ़क़्लमन्द औलाद के लिये

ह़ामिला अगर ब कसरत ख़रबूज़ा खाए तो औलाद **ह़सीन** और सिह़्ह़त मन्द पैदा होगी اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ । और अगर ह़ामिला ''लोबिया'' (जो कि एक मश्हूर सब्ज़ी है) कसरत से खाए तो औलाद अ़क़्ल मन्द पैदा हो। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अय्यामे ह़म्ल के लिये बेहतरीन अ़मल

ह़म्ल में किसी क़िस्म की भी तक्लीफ़ हो उस के लिये नीज़ वज़्ए ह़म्ल (या'नी विलादत) में आसानी की ख़ात़िर सूरए मरयम (पारह 15) का विर्द बेह़द मुफ़ीद है। ह़ामिला रोज़ पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करे या कोई दूसरा पढ़ कर दम कर दे। रोज़ाना न पढ़ सके तो जब दर्द की शिद्दत हो या बच्चा पेट में टेढ़ा हो जाए तो पढ़ कर दम कर लिया करे। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कतें ख़ूब ज़ाहिर होंगी।

ह़म्ल में ताख़ीर

अगर ह़म्ल में मत़लूबा दर्द शुरूअ़ होने में ताख़ीर हो जाए तो बहुत पुराना गुड़ 30 या 40 ग्राम ले कर 100 ग्राम पानी में गर्म कीजिये, जब गुड़ पिघल जाए तो ''सुहागा'' और ''फूली हुई फट्करी'' दो[2] ग्राम मिला कर पिलाने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आसानी से विलादत हो जाएगी।

अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो......

सूरए इन्शिक़ाक़ की इब्तिदाई पांच[5] आयात तीन[3] बार पढ़े। (अव्वल आख़िर तीन मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरूअ़ में हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले।

रोज़ाना येह अ़मल करती रहे। वक़्तन फ़ वक़्तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा सीधा हो जाएगा। दर्दे ज़ेह के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है।

सफ़ेद पानी

﴾1﴿ तीन[3] तीन[3] ग्राम ज़ीरा और शकर को पीस कर मिला लीजिये। इस चूरन को मुनासिब मिक़्दार में चावल के धोवन में मिला कर पीने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सफ़ेद पानी गिरना बन्द हो जाएगा ﴾2﴿ 6 ग्राम ख़ालिस घी और एक पक्का केला साथ खाने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ पानी गिरना बन्द होगा।

''या फ़ातिमा'' के सात हुरूफ़ की निस्बत से हम्ल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज

﴾1﴿ لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه (ए'राब लगाने की हाजत नहीं अलबत्ता दोनों जगह ٥ के दाएरे खुले रखिये) किसी काग़ज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) ह़स्बे ज़रूरत ता'वीज़ की तरह तह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेग्ज़ीन या चमड़े में सी कर **हामिला** गले में पहन या बाज़ू में बांध ले। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **हम्ल** की भी हिफ़ाज़त होगी और बच्चा भी बला व आफ़त से सलामत रहेगा। अगर 55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही **बच्चे के मुंह** पर लगा दें तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़हीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से भी महफ़ूज़ रहेगा।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

अगर येही पढ़ कर **ज़ैत** (या'नी ज़ैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के बच्चे के जिस्म पर नरमी के साथ मल दिया जाए तो बेह़द मुफ़ीद है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस त़रह़ का पढ़ा हुवा ज़ैत बड़ों के जिस्मानी दर्दों में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 995) **《2》** لَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰه (बिग़ैर ए'राब मगर दोनों जगह ه के दाएरे खुले हों) किसी रिकाबी (या काग़ज़) पर 11 बार लिख कर धो कर औ़रत को पिला दीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ह़म्ल** की ह़िफ़ाज़त होगी। जिस औ़रत को दूध न आता हो या कम आता हो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस के लिये भी येह अ़मल मुफ़ीद है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख कर पिलाएं हर त़रह़ से इख़्तियार है **《3》** **يا حَيُّ يا قَيُّومُ** 111 बार किसी काग़ज़ पर लिख कर ह़ामिला के पेट पर बांध दीजिये और विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने में ह़रज नहीं) اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़म्ल भी मह़फ़ूज़ रहेगा और बच्चा भी सिह़ह़त मन्द पैदा होगा। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 1296) **《4》** ह़िफ़ाज़ते ह़म्ल के लिये शुरूए ह़म्ल से ले कर बच्चे का दूध छुड़ाने तक रोज़ाना एक बार **सूरए वश्शम्स** (पारह 30) पढ़े **《5》** **ह़म्ल** ज़ाएअ़ होने के ख़त़रे की सूरत में रोज़ाना बा'दे नमाज़े फ़ज्र शोहर ह़ामिला ज़ौजा के पेट पर शहादत की उंगली रख कर दस10 बार दाएरा बनाए और हर बार उंगली घुमाते हुए **يا مُبْتَدِئُ** पढ़े **《6》** **يا رَقِيبُ** सात बार रोज़ाना पांचों

नमाज़ों के बा'द अपने पेट पर हाथ रख कर हामिला पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ बच्चा ज़ाएअ़ न होगा ﴿7﴾ जिस औ़रत का ह़म्ल गिर जाता हो उसे चाहिये कि आग़ाज़ से ले कर आख़िरी दिन तक रोज़ाना सुब्ह़ ख़ुश्क धनिया 21 दाने और शाम को काला ज़ीरा दो[2] चुटकियां ठन्डे पानी के साथ निगल लिया करे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुक़र्ररा वक़्त पर तन्दुरुस्त बच्चे की विलादत हो जाएगी।

लीकोरिया का इ़लाज

﴿1﴾ नाश्ते के बा'द **तीन[3] ख़ुश्क अन्जीर** खाइये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा।

इ़र्क़ुन्निसा के दो[2] इ़लाज

﴿1﴾ रोज़ाना दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ **सू-रतुल फ़ातिह़ा** एक बार और सात मरतबा येह दुआ़ पढ़ कर दम कर दीजिये : اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّیْ سُوْءَ مَااَجِدُ (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो عَنِّیْ की जगह मर्द के लिये (1) عَنْهُ और औ़रत के लिये (2) عَنْھَا कहे। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा) ﴿2﴾ یا مُحْیِیُ सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या **इ़र्क़ुन्निसा** या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उ़ज़्व के ज़ाएअ़ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये। (मुद्दत : ता हुसूले शिफ़ा)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1, 2 : या'नी इस से

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

कपड़े पाक करने का त़रीक़ा
(मअ़ नजासतों का बयान)

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है : "जिस ने मुझ पर सो100 मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शु-हदा के साथ रखेगा।"

(مَجْمَعُ الزَّوَائِد، ج۱۰، ص۲۵۳، حدیث ۱۷۲۹۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

नजासत की अक़्साम

नजासत की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ नजासते ग़लीज़ा ﴾2﴿ नजासते ख़फ़ीफ़ा। (फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, जि. 1, स. 10)

नजासते ग़लीज़ा

﴾1﴿ इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि उस से ग़ुस्ल या वुज़ू वाजिब हो **नजासते ग़लीज़ा** है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै, हैज़ व निफ़ास व इस्तिह़ाज़े का ख़ून, मनी,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

मज़ी, वदी । (فتاوی عالمگیری ج ۱ ص٤٦) ﴾2﴿ जो ख़ून ज़ख़्म से बहा न हो पाक है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 280) ﴾3﴿ दुखती आंख से जो पानी निकले, **नजासते ग़लीज़ा** है । यूंही नाफ़ या पिस्तान से दर्द के साथ पानी निकले, **नजासते ग़लीज़ा** है । (ऐज़न, स. 269, 270) ﴾4﴿ ख़ुश्की के हर जानवर का बहता ख़ून, मुर्दार का गोश्त और चर्बी, (या'नी जिस जानवर में बहता ख़ून होता है वोह अगर बिग़ैर ज़ब्ह़े शर-ई के मर जाए तो मुर्दार है, नीज़ मजूसी या बुत परस्त या मुरतद का ज़बीह़ा भी मुरदार है अगर्चे उस ने ह़लाल जानवर म-सलन बकरी वग़ैरा को "بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَر" पढ़ कर ज़ब्ह़ किया हो उस का गोश्त पोस्त (चमड़ा), सब नापाक हो गया । हां मुसल्मान ने ह़राम जानवर को भी अगर शर-ई त़रीक़े से ज़ब्ह़ कर लिया तो उस का गोश्त पाक है अगर्चे खाना ह़राम है, सिवा ख़िन्ज़ीर के कि वोह नजिसुल ऐन है किसी त़रह़ पाक नहीं हो सकता) ﴾5﴿ ह़राम चौपाए जैसे कुत्ता, शेर, लोमड़ी, बिल्ली, चूहा, गधा, ख़च्चर, हाथी और सुवर का पाख़ाना, पेशाब और घोड़े की लीद और ﴾6﴿ हर ह़लाल चौपाए का पाख़ाना जैसे गाय भेंस का गोबर, बकरी ऊंट की मेंगनी और ﴾7﴿ जो परिन्दा कि ऊंचा न उड़े उस की बीट जैसे मुर्ग़ी और बत़ (बत़ख़) छोटी हो ख़्वाह बड़ी, और ﴾8﴿ हर क़िस्म की शराब और नशा लाने वाली ताड़ी और सेंधी और ﴾9﴿ सांप का पाख़ाना पेशाब और ﴾10﴿ उस जंगली सांप और मेंडक का गोश्त जिन में बहता ख़ून होता है अगर्चे ज़ब्ह़ किये गए हों, यूंहीं उन की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो और ﴾11﴿ सुवर का गोश्त और

हड्डी और बाल अगर्चे ज़ब्ह़ किया गया हो येह सब **नजासते ग़लीज़ा** हैं । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 112, 113) ﴾**12**﴿ छिप–कली या गिरगट का ख़ून **नजासते ग़लीज़ा** है । (ऐज़न, स. 113) ﴾**13**﴿ हाथी के सूंड की रत़ूबत और शेर, कुत्ते, चीते और दूसरे दरिन्दे चौपायों का लुआ़ब (थूक) **नजासते ग़लीज़ा** है । (ऐज़न)

दूध पीते बच्चों का पेशाब नापाक है

अक्सर अ़वाम में जो येह मश्हूर है कि **दूध** पीते बच्चे चूंकि खाना नहीं खाते इस लिये इन का पेशाब नापाक नहीं होता । येह ग़लत़ है, **दूध** पीते बच्चे और बच्ची का पेशाब पाख़ाना भी नजासते ग़लीज़ा है । इसी त़रह़ अगर **दूध** पीते बच्चे ने **दूध** डाल दिया अगर मुंह भर है तो नजासते ग़लीज़ा है । (मुलख़्ख़स़न बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2, स. 112)

नजासते ग़लीज़ा का हुक्म

नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना **फ़र्ज़** है, बिग़ैर पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ न होगी । और इस सूरत में जान बूझ कर नमाज़ पढ़ना सख़्त **गुनाह** है, और अगर नमाज़ को हलका जानते हुए इस त़रह़ नमाज़ पढ़ी तो कुफ़्र है ।

नजासते ग़लीज़ा अगर दिरहम के बराबर कपड़े या बदन पर लगी हुई हो तो उस का पाक करना वाजिब है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ **मकरूहे तह़रीमी** होगी और ऐसी सूरत में

कपड़े या बदन को पाक कर के **दोबारा नमाज़** पढ़ना वाजिब है, जान बूझ कर इस त़रह़ नमाज़ पढ़नी गुनाह है । अगर **नजासते ग़लीज़ा** दिरहम से कम कपड़े या बदन पर लगी हुई है तो उस का पाक करना **सुन्नत** है अगर बिग़ैर पाक किये नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ हो जाएगी, मगर ख़िलाफ़े सुन्नत, ऐसी नमाज़ को दोहरा लेना **बेहतर** है ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 111)

दिरहम की मिक़्दार की वज़ाह़त

नजासते ग़लीज़ा का दिरहम या इस से कम या ज़ियादा होने से मुराद येह है कि नजासते ग़लीज़ा अगर **गाढ़ी** हो म–सलन पाख़ाना, लीद वग़ैरा तो दिरहम से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशा (या'नी 4.374 ग्राम) है, लिहाज़ा अगर नजासत दिरहम से ज़ियादा या कम है तो उस से मुराद वज़्न में साढ़े चार माशे से कम या ज़ियादा होना है और अगर नजासते ग़लीज़ा पतली हो जैसे पेशाब वग़ैरा तो दिरहम से मुराद लम्बाई चौड़ाई है या'नी हथेली को ख़ूब फैला कर हमवार रखिये और उस पर आहिस्तगी से इतना पानी डालिये कि इस से ज़ियादा पानी न रुक सके, अब जितना पानी का फैलाव है उतना बड़ा दिरहम समझा जाएगा । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2, स. 111)

किसी कपड़े या बदन पर चन्द जगह **नजासते ग़लीज़ा** लगी और किसी जगह दिरहम के बराबर नहीं, मगर मज्मूआ़ दिरहम के बराबर है, तो दिरहम के बराबर समझी जाएगी और ज़ाइद है तो ज़ाइद । **नजासते ख़फ़ीफ़ा** में भी मज्मूए़ ही पर हुक्म दिया जाएगा । (ऐज़न, स. 115)

नजासते ख़फ़ीफ़ा

जिन जानवरों का गोश्त ह़लाल है, (जैसे गाय, बैल, भेंस, बकरी, ऊंट वग़ैरहा) उन का पेशाब, नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परिन्द का गोश्त ह़राम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं, (जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़) उस की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है। (ऐज़न, स. 113)

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म

नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म येह है कि कपड़े के जिस ह़िस्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है अगर उस का चौथाई से कम है तो **मुआ़फ़** है, म–सलन आस्तीन में **नजासते ख़फ़ीफ़ा** लगी हुई है तो अगर आस्तीन की चौथाई से कम है या दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या इसी त़रह़ हाथ में लगी है तो हाथ की चौथाई से कम है तो **मुआ़फ़** है या'नी इस सूरत में पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी और अलबत्ता अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिग़ैर पाक किये **नमाज़ न होगी।** (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2, स. 111)

जुगाली का हुक्म

हर चौपाए की **जुगाली** का वोही हुक्म है जो उस के पाख़ाने का। (ऐज़न, स. 113, دُرِّمختار، ج۱،ص ۶۲۰) ह़ैवानात का अपने चारे को मे'दे में से निकाल कर मुंह में दोबारा चबाना **जुगाली** कहलाता है। जैसा कि अक्सर गाय और ऊंट अपना मुंह चलाते रहते हैं और उन से साबुन की त़रह़ झाग निकलता है, उन की (या'नी गाय और ऊंट की)

जुगाली में निकलने वाला झाग वग़ैरा **नजासते ग़लीज़ा** है।

पित्ते का हुक्म

हर जानवर के **पित्ते** का वोही हुक्म है जो उस के पेशाब का, ह़राम जानवरों का **पित्ता नजासते ग़लीज़ा** और ह़लाल का **नजासते ख़फ़ीफ़ा** है। (دُرِّمُختار،ج۱،ص۶۲۰, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2, स. 113)

जानवरों की क़ै

हर जानवर की **क़ै** उस की बीट का हुक्म रखती है या'नी जिस की बीट पाक है जैसे चिड़िया या कबूतर उस की **क़ै** भी पाक है और जिस की **नजासते ख़फ़ीफ़ा** है जैसे बाज़ या कव्वा, उस की क़ै भी **नजासते ख़फ़ीफ़ा**। और जिस की नजासते ग़लीज़ा है जैसे बत़ (बत़ख़) या मुर्ग़ी, उस की क़ै भी नजासते ग़लीज़ा। और क़ै से मुराद वोह खाना पानी वग़ैरा है जो पोटे (या'नी मे'दे) से बाहर निकले कि जिस जानवर की बीट नापाक है उस का पोटा मा'दिने नजासात (नजासतों की जगह) है पोटे से जो चीज़ बाहर आएगी ख़ुद नजिस (नापाक) होगी या नजिस से मिल कर आएगी बहर ह़ाल मिस्ले बीट नजासत रखेगी **ख़फ़ीफ़ा** में ख़फ़ीफ़ा, **ग़लीज़ा** में ग़लीज़ा, ब ख़िलाफ़ उस चीज़ के जो अभी पोटे तक न पहुंची थी कि निकल आई। म–सलन **मुर्ग़ी** ने पानी पिया अभी गले ही में था कि उच्छू[1] लगा और निकल गया येह पानी बीट

---

1. पानी पीने के दौरान बा'ज़ अवक़ात गले में फन्दा सा लगता है और खांसी उठती है इस को उच्छू लगना कहते हैं।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

का हुक्म न रखेगा। لِاَنَّهٗ مَا اسْتَحَالَ اِلٰى نَجَاسَةٍ وَّلَا لَا قٰى مَحَلَّهَا (या'नी क्यूं कि इस ने नजासत में हुलूल नहीं किया (मिक्स न हुवा) और न ही नजासत की जगह से मिला) बल्कि इसे सुअर या'नी झूटे का हुक्म दिया जाएगा कि उस के मुंह से मिल कर आया है। उस जानवर का झूटा **नजासते ग़लीज़ा** या ख़फ़ीफ़ा या मश्कूक या मक्रूह या त़ाहिर (या'नी पाक) जैसा होगा वैसा ही उस चीज़ का हुक्म दिया जाएगा जो मे'दे तक पहुंचने से पहले बाहर आई जो मुर्ग़ी छूटी फिरे उस का झूटा मक्रूह है येह पानी भी मक्रूह होगा और पोटे (मे'दे) में पहुंच कर आता तो **नजासते ग़लीज़ा** होता। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 4, स. 390, 391)

दूध या पानी में नजासत पड़ जाए तो......?

नजासते ग़लीज़ा और ख़फ़ीफ़ा के जो अलग अलग हुक्म बताए गए हैं येह अह़काम उसी वक़्त हैं जब कि **बदन या** कपड़े में लगे। अगर किसी पतली चीज़ म-सलन **दूध** या पानी में नजासत पड़ जाए चाहे ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा दोनों सूरतों में वोह दूध या पानी जिस में **नजासत** पड़ी है नापाक हो जाएगा अगर्चे एक ही क़त़रा नजासत पड़ी हो। नजासते ख़फ़ीफ़ा अगर **नजासते ग़लीज़ा** में मिल जाए तो वोह तमाम **नजासते ग़लीज़ा** हो जाएगी।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा 2, स. 112, 113)

दीवार, ज़मीन, दरख़्त वग़ैरा कैसे पाक हों ?

﴾1﴿ **नापाक** ज़मीन अगर सूख जाए और नजासत का असर या'नी रंग

व बू जाते रहें तो वोह ज़मीन **पाक** हो गई ख़्वाह वोह **नापाकी** हवा से सूखी हो या धूप से या आग से, लिहाज़ा उस ज़मीन पर **नमाज़** पढ़ सकते हैं मगर उस ज़मीन से तयम्मुम नहीं कर सकते **﴾2﴿** दरख़्त और घास और दीवार और ऐसी ईंट जो ज़मीन में जड़ी हो, येह सब ख़ुश्क हो जाने से पाक हो गए (जब कि नजासत का असर रंग व बू जाते रहे हों) और अगर ईंट जड़ी हुई न हो तो ख़ुश्क होने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है। यूंही दरख़्त या घास (नजासत) सूखने के पेशतर काट लें, तो त़हारत (या'नी पाक करने) के लिये धोना ज़रूरी है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 123) **﴾3﴿** अगर पथ्थर ऐसा हो जो ज़मीन से जुदा न हो सके तो ख़ुश्क होने से पाक हो जाएगा जब कि नजासत का असर ज़ाइल हो जाए वरना धोने की ज़रूरत है। (ऐज़न) **﴾4﴿** जो चीज़ ज़मीन से मुत्तसिल (या'नी मिली हुई) थी और नजिस हो गई, फिर ख़ुश्क होने (और नजासत का असर दूर हो जाने) के बा'द अलग की गई, तो अब भी पाक ही है। (ऐज़न, स. 124) **﴾5﴿** जो चीज़ सूखने या रगड़ने वग़ैरा से पाक हो गई फिर उस के बा'द गीली हो गई तो वोह चीज़ नापाक न होगी (ऐज़न) जैसे ज़मीन पर पेशाब पड़ने से वोह नापाक हो गई फिर वोह ज़मीन सूख गई और नजासत का असर ख़त्म हो गया तो वोह ज़मीन पाक हो गई। अब अगर वोह ज़मीन फिर किसी पाक चीज़ से गीली हो गई तो नापाक नहीं होगी।

ख़ून आलूद ज़मीन पाक करने का त़रीक़ा

बच्चे या बड़े ने ज़मीन पर पेशाब पाख़ाना कर दिया या ज़ख़्म

वग़ैरा से ख़ून या पीप या जानवर ज़ब्ह़ करते वक़्त निकला हुवा ख़ून ज़मीन पर गिर गया और बिग़ैर पानी के वैसे ही किसी कपड़े वग़ैरा से पोंछ लिया, सूखने और नजासत का असर ख़त्म हो जाने के बा'द वोह ज़मीन पाक हो गई। उस पर नमाज़ पढ़ सकते हैं।

गोबर से लीपी हुई ज़मीन

जो ज़मीन गोबर से लीसी या लीपी गई अगर्चे वोह सूख जाए फिर भी ऐन उस ज़मीन पर नमाज़ जाइज़ नहीं, अलबत्ता ऐसी ज़मीन जो गोबर से लीसी या लीपी गई हो, उस के सूख जाने के बा'द उस पर कोई मोटा कपड़ा बिछा कर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ दुरुस्त होगी।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 126)

जिन परिन्दों की बीट पाक है

﴾1﴿ **चमगादड़**[1] की **बीट** और पेशाब दोनों पाक हैं (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار، ج۱،ص۵۷٤, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 113) ﴾2﴿ जो ह़लाल परिन्दे ऊंचे उड़ते हैं, जैसे (चिड़िया), कबूतर, मैना, मुर्ग़ाबी वग़ैरा इन की बीट **पाक** है। (ऐज़न, स. 113)

मछली का ख़ून पाक है

मछली और पानी के दीगर जानवरों और खटमल और मच्छर का ख़ून और ख़च्चर और गधे का लुआ़ब और पसीना **पाक** है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 114)

---

1. चमगादड़ एक अंधेरा पसन्द परिन्दा है जो दिन के वक़्त दरख़्तों और छतों वग़ैरा में उल्टा लटका रहता और रात को उड़ता है।)

पेशाब की बारीक छींटें

﴾1﴿ **पेशाब** की निहायत बारीक छींटें सूई की नोक बराबर की बदन या कपड़े पर पड़ जाएं, तो कपड़ा और बदन पाक रहेगा। (عالمگیری ج۱،ص٤٦, बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 114) ﴾2﴿ जिस कपड़े पर पेशाब की ऐसी ही बारीक छींटें पड़ गईं, अगर वोह कपड़ा पानी में पड़ गया तो पानी भी **नापाक** न होगा। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 114)

गोश्त में बचा हुवा ख़ून

गोश्त, तिल्ली, कलेजी में जो ख़ून बाक़ी रह गया **पाक** है और अगर येह चीज़ें बहते ख़ून में सन जाएं (या'नी आलूदा हो जाएं) तो **नापाक** हैं, बिग़ैर धोए पाक न होंगी। (ऐज़न)

जानवरों की सूखी हड्डियां

सुवर के इलावा तमाम जानवरों की वोह हड्डी जिस पर मुर्दार की चिक्नाई न लगी हो **पाक** है, और बाल और दांत भी पाक हैं।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 117)

ह़राम जानवर का दूध

ह़राम जानवरों का दूध नजिस है, अलबत्ता घोड़ी का दूध **पाक** है मगर खाना जाइज़ नहीं। (ऐज़न, स. 115)

चूहे की मेंगनी

चूहे की मेंगनी (नापाक है मगर) गेहूं में मिल कर पिस गई या

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

तेल में पड़ गई तो आटा और तेल पाक है, हां अगर मज़े में फ़र्क़ आ जाए तो नजिस (नापाक) है और अगर रोटी के अन्दर मिली तो उस के आस पास से थोड़ी सी अलग कर दें, बाक़ी में कुछ ह़रज नहीं।

(عالمگیری ج۱،ص٤٦، ٤٨, बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 115)

ग़लाज़त पर बैठने वाली मख्खियां

﴾1﴿ पाख़ाने पर से मख्खियां उड़ कर कपड़े पर बैठीं कपड़ा नजिस (नापाक) न होगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 116)

﴾2﴿ रास्ते की कीचड़ (चाहे बारिश की हो या कोई और) पाक है जब तक उस का नजिस होना मा'लूम न हो, तो अगर पाउं या कपड़े में लगी और बे धोए नमाज़ पढ़ ली हो गई मगर धो लेना बेहतर है। (ऐज़न)

बारिश के पानी के अह़काम

﴾1﴿ छत के परनाले से मींह (बारिश) का पानी गिरे वोह पाक है अगर्चे छत पर जा बजा नजासत पड़ी हो, अगर्चे नजासत परनाले के मूंह पर हो, अगर्चे नजासत से मिल कर जो पानी गिरता हो वोह निस्फ़ से कम या बराबर या ज़ियादा हो जब तक नजासत से पानी के किसी वस्फ़ में तग़य्युर न आए (या'नी जब तक नजासत की वज्ह से पानी का रंग या बू या ज़ाएक़ा तब्दील न हो जाए) येही सह़ीह़ है और इसी पर ए'तिमाद है और अगर मींह (बरसात) रुक गया और पानाी का बहना मौक़ूफ़ हो गया तो अब वोह ठहरा हुवा पानी और जो छत से टपके नजिस है।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 52) ❀2❀ यूंही नालियों से बरसात का बहता पानी पाक है जब तक नजासत का रंग, या बू, या मज़ा उस में ज़ाहिर न हो, रहा उस से वुज़ू करना अगर उस पानी में नजासते मरइय्या (या'नी नज़र आने वाली नजासत) के अज्ज़ा ऐसे बहते जा रहे हों जो चुल्लू लिया जाएगा उस में एकआध ज़र्रा उस का भी ज़रूर होगा जब तो हाथ में लेते ही नापाक हो गया वुज़ू उस से ह़राम वरना जाइज़ है और बचना बेहतर है। (ऐज़न) ❀3❀ नाली का पानी कि बा'द बारिश के ठहर गया अगर उस में नजासत के अज्ज़ा मह़सूस हों या उस का रंग व बू मह़सूस हो तो नापाक है वरना पाक। (ऐज़न)

गलियों में खड़ा हुवा बारिश का पानी

निचान वाली गलियों और सड़कों पर बारिश का जो पानी खड़ा हो जाता है वोह पाक है अगर्चे उस का रंग गदला होता है। बा'ज़ अवक़ात गटर का पानी भी उस में शामिल हो जाता है लेकिन यहां भी येही क़ाइदा है कि नापाकी के सबब से इस पानी के रंग या मज़ा या बू में तब्दीली आई तो नापाक है वरना पाक। हां अगर बारिश थम गई, पानी भी बहना बन्द हो गया और दह दर दह से कम है और उस में कोई नजासत या उस के अज्ज़ा नज़र आ रहे हैं तो अब नापाक है। इसी त़रह़ उस में किसी ने पेशाब कर दिया तो नापाक हो गया। चप्पल से उड़ कर जो कीचड़ के छींटे पाजामे के पिछले ह़िस्से पर पड़ते हैं वोह पाक हैं जब तक यक़ीनी त़ौर पर इन का नापाक होना मा'लूम न हो।

सड़क पर छिड़के जाने वाले पानी के छींटे

सड़क पर पानी छिड़का जा रहा था ज़मीन से छींटें उड़ कर कपड़े पर पड़ें, कपड़ा नजिस न हुवा मगर धो लेना बेहतर है ।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 116)

ढेलों से पाकी लेने के बा'द आने वाला पसीना

बा'द पाख़ाना पेशाब के ढेलों से इस्तिन्जा कर लिया, फिर उस जगह से पसीना निकल कर कपड़े या बदन में लगा तो बदन और कपड़े नापाक न होंगे । (عالمگیری ج ۱ص ٤٨, बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 117)

कुत्ता बदन से छू जाए

कुत्ता बदन या कपड़े से छू जाए तो अगर्चे उस का जिस्म तर हो बदन और कपड़ा पाक है, हां अगर उस के बदन पर नजासत लगी हो तो और बात है या उस का लुआ़ब लगे तो नापाक कर देगा ।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 117)

कुत्ता आटे मे मुंह डाल दे तो ?

कुत्ते वग़ैरा किसी ऐसे जानवर (म–सलन सुवर, शेर, चीता, भेड़िया, हाथी, गीदड़ और दूसरे दरिन्दों में से किसी) ने जिस का लुआ़ब नापाक है, आटे में मूंह डाला तो अगर गुंधा हुवा था तो जहां उस का मूंह पड़ा उस को अ़लाहि़दा कर दे बाक़ी पाक है और सूखा था तो जितना तर हो गया वोह फेंक दे । (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 117)

कुत्ता बरतन में मुंह डाल दे

कुत्ते ने बरतन में मूंह डाला तो अगर वोह चीनी या धात का है या मिट्टी का रो-ग़नी या इस्ति'माली चिकना तो तीन[3] बार धोने से पाक हो जाएगा वरना हर बार सुखा कर। हां चीनी में बाल (या'नी बहुत बारीक शिगाफ़) हो या और बरतन में दराड़ हो तो तीन बार सुखा कर पाक होगा फ़क़त धोने से पाक न होगा। (ऐज़न, स. 64)

मटके को कुत्ते ने ऊपर (बाहरी ह़िस्सों) से चाटा उस में का पानी नापाक न होगा। (ऐज़न)

बिल्ली पानी में मुंह डाल दे तो ?

घर में रहने वाले जानवर जैसे बिल्ली, चूहा, सांप, छिप-कली का झूटा मक्रूह है। (ऐज़न, स. 65)

तीन[3] म-दनी मुन्नियों की मौत का अलम-नाक वाक़िआ़

दूध पानी और खाने पीने की चीज़ें ढक कर रखनी चाहिएं। बाबुल मदीना कराची का इ़ब्रतनाक वाक़िआ़ है कि एक मियां बीवी अपनी तीन छोटी छोटी बच्चियों को पड़ोसन या किसी अ़ज़ीज़ा के सिपुर्द कर के ह़ज के लिये गए, ह़ज से क़ब्ल ही यकायक तीनों म-दनी मुन्नियां एक साथ मौत की नींद सो गईं ! कोहराम पड़ गया, मां बाप ह़ज के बिग़ैर ही रोते धोते मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا से बाबुल मदीना आ पहुंचे, तह़क़ीक़ करने पर इन्किशाफ़ हुवा कि दूध खुला हुवा रखा था उस में छिप-कली गिर कर मर गई थी वोही दूध

बच्चियों ने पिया और ज़ह्र के असर से येह अलमिय्या पेश आया। कहा जाता है अगर छिप–कली मश्रूब में मर कर फट जाए तो 100 आदमियों के लिये उस का ज़ह्र काफ़ी है !

जानवरों का पसीना

जिस का झूटा नापाक है उस का पसीना और लुआ़ब (या'नी थूक) भी नापाक है और जिस का झूटा पाक उस का पसीना और लुआ़ब भी पाक और जिस का झूटा मक्रूह उस का लुआ़ब और पसीना भी मक्रूह। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 66)

गधे का पसीना पाक है

गधे, ख़च्चर का पसीना अगर कपड़े में लग जाए तो कपड़ा पाक है चाहे कितना ही ज़ियादा लगा हो। (ऐज़न)

ख़ून वाले मुंह से पानी पीना

किसी के मुंह से इतना ख़ून निकला कि थूक में सुर्ख़ी आ गई और उस ने फ़ौरन पानी पिया तो येह झूटा (पानी) नापाक है और सुर्ख़ी जाती रहने के बा'द उस पर लाज़िम है कि कुल्ली कर के मुंह पाक करे और अगर कुल्ली न की और चन्द बार थूक का गुज़र मौज़ए नजासत (या'नी नापाक ह़िस्से) पर हुवा ख़्वाह निगलने में या थूकने में यहां तक कि नजासत का असर न रहा तो त़हारत हो गई इस के बा'द अगर पानी पियेगा तो पाक रहेगा अगर्चे ऐसी सूरत में थूक निगलना सख़्त नापाक बात और गुनाह है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 63)

औ़रत के पर्दे की जगह की रत़ूबत

औ़रत के पेशाब के मक़ाम से जो रत़ूबत निकले पाक है, कपड़े या बदन में लगे तो धोना ज़रूरी नहीं हां धो लेना बेहतर है।

(ऐज़न, स. 117)

सड़ा हुवा गोश्त

जो गोश्त सड़ गया बदबू ले आया उस का खाना ह़राम है अगर्चे नजिस (नापाक) नहीं। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 117)

ख़ून की शीशी

अगर नमाज़ पढ़ी और जेब वग़ैरा में शीशी है और उस में पेशाब या ख़ून या शराब है तो नमाज़ न होगी और जेब में अन्डा है और उस की ज़र्दी ख़ून हो चुकी है तो नमाज़ हो जाएगी। (ऐज़न, स. 114)

मय्यित के मुंह का पानी

मुर्दे के मुंह का पानी नापाक है।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 1, स. 268, دُرِّمُختار ج ۱ ص ۲۹۰)

नापाक बिछोना

﴾1﴿ भीगी हुई नापाक ज़मीन या नजिस (नापाक) बिछोने पर सूखे हुए पाउं रखे और पाउं में तरी आ गई तो नजिस (नापाक) हो गए और सील (या'नी ऐसी नमी जो पाउं को तर न कर सके, ठन्डक) है तो नहीं।

(बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 115)

﴾2﴿ नजिस (नापाक) कपड़ा पहन कर या नजिस (नापाक) बिछोने पर

सोया और पसीना आया अगर पसीने से वोह नापाक जगह भीग गई फिर उस से बदन तर हो गया तो नापाक हो गया वरना नहीं।

(ऐज़न, स. 116)

गीली रुमाली

मियानी[1] तर थी और हवा निकली तो कपड़ा नजिस न होगा। (ऐज़न)

इन्सानी खाल का टुकड़ा

आदमी की खाल अगर्चे नाख़ुन बराबर थोड़े पानी (या'नी दह दर दह से कम) में पड़ जाए वोह पानी नापाक हो गया और ख़ुद नाख़ुन गिर जाए तो नापाक नहीं। (ऐज़न)

उपला (सूखा हुवा गोबर)

﴾1﴿ उपले (या'नी गाय भेंस का सूखा हुवा गोबर) जला कर खाना पकाना जाइज़ है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 124) ﴾2﴿ उपले (या'नी गाय भेंस के सूखे हुए गोबर) का धुवां रोटी में लगा तो रोटी नापाक न हुई। (ऐज़न, स. 116) ﴾3﴿ उपले की राख पाक है और अगर राख होने से क़ब्ल बुझ गया तो नापाक। (ऐज़न, स. 118)

तवे पर नापाक पानी छिड़क दिया तो ?

तन्नूर या तवे पर नापाक पानी का छींटा डाला और आंच से उस की तरी जाती रही अब जो रोटी लगाई गई पाक है। (ऐज़न, स. 124)

1. मियानी या'नी दोनों पाइंचों के बीच का कपड़ा। इस को रुमाली भी कहते हैं।

ह़राम जानवर का गोश्त और चमड़ा कैसे पाक हो

सुवर के सिवा हर जानवर ह़लाल हो या ह़राम जब कि ज़ब्ह़ के क़ाबिल हो, और बिस्मिल्लाह कह कर ज़ब्ह़ किया गया तो उस का गोश्त और खाल पाक है, कि नमाज़ी के पास अगर वोह गोश्त है या उस की खाल पर नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ हो जाएगी मगर ह़राम जानवर (का गोश्त वग़ैरा खाना) ज़ब्ह़ से ह़लाल न होगा ह़राम ही रहेगा।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 124)

बकरे की खाल पर बैठने से आ़जिज़ी पैदा होती है

दरिन्दे की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो न उस पर बैठना चाहिये न नमाज़ पढ़नी चाहिये कि मिज़ाज में सख़्ती और तकब्बुर पैदा होता है, बकरी (बकरा) और मेंढे की खाल पर बैठने और पहनने से मिज़ाज में नरमी और इन्किसार (आ़जिज़ी) पैदा होता है, कुत्ते की खाल अगर्चे पका (या'नी सुखा) ली गई हो या वोह ज़ब्ह़ कर लिया गया हो इस्ति'माल में न लाना चाहिये कि आइम्मा के इख़्तिलाफ़ और अ़वाम की नफ़रत से बचना मुनासिब है। (ऐज़न, स. 124, 125)

जो नजासत दिखाई देती है उस को मरइय्या और जो नहीं दिखाई देती उसे ग़ैर मरइय्या कहते हैं। (ऐज़न, स. 54)

गाढ़ी नजासत वाला कपड़ा किस त़रह़ धोए

नजासत अगर दलदार या'नी गाढ़ी हो जिसे नजासते मरइय्या कहते हैं (जैसे पाख़ाना, गोबर, ख़ून वग़ैरा) तो धोने में गिनती की कोई

शर्त़ नहीं बल्कि उस को दूर करना ज़रूरी है, अगर एक बार धोने से दूर हो जाए तो एक ही मरतबा धोने से पाक हो जाएगा और अगर चार पांच मरतबा धोने से दूर हो तो चार पांच मरतबा धोना पड़ेगा हां अगर तीन मरतबा से कम में नजासत दूर हो जाए तो तीन बार पूरा कर लेना मुस्तह़ब है। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 119)

अगर नजासत का रंग कपड़े पर बाक़ी रह जाए तो ?

अगर नजासत दूर हो गई मगर उस का कुछ असर, रंग या बू बाक़ी है तो उसे भी ज़ाइल करना लाज़िम है हां अगर उस का असर ब दिक़्क़त (या'नी दुश्वारी से) जाए तो असर दूर करने की ज़रूरत नहीं तीन मरतबा धो लिया पाक हो गया, साबुन या खटाई या गर्म पानी (या किसी क़िस्म के केमीकल वग़ैरा) से धोने की ह़ाजत नहीं। (ऐज़न)

पतली नजासत वाला कपड़ा पाक करने के मु-तअ़ल्लिक़ 6 म-दनी फूल

﴾1﴿ अगर नजासत रक़ीक़ (या'नी पतली जैसे पेशाब वग़ैरा) हो तो तीन मर्तबा धोने और तीनों मर्तबा ब कुव्वत (या'नी पूरी त़ाक़त से) निचोड़ने से पाक होगा और कुव्वत के साथ निचोड़ने के येह मा'ना हैं कि वोह शख़्स अपनी त़ाक़त भर इस त़रह़ निचोड़े कि अगर फिर निचोड़े तो उस से कोई क़त़रा न टपके, अगर कपड़े का ख़याल कर के अच्छी त़रह़ नहीं निचोड़ा तो पाक न होगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 120) **﴾2﴿** अगर धोने वाले ने अच्छी त़रह़ निचोड़ लिया मगर अभी ऐसा है कि अगर

कोई दूसरा शख़्स जो त़ाक़त में उस से ज़ियादा है निचोड़े तो दो एक बूंद टपक सकती है तो उस (पहले निचोड़ने वाले) के ह़क़ में पाक और दूसरे के ह़क़ में नापाक है। इस दूसरे की त़ाक़त का (पहले के ह़क़ में) ए'तिबार नहीं, हां अगर येह धोता और इसी क़दर निचोड़ता (जिस क़दर पहले वाले ने निचोड़ा था) तो पाक न होता। (ऐज़न) ﴾3﴿ पहली और दूसरी मरतबा निचोड़ने के बा'द हाथ पाक कर लेना बेहतर है और तीसरी बार निचोड़ने से कपड़ा भी पाक हो गया और हाथ भी, और जो कपड़े में इतनी तरी रह गई हो कि निचोड़ने से एकआध बूंद टपकेगी तो कपड़ा और हाथ दोनों नापाक हैं। (ऐज़न) ﴾4﴿ पहली या दूसरी बार हाथ पाक नहीं किया, और उस की तरी से कपड़े का पाक ह़िस्सा भीग गया तो येह भी नापाक हो गया फिर अगर पहली बार के निचोड़ने के बा'द भीगा है तो उसे दो[2] मरतबा धोना चाहिये और दूसरी मर्तबा निचोड़ने के बा'द हाथ की तरी से भीगा है तो एक मर्तबा धोया जाए। यूंही अगर उस कपड़े से जो एक मरतबा धो कर निचोड़ लिया गया है, कोई पाक कपड़ा भीग जाए तो येह दो बार धोया जाए और अगर दूसरी मर्तबा निचोड़ने के बा'द उस से वोह कपड़ा भीगा तो एक बार धोने से पाक हो जाएगा। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 120) ﴾5﴿ कपड़े को तीन मरतबा धो कर हर मरतबा ख़ूब निचोड़ लिया है कि अब निचोड़ने से न टपकेगा फिर उस को लटका दिया और उस से पानी टपका तो येह पानी पाक है और अगर ख़ूब नहीं निचोड़ा था तो येह पानी नापाक है। (ऐज़न, स. 121) ﴾6﴿ येह ज़रूरी नहीं कि एक दम तीनों

बार धोएं बल्कि अगर मुख़्तलिफ़ वक़्तों बल्कि मुख़्तलिफ़ दिनों में येह ता'दाद पूरी की जब भी पाक हो जाएगा । (ऐज़न, 122)

बहते नल के नीचे धोने में निचोड़ना शर्त़ नहीं

फ़तावा अम्जदिया दिल्द 1 सफ़ह़ा 35 में है कि येह (या'नी तीन मरतबा धोने और निचोड़ने का) हुक्म उस वक़्त है जब थोड़े पानी में धोया हो, और अगर ह़ौज़े कबीर (या'नी दह दर दह या इस से बड़े ह़ौज़, नह्‌र, नदी, समुन्दर वग़ैरा) में धोया हो या (नल, पाइप या लोटे वग़ैरा के ज़रीए) बहुत सा पानी उस पर बहाया या (दरिया वग़ैरा) बहते पानी में धोया तो निचोड़ने की शर्त़ नहीं ।

बहते पानी में पाक करने में निचोड़ना शर्त़ नहीं

फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : दरी या टाट या कोई नापाक कपड़ा बहते पानी में रात भर पड़ा रहने दें पाक हो जाएगा और अस्ल येह है कि जितनी देर में येह ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया पाक हो गया कि बहते पानी से पाक करने में निचोड़ना शर्त़ नहीं । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 121)

पाक नापाक कपड़े साथ धोने का मस्अला

अगर बाल्टी या कपड़े धोने की मशीन में पाक कपड़ों के साथ एक भी नापाक कपड़ा पानी के अन्दर डाल दिया तो सारे ही कपड़े नापाक हो जाएंगे और बिला ज़रूरते शरइय्या ऐसा करना जाइज़ नहीं है । चुनान्चे मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत,

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या (मुख़र्रजा) जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 792 पर फ़रमाते हैं **:** "बिला ज़रूरत पाक शै को नापाक करना ना जाइज़ व गुनाह है।" जिल्द 4 (मुख़र्रजा) सफ़ह़ा 585 पर फ़रमाते हैं **:** "जिस्म व लिबास बिला ज़रूरते शरइय्या नापाक करना और येह **ह़राम** है।" "**अल बह़रुर्राइक़**" में है **:** "पाक चीज़ को नापाक करना ह़राम है।" **(البحرالرائق، ج١ ص ١٧٠)**

इस्लामी बहनों को चाहिये की पाक व नापाक कपड़े जुदा जुदा धोएं। अगर साथ ही धोना है तो नापाक कपड़े का नजासत वाला ह़िस्सा एह़तियात़ के साथ पहले पाक कर लीजिये फिर बेशक दीगर मैले कपड़ों के हमराह एक साथ वॉशिंग मशीन में उस को भी धो लीजिये।

नापाक कपड़े पाक करने का आसान त़रीक़ा

कपड़े पाक करने का एक आसान त़रीक़ा येह भी है कि बाल्टी में नापाक कपड़े डाल कर ऊपर से नल खोल दीजिये, कपड़ों को हाथ या किसी सलाख़ वग़ैरा से इस त़रह़ डुबोए रखिये कि कहीं से कपड़े का कोई ह़िस्सा पानी के बाहर उभरा हुवा न रहे। जब बाल्टी के ऊपर से उबल कर इतना पानी बह जाए कि ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तो अब वोह कपड़े और बाल्टी का पानी नीज़ हाथ या सलाख़ का जितना ह़िस्सा पानी के अन्दर था सब पाक हो गए जब कि कपड़े वग़ैरा पर नजासत का असर बाक़ी न हो। इस अ़मल के दौरान येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि पाक हो जाने के ज़न्ने ग़ालिब से क़ब्ल नापाक पानी का एक भी छींटा आप के बदन या

किसी और चीज़ पर न पड़े। बाल्टी या बरतन का ऊपरी कनारा या अन्दरूनी दीवार का कोई हि़स्सा नापाक पानी वाला है और ज़मीन इतनी हमवार नहीं कि बाल्टी के हर त़रफ़ से पानी उभर के निकले और मुकम्मल कनारे वग़ैरा धुल जाएं तो ऐसी सूरत में किसी बरतन के ज़रीए़ या जारी पानी के नल के नीचे हाथ रख कर उस से बाल्टी वग़ैरा के चारों त़रफ़ इस त़रह़ पानी बहाइये कि कनारे और बक़िय्या अन्दरूनी हि़स्से भी धुल कर पाक हो जाएं मगर येह काम शुरूअ़ ही में कर लीजिये कहीं पाक कपड़े दोबारा नापाक न कर बैठें !

वॉशिंग मशीन में कपड़े पाक करने का त़रीक़ा

वॉशिंग मशीन में कपड़े डाल कर पहले पानी भर लीजिये और कपड़ों को हाथ वग़ैरा से पानी में दबा कर रखिये ताकि कोई हि़स्सा उभरा हुवा न रहे, ऊपर का नल खुला रखिये अब निचला सूराख़ भी खोल दीजिये, इस त़रह़ ऊपर नल से पानी आता रहेगा और निचले सूराख़ से बहता रहेगा जब ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा ले गया होगा तो कपड़े और मशीन के अन्दर का पानी पाक हो जाएगा जब कि नजासत का असर कपड़ों वग़ैरा पर बाक़ी न हो। ज़रूरतन मशीन के ऊपरी कनारे वग़ैरा मज़्कूरा त़रीक़े पर शुरूअ़ ही में धो लेने चाहिएं।

नल के नीचे कपड़े पाक करने का त़रीक़ा

मज़्कूरा त़रीक़े पर पाक करने के लिये बाल्टी या बरतन ही ज़रूरी नहीं, नल के नीचे हाथ में पकड़ कर भी पाक कर सकते हैं।

म–सलन रुमाल नापाक हो गया, तो बेसिन में नल के नीचे रख कर इतनी देर तक पानी बहाइये कि ज़न्ने ग़ालिब आ जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तो पाक हो जाएगा । बड़ा कपड़ा या उस का नापाक ह़िस्सा भी इसी त़रीक़े पर पाक किया जा सकता है । मगर येह एह़तियात़ ज़रूरी है कि नापाक पानी के छींटे आप के कपड़े, बदन और अत़राफ़ में दीगर जगहों पर न पड़ें ।

कारपेट पाक करने का त़रीक़ा

कारपेट (CARPET) का नापाक ह़िस्सा एक बार धो कर लटका दीजिये यहां तक कि पानी टपक्ना मौक़ूफ़ हो जाए फिर दोबारा धो कर लटकाइये ह़त्ता कि पानी टपक्ना बन्द हो जाए फिर तीसरी बार इसी त़रह़ धो कर लटका दीजिये जब पानी टपक्ना बन्द हो जाएगा तो कारपेट पाक हो जाएगा । चटाई, चमड़े के चप्पल और मिट्टी के बरतन वग़ैरा जिन चीज़ों में पतली नजासत जज़्ब हो जाती हो इसी त़रीक़े पर पाक कीजिये । ऐसा नाज़ुक कपड़ा कि निचोड़ने से फट जाने का अन्देशा हो वोह भी इसी त़रह़ पाक कीजिये । अगर नापाक कारपेट या कपड़ा वग़ैरा बहते पानी में (म–सलन दरिया, नहर में या पाइप या टोंटी के जारी पानी के नीचे) इतनी देर तक रख छोड़ें कि ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि पानी नजासत को बहा कर ले गया होगा तब भी पाक हो जाएगा । कारपेट पर बच्चा पेशाब कर दे तो उस जगह पर पानी के छींटे मार देने से वोह पाक नहीं होता । याद रहे ! एक दिन के बच्चे या बच्ची का पेशाब भी नापाक होता है ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلٰی)

नापाक मेंहदी से रंगा हुवा हाथ कैसे पाक हो ?

कपड़े या हाथ में नजिस रंग लगा, या नापाक मेंहदी लगाई तो इतनी मर्तबा धोएं कि साफ़ पानी गिरने लगे पाक हो जाएगा अगर्चे कपड़े या हाथ पर रंग बाक़ी हो। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 119)

नापाक तेल वाला कपड़ा धोने का मस्अला

कपड़े या बदन में नापाक तेल लगा था तीन मर्तबा धो लेने से पाक हो जाएगा अगर्चे तेल की चिक्नाई मौजूद हो, इस तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं कि साबुन या गर्म पानी से धोए लेकिन अगर मुर्दार की चर्बी लगी थी तो जब तक इस की चिक्नाई न जाए पाक न होगा।

(ऐज़न, स. 120)

अगर कपड़े का थोड़ा सा ह़िस्सा नापाक हो जाए

कपड़े का कोई ह़िस्सा नापाक हो गया और येह याद नहीं कि वोह कौन सी जगह है, तो बेहतर येह है कि पूरा ही धो डालें (या'नी जब बिल्कुल न मा'लूम हो कि किस ह़िस्से में नापाकी लगी है और अगर मा'लूम है कि म–सलन आस्तीन नजिस हो गई मगर येह नहीं मा'लूम कि आस्तीन का कौन सा ह़िस्सा है, तो पूरी आस्तीन का धोना ही पूरे कपड़े का धोना है) और अगर अन्दाज़े से सोच कर इस का कोई सा ह़िस्सा धो ले जब भी पाक हो जाएगा, और जो बिला सोचे हुए कोई टुकड़ा (ह़िस्सा) धो लिया जब भी पाक है मगर इस सूरत में अगर चन्द नमाज़ें पढ़ने के बा'द मा'लूम हो कि नजिस ह़िस्सा नहीं धोया गया तो फिर

धोए और नमाज़ों का इआ़दा करे (या'नी दोबारा पढ़े) और जो सोच कर धो लिया था और बा'द को ग़-लती़ मा'लूम हुई तो अब धो ले और नमाज़ों के इआ़दे (या'नी दोबारा अदा करने) की ह़ाजत नहीं।

(ऐज़न, स. 121,122)

दूध से कपड़ा धोना कैसा ?

दूध और शोरबा और तेल से धोने से पाक न होगा कि इन से नजासत दूर न होगी। (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 119)

मनी वाले कपड़े पाक करने के 6 अह़काम

﴾1﴿ मनी कपड़े में लग कर खु़श्क हो गई तो फ़क़त मल कर झाड़ने और साफ़ करने से कपड़ा पाक हो जाएगा अगर्चे बा'द मलने के कुछ इस का असर कपड़े में बाक़ी रह जाए। (ऐज़न, स. 122) ﴾2﴿ इस **मस्अले** में औ़रत व मर्द और इन्सान व ह़ैवान व तन्दुरुस्त व मरीज़े जिरयान सब की मनी का एक हुक्म है। (ऐज़न) ﴾3﴿ बदन में अगर मनी लग जाए तो भी इसी त़रह़ पाक हो जाएगा। (ऐज़न) ﴾4﴿ पेशाब कर के त़हारत न की पानी से न ढेले से और मनी उस जगह पर गुज़री जहां पेशाब लगा हुवा है, तो येह मलने से पाक न होगी बल्कि धोना ज़रूरी है और अगर त़हारत कर चुका था या मनी जस्त कर के (या'नी उछल कर) निकली कि उस मौज़ए़ नजासत (या'नी नापाक जगह) पर न गुज़री तो मलने से पाक हो जाएगी। (ऐज़न, स. 123) ﴾5﴿ जिस कपड़े को मल कर पाक कर लिया (अब) अगर वोह पानी से भीग जाए तो नापाक न

होगा । (ऐज़न) ﴾6﴿ अगर मनी कपड़े में लगी है और अब तक तर है (बिग़ैर सुखाए पाक करना चाहें) तो धोने से पाक होगा (सूखने से क़ब्ल) मलना काफ़ी नहीं । (ऐज़न)

दूसरे के नापाक कपड़े की निशान देही कब वाजिब है

किसी दूसरे मुसल्मान के कपड़े में नजासत लगी देखी और ग़ालिब गुमान है कि इस को ख़बर करेगा तो पाक कर लेगा तो ख़बर करना वाजिब है। (ऐसी सूरत में ख़बर नहीं देगा तो गुनहगार होगा) । (बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 127) इस्लामी बहन ने अगर ना मह़रम म–सलन भाभी ने देवर के कपड़े में नजासत देखी तो बताना ज़रूरी नहीं ।

रूई पाक करने का त़रीक़ा

रूई का अगर इतना ह़िस्सा नजिस (नापाक) है जिस क़दर धुनने से उड़ जाने का गुमाने सह़ीह़ हो तो धुनने से (रूई) पाक हो जाएगी वरना बिग़ैर धोए पाक न होगी, हां अगर मा'लूम न हो कि कितनी नजिस (नापाक) है तो भी धुनने से पाक हो जाएगी ।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 2, स. 125)

बरतन पाक करने का त़रीक़ा

अगर ऐसी चीज़ हो कि उस में नजासत जज़्ब न हुई, जैसे चीनी के बरतन या मिट्टी का पुराना इस्ति'माली चिकना बरतन या लोहे, तांबे, पीतल वग़ैरा धातों की चीज़ें तो उसे फ़क़त तीन बार धो लेना काफ़ी है, इस की भी ज़रूरत नहीं कि उसे इतनी देर तक छोड़ दें कि पानी टपकना मौक़ूफ़ हो जाए । (ऐज़न, 121)

छुरी चाक़ू वग़ैरा पाक करने का त़रीक़ा

लोहे की चीज़ जैसे छुरी, चाक़ू, तलवार वग़ैरा जिस में न ज़ंग हो न नक़्शो निगार, नजिस हो जाए तो अच्छी त़रह़ पोंछ डालने से पाक हो जाएगी और इस सूरत में नजासत के दलदार या पतली होने में कुछ फ़र्क़ नहीं। यूंही चांदी, सोने, पीतल, गिलट और हर क़िस्म की धात की चीज़ें पोंछने से पाक हो जाती हैं बशर्ते़ कि नक़्शी न हों और अगर नक़्शी हों या लोहे में ज़ंग हो तो धोना ज़रूरी है पोंछने से पाक न होंगी। (बहारे शरीअ़त, हि़स्सा : 2, स. 122)

आईना पाक करने का त़रीक़ा

आईना और शीशे की तमाम चीज़ें और चीनी के बरतन या मिट्टी के रो–ग़नी बरतन (या मिट्टी के वोह बरतन जिन पर कांच की पतली तह चढ़ी होती है) या पॉलिश की हुई लकड़ी ग़रज़ वोह तमाम चीज़ें जिन में मसाम न हों, कपड़े या पत्ते से इस क़दर पोंछ ली जाएं कि (नजासत का) असर बिल्कुल जाता रहे पाक हो जाती हैं। (ऐज़न) मगर ख़याल रहे कि दराड़ हो, या कहीं से कुछ उखड़ा हुवा हो या कोई हि़स्सा टूटा हुवा हो या कहीं से पॉलिश निकल गई हो अल ग़रज़ किसी त़रह़ का भी खुर–दरा पन होने की सूरत में उस हि़स्से का पोंछना काफ़ी न होगा धो कर पाक करना ज़रूरी है।

जूते पाक करने का त़रीक़ा

मोज़े (चमड़े के) या जूते में दलदार नजासत लगी, जैसे

पाख़ाना, गोबर, मनी तो अगर्चे वोह नजासत तर हो ख़ुरच्ने और रगड़ने से पाक हो जाएंगे । और अगर मिस्ल पेशाब के कोई पतली नजासत लगी हो और उस पर मिट्टी या राख या रैता वग़ैरा डाल कर रगड़ डालें जब भी पाक हो जाएंगे और अगर ऐसा न किया यहां तक कि वोह नजासत सूख गई तो अब बे धोए पाक न होंगे ।

(बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 123)

काफ़िरों के इस्ति'माल शुदा स्वेटर वग़ैरा

कुफ़्फ़ार के मुमालिक से दरआमद किये हुए (IMPORTED) इस्ति'माल शुदा स्वेटर (SWEATER) जुराबें, क़ालीन (CARPET) और दीगर पुराने कपड़े कि जब तक इन पर नजासत का असर ज़ाहिर न हो पाक हैं बिग़ैर धोए नमाज़ में इस्ति'माल करने में ह़रज नहीं, अलबत्ता पाक कर लेना मुनासिब है । सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ बहारे शरीअ़त हिस्सा 2 सफ़ह़ा 127 पर फ़रमाते हैं : फ़ासिक़ों के इस्ति'माली कपड़े जिन का नजिस होना मा'लूम न हो पाक समझे जाएंगे मगर बे नमाज़ी के पाजामे वग़ैरा में एह़तियात़ येही है कि रुमाली पाक कर ली जाए कि अक्सर बे नमाज़ी पेशाब कर के वैसे ही पाजामा बांध लेते हैं और कुफ़्फ़ार के इन कपड़ों के पाक कर लेने में तो बहुत ख़याल करना चाहिये । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 2, स. 127)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

‘‘बानुवाने तहारत पे लाखों सलाम’’ के तेईस हुरूफ़ की निस्बत से इस्लामी बहनों की 23 म-दनी बहारें

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक मरतबा बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी पीछे हो लिया। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बाग़ में दाख़िल हुए और सज्दे में तशरीफ़ ले गए आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सज्दा इतना त़वील कर दिया कि मुझे अन्देशा हुवा कहीं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की रूहे मुबा-रका क़ब्ज़ न फ़रमा ली हो। चुनान्चे मैं क़रीब हो कर बग़ौर देखने लगा। जब सरे अक्दस उठाया तो फ़रमाया : ‘‘ऐ अब्दुर्रहमान ! क्या हुवा ?’’ मैं ने जवाबन अपना ख़दशा ज़ाहिर कर दिया तो फ़रमाया : ‘‘जिब्रईले अमीन ने मुझ से कहा : ‘‘क्या आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह बात ख़ुश नहीं करती कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है कि जो तुम पर दुरूदे पाक पढ़ेगा मैं उस पर रहमत नाज़िल फ़रमाऊंगा और जो तुम पर सलाम भेजेगा मैं उस पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । (طبرانی)

सलामती नाज़िल फ़रमाऊंगा ।'' (مُسنَد اِمام اَحمد بن حَنبل ج ١ ص ٤٠٦ حدیث ١٦٦٢)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾1﴿ म-दनी आक़ा सब्ज़ सब्ज़ इमामे वालों के झुरमट में

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी वालों पर झूम झूम कर बाराने रह़मत बरसता है चुनान्चे बरमिंगहम (U.K.) के एक इस्लामी भाई का बयान अपने अन्दाज़ व अल्फ़ाज़ में पेशे ख़िदमत है, हम एक बार मुसल्मानों की गुनजान आबादी वाले अ़लाक़े small health जिस को हम अपने म-दनी माह़ोल में ''मक्की ह़ल्क़ा'' कहते हैं में अ़लाक़ाई दौरा करते हुए **नेकी की दा'वत** देने के लिये घर घर जा रहे थे । इस दौरान एक घर पर दस्तक दी तो एक उ़म्र रसीदा ख़ातून निकलीं जिन का मीरपूर (कशमीर) से तअ़ल्लुक़ था, उर्दू और इंग्लिश से ना बलद थीं । हम ने सर झुका कर पंजाबी में **नेकी की दा'वत** पेश की और अ़र्ज़ की, कि घर के मर्दों को फ़ुलां वक़्त मस्जिद में भेज दीजिये । हम जब जाने लगे तो वोह कहने लगीं : अब मेरी भी सुनो ! हमारे पास वक़्त कम था इस लिये आगे बढ़ गए मगर हमारे एक इस्लामी भाई ठहर गए । बड़ी बी फ़रमाने लगीं : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने चन्द ही रोज़ पहले येह मुबारक ख़्वाब देखा था कि ''सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ वालों के झुरमट में **मस्जिदुन्न-बविय्यिश्शरीफ़** عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **से बाहर की त़रफ़ तशरीफ़ ला रहे हैं** ।'' **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत कि आज वोही सब्ज़

सब्ज़ इमामे वाले मेरे घर **नेकी की दा'वत देने आ गए** ! उन को इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत दी गई। अब वोह अपने ख़ानदान की इस्लामी बहनों समेत बा क़ाइदगी के साथ हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत फ़रमाती हैं।

हैं सह़ाबा के झुरमट में बदरुद्दुजा

नूर ही नूर हर सू मदीने में है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनों में म-दनी इन्क़िलाब

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! दा'वते इस्लामी वालों पर सरकारे नामदार, बि इज़्ने परवर्द गार दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का कितना बड़ा करम है ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस्लामी भाइयों के साथ साथ इस्लामी बहनों में भी **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की हर त़रफ़ धूमें हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ लाखों लाख इस्लामी बहनों ने भी दा'वते इस्लामी के म-दनी पैग़ाम को क़बूल किया, फ़ेशन परस्ती से सरशार मुआ़-शरे में परवान चढ़ने वाली बे शुमार इस्लामी बहनें गुनाहों के दलदल से निकल कर उम्महातुल मुअमिनीन और शहज़ादिये कौनैन बीबी फ़ात़िमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ की दीवानियां बन गईं। गले में दुपट्टा लटका कर शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में भटकने वालियों, नाइट क्लबों और सिनेमा घरों की ज़ीनत बनने वालियों को करबला वाली इफ़्फ़त मआब शहज़ादियों رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ की शर्मो ह़या के सदक़े वोह ब-र-कतें नसीब हुईं कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी । (مجمع الزوائد)

म-दनी बुरक़अ़ उन के लिबास का **जुज़्वे ला यन्फ़क** बन गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ म-दनी मुन्नियों और इस्लामी बहनों को कुरआने करीम हिफ़्ज़ व नाज़िरा की मुफ़्त ता'लीम देने के लिये कई मदारिसुल मदीना और आ़लिमा बनाने के लिये मु-तअ़द्दद **''जामिआ़तुल मदीना''** क़ाइम हैं । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** में ''ह़ाफ़िज़ात'' और ''म-दनिय्या आ़लिमात'' की ता'दाद बढ़ती जा रही है । बहर ह़ाल इस्लामी भाइयों से इस्लामी बहनें किसी त़रह़ पीछे नहीं हैं, 1429 सिने हिजरी के म-दनी माह जुमादिल ऊला (जून 2008) में पाकिस्तान के अन्दर होने वाले दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों की इस्लामी बहनों की **''मजलिसे मुशा-वरत''** की त़रफ़ से मिलने वाली कारकर्दगी की एक झलक मुला-ह़ज़ा हो **:** ﴾**1**﴿ इस एक म-दनी माह में मुल्क भर के अन्दर रोज़ाना तक़रीबन 24228 घर दर्स हुए ﴾**2**﴿ रोज़ाना लगने वाले मद्र-सतुल मदीना (बालिग़ात) की ता'दाद लगभग 3275 और इन से इस्तिफ़ादा करने वालियों की ता'दाद तक़रीबन 34633 ﴾**3**﴿ ह़ल्क़ा/अ़लाक़ा सत़ह़ के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** की ता'दाद तक़रीबन 3000, इन में शरीक होने वालियां लगभग 136245 (एक लाख छत्तीस हज़ार दो सो पेंतालीस) ﴾**4**﴿ हफ़्तावार तरबिय्यती ह़ल्क़ों की ता'दाद तक़रीबन 26052 ।

मेरी जिस क़दर हैं बहनें सभी म-दनी बुरक़अ़ पहनें
इन्हें नेक तुम बनाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾2﴿ मैं ने म-दनी बुरक़अ़ कैसे अपनाया !

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले मैं बहुत ज़ियादा **फ़ेशन एबल** थी, फ़ोन के ज़रीए **ग़ैर मर्दों** से दोस्ती करने में बड़ा लुत्फ़ आता, पड़ोस की शादियों में **रस्मे** मेंहदी वग़ैरा के मौक़अ़ पर मुझे ख़ास तौर पर बुलाया जाता, वहां मैं न सिर्फ़ ख़ुद रक़्स करती बल्कि दूसरी लड़कियों को भी **डांडिया रास** सिखा कर अपने साथ नचवाती, ला ता'दाद गाने मुझे ज़बानी याद थे, आवाज़ चूंकि अच्छी थी इस लिये मेरी सहेलियां मुझ से अक्सर गाना सुनाने की फ़रमाइश किया करतीं। बद क़िस्मती से घर में **T.V.** बहुत देखा जाता था, इस के बेहूदा प्रोग्रामों का मेरी तबाही में बहुत अहम किरदार था। **रबीउ़न्नूर शरीफ़** की एक सुहानी शाम थी, नमाज़े मग़रिब के बा'द मेरे बड़े भाई घर आए तो उन के हाथ में मक-त-बतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयानात की तीन^{3} केसिटें थीं, इन में से एक बयान का नाम "**क़ब्र की पहली रात**" था ख़ुश क़िस्मती से येह केसेट सुनने की मैं ने सआ़दत ह़ासिल की, क़ब्र का मर्ह़ला किस क़दर कठिन है, इस का एह़सास मुझे येह बयान सुन कर हुवा। मगर अफ़्सोस ! मेरे दिल पर गुनाहों की लज़्ज़त का इस क़दर ग़-लबा था कि मुझ में कोई ख़ास तब्दीली न आई। हां ! इतना फ़र्क़ ज़रूर पड़ा कि अब मुझे गुनाहों का एह़सास होने लगा। कुछ ही दिन बा'द पड़ोस में **दा'वते इस्लामी** की ज़िम्मेदार इस्लामी बहनों ने ब सिल्सिलए "ग्यारहवीं

शरीफ़'' **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** का एहतिमाम किया। मुझे भी शिर्कत की दा'वत दी गई। ''**क़ब्र की पहली रात**'' सुन कर मेरा दिल पहले ही चोट खा चुका था, चुनान्चे मैं ने ज़िन्दगी में पहली बार **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** में जाने का इरादा किया। मगर मेरी ह़माक़त कि खू़ब मेकअप कर के जदीद फे़शन का लिबास पहन कर इज्तिमाअ़ में गई, एक इस्लामी बहन ने वहां सुन्नतों भरा बयान फ़रमाया, जिसे सुन कर मेरे दिल की दुन्या ज़े़रो ज़बर हो गई। बयान के बा'द जब मन्क़बत ''**या ग़ौस बुलाओ मुझे बग़दाद बुलाओ**'' पढ़ी गई, इस ने गोया गर्म लोहे पर हथोड़े का काम किया ! यूं मैं **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शरीक होने लगी। म-दनी आक़ा की दीवानियों की सोह़बतों की ब-र-कत से मेरे दिल में गुनाहों से नफ़रत पैदा हुई, तौबा की सआ़दत मिली। और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर नेकियों की शाहराह पर ऐसी गामज़न हुई कि मैं वोही फे़शन की पुतली जो कि पहले बाहर निकलते वक़्त दुपट्टा भी ठीक त़रह़ से नहीं ओढ़ती थी, कुछ ही अ़र्से में म-दनी बुरक़अ़ पहनने की सआ़दत पाने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आज मैं **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी कामों** की धूमें मचाने के लिये कोशां हूं।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में
ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

﴾3﴿ सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हो गया

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर गुलज़ारे त़यबा (सरगोधा) की मुक़ीम इस्लामी बहन की तह़रीर का ख़ुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने से पहले मेरी अ़-मली ह़ालत इन्तिहाई अबतर थी। मोडर्न सहेलियों की सोह़बत के बाइ़स मैं **फ़ेशन की पुतली** और **मख़्लूत़ तफ़्रीह़ गाहों** की बेह़द मतवाली थी, مَعَاذَاللّٰه न नमाज़ पढ़ती न ही रोज़े रखती और बुरक़अ़ से तो कोसों दूर भागती थी। बस **T.V.** और **V.C.R** होता और मैं। ख़ुदसर इतनी थी कि अपने सामने किसी की चलने नहीं देती थी। उन दिनों मैं कॉलेज में फ़र्स्ट इयर की त़ालिबा थी। एक रोज़ मुझे किसी ने मक-त-बतुल मदीना के जारी कर्दा सुन्नतों भरे बयान की केसेट बनाम **''वुज़ू और साइन्स''** तोह़फ़े में दी, बयान मा'लूमाती और ख़ासा दिलचस्प था। इस बयान से मु-तअस्सिर हो कर मैं ने अ़लाक़े में होने वाले दा'वते इस्लामी के **इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में जाना शुरूअ़ कर दिया। म-दनी माह़ोल का नूर मेरी तारीक ज़िन्दगी को मुनव्वर करने लगा। वक़्त गुज़रने के साथ साथ اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी बुरी आ़दतों से तौबा करने में काम्याब हो गई। **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने की ब-र-कत से कुछ ही अ़र्से में **म-दनी बुरक़अ़** पहनने लगी। मेरे घर वाले, रिश्तेदार और मेरी सहेलियां इस ह़ैरत अंगेज़ तब्दीली पर बहुत ह़ैरान थे! उन्हें येह सब ख़्वाब लग रहा था मगर येह सो फ़ी सदी ह़क़ीक़त थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ अब मैं अपने घर में **फ़ैज़ाने**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

सुन्नत से दर्स देती हूं। दीगर इस्लामी बहनों के साथ मिल कर म-दनी काम करने की सआ़दत से भी बहरा मन्द होती हूं। रोज़ाना **"फ़िक्रे मदीना"** के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात के रिसाले के ख़ाने पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाना मेरा मा'मूल है। एक रोज़ मुझ पर रब عَزَّوَجَلَّ का ऐसा करम हुवा कि मैं जितना भी शुक्र करूं कम कम और कम है। हुवा यूं कि एक रात मैं सोई तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी। मैं ने ख़्वाब में देखा कि **दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़** हो रहा है मैं जिस जगह बैठी हूं वहां खिड़की से ठन्डी ठन्डी हवा आ रही है, मैं बे साख़्ता खिड़की से बाहर की त़रफ़ देखती हूं तो आस्मान पर बादल नज़र आते हैं। मैं बे इख़्तियार येह सलाम पढ़ना शुरूअ़ कर देती हूं :

ऐ सबा मुस्त़फ़ा से कह देना
ग़म के मारे सलाम कहते हैं

अचानक मेरे सामने एक ह़सीनो जमील और नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग सफ़ेद लिबास में मल्बूस सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सरे मुबारक पर सजाए मुस्कुराते हुए तशरीफ़ ले आए, मैं अभी नज़्ज़ारे ही में गुम थी कि किसी की आवाज़ सुनाई दी : **"येह हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं।" फिर मेरी आंख खुल गई। मैं अपनी सआ़दतों की इस मे'राज पर शिद्दते जज़्बात से रोने लगी। दिल चाहता था कि आंखें बन्द करूं और बार बार वोही मन्ज़र देखूं। अब भी हर रात इसी उम्मीद पर दुरूदे पाक पढ़ते पढ़ते सोती हूं कि काश ! मेरे भाग दोबारा जाग उठें !

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है। (مسند احمد)

क्या ख़बर आज की शब दीद का अरमां निकले

अपनी आंखों को अ़क़ीदत से बिछाए रखिये

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ सीधा रास्ता मिल गया

पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है **:** हमारा ख़ानदान अ़क़ाइद के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ ख़ानों में बटा हुवा था, मैं शदीद परेशान थी कि न जाने कौन से लोग सह़ीह़ रास्ते पर हैं ! मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़एं किया करती कि **या अल्लाह ! मुझे सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा।** اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे **सीधा** रास्ता मिल गया और इस की सूरत यूं बनी कि एक दिन चन्द इस्लामी बहनों ने मुझे तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की दा'वत पेश की, मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुई। वहां एक मुबल्लिग़ा इस्लामी बहन ने फ़ैज़ाने सुन्नत से देख कर बयान किया, बयान सुन कर मैं **ख़ौफ़े ख़ुदा** عَزَّوَجَلَّ से कांप उठी। रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़, **सलातो सलाम** और इस्लामी बहनों की अपनाइय्यत भरी मुलाक़ातों ने मज़ीद बहुत मु-तअस्सिर किया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की ब-र-कत से मज़्हबे मुहज़्ज़ब अहले सुन्नत की सदाक़त पर यक़ीन की दौलत के साथ साथ मुझे **नमाज़े** पन्जगाना और र-मज़ानुल

मुबारक के **रोज़ों** की पाबन्दी भी नसीब हुई। यूं मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल की ब-र-कतों को समेटती समेटती ता दमे तह़रीर तह़सील ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से इस्लामी बहनों में **नेकी की दा'वत** आ़म करने के लिये कोशां हूं।

ज़ालिम हूं जफ़ाकारो सितम-गर हूं मैं   आ़सी व ख़त़ाकार भी ह़द भर हूं मैं

येह सब है मगर प्यारे तेरी रह़मत से   सुन्नी हूं मुसल्मान मुक़र्रर हूं मैं

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾5﴿ मैं गाने लिखती थी

पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं **गाने बाजे सुनने** की बहुत शौक़ीन थी। मेरे पास गानों की बहुत सारी केसिटें और किताबें जम्अ़ थीं बल्कि मैं खु़द भी गाने लिखती थी। **फ़िल्मों डिरामों** की ऐसी दीवानी थी कि लगता था कि शायद इन के बिग़ैर (مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ) मैं जी न सकूंगी। अफ़्सोस! कि निगाहों की ह़िफ़ाज़त का बिल्कुल भी ज़ेह्न नहीं था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से बिल आख़िर गुनाहों भरी ज़िन्दगी से कनारा कशी की सूरत बन ही गई, हुवा यूं कि मैं ने **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। उस **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में होने वाले **बयान**, **दुआ़** और इस्लामी बहनों की **इन्फ़िरादी कोशिश** के म-दनी फूलों ने मेरे दिल में **म-दनी इन्क़िलाब** बरपा कर दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपने गुनाहों से **तौबा**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

की और सुन्नतों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गई। ता दमे तह़रीर ह़ल्क़ा ज़िम्मादार की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं।

करम जो आप का ऐ सय्यिदे अबरार हो जाए

तो हर बदकार बन्दा दम में नेकूकार हो जाए

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾6﴿ क़ाबिले रश्क मौत

मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) की एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मेरी वालिदा एक अ़र्से से गुर्दों के मरज़ में मुब्तला थीं। **रबीउ़न्नूर** शरीफ़ के पुरनूर महीने में पहली मरतबा हम मां बेटी **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के **अल्लाह, अल्लाह** और **मरह़बा या मुस्त़फ़ा** की पुरकैफ़ सदाओं से गूंजते **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक हुए। शर-ई पर्दा करने के लिये **म-दनी बुरक़अ़** पहनने, आयिन्दा भी सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत करने और मज़ीद अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर के हम दोनों घर लौट आई। रात के वक़्त अम्मीजान को यकायक **दिल का दौरा** पड़ा, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में गूंजने वाली **अल्लाह, अल्लाह** की मस्हूर कुन सदाओं का नशा गोया अभी बाक़ी था शायद इसी लिये मेरी अम्मीजान अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी तक़रीबन 25 मिनट **अल्लाह, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

का विर्द करती रहीं और फिर... फिर... उन की रूह़ क़-फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त मर्ह़ूमा को ग़रीक़े रह़मत करे और उन को बे ह़िसाब मग़्फ़िरत से नवाज़ कर जन्नतुल फ़िरदौस में अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमाए और मुझ गुनहगारों के सरदार सगे मदीना غُفِرَ لَهُ الْغَفَّار के ह़क़ में भी येह दुआ़एं क़बूल करे। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالیٰ علیه واٰلہٖ وسلَّم

अ़फ़्व फ़रमा ख़ताएं मेरी ऐ अ़फ़ू — शौक़ो तौफ़ीक़ नेकी की दे मुझ को तू
जारी दिल कर कि हर दम रहे ज़िक्रे हू — आ़दते बद बदल और कर नेक ख़ू
अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ सफ़रे मदीना की सआ़दत मिल गई

पंजाब (पाकिस्तान) के शहर कहरोड़ पक्का की एक इस्लामी बहन (उ़म्र तक़रीबन 55 साल) के बयान का ख़ुलासा है कि मैं **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में पाबन्दी से ह़ाज़िरी से मह़रूम थी। **सुन्नतों भरे बयानात** में **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाआ़त में क़बूले दुआ़ के वाक़िआ़त अगर्चे सुन रखे थे मगर मेरा ए'तिक़ाद यूं मज़ीद पुख़्ता हुवा कि मैं 3 साल तक **सफ़रे मदीना** के लिये फ़ोर्म जम्अ़ करवाती रही लेकिन **ह़ाज़िरी** की कोई सूरत न बन पाई। अब की बार फ़ोर्म जम्अ़ करवाया तो मैं ने यूं **दुआ़** मांगी **:** "**या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (ابن عدی)

भरे इज्तिमाअ़ में मुसल्सल 12 हफ़्ते अव्वल ता आख़िर शिर्कत करूंगी, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे **सफ़रे मदीना** की सआ़दत से नवाज़ दे ।" اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अभी 12 हफ़्ते पूरे न हुए थे कि मुझ पर बाबे करम खुल गया और मुझे मदीने का बुलावा आ गया, मैं ख़ुशी ख़ुशी सफ़रे मदीना पर रवाना हो गई । **ह़ाज़िरिये मदीना** से वापसी पर मैं ने 12 हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर शिर्कत की निय्यत पर अ़मल भी किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर हर हफ़्ते पाबन्दी से हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत पाती हूं ।

हम ग़रीबों को रौज़े पे बुलवाइये — राहे त़यबा का ज़ादे सफ़र चाहिये

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾8﴿ बेटी की इस्लाह़ का राज़

पंजाब (पाकिस्तान) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मेरी बेटी **फ़िल्मों, डिरामों** और बे पर्दगियों वग़ैरा गुनाहों की आलू-दगियों में अपनी ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ों को बरबाद कर रही थी, मैं उस की ह़-र-कतों से बेह़द **परेशान** थी, बारहा समझाती मगर वोह एक कान से सुन कर दूसरे से निकाल देती । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करती थी और इज्तिमाअ़ में मांगी जाने वाली **दुआ़ओं की क़बूलिय्यत** के वाक़िआ़त भी सुना करती थी । चुनान्चे एक मर्तबा मैं ने **दा'वते इस्लामी** के तह़्त होने वाले **ग्यारहवीं**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساكر)

शरीफ़ के इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में अपनी बेटी की इस्लाह़ के लिये गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगी। मेरी ख़्वाहिश थी कि मेरी बेटी भी दा'वते इस्लामी की मुबल्लिग़ा बने। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरी दुआ़ क़बूल हुई और मेरी बेटी किसी न किसी त़रह़ इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **शरीक** होने पर रिज़ा मन्द हो गई। उस ने जब शिर्कत की तो इतनी मु-तअस्सिर हुई कि बस दा'वते इस्लामी ही की हो कर रह गई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه तरक़्क़ी की मन्ज़िलें तै़ करते करते (ता दमे तह़रीर) मेरी बेटी **ह़ल्क़ा ज़िम्मादार** की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमतों में मश्ग़ूल है।

गिर पड़ के यहां पहुंचा मर मर के इसे पाया

छूटे न इलाही अब संगे दरे जानाना

(सामाने बख़्शिश)

इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में रह़मतें क्यूं नाज़िल न होंगी कि इन **आ़शिक़ाने रसूल** और आक़ा की दीवानियों में न जाने कितने औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى होते और वलिय्यात होती होंगी। **मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़ह़ा 184 पर फ़रमाते हैं **:** "जमाअ़त में ब-र-कत है और दुआ़ए मज्मए़ मुस्लिमीन अक़रब ब क़बूल। (या'नी मुसल्मानों के मज्मअ़ में दुआ़ मांगना क़बूलिय्यत के क़रीब तर है) उ़-लमा फ़रमाते हैं **: जहां चालीस मुसल्मान सालेह़ (या'नी**

नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है।'' (تیسیر شرحِ جامعِ صغیر ج۱ ص۳۱۲ زیرِ حدیث ۷۱٤ دار الحدیث مصر)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ म-दनी मुन्ना सिह़्ह़त याब हो गया

बाबुल मदीना (कराची) की एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि 2005 सि.ई. में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (सह़राए मदीना टोल प्लाज़ा सुपर हाइवे रोड बाबुल मदीना कराची) में आख़िरी दिन होने वाली ख़ुसूसी निशस्त की टेलीफ़ोन के ज़रीए़ इस्लामी बहनों में रिले (RELAY) की तरकीब थी। चुनान्चे हम अपने अ़लाके़ की इस्लामी बहनों में इस की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ थीं। इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन अ़लस्सुब्ह़ हम चन्द इस्लामी बहनें घर घर जा कर इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तरग़ीब दिला रही थीं इसी दौरान हमारी मुलाक़ात एक निहायत दुख्यारी इस्लामी बहन से हुई, उन्हों ने ग़मगीन लहजे में कहा : मेरे बच्चे की **त़बीअ़त** ख़राब है, डॉक्टरों ने उस की रिपोर्ट देख कर किसी **मोहलिक बीमारी** का ख़दशा ज़ाहिर किया है, आप दुआ़ कीजियेगा कि ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे बेटे को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमाए।'' हम ने उस परेशान ह़ाल इस्लामी बहन पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की ब-र-कतें सुना कर शिर्कत की दा'वत पेश की।

चुनान्चे वोह हाथों हाथ हमारे साथ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में शरीक हो गईं । इज्तिमाअ़ में होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ के दौरान उन्हों ने अपने बेटे की सिह़्ह़त याबी की दुआ़ मांगी । चन्द रोज़ बा'द वोह इस्लामी बहन **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में भी तशरीफ़ लाईं और इज्तिमाअ़ के इख़्तिताम पर उन्हों ने ज़िम्मादार इस्लामी बहन को बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत की मुझे ऐसी ब-र-कतें नसीब हुईं कि जब मैं ने अपने मुन्ने का दोबारा मेडीकल टेस्ट करवाया तो ह़ैरत अंगेज़ तौ़र पर रिपोर्ट्स बिल्कुल सह़ीह़ आईं और अब मेरा म-दनी मुन्ना मुकम्मल तौ़र पर **सिह़्ह़त याब** हो चुका है । मेरे मुन्ने की अचानक सिह़्ह़त याबी ने डॉक्टरों को भी ह़ैरत में मुब्तला कर दिया है !

वल्लाह वोह सुन लेंगे फ़रियाद को पहुंचेंगे

इतना भी तो हो कोई जो आह ! करे दिल से

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ रोज़गार मिल गया

बाबुल मदीना (कराची) की एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि हम त़वील अ़र्से से **मआ़शी बदह़ाली** का शिकार थे, मेरे बच्चों के अब्बू को कभी कभार कोई काम मिल जाता वरना अक्सर बे रोज़गार रहते । इसी परेशानी के आ़लम में मेरी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मुलाक़ात **दा'वते इस्लामी** की **एक मुबल्लिग़ा** से हुई, मैं ने उन्हें अपने ह़ालात बता कर दुआ़ के लिये कहा तो उन्हों ने निहायत शफ़्क़त से दिलासा दिया और मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की और मेरा कुछ इस त़रह़ ज़ेह्न बनाया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की ख़ूब ख़ूब **बहारें** हैं, जहां कसीर इस्लामी बहनों को तौबा की तौफ़ीक़ मिली और वोह गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर नेक बन गईं वहीं **बा'ज़ अवक़ात** रब्बे काएनात عَزَّوَجَلَّ की इनायात से **ईमान अफ़रोज़ करिश्मात** का भी ज़ुहूर होता है म-सलन मरीज़ों को शिफ़ा मिली, बे औलादों को औलाद नसीब हुई, आसेब ज़दा को ख़लासी मिली, वग़ैरहा। उन की "इन्फ़िरादी कोशिश" के दिल मोह लेने वाले अन्दाज़ ने मुझे सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक होने पर मजबूर कर दिया। चुनान्चे मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शरीक हुई और इख़्तिताम पर होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ **दुआ़** के दौरान मैं ने येह भी दुआ़ मांगी कि **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से हमारे रोज़गार के मस्अले को ह़ल फ़रमा दे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अभी चन्द ही रोज़ गुज़रे थे कि अल्लाहु ग़फ़्फ़ार عَزَّوَجَلَّ ने मेरे बच्चों के अब्बू को बेहतरीन सिल्सिलए रोज़गार अ़त़ा फ़रमा दिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस त़रह़ **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से हमारी बदह़ाली ख़ुशह़ाली में तब्दील हो गई।

दो² आलम में बटता है स-दक़ा यहां का

हमीं इक नहीं रेज़ा ख़्वारे मदीना

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ सच्ची निय्यत की ब-र-कत

बाबुल मदीना (कराची) की एक ज़िम्मेदार इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि **दा'वते इस्लामी** के बैनल अक़्वामी **तीन³ रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** की आमद आमद थी। आख़िरी दिन की **ख़ुसूसी निशस्त** का बयान, ज़िक्र व दुआ़ और सलातो सलाम ब जरीअ़ए टेलीफ़ोन इस्लामी बहनों के बा पर्दा इज्तिमाआ़त में भी रिले किया जाता है। चुनान्चे हमारे अ़लाक़े की इस्लामी बहनों ने घर घर जा कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत को आ़म करना शुरूअ़ कर दिया, उन इस्लामी बहनों में **मर्हूमा ज़ाहिदा अ़त्तारिय्या** भी शामिल थीं, उन का जज़्बा क़ाबिले दीद था, वोह सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में शिर्कत के लिये इस्लामी बहनों पर भरपूर **इन्फ़िरादी कोशिश** और उन्हें इज्तिमाअ़ गाह में ले जाने के इन्तिज़ामात में मसरूफ़ दिखाई देती थीं। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से एक हफ़्ता क़ब्ल इतवार के दिन अचानक उन की त़बीअ़त ख़राब हो गई और उन्हें अस्पताल में ले जाया गया जहां ह़ालत देखते हुए उन्हें फ़ौरन दाख़िल कर लिया गया। तीन³ रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर रहने के बा'द वोह मंगल

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : शबे जुमुआ और रोज़े मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा। (شعب الایمان)

के रोज़ इस दुन्याए फ़ानी से **कूच** फ़रमा गईं, اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّاۤ اِلَیْہِ رٰجِعُوْنَ इतवार के रोज़ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में उन के अ़लाक़े की कसीर इस्लामी बहनों ने शिर्कत की। अचानक एक इस्लामी बहन ने येह ईमान अफ़रोज़ मन्ज़र देखा कि चन्द रोज़ क़ब्ल इन्तिक़ाल कर जाने वाली **दा'वते इस्लामी की मुबल्लिग़ा ज़ाहिदा अ़त्तारिय्या मर्हूमा** भी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **शरीक** हैं। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

आप मह़बूब हैं अल्लाह के ऐसे मह़बूब

हर मुह़िब आप का मह़बूबे ख़ुदा होता है

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾12﴿ औलाद मिली, पाउं का दर्द मिटा

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के तह़रीरी बयान का ख़ुलासा है कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ मैं नित नए फ़ेशन की शौक़ीन और नमाज़ें क़ज़ा कर देने की आ़दी थी। हमारी ख़ुश बख़्ती कि मेरी एक बेटी **दा'वते इस्लामी** के मुश्कबार **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गई। वोह मुझे भी **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत देती रहती थी लेकिन मैं उस की बात को नज़र अन्दाज़ कर दिया करती थी। एक मरतबा ह़स्बे मा'मूल मेरी बेटी ने मुझ पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

''इन्फ़िरादी कोशिश'' की और मुझे दा'वते इस्लामी के इज्तिमाअ़ात में शिर्कत की एक ब-र-कत येह भी बताई कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाअ़ात में शरीक होने वालियों की दुआ़ओं की क़बूलिय्यत के कई वाक़िआ़त हैं, लिहाज़ा आप भी इज्तिमाअ़ में शरीक हों और भाई के लिये **दुआ़** कीजिये। बात येह थी कि मेरे बेटे की शादी को 4 साल का अ़र्सा गुज़र चुका था मगर वोह **औलाद** की ने'मत से मह़रूम था। चुनान्चे मैं ने अपनी बेटी की तरग़ीब पर येह निय्यत की, कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करूंगी और अपने बेटे के लिये औलाद की दुआ़ मांगूंगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में पाबन्दी से शिर्कत करना शुरूअ़ कर दी। वहां मैं अपने बेटे के लिये भी दुआ़ किया करती। कुछ ही अ़र्से में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे बेटे को औलाद की ने'मत से मालामाल फ़रमा दिया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की एक और **ब-र-कत** येह भी मिली कि तक़रीबन 3 साल से मेरे पाउं में जो शदीद तक्लीफ़ रहती थी اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे उस से भी नजात मिल गई।

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ''ला'' है न ह़ाजत ''अगर'' की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

﴾13﴿ मेरे मसाइल ह़ल हो गए

बाबुल मदीना (कराची) की एक मुअ़म्मर इस्लामी बहन का ह़ल्फ़िय्या बयान कुछ इस त़रह़ है कि मैं मुख़्तलिफ़ **घरेलू मसाइल** में गिरिफ़्तार थी। हम किराए के मकान में रहते थे, मगर आमदनी कम होने की वज्ह से किराया भी वक़्त पर न दे पाते। बच्चियां भी जवान हो रही थीं, उन की शादियों की **फ़िक्र** अलग खाए जा रही थी। एक रोज़ किसी इस्लामी बहन से मेरी मुलाक़ात हुई, उन्हों ने मेरी **ग़म ख़्वारी** की और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में पाबन्दी के साथ शिर्कत की निय्यत करवाई और वहां आ कर अपने मसाइल के लिये दुआ़ करने की भी तरग़ीब दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल करने लगी। मैं वहां अपने मसाइल के ह़ल के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ़ भी किया करती। कुछ ही अ़र्सा गुज़रा था कि अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ के करम से मेरे बच्चों के अब्बू को अच्छी मुला-ज़मत मिल गई और करम बालाए करम येह हुवा कि कुछ ही अ़र्से में हम ने किराए का घर छोड़ कर अपना **ज़ाती मकान** भी ख़रीद लिया। **अल्लाहु** मुजीब عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े, सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में शिर्कत की ब-र-कत से बच्चियों की शादियों के फ़रीज़े से ओ़हदा बर-आ होने की त़ाक़त भी इनायत फ़रमा दी। इस त़रह़ दा'वते इस्लामी

के **म-दनी माहोल** की ब-र-कत से हमारा मसाइल का रेगिस्तान, हंसते मुस्कुराते लह-लहाते गुलिस्तान में तब्दील हो गया। اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

बे कसो बे बसो बे यारो मददगार हो जो

आप के दर से शहा सब का भला होता है (सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿ म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल की ब-र-कत से चल मदीना की सआ़दत मिल गई

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के ह़ल्फ़िय्या बयान का खुलासा कुछ यूं है कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा घराना आक़ाए ने'मत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, **मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه के एक अज़ीमुल मर्तबत ख़लीफ़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की औलाद से है। सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت के वोह ख़लीफ़ए मुकर्रम मेरी वालिदए मोह़-त-रमा के नानाजान थे और हमारे तमाम अहले ख़ाना उन्हीं के दस्ते मुबारक पर बैअ़त थे। उन से बैअ़त की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت की मह़ब्बत व अ़क़ीदत रगो पै में सरायत किये हुए थी, लेकिन अ़-मली ज़िन्दगी में हमारी मिसाल कोरे काग़ज़ की सी थी बिल खुसूस नमाज़ों की पाबन्दी से मह़रूमी थी नीज़ फ़ेशन परस्ती और गाने बाजे सुनने की नुहूसत छाई थी, गुस्सा और चिड़चिड़ा पन हमारी आ़दते सानिया थी। मेरे फूफीज़ाद भाई ने (जो कि दा'वते इस्लामी के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये त़हारत है। (ابویعلی)

मुश्कबार म-दनी माह़ोल से वाबस्ता थे) **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए मेरे भाईजान को भी **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की न सिर्फ़ दा'वत दी बल्कि अपने साथ ले जाना शुरूअ़ कर दिया। भाईजान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापसी पर इज्तिमाअ़ की रूदाद सुनाते जिन में सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत عَلَیْہِ رَحْمَۃُ رَبِّ الْعِزَّت का **ज़िक्रे ख़ैर** सुनने को मिलता जिस की वज्ह से मुझे **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से अपनाइय्यत सी मह़सूस होने लगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इसी अपनाइय्यत की सोच ने मुझे पहली बार 1985 सि.ई. के सालाना सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत पर उभारा। चुनान्चे मैं भी इस्लामी बहनों के साथ इज्तिमाअ़ में शरीक हुई जहां हम ने पर्दे में रह कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में होने वाला **बयान** सुना और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ मांगी। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ उसी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से मुझे गुनाहों से तौबा करने की सआ़दत नसीब हुई, फ़िक्रे आख़िरत मिली। जिस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये मैं ने **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया। म-दनी इन्आ़मात की ब-र-कत से اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मुझे चल मदीना की सआ़दत भी नसीब हो गई।[1]

चल मदीना वोही हो सके जिस का दिल घर में रह कर भी अक्सर मदीने में है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مدینہ

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के क़ाफ़िले के साथ ह़ज व ज़ियारते मदीना से मुशर्रफ़ होना दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल में "चल मदीना" की सआ़दत पाना कहलाता है। **मजलिसे मक-त-बतुल मदीना**

﴾15﴿ बिग़ैर ऑपरेशन विलादत हो गई

हैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है **:** ग़ालिबन 1998 सि.ई. का वाक़िआ़ है, मेरी अह्लिया उम्मीद से थीं, दिन भी "पूरे" हो गए थे। डॉक्टर का कहना था कि शायद **ऑपरेशन** करना पड़ेगा। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी का **बैनल अक़्वामी** तीन3 रोज़ा सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ (सह़राए मदीना मुलतान) क़रीब था। इज्तिमाअ़ के बा'द सुन्नतों की तरबिय्यत के **30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सफ़र की मेरी निय्यत थी। इज्तिमाअ़ के लिये रवानगी के वक़्त, सामाने क़ाफ़िला साथ ले कर अस्पताल पहुंचा, चूंकि ख़ानदान के दीगर अफ़राद तआ़वुन के लिये मौजूद थे, अह्लियए मोह़-त-रमा ने अश्कबार आंखों से मुझे **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** (मुलतान) के लिये अल वदाअ़ किया।

मेरा ज़ेह्न येह बना हुवा था कि अब तो मुझे बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ और फिर वहां से 30 दिन के **म-दनी क़ाफ़िले** में ज़रूर सफ़र करना है कि काश ! इस की ब-र-कत से आ़फ़िय्यत के साथ विलादत हो जाए। मुझ ग़रीब के पास तो **ऑपरेशन के अख़राजात** भी नहीं थे ! बहर ह़ाल मैं मदीनतुल औलिया **मुलतान शरीफ़** ह़ाज़िर हो गया। सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में गिड़गिड़ा कर ख़ूब दुआ़एं मांगीं। इज्तिमाअ़ की इख़्तितामी **रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़** के बा'द मैं ने घर पर फ़ोन किया तो मेरी अम्मीजान ने फ़रमाया **: मुबारक हो ! गुज़श्ता रात रब्बे काएनात** عَزَّوَجَلَّ **ने बिग़ैर ऑपरेशन के तुम्हें चांद**

सी म-दनी मुन्नी अ़ता फ़रमाई है । मैं ने ख़ुशी से झूमते हुए अ़र्ज़ की : अम्मीजान ! मेरे लिये क्या हुक्म है ? आ जाऊं या 30 दिन के लिये म-दनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर बनूं ? अम्मीजान ने फ़रमाया, ''बेटा ! बे फ़िक्र हो कर म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र करो ।''

अपनी म-दनी मुन्नी की ज़ियारत की ह़सरत दिल में दबाए اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं 30 दिन के म-दनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ रवाना हो गया । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की निय्यत की ब-र-कत से मेरी मुश्किल आसान हो गई थी **म-दनी क़ाफ़िलों की बहारों** की ब-र-कत के सबब घर वालों का बहुत ज़बर दस्त म-दनी ज़ेह्न बन गया, ह़त्ता कि मेरे बच्चों की अम्मी का कहना है, जब आप **म-दनी क़ाफ़िले** के मुसाफ़िर होते हैं मैं बच्चों समेत अपने आप को मह़फ़ूज़ तसव्वुर करती हूं ।

ज़चगी आसान हो, ख़ूब फ़ैज़ान हो — ग़म के साए ढलें, क़ाफ़िले में चलो
बीवी बच्चे सभी, ख़ूब पाएं ख़ुशी — ख़ैरियत से रहें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾16﴿ घर वालों पर इन्फ़िरादी कोशिश कीजिये

इस्लामी बहनो ! येह म-दनी बहार अपने अन्दर इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों सभी के लिये **रह़मत के महक्ते म-दनी फूल** लिये हुए है, इस्लामी बहनों को चाहिये कि वोह अपने बच्चों, उन के अब्बू, अपने वालिद साहि़ब, भाइयों, वग़ैरा **महारिम** पर ख़ूब **इन्फ़िरादी कोशिश** करें, इतनी करें इतनी करें और इतनी करें कि वोह

सब के सब पक्के नमाज़ी, सुन्नतों के आ़दी, हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ के पाबन्द, म-दनी इन्आ़मात के आ़मिल, हर माह तीन दिन के **म-दनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर** और **दा'वते इस्लामी** के बा अ़मल मुबल्लिग़ बन जाएं। इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप के लिये सवाब का अम्बार लग जाएगा। सुन्नतें सिखाने और नेकियों की तरग़ीब दिलाने का अ़ज़ीमुश्शान सवाब कमाने के लिये क्या ही अच्छा होता कि आप फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल से ''घर दर्स'' शुरूअ़ कर देतीं! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये चार अह़ादीसे मुबा-रका पेश की जाती हैं :

चार फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

《1》 नेकी की राह दिखाने वाला **नेकी** करने वाले की त़रह़ है।(1) 《2》 अगर **अल्लाह** तआ़ला तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत अ़ता फ़रमाए तो येह तुम्हारे लिये इस से अच्छा है कि तुम्हारे पास सुर्ख़ ऊंट हों।2 《3》 बेशक **अल्लाह** तआ़ला, उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक़ यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां (पानी में) लोगों को नेकी सिखाने वाले पर ''सलात'' भेजते हैं।(3) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ''सलात'' से उस की ख़ास रह़मत और मख़्लूक़ की ''सलात'' से ख़ुसूसी दुआ़ए रह़मत मुराद है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 200) 《4》 बेहतरीन स-दक़ा येह है कि मुसल्मान आदमी इल्म ह़ासिल करे फिर अपने मुसल्मान भाई को सिखाए।(4)

(1) سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج٤ ص٣٠٥ حدیث ٢٦٧٩ (2) صَحِیح مُسلِم ص١٣١١ حدیث ٢٤٠٦
(3) سُنَنُ التِّرْمِذِیّ ج٤ ص٣١٤ حدیث ٢٦٩٤ (4) سُنَن ابن ماجه ج١ ص١٥٨ حدیث ٢٤٣

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾17﴿ बेटा सिह्ह़त याब हो गया

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का खुलासा है कि **दा'वते इस्लामी** की कुछ इस्लामी बहनें **नेकी की दा'वत** देने के लिये हमारे घर आया करतीं, वोह मुझ पर **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए इस्लामी बहनों के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** और अ़लाक़ाई दौरा बराए **नेकी की दा'वत** में शिर्कत की दा'वत पेश करतीं मगर मैं सुस्ती के बाइस इस सआ़दत से मह़रूम रहती। एक दिन अचानक मेरे बेटे की त़बीअ़त ख़राब हो गई, डॉक्टर को दिखाया तो उस ने **अन्देशा** ज़ाहिर किया कि शायद अब येह बच्चा उ़म्र भर टांगों के सहारे चल न सके, नीज़ इस का दिमाग़ी तवाज़ुन भी ठीक नहीं रहा। येह सुन कर मेरे पाउं तले से ज़मीन निकल गई ! हर मां की त़रह़ मुझे भी अपने बेटे से बहुत मह़ब्बत थी, इस सदमे ने मुझे नीम जान कर दिया। कुछ दिन इसी ह़ालत में गुज़र गए। एक दिन फिर वोही इस्लामी बहनें **नेकी की दा'वत** के लिये आईं। उन्हों ने मेरे चेहरे पर **परेशानी** के आसार देखे तो ग़म ख़्वारी करते हुए पूछा : "ख़ैरियत तो है आप परेशान दिखाई दे रही हैं ?" मैं ने उन्हें सारा माजरा कह सुनाया तो उन्हों ने मुझे बहुत ह़ौसला दिया और कहा कि आप **दा'वते इस्लामी** के 12 **हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में पाबन्दी से शिर्कत कीजिये और वहां पर अपने बच्चे के लिये दुआ़ भी मांगिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का बेटा सिह्ह़त याब हो जाएगा। चुनान्चे मैं ने 12 इज्तिमाआ़त में

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर सुब्ह़ व शाम दस दस बार दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त मिलेगी। (مجمع الزوائد)

शिर्कत की पुख़्ता **निय्यत** कर ली। जब मैं पहली मर्तबा **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शरीक हुई और जब वहां रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई तो मैं ने भी अपने रब्बे दावर عَزَّوَجَلَّ से अपने लख़्ते जिगर की **सिह्ह़त याबी** की गिड़गिड़ा कर दुआ़ मांगी। इज्तिमाअ़ के बा'द जब घर वापस आई तो मुझे अपने बेटे की त़बीअ़त पहले से बेहतर दिखाई दी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वक़्त गुज़रने के साथ साथ मेरा बेटा मुकम्मल त़ौर पर **सिह्ह़त याब** हो गया। यूं डॉक्टरों के अन्देशे ग़लत़ साबित हुए और सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से मेरा बेटा **चलने फिरने** भी लगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर हमारा सारा घराना **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर जन्नत की तय्यारी में मसरूफ़ है।

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला

इन्हें ख़ुल्द में बसाना म-दनी मदीने वाले

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! سُبْحٰنَ اللّٰه सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ब-र-कत से किस त़रह़ मन की मुरादें बर आती हैं ! उम्मीदों की सूखी खेतियां हरी हो जाती हैं, दिलों की पज़मुर्दा कलियां खिल उठती हैं और ख़ानमां बरबादों की ख़ुशियां लौट आती हैं। मगर येह ज़ेह्न में रहे कि ज़रूरी नहीं हर एक की दिली मुराद लाज़िमी ही पूरी हो। बारहा ऐसा होता है कि बन्दा जो त़लब करता है वोह उस के ह़क़ में बेहतर नहीं होता और उस का सुवाल पूरा नहीं किया जाता। उस की मुंह मांगी

मुराद न मिलना ही उस के लिये इन्आ़म होता है। म-सलन येही कि वोह **औलादे नरीना** मांगता है मगर उस को म-दनी मुन्नियों से नवाज़ा जाता है और येही उस के ह़क़ में बेहतर भी होता है। चुनान्चे पारह दूसरा **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत नम्बर 216 में रब्बुल इ़बाद عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे ह़क़ीक़त बुन्याद है **:**

عَسٰۤى اَنْ تُحِبُّوْا شَیْـًٔا وَّ هُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ؕ (پ۲ البقرۃ ۲۱۶)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे ह़क़ में बुरी हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾18﴿ इसी माह़ोल ने अदना को आ'ला कर दिया देखो !

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि वालिदैन के बेह़द इसरार पर मैं ने क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करने की सआ़दत तो ह़ासिल कर ली थी मगर बा'द में इस को दोहराना छोड़ दिया था जिस की वज्ह से वालिदैन को **सख़्त तश्वीश** थी। इतनी अ़ज़ीम सआ़दत ह़ासिल कर लेने के बा वुजूद अफ़्सोस ! मेरी अ़-मली कैफ़िय्यत येह थी कि मैं नमाज़ों की पाबन्दी से ग़ाफ़िल थी। नित नए **फ़ेशन** अपनाने और फ़िल्मी **गाने** सुनने की तो इतनी शौक़ीन थी कि हेडफ़ोन लगा कर बा'ज़ अवक़ात तो सारी सारी रात गाने सुनने में बरबाद कर देती ! **T.V.** की तबाह कारियों ने मुझे बहुत बुरी त़रह़ अपनी लपेट में लिया हुवा था, चुनान्चे मैं **फ़िल्में डिरामे**

देखने की ख़ूब ही रसिया थी, बिल ख़ुसूस एक गुलूकार के गानों की तो इस क़दर दीवानी थी कि मेरी सहेलियां मज़ाक़न कहा करती थीं कि येह तो मरते वक़्त भी उसी गुलूकार को याद करते हुए दम तोड़ेगी ! सद करोड़ अफ़्सोस कि अगर मैं उस गुलूकार का कोई शो (प्रोग्राम) न देख पाती तो रो रो कर बुरा ह़ाल कर लेती यहां तक कि खाना भी छूट जाता ! अल ग़रज़ मेरे सुब्ह़ो शाम यूंही गुनाहों में बसर हो रहे थे। मेरी मुमानी **दा'वते इस्लामी** के इस्लामी बहनों के **सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त** में शिर्कत किया करती थीं। वोह मुझे भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत देतीं मगर मैं टाल देती। उन की मुसल्सल **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में बिल आख़िर मुझे दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल हो ही गई, इज्तिमाअ़ में होने वाले सुन्नतों भरे बयान, **ज़िक्रुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मुझ पर बहुत गहरा असर डाला। एक ह़ल्क़ा ज़िम्मादार इस्लामी बहन मुझ पर बड़ी शफ़्क़त फ़रमातीं और मुझे घर से बुला कर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करवातीं। उन की मुसल्सल शफ़्क़तों के सबब मेरी इस्लाह़ का सामान होने लगा ह़त्ता कि फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने और दीगर गुनाहों से मैं ने तौबा कर ली। **मक-त-बतुल मदीना** के जारी कर्दा **सुन्नतों भरे बयानात की केसिटें** सुनती तो ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ कर रह जाती कि अगर यूंही गुनाह करते करते मुझे मौत आ गई तो मेरा क्या बनेगा ! इसी त़रह़ मक-त-बतुल मदीना से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

शाएअ़ होने वाली **कुतुब व रसाइल** पढ़ कर मुझ में **एहसासे ज़िम्मेदारी** पैदा हुवा और मैं भी इस्लामी बहनों के साथ मिल कर नेकी की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ हो गई। ज़िम्मेदार इस्लामी बहन मुझे जो भी ज़िम्मेदारी देतीं मैं ब हुस्नो ख़ूबी निभाने की कोशिश करती। यूं दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करते करते اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर अ़लाक़ाई मुशा-वरत की ख़ादिमा (ज़िम्मादार) की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी के म-दनी काम को बढ़ाने में कोशां हूं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी** ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद फ़ारूक़ अल अ़त्तारी अल म-दनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِى कि जिन के अ़हदे त़ालिबे इल्मी का वाक़िआ़ है कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कुरआने पाक की कुल सात मन्ज़िलों में से रोज़ाना एक मन्ज़िल तिलावत फ़रमाया करते थे मैं भी उन की पैरवी में रोज़ाना एक मन्ज़िल की दोहराई कर के हर सात दिन में एक बार ख़त्मे कुरआन की सआ़दत ह़ासिल कर रही हूं। इलाही عَزَّوَجَلَّ इस्तिक़ामत दे।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

इस्तिक़ामत दीन पर या मुस्तफ़ा कर दो अ़त़ा

बहरे ख़ब्बाबो बिलालो आले यासिर या नबी

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल कितना प्यारा प्यारा है। इस के दामन में आ कर मुआ़-शरे के न जाने कितने ही बिगड़े हुए अफ़राद बा किरदार बन कर सुन्नतों भरी बा इ़ज़्ज़त ज़िन्दगी गुज़ारने लगे नीज़ इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त की

बहारें भी आप के सामने हैं। जिस त़रह़ इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से बा'ज़ों की दुन्यवी मुसीबत रुख़्सत हो जाती है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इसी त़रह़ ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, सरापा रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त से मा'सियत की शामत के सबब आने वाली आख़िरत की आफ़त भी राह़त में ढल जाएगी।

टूट जाएंगे गुनहगारों के फ़ौरन क़ैदो बन्द
ह़श्र को खुल जाएगी त़ाक़त रसूलुल्लाह की

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾19﴿ मैं पेन्ट शर्ट पहनती थी

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ यूं है कि मैं मग़रिबी तहज़ीब की जुनून की ह़द तक दिलदादा थी ह़त्ता कि लड़कों की त़रह़ **पेन्ट शर्ट** पहना करती, ना मह़रम मर्दों के साथ बिला झिजक गुफ़्त-गू करती और बद तमीज़ क़िस्म के दोस्तों की **सोह़बत** में रहा करती थी। मेरे वालिद साह़िब होटल चलाते थे, मैं इतनी **बेबाक** थी कि वालिद साह़िब के मन्अ़ करने के बा वुजूद होटल के काउन्टर पर बैठ जाया करती थी ! मैं एक स्कूल में पढ़ती थी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शान कि अचानक मेरे दिल में दीनी मद्रसे में पढ़ने का शौक़ पैदा हुवा ! मैं ने जब वालिद साह़िब से इस का इज़्हार किया तो उन्हों ने मौक़अ़ ग़नीमत जाना और मुझे हाथों हाथ **दा'वते इस्लामी** के **मद्र-सतुल मदीना** (लिल बनात) में दाख़िल करवा दिया। मैं ने वहां क़ुरआने पाक पढ़ना शुरूअ़ कर दिया। चन्द दिन बा'द

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख़्स है । (مسند احمد)

हमारी मुअ़ल्लिमा ने हमें सह़राए मदीना, मदीनतुल औलिया मुलतान शरीफ़ में होने वाले दा'वते इस्लामी के सालाना बैनल अक्वामी **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** के बारे में बताया और घर घर जा कर **नेकी की दा'वत** के ज़रीए इस्लामी बहनों में इज्तिमाअ़ की दा'वत आ़म करने की तरग़ीब दी । हम ख़ूब जोशो ख़रोश के साथ इस सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत आ़म करने में मसरूफ़ हो गईं । मुझे इज्तिमाअ़ के आख़िरी दिन की **ख़ुसूसी निशस्त** का बड़ी बेचैनी से इन्तिज़ार था क्यूं कि मैं ने पहले कभी भी इज्तिमाअ़ में शिर्कत नहीं की थी । बिल आख़िर इन्तिज़ार की घड़ियां ख़त्म हुईं और वोह दिन भी आ ही गया ! मैं ने बड़े जज़्बे के साथ सालाना सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की ख़ुसूसी निशस्त में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की । जिस में "**गुनाहों का इलाज**" के मौज़ूअ़ पर होने वाला टेलीफ़ोनिक बयान सुनने का शरफ़ ह़ासिल हुवा, बयान सुन कर मैं ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से थर्रा उठी, मुझे एक दम एह़सास हो गया कि हाए हाए ! मैं अपने रब عَزَّوَجَلَّ की कैसी कैसी ना फ़रमानियों में मुब्तला हूं ! आख़िर में रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ हुई, दौराने दुआ़ इज्तिमाअ़ में शरीक बे सुमार इस्लामी बहनों की गिर्या व ज़ारी देख कर मेरी आंखों से भी **आंसू** बह निकले, मेरा दिल नदामत के समुन्दर में ग़ोते खाने लगा । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने हर **गुनाह से तौबा** की और अपनी इस्लाह़ का **अ़ज़्मे मुसम्मम** कर लिया । मद्र-सतुल मदीना के ज़रीए इज्तिमाअ़ में

हाज़िरी और वहां लगी हुई म-दनी चोट की ब-र-कत से मैं दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गई, اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने **शर-ई पर्दा** शुरूअ़ कर दिया और **नमाज़ों** की भी पाबन्द हो गई । आज मेरे वालिदैन मुझ से बहुत ख़ुश और दा'वते इस्लामी के एह़सान मन्द हैं कि जिस की ब-र-कत से उन की फ़ेशन ज़दा बेटी **सुन्नतों भरी ज़िन्दगी** की शाहराह पर गामज़न हो गई ।

सुन्नतें मुस्तफ़ा की तू अपनाए जा — दीन को ख़ूब मेह़नत से फैलाए जा
येह वसिय्यत तू अ़त्तार पहुंचाए जा — उस को जो उन के ग़म का त़लब गार है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾20﴿ मैं रोज़ाना तीन, चार फ़िल्में देख डालती !

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि दा'वते इस्लामी के मुश्कबार **म-दनी माहोल** से वाबस्ता होने से क़ब्ल मैं एक मोडर्न लड़की थी । दुन्यवी ता'लीम ह़ासिल करने का जुनून की ह़द तक **शौक़** था, **फ़िल्म बीनी** का भूत तो कुछ ऐसा सुवार था कि मैं एक रात में **तीन तीन चार चार फ़िल्में** देख डालती ! और مَعَاذَ الله عَزَّوَجَلَّ गानों की भी ऐसी रसिया थी कि घर का कामकाज करते वक़्त भी टेप रिकॉर्डर पर ऊंची आवाज़ से **गाने** लगाए रखती । मेरी एक बहन को (जो कि शादी हो जाने के बा'द दूसरे शह्‌र में रिहाइश पज़ीर थीं) **दा'वते इस्लामी** से बड़ी मह़ब्बत थी । वोह जब कभी **बाबुल मदीना** (कराची) आतीं तो इतवार के दिन दा'वते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो लोग अपनी मजलिस से **अल्लाह** के ज़िक्र और नबी पर दुरूद शरीफ़ पढ़े बिग़ैर उठ गए तो वोह बदबूदार मुर्दार से उठे। (شعب الایمان)

इस्लामी के आलमी म-दनी **मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ज़रूर शिर्कत करतीं, रात में इश्क़े रसूल में डूबी हुई पुरसोज़ ना'तें सुना करतीं, जिस की वज्ह से मुझे गाने सुनने का मौक़अ़ न मिलता चुनान्चे मुझे उन पर बहुत **ग़ुस्सा** आता बल्कि कभी कभी तो उन से लड़ पड़ती ! एक मरतबा जब वोह बाबुल मदीना आईं तो क़रीब बुला कर निहायत शफ़्क़त से कहने लगीं : "जो बेहूदा फ़िल्में और डिरामे देखता है वोह अ़ज़ाब का ह़क़दार है।" मज़ीद **इन्फ़िरादी कोशिश** जारी रखते हुए बिल आख़िर उन्हों ने मुझे **फ़ैज़ाने मदीना** में होने वाले **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत करने पर राज़ी कर लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की सआ़दत ह़ासिल की। इत्तिफ़ाक़ से उस दिन वहां बयान का मौज़ूअ़ भी **टी वी की तबाह कारियां**[1] था येह बयान सुन कर मेरे दिल की कैफ़िय्यत बदलना शुरूअ़ हो गई, रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने सोने पर सुहागे का काम किया, दौराने दुआ़ मुझ पर रिक़्क़त त़ारी और आंखों से आंसू जारी थे, मैं ने सच्चे दिल से अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से **तौबा** भी कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ जब मैं सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ से वापस घर की त़रफ़ रवाना हुई तो मेरा दिल टी वी के गुनाहों भरे प्रोग्रामों और गानों बाजों से **बेज़ार** हो चुका था। इज्तिमाअ़ से वापसी पर अपने कमरे में मौजूद कार्टूनों की **तसावीर** उतार कर **का'बए मुशर्रफ़ा** और

1. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की आवाज़ में ओडियो और विडियो केसेट और इसी बयान का रिसाला मक-त-बतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआ़फ़ होंगे । (جمع الجوامع)

मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के प्यारे प्यारे तुग़रे आवेज़ां कर दिये । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर मैं **जामिअ़तुल मदीना** (लिल बनात) में दर्से निज़ामी की ता'लीम ह़ासिल कर रही हूं नीज़ अपने अ़लाके़ में अ़लाक़ाई मुशा-वरत की ख़ादिमा (ज़िम्मादार) की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी का म-दनी काम करने के लिये भी कोशां हूं ।

सरकार ! चार यार का देता हूं वासित़ा

ऐसी बहार दो न ख़ज़ां पास आ सके

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾21﴿ मैं 12 साल से औलाद से मह़रूम थी

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन का बयान कुछ इस त़रह़ है कि मेरी शादी को 12 साल का त़वील अ़र्सा गुज़र चुका था लेकिन मैं औलाद की **ने'मत** से मह़रूम थी । एक मरतबा मैं ने **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की । इख़्तिताम पर मेरी मुलाक़ात एक मुबल्लिग़ा इस्लामी बहन से हुई । उन्हों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए मुझे म-दनी माह़ोल की **ब-र-कतें** बताईं । मैं ने उन से अपनी मह़रूमी का तज़्किरा किया तो उन्हों ने निहायत शफ़्क़त से कहा : आप **दा'वते इस्लामी** के 12 सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त में मुसल्सल शिर्कत की निय्यत कर लीजिये और दौराने इज्तिमाआ़त होने वाली दुआ़ में अपने लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से औलाद की भीक त़लब कीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सरकारे नामदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदके़ में ज़रूर करम होगा । चुनान्चे मैं ने

नियत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में पाबन्दी से शिर्कत की ब-र-कत से मेरी दुआएं क़बूल हुई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे **चांद सा म-दनी मुन्ना** अ़ता फ़रमाया और इस त़रह़ मेरे उजड़े चमन में भी बहार आ गई।

बहार आए मेरे दिल के चमन में या रसूलल्लाह

इधर भी आ लगे छींटा कोई रह़मत के बादल से

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

इस्लामी बहनो ! हो सकता है कि किसी के ज़ेह्न में वस्वसा आए कि मैं भी तो अ़र्से से इज्तिमाअ़ में शिर्कत करती और ख़ूब रो रो कर दुआ़ मांगती हूं मगर मेरे मसाइल ह़ल नहीं होते, मेरा बेटा बे औलाद है, बेटी का रिश्ता नहीं आता, बड़ी बेटी की तीन बेटियां हैं बेचारी औलादे नरीना के लिये तरस्ती है वग़ैरा वग़ैरा तो अ़र्ज़ येह है कि बिलफ़र्ज़ दुआ़ की क़बूलिय्यत का असर ज़ाहिर न हो तब भी ह़र्फ़े शिकायत ज़बान पर नहीं लाना चाहिये। हमारी भलाई किस बात में है इस को यक़ीनन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम से ज़ियादा बेहतर जानता है। हमें हर ह़ाल में पाक परवर्द गार جَلَّ جَلَالُهٗ का शुक्र गुज़ार बन्दा बन कर रहना चाहिये। वोह बेटा दे तब भी उस का शुक्र, बेटी दे तब भी शुक्र, दोनों दे तब भी शुक्र और न दे तब भी शुक्र, हर ह़ाल में शुक्र शुक्र और शुक्र ही अदा करना चाहिये। पारह 25 **सू-रतुश्शूरा** की आयत नम्बर 49 और 50 में इर्शादे बारी तआ़ला है **:**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿۴۹﴾ اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّ اِنَاثًاۚ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًاؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾ (پ ۲۵ الشوریٰ ۴۹، ۵۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह ही के लिये है आस्मानों और ज़मीन की सल्त़नत, पैदा करता है जो चाहे, जिसे चाहे बेटियां अ़त़ा फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इल्म व कुदरत वाला है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं, वोह मालिक है अपनी ने'मत को जिस त़रह़ चाहे तक़्सीम करे जिसे जो चाहे दे। अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام में भी येह सब सूरतें पाई जाती हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना **लूत़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व ह़ज़रते सय्यिदुना **शुऐ़ब** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ बेटियां थीं कोई बेटा न था और ह़ज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम** ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिर्फ़ फ़रज़न्द थे कोई दुख़्तर हुई ही नहीं और सय्यिदुल अम्बिया ह़बीबे ख़ुदा **मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अल्लाह तआ़ला ने चार[4] फ़रज़न्द अ़त़ा फ़रमाए और चार साह़िब ज़ादियां और ह़ज़रते सय्यिदुना **यह़्या** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के कोई औलाद ही नहीं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 777, फ़ैज़ाने सुन्नत, बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, जि. 1, स. 882)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

﴾22﴿ गुनाह को गुनाह समझने का शुऊ़र मिल गया

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं नमाज़ें क़ज़ा कर डालने और **बे पर्दगी** जैसे गुनाहों में गिरिफ़्तार थी। अफ़्सोस ! कि मुझे गुनाह को गुनाह समझने का एह़सास तक न था। मैं फ़िक्रे आख़िरत से **ग़ाफ़िल** और इस्लाम की बुन्यादी मा'लूमात से जाहिल थी। दुन्यावी आसाइशें मुयस्सर होने के बा वुजूद **क़ल्बी सुकून** नसीब न था। मैं अ़जीब बेचैनी और घुटन का शिकार रहती थी। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे सुकूने क़ल्ब मिल गया और इस का सबब यूं हुवा कि चन्द इस्लामी बहनों की दा'वत पर मुझे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिली। वहां मैं ने सुन्नतों भरा बयान सुना, अपने रब्बे क़दीर عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया इस के बा'द होने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ ने मुझे झन्झोड़ कर रख दिया और मैं ने रो रो कर अपने गुनाहों से **तौबा** की, मेरे बे क़रार दिल को चैन मह़सूस हुवा और ऐसा लगा गोया मेरे दिल से कोई बोझ उतर गया है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उसी इज्तिमाअ़ में शिर्कत की ब-र-कत से मैं **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता हो गई और ता दमे तह़रीर **दा'वते इस्लामी** के म-दनी कामों की तरक़्क़ी के लिये कोशिश कर रही हूं।

प्यासो मुज़्दा हो कि वोह साक़िये कौसर आए
चैन ही चैन है अब जाम अ़ता होता है

(सामाने बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा-फ़हा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा। (ابن بشکوال)

﴾23﴿ मैं मूवी बनवाया करती थी

बाबुल मदीना (कराची) की एक इस्लामी बहन के बयान का ख़ुलासा है कि मैं **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से पहले गाने बाजे बड़े शौक़ से सुनती थी, मुझे **मूवी** बनवाने का जुनून की ह़द तक शौक़ था, जब किसी शादी में शरीक होती और वहां रक़्स करती तो ख़ुद कह कर ख़ूब मूवी बनवाया करती थी। मेरा दिल गुनाहों की लज़्ज़तों में कुछ ऐसा गिरिफ़्तार था कि मुझे न नमाज़ क़ज़ा होने का ग़म होता न रोज़ा छूट जाने का। हलाकतों और बरबादियों की त़रफ़ गामज़न मेरी गुनाहों भरी ज़िन्दगी का नेकियों की शाहराह की त़रफ़ यूं रुख़ हुवा कि ख़ुश क़िस्मती से बा'ज़ इस्लामी बहनों की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में मुझे **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की सआ़दत मिल गई। **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से **सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़** में शिर्कत की हाथों हाथ ब-र-कत येह मिली कि मैं ने वहीं बैठे बैठे अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और पांचों वक़्त **नमाज़ें** पढ़ने और र-मज़ानुल मुबारक के रोज़े रखने की पक्की निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के **म-दनी माह़ोल** की ब-र-कत से गुनाहों से कनारा कशी का ज़ेह्न बना और फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर करने की सआ़दत भी नसीब हो रही है।

बढ़ा येह सिल्सिला रह़मत का दौरे ज़ुल्फ़े वाला में

तसल्सुल काले कोसों रह गया इ़स्यां की ज़ुल्मत का

(ह़दाइके़ बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

مآخذ و مراجع

نمبر شمار	نام کتاب	مطبوعه	نمبر شمار	نام کتاب	مطبوعه
1	قران پاك	رضااکیڈمی، بمبئی، هند	21	مجمع الزوائد	دارالفکر، بیروت
2	ترجمۂ قرآن کنزالایمان	رضااکیڈمی، بمبئی،هند	22	کنز العمال	دار الکتب العلمیة، بیروت
3	تفسیر درمنثور	دارالفکر بیروت	23	کتاب الدعاء	دار الکتب العلمیة، بیروت
4	تفسیرخزائن العرفان	رضا اکیڈمی، بمبئی، هند	24	البدور السافرة	مؤسسة الکتب الثقافية
5	صحیح بخاری	دار الکتب العلمیة، بیروت	25	الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	دار الکتب العلمیة، بیروت
6	صحیح مسلم	دار ابن حزم، بیروت	26	مسند امام احمد	دار الفکر بیروت
7	سنن ترمذی	دار الفکر، بیروت	27	مشکاة المصابیح	دار الکتب العلمیة، بیروت
8	سنن نسائی	دار الکتب العلمیة، بیروت	28	مرقاة المفاتیح	دار الفکر بیروت
9	سنن ابو داؤد	دار احیاء التراث العربی، بیروت	29	اشعة اللمعات	کوئٹه
10	سنن ابن ماجه	دار المعرفة، بیروت	30	مراٰة المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیاء لاهو ر
11	شعب الایمان	دار الکتب العلمیة، بیروت	31	الهدایة	کوئٹه
12	مؤطا امام مالك	دار المعرفة بیروت	32	فتح القدیر	کوئٹه
13	مسند البزار	مکتبة العلوم والحکم المدینة المنورة	33	خلاصة الفتاوی	کوئٹه
14	تاریخ دمشق	بیروت	34	فتاوی قاضی خان	پشاور
15	شرح السنة	دار الکتب العلمیة، بیروت	35	البحر الرائق	کوئٹه
16	المعجم الکبیر	دار احیاء التراث العربی، بیروت	36	شرح الوقایة	باب المدینه کراچی
17	المعجم الاوسط	دارالکتب العلمیة، بیروت	37	حاشیة الطحطاوی علی الدر	کوئٹه
18	المعجم الصغیر	دارالکتب العلمیة، بیروت	38	فتاوٰی عالمگیری	کوئٹه
19	السنن الکبری	دارالکتب العلمیة، بیروت	39	در مختار	دارالمعرفة، بیروت
20	الجامع الصغیر	دارالکتب العلمیة، بیروت	40	رد المحتار	دارالمعرفة، بیروت

نمبر شمار	نام کتاب	مطبوعہ	نمبر شمار	نام کتاب	مطبوعہ
41	جد الممتار	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	54	قانون شریعت	ضیاء القرآن پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور
42	نور الایضاح	مدینۃ الاولیاء ملتان	55	المیزان الکبری	بیروت
43	مراقی الفلاح	باب المدینہ کراچی	56	منح الروض الازھر	دار البشائر الاسلامیۃ بیروت
44	الجوھرۃ النیرۃ	باب المدینہ کراچی	57	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
45	غنیہ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور	58	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
46	منیۃ المصلی	ضیاء القرآن پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور	59	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا
47	فتاوی تاتارخانیہ	باب المدینہ کراچی	60	تاریخ بغداد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
48	تبیین الحقائق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	61	مکاشفۃ القلوب	دار الکتب العلمیۃ بیروت
49	النھر الفائق	مدینۃ الاولیاء ملتان	62	راحۃ القلوب	شبیر برادرز مرکز الاولیاء لاہور
50	غمز عیون البصائر	باب المدینہ کراچی	63	الوظیفۃ الکریمۃ	ادارۂ تحقیقات امام احمد رضا
51	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن، مرکز الاولیاء لاہور	64	کتاب الکبائر	پشاور
52	فتاوٰی امجدیہ	مکتبہ رضویہ، باب المدینہ کراچی	65	مسائل القرآن	رومی پبلیکیشنز مرکز الاولیاء لاہور
53	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	66	اسلامی زندگی	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **: अच्छी निय्यत इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी ।**

(اَلْجَامِعُ الصَّغِير، ص٥٥٧ حديث ٩٣٢٦)

उ़-लमाए किराम फ़रमाते हैं : मुख़्लिस वोह है जो अपनी नेकियां ऐसे छुपाए जैसे अपनी बुराइयां छुपाता है । (اَلزَّوَاجِرُ عَنِ اقْتِرَافِ الْكَبَائِر ج١ ص١٠٢)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

आप भी म-दनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये

इस्लामी बहनो ! तब्लीगे़ कु़रआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने की ब-र-कत से **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मेह्रबानी से बे वक़्अ़त पथ्थर भी अनमोल हीरा बन जाता, ख़ूब जगमगाता और ऐसी शान से पैके अजल को लब्बैक कहता है कि देखने सुनने वाला उस पर रश्क करता और ऐसी ही मौत की आरज़ू करने लगता है। आप भी दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। अपने शह्र में होने वाले दा'वते इस्लामी के इस्लामी बहनों के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत कीजिये और शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़ता कर्दा म-दनी इन्आ़मात पर अ़मल कीजिये, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहां की ढेरों भलाइयां नसीब होंगी।

मक़्बूल जहां भर में हो दा'वते इस्लामी
सदक़ा तुझे ऐ रब्बे ग़फ़्फ़ार मदीने का

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया मह़ल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860